प्रकृति से वर्षा ज्ञान

(उत्तरार्द्ध)

संकलनकर्ता व अनुवादक :—

डा० जयशंकर देवशंकरजी शर्मा (श्रीमाली ब्राह्मण)

एफ. एस आर. आई (बीकानेर)

प्रस्तावित 'कुछ शब्द'

पद्मभूषण डा० सूर्यनारायण व्यास

प्रकाशक ·

अगरचंद नाहटा

संचालक .

राजस्थानी साहित्य परिषद्

कलकत्ता और बीकानेर

●

विक्रमाब्द २०२६]   [मूल्य ५) रु०

अनुक्रमणिका

*

मुद्रक . त्रिलोकीनाथ मीतल, अग्रवाल प्रेस, मथुरा ।

समर्पण

★

जिनने भारतीय नारी का आदर्श अपने सम्मुख रख सदैव
पति-आज्ञा का अनुसरण करते हुए मुझ मातृ-पितृहीन
बालक का लालन-पालन एवं पोषण करने में अपने
पति का साथ दिया था, उन परम उदार मेरी
पोषक माता स्वर्गीया मोतीदेवी धर्मपत्नी
श्री मनकरण जी व्यास को मेरा
यह यत्किंचित प्रयास
समर्पित है।

•

जयशङ्करदेव शर्मा

प्रकाशकीय

प्रकृति की लीला अनत है, इसका सही ज्ञान प्राप्त करना बहुत ही कठिन है। फिर भी मानव ने सदा प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया है और वह कुछ अंशों में सफल भी हुआ है। प्रकृति के नियमों की जानकारी प्राप्त करने के विविध प्रयत्न चिरकाल से होते रहे हैं और उन प्रयत्नो के फल स्वरूप बहुत से महत्वपूर्ण तथ्य मनुष्य ने प्राप्त किये हैं। मानव ने भविष्य के संबंध मे भी कुछ सूचनाएँ प्राप्त की है, जिससे जीवन को नई गति प्राप्त हुई है।

मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीव जन्तुओं का जीवन मुख्यत जल, अन्न, वनस्पति, वायु आदि प्राकृतिक वस्तुओ पर आधारित है। जल, पृथ्वी के भीतर से भी निकलता है और आकाश से भी बरसता है। पृथ्वी और जल के सयोग से अन्न एवं वनस्पतियाँ आदि उत्पन्न होती हैं। पृथ्वी के भीतर का जल निकालना बहुत कष्ट साध्य है। पर ऊपर से जो वर्षा प्रकृति के द्वारा होती है, वह सुलभ और सहज है। भारत मे प्रकृति के नाना रग या करिश्मे दिखायी पडते हैं। किसी प्रदेश मे में जल खूब बरसता है तो कोई प्रदेश सूखा-सा रहता है। अत जिस प्रदेश मे वर्षा कम होती हैं, वहाँ के लोग स्वाभाविक रूप से ही अधिक उत्सुक और जागरूक होते हैं।

वृष्टि विज्ञान भारत का प्राचीन विज्ञान है। वैदिक काल से लेकर अब तक इस सबध में काफी विचार एव अन्वेषण होता रहा है। ज्योतिष ग्रन्थो मे इसकी विशेष चर्चा होना स्वाभाविक है क्यो कि

भविष्य का ज्ञान ज्योतिष से अधिक सबधित है। प्रकृति प्रदत्त वर्षा पर जीवन बहुत कुछ आधारित है इसलिये किन-किन लक्षणो या कारणो से वर्षा कब और कितनी होगी, इसकी जानकारी मनुष्य के लिये विशेषत — किसानों के लिये बहुत जरूरी है। वैसे व्यापारियों के लिये भी सुभिक्ष, दुर्भिक्ष आदि का ज्ञान आवश्यक है ही। जन-साधारण के लिये इस विषय के ज्ञान के स्रोत भड्डुली वाक्य, मेघमाल आदि रचनाये हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ वर्षा-विज्ञान सबन्धी प्राप्त पद्यो एव कहावतो आदि का बृहद् सग्रह है, जो डॉ० जयशकर देवशकर जी शर्मा श्रीमाली ब्राह्मण ने कई वर्षों के परिश्रम और लगन से सकलित किया है। साथ ही हिन्दी अनुवाद करके इसकी उपयोगिता में चार चाँद लगा दिये हैं। जब मैंने उनका यह प्रयत्न और श्रम साध्य सकलित ग्रन्थ देखा तो उनके श्रम का सभी को लाभ मिल सके और उनका प्रयत्न सफल हो, इसलिए इसके ग्रन्थ के प्रकाशन मे विशेष रुचि ली। सयोग से कलकत्ता जाने पर मैंने राजस्थानी साहित्य के महत्व के सम्बन्ध मे भाषण दिये जिनका सभापतित्व दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड ने किया। वे मेरे भाषण से बहुत प्रभावित हुये और तत्काल राजस्थानी साहित्य के उद्धार के लिये ५ हजार रुपये देने की घोषणा कर दी। उनकी इस विशेष उदारता के लिये मैं बहुत आभारी हूँ। उस राशि से राजस्थानी भाषा के दो ग्रन्थ—सबडका और इक्के वाला जिनके लेखक राजस्थानी साहित्य के विशिष्ट लेखक राजस्थान के श्रीलाल जी और मुरलीधर जी व्यास है, प्रकाशित किये जा चुके हैं। डा० जयशकर जी देवशकर जी शर्मा श्रीमाली ब्राह्मण का प्रस्तुत ग्रन्थ काफी बडा हो जाने से दो भागो मे प्रकाशित किया जा रहा है। इसको पूर्वार्द्ध मे प्रवर्षण, केतुचार, वायु धारणा आदि ४७ प्रकरणों मे विभक्त है और उत्तरार्द्ध मे १२ महीनो के वर्षा ज्ञान सम्बन्धी पद्यों का सानुवाद सकलन है। ग्रन्थ की उपयोगिता के विषय मे दो मत हो ही नहीं सकते क्यो कि भारत कृषि प्रधान देश

है। हमारे पूर्वजों के वृष्टि विज्ञान सम्बन्धी अनुभव से लाभ उठाना बहुत ही जरूरी है। वैसे इस सम्बन्ध में कुछ ग्रन्थ पहले प्रकाशित हुये भी हैं पर अपने ढग का यह विशिष्ट प्रयास अवश्य ही अधिक लाभ-प्रद होगा।

'प्रकृति से वर्षा ज्ञान' नामक इस ग्रन्थ मे कई अनुभवी व्यक्तियो के पद्यों का सग्रह है। जिनमें डक और भड्डली विशेष रूप से उल्लेखनीय है। भड्डली वाक्य की अनेकों प्रतियां हमारे अभय जैन ग्रन्थालय आदि हस्त लिखित ग्रन्थ भडारों मे प्राप्त हैं। मैंने प्राचीन प्रतियो की खोज करके भड्डली वाक्यों का एक सग्रह-ग्रन्थ सम्पादित भी कर रखा है। १५ वी शताब्दी तक की प्रतियो में मुझे 'भड्डली वाक्य' के पद्य प्राप्त हुये हैं। 'भगवद् गो मडल' नामक गुजराती के वृहद् शब्द कोष के अनुसार भड्डली १२ वी शताब्दी मे हुई हैं। पर अभी तक भड्डली वशावलि उतनी प्राचीन प्रति बहुत प्रयत्न करने पर भी मुझे प्राप्त नही हो सकी है। मेघमाल-भड्डली के सम्बन्ध में मेरा एक लेख 'परम्परा' पत्रिका के 'राजस्थानी साहित्य के आदि काल' विशेष अक मे प्रकाशित हो चुका है।

वर्षा-विज्ञान सम्बन्धी अलग कई रचनायें मेरी खोज से प्राप्त हुई हैं, जो हिन्दी और राजस्थानी भाषा मे है। उनमे से कुछ रचनाओं के सम्बन्ध मे मेरा एक लेख 'मधुमति' में प्रकाशित हो चुका है। उसके अतिरिक्त भी कई एक रचनाओं की जानकारी और मिली है जिनके सम्बन्ध में फिर कभी प्रकाश डाला जायगा।

भारत के अलग-अलग प्रान्तों मे इस सम्बन्ध में जो भी साहित्य प्राप्त है उन सब का सग्रह एव तुलनात्मक अध्ययन किया जाना बहुत ही आवश्यक है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध की भूमिका स्व० डा० वासुदेवशरण जी अग्रवाल ने मेरे अनुरोध से लिख भेजी थी। ग्रन्थ का पूर्वार्द्ध तो उस समय छप भी चुका था। पर प्रकाशन में देरी होने से माननीय डा० अग्रवाल जी की विद्यमानता में यह ग्रन्थ प्रकाशित नहीं किया जा सका, इसका मुझे विशेष खेद है।

उत्तरार्द्ध के प्रारम्भिक 'कुछ शब्द' पद्म भूषण माननीय डा० सूर्यनारायण व्यास ने लिख भेजने की कृपा की है। इसलिये मैं उनका भी बहुत आभारी हूँ। श्री व्यास जी भारत के सुप्रसिद्ध ज्योतिष के विद्वान है। डा० अग्रवाल जी और व्यास जी जैसे महान् विद्वानों ने प्रस्तुत ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध पर अपने विचार लिख कर अवश्य ही इस ग्रन्थ का गौरव बढ़ाया है।

ग्रन्थ का मुद्रण अग्रवाल प्रेस, मथुरा मे करवाया गया और इसके संकलनकर्ता डा० जयशकर देवशकरजी शर्मा श्रीमाली ब्राह्मण बीकानेर मे रहते हैं, इसलिए मुद्रण मे काफी देरी हुई एव बहुत-सी अशुद्धियाँ रह गयीं। प्रेस एव श्रीमालीजी दोनों की परिस्थितियों और असुविधाओं के कारण ग्रन्थ के प्रकाशित होने में कई वर्ष लग गये। इधर गत वर्ष इस ग्रन्थ के द्रव्य सहायक दानवीर सेठ सोहनलाल जी दूगड का भी निधन हो गया। यदि उनकी विद्यमानता में इस ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव होता तो अवश्य ही वे इस उपयोगी और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ को देख कर काफी प्रसन्न होते।

डा० जयशकर जी देवशकर जी श्रीमाली ब्राह्मण ने इस ग्रन्थ को तैयार करने में स्वान्तः सुखाय बहुत ही श्रम किया है। इसलिये उनका भी मैं विशेष आभारी हूँ। उनके वर्षों के श्रम को प्रकाश मे लाने का कुछ श्रेय मुझे भी मिला, इसका मुझे हार्दिक सन्तोष है।

आशा है इससे भारतीय जनता काफी लाभ उठायेगी। ग्रन्थ बहुत उपयोगी है, अत इस ग्रन्थ का प्रचार अधिकाधिक होना वांछनीय है।

अन्त मे इस ग्रन्थ की प्रकाशन संस्था राजस्थानी साहित्य परिषद के सम्बन्ध में भी कुछ जानकारी दे देना आवश्यक समझता हूँ। स० २००४ में माननीय नरोत्तमदास जी स्वामी और मुरलीधर जी व्यास कलकत्ता पधारे। तब राजस्थान रिसर्च सोसायटी को नया रूप देकर राजस्थानी साहित्य परिषद नामक सस्था की स्थापना की गई थी। उस समय 'राजस्थानी कहावत' भाग १--२ और 'राजस्थानी (निबन्ध माला) भाग १--२ का प्रकाशन किया गया। उनके मुद्रण, प्रकाशन की सारी व्यवस्था मेरे भ्रातृ पुत्र भवरलाल ने कलकत्ता मे की। जब दानवीर सोहनलाल जी दूगड़ ने ५ हजार रुपये मुझे राजस्थानी साहित्य के उद्धार के लिए दिये तो मैंने इसी सस्था को आगे बढ़ाने के लिये उन रुपयों का उपयोग उपरोक्त ग्रन्थो के प्रकाशन मे इस सस्था के माध्यम से करना उचित समझा। उसी के परिणाम-स्वरूप प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन सम्भव हो सका है।

—अगरचन्द नाहटा

प्रकृति से वर्षा-ज्ञान के विषय में

कुछ शब्द

भारतवर्ष के विभिन्न भागो मे वर्षा-सम्बन्धी विविध-धारणाएँ और विश्वास प्रचलित हैं, उनमे सत्याश है। क्योंकि वे अनुभव पर आधारित है। वायु चक्र और प्राकृतिक लक्षणों का परीक्षण कर जो तथ्य निर्धारित किये जाते हैं, वे प्रायः सही सिद्ध होते हैं। साक्षरो की अपेक्षा साधारण कृषक--जन इस ज्ञान मे विशेष रूप से निपुण होते हैं। अनेक जानकार वर्षा के कई मास पूर्व होने वाली वर्षा के दिन, समय आदि का सफलता पूर्वक सूचन करते हैं। जो बात मैट्रोलोजी के यान्त्रिक साधन द्वारा सुलभ नही होती वह अनुभवियो के पारम्परिक ज्ञान के बल पर निर्दिष्ट की जा सकती है। आज के यान्त्रिक-युग में सरकार और समाज का विशिष्ट-वर्ग इन अनुभवो की अवहेलना करता जा रहा है। खेद है कि यह ज्ञान धीरे-धीरे देश से विलुप्त होता जा रहा है। ऐसे समय में श्री प० जयशंकर जी ने वर्षा सम्बन्धी राजस्थान मे प्रचलित सूक्तियो का सग्रह कर ग्रन्थ रूप में प्रस्तुत करने का जो साहस किया है, वह वास्तव में धन्यवादार्ह है। घाघ और भड्डरी की तरह सग्रहीत ये सूक्तिया भी अपने में विशेषता लिये हुए हैं। ये केवल अनुभव की ही वस्तु नहीं है। इनमें वर्षा-विज्ञान सम्बन्धी पुरातन-आचार्यो ने जो खोज की हैं, प्रयोग किये हैं, और निष्कर्ष निकाले हैं, उनका सुन्दरता से सार सग्रहीत किया है, ये उपेक्षणीय नही है। इनके प्रयोग-परीक्षण की आवश्यकता है। राजस्थान में इतना विशाल-साहित्य उपलब्ध है तो अन्य प्रदेशों में भी उनकी प्राकृतिक अनुकूलता-प्रतिकूलता को लेकर विविध अनुभ्व संग्रहीत हुए होंगे, उनका सग्रह परमावश्यक है। यह,

बहुत महत्वपूर्ण कार्य होगा। घाघ भड्डुरी या राजस्थान की ग्रन्थस्थ-सूक्तियाँ मखौल का विषय नही है। कृषक-समाज उनमें आस्था रख सचाई अनुभव करता रहा है। ज्योतिःशास्त्र में वर्षा और वायु परीक्षण के अनेक प्रयोग प्रस्तुत किये हैं। प्राकृतिक-तत्वों और ग्रह-नक्षत्रो के संचार से उत्पन्न वातावरण के रहस्यों का गहराई से अध्ययन कर उन से परिणाम प्राप्त करने के प्रयास किये हैं। किन्तु हमारा अपना शासन और आधुनिक-ज्ञान जितना अभिनव-विज्ञान एवं उसके प्रयोगो को प्रश्रय देता है, उतना ही सभी पुरातन प्रयोग, ज्ञान और विचारो-अनुभवो को एकान्त अज्ञात-उपेक्षाभाव से ही देखता है। हम सभी नवीन को बुरा नहीं मानते। किन्तु, प्रत्येक पुरातन को भी उपेक्षणीय नही समझते।

सम्राट-विक्रम के समय अवन्ती नगरी मे कर्पूर नामक प्रवीण पंडित रहता था। उसने 'कर्पूर-चक्र' नामक ग्रन्थ की रचना की थी। उससे आने वाले सुकाल-दुष्काल की सूचना प्राप्त हो जाती थी। ज्योतिष मे वृष्टि और वायु-विज्ञान पर वृहद विचार किया गया है। अनेक ग्रन्थो मे वर्णन हुआ है और अनेक अनुभूत प्रयोगो पर प्रकाश डाला गया है। आकाश के बादलो के विविध रंग-रूपो-जातियो और उनसे उत्पन्न प्रभावो का गवेषणात्मक वर्णन किया है। इसी प्रकार से वायु के विभिन्न-स्तरो, विद्युत के प्रकाशो का भी सूक्ष्म अध्ययन किया गया है। कादम्बिनी और बराहमिहिर की संहिता के वर्णित वायु-चक्र, वर्षा और प्राकृतिक-लक्षणो के विवेचन को देखकर आज के वायु-विज्ञानी को भी दाँतो तले अंगुलि दबा लेनी पडेगी। उनके गहन ज्ञान अन्वेषण के समक्ष सादर सिर झुकाना पडेगा।

जिन लोगो ने वैदिक मण्डूक-सूक्त या पर्जन्य-सूक्त को पढ़ा होगा वे यदि उनके मर्म को समझने का प्रयास करे तो ज्ञात होगा कि प्रकृति के लक्षणों का अवलोकन कर सद्योवृष्टि का विचार वेद-कालीन

समाज को पर्याप्त रहा है। ठेठ वैदिक-काल से लेकर अद्यावधि प्राकृतिक लक्षणों के आधार पर वर्षा आदि की अनुभव परम्परा चली आ रही है उसे ही लोक-भाषा और विश्वासो में सरलता से आबद्ध किया गया है। और वह आज के विज्ञान के उत्थान-काल में भी जीवित चली आरही है और समाज को आश्वस्त बनाये हुये हैं। महर्षी-गर्ग, पाराशर, कश्यप, वप्र आदि आचार्यों से लेकर वराहमिहिर तक इस विषय में गम्भीर अध्ययन की परम्परा रही है।

ज्योतिर्विज्ञान के अनुसार कार्तिक शुक्ल-पूर्णिमा से ही वायु-वर्षा-सुभिक्ष-दुर्भिक्ष का परीक्षण किया जाता था और आने वाली वर्षा के विषय में स्पष्ट रूप से स्थिति समझ ली जाती थी एव सावधानी के उपाय किये जाते थे। प्रस्तुत पुस्तक मे ज्योतिर्विज्ञान के आधार पर बनी हुई अनेक सूक्तियाँ यथास्थान भरी हुई मिलती हैं। आकाशीय-चिन्ह प्रकृति पर्यवेक्षण तथा ग्रहो के गगन-सचरण एव उनसे उत्पन्न होने वाली प्राकृतिक-स्थिति के आधार पर निर्भर होने के कारण वे केवल लोक विश्वास पर ही आधारित नही, विज्ञान-सगत भी रही है। आज का वायु शास्त्री केवल अपने दायरे में होने वाले वात-चक्र के यान्त्रिक-प्रभाव का तात्कालिक परिणाम पकड़ने का प्रयास करता है, जब कि गणितागत-ग्रहो की स्थिति और उनसे बनने वाले वातावरण का एक सफल गणनाशास्त्री बहुत समय पूर्व ही परिवर्तनो का प्रभाव-परीक्षण प्रस्तुत कर सकता है। आकस्मिक होने वाले परिवर्तनो एव उत्पादक कारणो का कोई भी यान्त्रिक कैसे पता पा सकता है?

आज का वायु-ऋतु-विज्ञानी मेघमाला के उन शतशः भेदो, विभेदो, वर्णनो, प्रभावो का शायद ही इतना ज्ञान रखता हो जितना पुरा-कालीन आचार्यों ने खगोल की खाक छानकर गहन-अध्ययन और साधनो से जाना था। मैट्रोलोजी के महत्व के समक्ष अज्ञानवश वह अनजाना-सा हो गया है।

वैदिक साहित्य में आज से हजारों वर्ष पूर्व ही यह बतलाया गया है कि सागर आदि से सूर्य अपनी किरणों से पानी ऊपर खींचकर मेघों को प्रदान करता है, सूर्य के तेज से जल के परमाणु सूक्ष्म रूप लेकर ऊपर आकर्षित हो जाते हैं और आकाश मे वायु के परमाणु से मिलकर मेघ का रूप ले लेते हैं। आज से दो हजार वर्ष पूर्व महाकवि कालिदास ने भी मेघदूत मे मेघ के पदार्थ-विज्ञान् का विश्लेषण प्रस्तुत किया है। मेघ, वायु से प्रेरित हो जिस दिशा व देश मे जिस मात्रा में आकर्षित हो जाते हैं, वहाँ उतनी मात्रा मे वर्षण कर देते हैं। जल कब, किस समय कहाँ वर्षण करेगा इसे निमित्त-ज्ञान कहा जाता है और यह भौम, अतरिक्ष और दिव्य रूप में जाना जाता है। देश,मानव, पशु-पक्षी, कीट-पतग, वृक्ष-लता आदि के द्वारा जो वृष्टि-ज्ञान होता है। वह भौम होता है। वात-पित्त-कफ प्रकृति के मानवो की चेष्टाओ से, कीट-भृ ग-पशु-पक्षियो की विशिष्ट-प्रवृत्तियो से स्थानीय-वर्षा का अनुमान किया जाता है। ये अन्ध-श्रद्धा पर आधारित नहीं है। वर्षा की निकटता मे इनकी प्रवृत्तियो में विशेष परिवर्तन होने लगता है, ये सम्वेदन-शील हो उठते हैं, वृहत्सहिता, मयूर-चित्रक, मेघ महोदय, अद्भुत-सागर, वसन्तराज, वृष्टि प्रबोध, उदकार्गल आदि ग्रन्थों मे बहुत विस्तार से इस विषय की चर्चा हुई है और वह महत्वपूर्ण है। जब वर्षा की वायु प्रवाहित नही होती तब मछलियाँ पानी मे नीचे जा बैठती है, मैंढ़क आवाज करने लगते हैं, जब वर्षा आती हो तब बिल्ली नाखूनों से जमीन खोदती है, जग लगे लोहे में बदबू आने लगती है, बच्चे जमीन पर मिट्टी के पुल बनाते हैं, गुफाओ मे वाष्प भर जाती है, चीटियाँ अण्डे लेकर बाहर निकल पड़ती हैं, चिडियाँ धूल में नहाने लगती हैं, जुगनू जमीन पर उड़ने लगते हैं, गायें मकान के अन्दर नही आती हैं, कुत्ते व्यर्थ ही भागने लगते हैं, आदमी अधिक निद्रित होता है—ये चिन्ह वर्षा आने के हैं इन्हे, भौम निमित्त कहा जाता है। इसी

प्रकार अंतरिक्ष-लक्षण होते हैं। वायु का जोर से बहना, मेघों का आकाश में धारण रहना, संध्या को सिंदूरी रंग के बादलों का होना, दिशायें जलती हुई—धूमिल हों, इन्द्रधनुष निकले, वैशाख शुक्ला पंचमी को मेघ छा जाय, गर्जन करे, पानी भी बरस जाय, तो अन्न का संग्रह कर लेना चाहिये, सूर्य के उदयास्त के समय सूर्य के चारो ओर मण्डल बन जाये तो पर्याप्त वर्षा होती है। इस प्रकार वात-चक्र के व्यवस्थित अध्ययन से वर्षा का निर्णय हो सकता है। वर्षा के गर्भ का भी महत्वपूर्ण वर्णन है। उक्त ग्रन्थ में गर्भ-सम्बन्धी शास्त्रीय वर्णन ही लोक भाषा मे वर्णित हुआ है। विद्युत-शक्ति और मेघ के संसर्ग से गर्भ-धारण होता है और ठीक ६॥ मास के पश्चात वर्षा-प्रसव होता है। जिस नक्षत्र पर गर्भ होता है, ६॥ मास के बाद वही नक्षत्र आता है, वर्षा हो जाती है। सावधानी पूर्वक गर्भ-स्थिति का अवलोकन किया जाये तो पूरी वर्षा के महीने, दिन और समय का सही पता चल सकता है। अंतरिक्ष-अध्ययन के और भी विधान हैं जिसे दिव्य-निमित्त कहा जाता है। यह ग्रह—संचार—उदयास्त—वक्र-मार्ग, गति-विधि से सम्बन्धित होते हैं। ग्रहण, अगस्त्योदय, एवं नाडी से यह विचार होता है।

भौम-ज्ञान से एक क्षेत्र विशेष की वर्षा का पता लगता है। अन्तरिक्ष-लक्षणों से प्रदेश की जानकारी होती है। ज्योतिष-शास्त्र में इसकी गहराई से छान-बीन की गई है। वह वैज्ञानिक भी है। जितनी सूक्ष्मता से अध्ययन किया जाये उतनी ही सही जानकारी प्राप्त होती है। मानवीय-ज्ञान और साधना की अपेक्षा जो लोग यान्त्रिक-ज्ञान पर विश्वास रखते हैं तथा अपनी सभी शास्त्रीय एवं अनुभवी बातों को उपेक्षणीय एवं अनजाने ही अन्ध-श्रद्धा की कोटि में रख देते हैं उनके लिये क्या कहा जाय ? क्या ही उत्तम होता कि हमारे वर्षा—वायु—विज्ञान का प्रयोग-परीक्षण कर अनुसंधान किया जाता।

आधुनिक-वायु शास्त्रियों की अपेक्षा हमारे देश के अनेक अपढ़-किसान और ग्रामीण अपने अनुभव-ज्ञान की परम्परा और प्रत्यक्ष-लक्षणों के आधार पर अधिक सत्य को प्राप्त कर लेते हैं। प्रस्तुत पुस्तक इस दिशा में बहुत सहायक हो सकेगी। श्री जयशंकर जी शर्मा ने राजस्थान की वर्षा-विज्ञान सम्बन्धी अधिकांश सूक्तियों का संग्रह कर बहुत ही उत्तम कार्य किया है। मैं उनका अभिनन्दन करता हूं।

डा० सूर्यनारायण व्यास

भारती-भवन
उज्जैन

दि० २१-९-६६

'पद्मभूषण'

प्रस्तावना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् । आ राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायताम् ॥ दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ यजुर्वेद अ० २२ मंत्र २२

हे ब्रह्मन् ! राष्ट्र में ब्राह्मण ब्रह्मवर्चस्वी उत्पन्न हो और क्षत्रीय-वर्ग वीर, धनुर्धारी, नीरोग एव महारथी उत्पन्न हों। गौ दुग्ध देने वाली, बैल भार ढोने वाला अश्व शीघ्रगामी; वनिता रूप-गुण सम्पन्न, रथी जयशील उत्पन्न हो। यजमान का युवा पुत्र सभा-प्रिय एव वीर उत्पन्न हो "समय-समय पर पर्जन्य वर्षा करता रहे।" हमारे लिये ओषधियें फलवती बन कर पकती रहे और हम इस प्रकार से योग-क्षेम का निर्वाह करते रहें।

भारत की बहुमूल्य-निधि वेद के इस एक भाग में की गई मानव हृदय की यह एक प्रार्थना है। जिसमें समय-समय पर पर्जन्य वर्षा करता रहे जिससे हमारी वन-सम्पदा-वनस्पतियें, अन्नादि भली प्रकार से पक कर सृष्टि के प्राणियों को सुख पहुंचावें, कहा है।

भारतीय साहित्य में ऐसा कोई विषय शेष नहीं छोड़ दिया गया है कि जिसके कारण यह अपूर्ण प्रतीत हो। वैदिक-काल के पश्चात् के समय में भी जनपदीय भाषाओं के माध्यम से जन-हितकारी विचार सदा व्यक्त किये जाते रहे हैं जो, हमें खोज करने पर तत्कालीन

प्रचलित भाषाओं के साहित्य में उपलब्ध होते हैं। यहाँ दृढ़ निश्चय के साथ यह कहा जा सकता है कि वर्षा के सम्बन्ध में राजस्थानी साहित्य भी पूर्ण है। हाँ, यह अवश्य है कि पूर्वकालीन राजस्थानी के विद्वानों के वे विचार अब तक अमुद्रित ही हैं। शोध प्रेमियों के सद्प्रयत्न से कुछ सामग्री मुद्रित होकर प्रकाश मे आई है फिर भी यह नगण्य ही है। आशा है शेष सामग्री भी प्रकाश में आजावेगी।

वर्षा समय पर हो इस हेतु प्राचीन काल मे हमारे देश मे घर-घर यज्ञ करने की परिपाटी थी। इसका समर्थन करते हुए शतपथ ब्राह्मण ग्रन्थ का ५।३ बताता है —

"अग्नेर्वै धूम्रो जायते धूम्रादभ्रमभ्राद वृष्टिः।"

यही कारण था कि जब तक वैदिक-काल--आर्षयुग की परम्परा चलती रही हमारे देश मे अकाल नही पडता था। यदि अपवादरूप से अब कभी ऐसा हुआ भी तो वह आर्ष परम्परा एव वैदिक संस्कृति के घातक व्यक्तियो के शास्त्र विपरीत कार्य-कलापो के कारण ही। भारत-भूमि तो सदैव शस्य-श्यामला ही रहती आई है। भारतीय ऋषियो ने तो 'भूमिर्माता पुत्रो ह पृथिव्या.','माता भूमि' पुत्रोऽह पृथिव्या.' पृथिवी हमारी जननी है और हम इसके पुत्र हैं, माना है। राजस्थानी मे भी भूमि की महत्ता को स्वीकार किया जाकर पूर्वकाल से ही इसे जो महत्व दिया गया है वह निम्न पक्ति से स्पष्ट हैं .—

'धरती माता धरती पिता धरती करे जीव री रक्षा।'

इससे भली भाँति ज्ञात हो जाता है कि राजस्थानी साहित्य मे भूमि को कितने आदर और सम्मान का स्थान दिया गया है। वास्तव में यह सम्मान एव आदर तथ्योचित ही है। वर्षा और भूमि का परस्पर क्या सम्बन्ध है, इस पर भारतीय साहित्य में पर्याप्त वर्णन आया है। भारतीयेतर विद्वान भी अपने साहित्य में इस विचार की पुष्टि करते हुए बताते हैं कि पृथ्वी पर इसका प्रभाव किस रूप मे

पड़ता है। इस सम्बन्ध में अंग्रेजी के विद्वान् हाम्सवर्थ, अपनी पुस्तक 'हाम्सवर्थ हिस्ट्री आफ दी वर्ल्ड' में नर से नारायण तक बन जाने वाले मानव की शक्ति का निम्न शब्दों में उल्लेख करते हुए बताते हैं कि, 'वर्षा में न्यूनाधिकता उत्पन्न कर देना मानव के हाथ की करामात है। यदि वर्षा कम करना हो तो जगलो को काट दीजिये और यदि वर्षा अधिक बरसाना हो तो जगलो को लगा दीजिये। जैसे-जैसे जगल कटते जाते हैं वैसे-वैसे वर्षा कम होती जाती रहती है जिसके परिणामस्वरूप, स सार से जल सम्बन्धी आर्द्रता नष्ट हो रही है।'

पृथिवी फलवती तभी होगी जब समय पर वर्षा होती रहे। दुर्भाग्य से भारत पारस्परिक फूट के कारण भूतकाल मे विदेशियो द्वारा पदाक्रान्त होता रहा और एक लम्बी अवधि तक पराधीन रहा। तत्कालीन विदेशी शासकों ने अर्थ-शोषण ही अपना लक्ष्य रखा। इसलिये हमारा देश समृद्धिशाली एव सुखी बनने की अपेक्षा दिनो दिन अवनत होता गया। यवन-काल मे सत्ता-हथियाने हेतु गृह-युद्ध होते रहे। अत. उस समय इस ओर यथोचित ध्यान देने का किसी को अवसर नहीं मिला। चतुर अग्रेजो ने अपने शासन-काल मे यहाँ शिक्षा का प्रचार अवश्य किया, किन्तु साथ ही साथ भारतीयो को भौतिक-सुख में लिप्त करने हेतु यहाँ की वन-सम्पदा का नाश ही किया। हजारो मील लम्बी रेलवे-लाइन, सैकडो ही नही हजारो कारखाने स्थापित कर जगल के जगल कटवा दिये और मानव को भौतिक सुखो को मोह मे फंसाकर पशु बना दिया। इस मशीनी-युग मे व्यक्ति, बेकार हो गया। भूमि का अधिकाश भाग जिस पर हम अन्न उत्पादन किया करते थे, इन कल-कारखानो एव रेल के नीचे दब गया। अग्रेजों ने भारत को साधन सम्पन्न-हीन बनाने में अपनी ओर से कोई कसर नही छोड़ी। बर्मा, लका आदि जो किसी समय में भारत के ही अङ्ग थे, पृथक कर दिये गये। यहाँ तक कि शेष भारत की उपजाऊ भूमि (जैसे बगाल, आसाम

में चावल, सिन्ध-पंजाब मे गेहूँ आदि उत्पन्न करने वाली भूमि) के टुकडे कर, जाते-जाते पाकिस्तान का निर्माण कर दिया। यद्यपि, वर्तमान में हम स्वतन्त्र अवश्य हैं परन्तु अन्न की समस्या ने हमें परमुखापेक्षी भी अवश्य बना दिया है।

पिछले कुछ वर्षों से भारतीय नेता—शासक-वर्ग ने अकाल निवारणार्थ वन-महोत्सवो का प्रति वर्ष आयोजन प्रारम्भ किया है। जो अंग्रेज विद्वान हाम्सवर्थ की स्पष्टोक्ति का रूप ही है। तदनुसार वन ही वर्षा को आकर्षित करते हैं और वर्षा द्वारा ही कृषि—अन्नोत्पादन सम्भव है।

वर्षा-विज्ञान के ज्ञाताओ ने राजस्थानी भाषा मे अपने अनुभव को किस प्रकार से भर दिया है यह पाठको को इस ग्रन्थ के पूर्वार्द्ध एवं उत्तरार्द्ध का अवलोकन तथा मनन करने से स्पष्ट हो जावेगा। ज्ञान सदैव असीम रहा है। इसकी कोई सीमा नही बान्धी जा सकती है। प्रस्तुत ग्रन्थ में वर्षा सम्बन्धी सम्पूर्ण ज्ञान भर दिया गया है, मेरा यह दावा नही है। क्योकि ज्ञान प्रान्तीयता की सीमाओ को भी लाँघकर आगे बढ जाता है। इसीलिये इसकी सीमा बान्धी नही जा सकती। भारत मे प्रचलित विभिन्न प्रान्तीय भाषाओ मे भी एतद्विषयक विचार उपलब्ध हो जाते हैं। किन्तु इन विभिन्न भाषाओ में व्यक्त विचारो का आधार एक समान ही होता है। पाठको की जानकारी के लिये यहाँ कतिपय उदाहरण संस्कृत, गुजराती और राजस्थानी उक्तियो के दिये जा रहे हैं।

संस्कृत :—

'यद भवति कदाचित् कार्तिके नष्ट चन्द्रे,
रवि शनि कुजवारे स्वाति युक्तेषु तेषु।
नृप युगल विनाश भूधरे पर्वता ना,
गज तुरग महर्घ्यं गुर्व्विणी गर्भपातः॥'

—भड्डलीपुराण हस्तलिखित प्रति, विक्रमाब्द १८१७

गुजराती :—

'जुओ जोषी कार्तिक अमास,
रवि शनि भोमे जो वास।
स्वाति योग आयुष ते पास,
काल करावै नासानास ॥'

—भड्डुली वाक्यो।

राजस्थानी :—

'मावस कातीमास की, शनि मगल जे आवै।
अन्नज मूंघो होवसी, अग्नि घोर लगावै ॥
रविवार ने आ जाय तो, लड़ै राजवी लोग।
परजा दुखी हरभात सूं, भोगे दुख का भोग ॥'

सस्कृत .—

'यदि व्रजति शशार्कं मण्डल उष्णरश्म.,
रवि शनि कुजवारे, पोषमासे कुहुर्व्यात्।
द्विगुण दहन वेदै .रभ तुल्यं च धान्यं,
गुरु भृगु बुधवारे, मृतका तुल्यमन्ने ॥'

— हस्तलिखित भड्डलीपुराण।

'अण्डजै बाध्यते सश्य, मूषकैः शलभैः शुकैः।
अमावास्या तु पौषस्य, शनि सूर्य मही सुताः ॥'

— हस्तलिखित मेघमाला श्लोक ४०

गुजराती :—

'शनि आदित्य ने मगले, पौष अमासे होय।
बमणा त्रमणा चौगणा, धान्य मोघा होय ॥'
सोम शुक्र ने सुरगुरु, पौष अमासे होय।
घरघर होय बधामणा, दुखीन दीखै कोय ॥

भड्डुली वाक्यो।

राजस्थानी :—

पौष वदी मावस दिनां, रवि शनि मंगलवार।
परजा मे भौ ऊपजे, धान तेज निरधार॥
दीत शनि अर मंगले, पोषी मावस होय।
बिमणो तिमणो चोगुणो धानज मू घो होय॥

'सोम गुरु बुध सुक्कर वारे,
पोसी मावस करो विचारें।
अन्न घणो व्हे, लेवे ना कोई,
जो लेवे तो घाटो होई॥'

सस्कृत :—

'वर्षते माघ मासे तु सक्रातौ माधवौ यदा।
बहुक्षीरा स्तथा गावौ बहु धान्या वसुन्धरा॥

— हस्तलिखित मेघमाला श्लोक १.

राजस्थानी —

माघा सक्राति के दिना, जे विरखा हो जाय।
धेन पय बरसावसी, करसा ने सुख थाय॥

सस्कृत :—

पौष मासे श्वेत पक्षे शतभिक्षं मेवच॥
अश्लेषा पचमी चैव, अष्टमी सयुता तथा।
विद्यं मेघ समायुक्त, गर्भं चैव प्रजायते
आषाढ़े कृष्ण पक्षेतु चतुर्थ्या वर्षते ध्रुवम्।
द्रोण संख्याच विज्ञेया, सप्तरात्र प्रवर्षति॥

—हस्तलिखित मेघमाला श्लोक ८, ९, १०।

राजस्थानी .—

'पौस मास की पंचमी, पख उजाले होय।
वायु बादल बीजली, रिछ शतभिखा के होय॥

गरभ रह्यो विरखा तणो, वायु सास्तर बतावं।
कृष्ण अषाढ़ी चौथ सूं सात रात बरसावै ॥'

वर्षा-ज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिये यह आवश्यक है कि वर्षा के उन चार निमित्तों को भी समझा जाय। इसलिये वर्षा का भविष्य बताने वालो को इन चार निमित्तों के माध्यम का ज्ञान होना आवश्यक है। वे चार निमित्त निम्न हैं :—

भौम, अन्तरिक्ष, दिव्य और मिश्र।

भौम :—देश, मनुष्य, पशु-पक्षी, कीट, पतग प्रभृति भौतिक वस्तुओं द्वारा वर्षा का ज्ञान, भौम या भौतिक निमित्त कहा जाता है।

अन्तरिक्ष :—अन्तरिक्ष के साधन-वायु, बादल, बिजली (विद्युत), गर्जन-तर्जन, सध्या, दिग्दाह, प्रतिसूर्य, तारा, सूर्य-चन्द्र के कुण्डल, आन्धी, गन्धर्व नगर, इन्द्र-धनुष एव वायु धारणा आदि के द्वारा वर्षा ज्ञान, आन्तरिक निमित्त कहा जाता है।

दिव्य :—सूर्य-चन्द्र ग्रहण, पुच्छलतारे एव सूर्य के चिन्ह, सप्तनाड़ी-चक्र, ग्रहो का उदय होना एव अस्त होना, संक्रान्ति आदि के द्वारा वर्षा ज्ञान, दिव्य निमित्त कहा जाता है।

मिश्र :—कार्तिक से आश्विन तक के बारह महीनो के प्रत्येक दिनों के तथा विशेष रूप से मुख्य-मुख्य शकुन यथा अक्षय-तृतीया, आषाढी-पूर्णिमा, होलिका, आदि आदि प्रसगों पर उपर्युक्त चिन्हों द्वारा वर्षा ज्ञान, मिश्र निमित्त कहा जाता है।

उपरोक्त चारो निमित्तो में भौम की अपेक्षा अन्तरिक्ष और अन्तरिक्ष की अपेक्षा दिव्य इस प्रकार से उत्तरोत्तर एक दूसरे से अधिक बलवान होते हैं। बताया गया है कि, भौम निमित्त का फल अधिकतर थोडी ही दूर तक, अन्तरिक्ष का फल एक जिले तक, दिव्य का फल एक प्रान्त किम्वा प्रदेश तक और मिश्र का फल सर्वत्र होता है।

प्राय: आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य आते ही वर्षा हो जाने की आशा हो जाती है, और कृषक इस आशा से कि वर्षा होगी ही उसे यदि कहीं अन्यत्र जाना भी होता है तो वह अपनी यात्रा स्थगित कर देता है। परन्तु इस अवसर पर वायु प्रवाहित हो जाय तो वर्षा की आशा धूमिल हो जाती है। ऐसे अवसर का यात्रार्थी के लिये भड्डली ने सूत्र रूप से जो सकेत दिया है वह, गुर्जर-गिरा (गुजराती भाषा) में इस प्रकार से व्यक्त किया गया है '–'आदरा वावा, जवाय तेटले जा। अर्थात् जब तक सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर है और वायु प्रवाहित रहेगा तब तक वर्षा नही होगी। अतः हे यात्री ! इन दिनो मे तुम आनंदपूर्वक यात्रा कर सकते हो।

वर्षा-विज्ञान के ज्ञाताओं ने जहाँ आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य हो तब वायु का प्रवाहित होना उचित नही माना है वहाँ, इसी वायु को जब सूर्य मृगशिरा नक्षत्र पर हो तब इसके प्रवाहित होने को आवश्यक एवं शुभ लक्षण माना है। वे यहाँ तक मानते हैं कि यदि इन दिनो में वायु प्रवाहित न हो तो आगामी वर्षा-काल मे वर्षा का अभाव रहेगा।

जिन दिनों में सूर्य मृगशिरा नक्षत्र पर हो उन दिनो मे ऊष्मा से पूरित प्रचण्ड वायु का प्रवाहित होना परमावश्यक है। इसके प्रवाहित होने से ही अम्ल-रस में मधुरता उत्पन्न होती है। यही कारण है कि, आम, बैर आदि अम्ल फलो मे मीठापन उत्पन्न होता है। इसी प्रचण्ड उष्ण-वायु के प्रभाव से ही यदि कोई कुयोग बाधक न हो तो आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य आते ही वर्षा हो जाने की आशा बध जाती है। भड्डली ने इस प्रसंग को आलकारिक भाषा में इस प्रकार से व्यक्त किया है :—

'मृगशिर न वाया वायरा, आदरा न वूठा मेह।
जोवन न जायो बेटड़ो, तीनूं हार्या एह॥'

भड्डली का यह कथन कितना भावपूर्ण एव स्पष्ट है कि कृषि के लिये जब मृगशिरा नक्षत्र पर सूर्य हो तब प्रचण्ड-वायु चलना चाहिये,

तर्भी आर्द्रा नक्षत्र पर सूर्य के आने पर वर्षा होगी। अन्यथा युवावस्था में पुत्रोत्पादन न होने से जो दशा गृहस्थी की होती है, वही कृषि की होगी। इसका तात्पर्य यह है कि, बिना मृगशिरा नक्षत्र के वायु के वर्षा-काल का चातुर्मास नहीं जम सकता। यदि आर्द्रा में वर्षा न हो तो कृषि हेतु बीज बोने का समय व्यतीत हो जाता है। कदाचित आर्द्रा नक्षत्र के व्यतीत हो जाने के पश्चात वर्षा हो तो कृषि की वही स्थिति होती है जो अवस्था युवावस्था पार कर लेने के पश्चात पुत्र प्राप्त होने पर होती है। अर्थात् वह पुत्र, पिता की वृद्धावस्था में जिस प्रकार से यथोचित सेवा करने योग्य (वयस्क) नही हो पाता, उसी प्रकार से इस वर्षा का अन्न भी यथोचित उत्पादन न होने के कारण लाभदायक नही होता है। इसीलिये भड्डरी ने इन तीनो को एक समान ही बताया है।

वर्षा आने का पूर्व ज्ञान न तो केवल बिजली से ही हो पाता है और न वायु आदि से ही। इसके लिये तो अनुभव एव ज्ञान की आवश्यकता रहती है। आकाश बिलकुल स्वच्छ होते हुए भी वर्षा की भविष्यवाणी की जा सकती है। एतदर्थ बिजली किस दिशा मे चमक रही है, वायु किस दिशा से प्रवाहित हो रहा है, इनके साथ अन्य क्या-क्या लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे हैं, इन सभी का भली भांति अध्ययन करने पर ही सही निर्णय किया जा सकता है। यहाँ घाघ की एक उक्ति देकर इसकी पुष्टि की जाती है। पाठक अनुमान लगालें कि इस सम्बन्ध मे घाघ का भी कितना गहन अध्ययन था।

'उत्तर चमके बीजली, पूरब वैव्है वाव।
हू कहु तुझने भड्डली, बलद मांयने लाव॥'

इससे यह निश्चित हो जाता है कि, यदि उत्तर दिशा में बिजली चमकती हो उस समय पूर्व दिशा से वायु प्रवाहित हो रहा हो तो चाहे आकाश स्वच्छ क्यों न हो, इस लक्षण से वर्षा अवश्य आवेगी।

राजस्थानी उक्ति 'ईशानी बीसानी' का भी वर्षा-विज्ञान में एक महत्व है। गुर्जर-गिरा (गुजराती भाषा) में यह 'काका बीजली ईशाणी, मत्रीजा नांणा कोथली वीसाणी' एक कथोपकथन के रूप में प्रचलित है। हो सकता है कि राजस्थानी में यह उक्ति इस उपरोक्त कथोपकथन का संक्षिप्त रूप ही हो। इस उक्ति के साथ एक कथानक जुड़ा हुआ पाया गया है। बताया जाता है कि, गुजरात प्रदेश के किसी गाँव मे अकाल होने के कारण एक चाचा (जिसे गुजराती मे काका कहते हैं) अपने भतीजे को लेकर पास के किसी शहर मे अन्न खरीदने हेतु गये थे। व्यापारी से दर मोलाई तय हो जाने के बाद जब अनाज तोला जा रहा था उस समय भतीजे ने आकाश मे ईशान दिशा की ओर बिजली चमकती हुई देखकर अपने चाचा का ध्यान इस ओर आकर्षित किया। चाचा, वर्षा-विज्ञान का ज्ञाता था। अतः उसने इस सकेत को समझकर उत्तर दिया कि 'कोई हर्ज नही है। मै नाणा-कोथली (रुपयो की थैली) जिसे राजस्थानी में नोली भी कहते हैं, और लोग यात्रा के समय अपनी कमर में बाँधकर रुपये ले जाया करते हैं, लाना भूल गया कहकर माल नही उठाऊंगा।' अर्थात् ईशाण-दिशा में बिजली का चमकना भी वर्षा के आगमन की एक निश्चित अग्रिम सूचना है।

जिस प्रकार से वर्षा आगमन की अग्रिम सूचना से सबधित उपरोक्त उदाहरण दिये हैं, उसी प्रकार से अवर्षण-योग (वर्षा नही होना) भी है। परन्तु इस प्रकार के अवर्षण-योग के पश्चात भी कोई ऐसा प्रसग आ जाता है जिसके कारण इससे पूर्व के अवर्षण-सूचक कुयोगो का स्वयमेव शमन हो जाता है। वर्षा-विज्ञान की जानकारी रखने वाले व्यक्ति को ऐसे प्रसंग भी ध्यान में रखने चाहिये। प्रस्तुत ग्रन्थ मे इस पर भी लिखा गया है। जैसे :—

'असनी गलिया अन्न विनासै, गली रेवती जल ने नासै।
भरणी नास तृण रो सही, वरसै जो कृतिका नही॥'

इस उक्ति मे वर्षा होने पर अकाल हो जाने की सम्भावना व्यक्त करते हुए इस प्रकार के कुयोगों को नष्ट कर देने वाले योग का भी वर्णन आ गया है। इसमें बताया गया है कि अश्विनी नक्षत्र पर सूर्य हो और वर्षा हो जाय तो उस वर्ष अन्न का नाश होगा। रेवती नक्षत्र पर सूर्य हो और वर्षा हो जाय तो इसके प्रभाव से उस वर्षा-काल के चातुर्मास में जल का नाश (अभाव) रहेगा। कदाचित भरणी नक्षत्र पर सूर्य हो उस समय वर्षा हो जाय तो यह योग, तृण-नाशक योग होने के कारण उस वर्ष घास भी उत्पन्न नहीं होगी। किन्तु इतने या ऐसे कुयोगों के होने पर भी यदि कृतिका नक्षत्र पर सूर्य आ जाने पर वर्षा हो जाय तो उन समस्त कुयोगों का प्रभाव नष्ट होकर वर्षा हो जाती है। इसीलिए तो राजस्थानी में सूत्र-रूप से यह व्यक्त किया गया है कि "किरती एक झबूकड़ो, ओगण बह गलिया।" इसका साराश यह है कि कृतिका नक्षत्र पर सूर्य हो और आकाश मे बिजली की चमक मात्र दिखाई दे तो यह निश्चय हो जाता है कि, अब वर्षा हो जायेगी। क्योंकि अवर्षण के पिछले कुयोग इस लक्षण द्वारा नष्ट हो गये हैं।

यदि कृतिका नक्षत्र पर सूर्य होने पर वर्षा न हो तो रेवती, अश्विनी और भरणी पर सूर्य आने पर वर्षा होने का जो सारे वर्ष पर कुप्रभाव पड़ेगा, बताया गया है वह, यथावत् कुयोग का फल देगा— यह निश्चित है।

इस वर्षा-विज्ञान की विशेषता, वर्षा के गर्भ-काल के लक्षणो पर से छह मास पूर्व ही वर्ष का—वर्षा का—भविष्य बता देना है। एतदर्थ प्रमाणस्वरूप एक उक्ति यहां दी जाती है :—

चैत्रै दसमी दिन जो बादल बीजल होय।
भड्ली तो एमज भणे, गर्भ गल्यो सहुकोय॥

चैत्र मास की दसमी (अर्थात् चैत्र मास के अधिकांश भाग २४ दिन मे) को आकाश निर्मल प्रतीत हो तभी आगामी वर्षा-काल

कर्त्ता भी मानते हैं । इसलिए शुक्लपक्ष की आदि से मास प्रारम्भ माना जाना ज्योतिष सम्मत है ।

वर्षा-विज्ञान शास्त्र इस विषय में स्पष्ट है जो निम्न पंक्तियों से सिद्ध होता है :-

एतेन ज्योतिः शास्त्रोक्त मासश्चैत्र सितादिने ।
कथितं तत्प्रमाण स्यान्मेघमालाविदा पुनः ॥

पृ० २४६ श्लोक ६८

फाल्गुनान्त कथनात् फाल्गुनामावस्या चैत्रशुक्ल प्रतिपत् संयोगस्य

श्री हीरविजयसूरिकृत मेघमाला (मेघमहोदय पृ० २५७)

पुरि उजुआलो पक्खडो, पिछं अन्धारो होइ ।
इसपरि जोइसर्गाण सदा, मकरिस सासो कोइ ॥

पृ० २४६ श्लोक ६६

अर्थात् ज्योतिष शास्त्रो मे मास गणना चैत्र शुक्ल पक्ष से मानी गई है । मेघमालाकार भी इसी प्रमाण का आधार लेते हैं । लोक भाषा में भी इसी मत की पुष्टि की गई है, जो उपरोक्त उद्धरणों से स्पष्ट है ।

प्रकृति से वर्षा-ज्ञान का पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध साहित्य प्रेमियों तक पहुचाने का श्रेय श्री अगरचन्द जी नाहटा और संचालक अग्रवाल प्रेस, मथुरा को है । श्री नाहटा जी ने इस हेतु अर्थ की योजना की और अग्रवाल प्रेस मथुरा ने इसे मुद्रित करने में सहयोग दिया । मैं इन महानुभावो का पूर्ण आभारी हूं । क्योंकि बिना अर्थ एव सहयोग के वर्तमान युग में कोई कार्य सम्पन्न होना कठिन है, जिसमें मेरे जैसे व्यक्ति का, जिसका कार्य-क्षेत्र केवल चिकित्सालय एव रोगियों तक ही सीमित हो ।

मैं श्री अगरचन्द जी नाहटा का विशेष आभारी हूँ कि आपने मेरे इस प्रयत्न को मेरी अन्य पाण्डु-लिपियों में से जो मुद्रण के अभाव में बस्ते में ही बन्द पड़ी है इसे पृथक करा, जन-साधारण एव राजस्थानी साहित्य-प्रेमियों तक पहुंचाने मे मुझे सहयोग दिया।

मुझे विश्वास है कि प्रकृति से वर्षा-ज्ञान पूर्वार्द्ध एव उत्तरार्द्ध, दोनों वर्षा-ज्ञान प्रेमियों एव राजस्थानी साहित्यकों के लिये एक सग्रहणीय ग्रन्थ माना जाकर उचित आदर अवश्य प्राप्त कर लेगा।

जयशंकर देवशंकर जी शर्मा वैद्य विशारद
एफ एस आर. आई , बीकानेर

जन्माष्टमी, विक्रमाब्द २०२६
राजस्थान महिला चिकित्सालय,
सोनगिरी मार्ग, बीकानेर, राजस्थान।

प्रकृति से वर्षा ज्ञान : उत्तरार्द्ध :

की

अनुक्रमणिका

चैत्र मास शुक्ल पक्ष :—

वैशाख मास कृष्ण पक्ष :—

ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष :—

भाद्रपद मास कृष्ण पक्ष :—

आश्विन मास शुक्ल पक्ष :—

फाल्गुण मास शुक्ल पक्ष :—

प्रकृति से वर्षा-ज्ञान

उत्तरार्द्ध

चैत्र—मास शुक्ल पक्ष

(१)

चैत सुदी पडवा दिना, गाज बीच हो मेह ।
सावरण भादू मायने, मेह देवेलो छेह* ।।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को आकाश मे बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके, वर्षा हो जाय तो आगामी वर्षा काल के श्रावण-भाद्रपद महीनो मे वर्षा नही होगी ।

(२)

चैत सुदी पडवा दिना, जे ती रेवत होय ।
ते ती विरखा होवसी, चौमासे लीजो जोय ।।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र जितनी घडी होगा आगामी वर्षा काल मे उसी के अनुसार अधिक घडियें होने से अधिक और कम होने से कम वर्षा होगी ।

---

* नोट —ऐसा प्रसग भारतवर्ष मे कुख्यात वर्ष विक्रम सम्वत् १९५६ मे आया था ।

(३)

पडवा समेत दिन चार तलक, चैत सुदी के मांय ।
जे विरखा हो जाय तो, चार मास बरसाय* ॥

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से चतुर्थी तक यदि वर्षा हो तो आगामी वर्षा काल मे के चारो महीनो मे वर्षा होगी ।

(४)

दुतिया सू पाचम तलक, चैत सुदी के माय ।
पूरब उत्तर को वायरो, आछो मेह कराय ॥

चैत्र शुक्ला द्वितीया से पचमी तक पूर्व अथवा उत्तर दिशा का वायु हो तो आगामी वर्षा काल मे अच्छी वर्षा होगी ।

---

* इसके विपरीत—

एकम दूज चैत्र सुद बरसै । तो आषाढां मेह नहि दरसै ॥
तीज चौथ जे पाणी पडे । तो श्रावण माहि बून्द न झडे ॥
पाचे छठ भादवडो जोय । सावत्य आठ्यू आसोजी होय ॥
नम दस्सम माहोटा हाण । माघा गरभ गल्या यू जाण ॥

एक मास के दोय दिन, दोऊ पखवाडा जाण ।
एक अन्धारो पख लखि, दूज सुकल परमाण ॥
दूज सुकल परमाण, आषीड सू आणीजै ।
ईण विध पाचू मास, दिवस दसू जाणीजै ॥
जे घडिया जिण तिथ्य री, पिरथी बरसै पाणी ।
तेता दिन उण पक्खरा, गरभ गलया इमि जाणी ॥
दस दिन मे जिण दिन्न री, जित्ती घडी गल जाय ।
उत्ता दिन उणपक्ख गरभ, गलया नीर नहि थाय ॥

(५)

चैत सुदी पाचम दिने, दिक्खरण पूरब वाय।
थोड़ी विरखा होय तो, भादू तेज बिकाय॥

चैत्र शुक्ला पचमी को दक्षिण-पूर्व का वायु हो और इस दिन थोडी वर्षा हो जाय तो भाद्रपद मास मे अन्न का भाव तेज होगा।

(६)

चैत्र सुदी पाचम दिनां, नखत रोहणी जे आवै।
तो चौमासे विरखा घणी, ऐसो जोग बतावै॥
इण दिन जे आदरा मिले, धान तेज हो जाय।
सावण मे विरखा हुवै, ऐसो जोग बताय॥

चैत्र शुक्ला पचमी को रोहणी नक्षत्र हो तो आगामी वर्षा काल के चारो महीनो में वर्षा बहुत होगी। कदाचित इस दिन आर्द्रा नक्षत्र हो तो अन्न महँगा होगा और श्रावण मे वर्षा होगी।

रोहणी नक्षत्र (तारे) से वर्षा-ज्ञान

(७)

चौथ पाचम चैत सुद, रोहणी लेवो जोय।
चन्दा सू लकाऊ हुया, सिरे जमाने होय॥
धूराऊ दुर्भिक्ष रोग, आथूणी भौ बतावै।
पूरब मे मध्यम हुवै, ऐसो जोग जतावै॥

चैत्र शुक्ला चतुर्थी, पचमी की रात्रि मे आकाश मे रोहिणी नामक तारा, चन्द्रमा से दक्षिण की ओर हो तो आगामी वर्ष सुभिक्ष होगा। उत्तर की ओर हो तो दुर्भिक्ष एवं रोग फैलेगा। इसका पश्चिम की ओर होना भयोत्पादक एव पूर्व में होने से फसल मध्यम होगी।

(८)

तीज पाचम दोय दिन, चैत सुदी के मांय ।
ईशाण कूण को वायरो, आछो धान कराय ।।
जे नेऋत हो जाय तो, धान न निपजै कोय ।
हा हा कार परजा करे, दुभिख लेवो जोय ।।

चैत्र शुक्ला तृतीया और पचमी इन दो दिनो मे ईशान कोण का वायु हो तो आगामी फसल पर अन्न अच्छा होगा । दुर्भाग्य वश इस दिन नैऋत्य कोण का वायु हो तो किसी प्रकार का अन्न उत्पन्न न होने के कारण दुर्भिक्ष होने से प्रजा हा हा कार करेगी ।

(९)

दूज सहित पाचम तलक, चैत सुदी के माय ।
चारू दिन ए वरस का, वायु धारण केहवाय ।।
दिन गिणीजे मास जिम, चौमासो लौ जोय ।
बादल विरखा दूज वे, (तो) मेह सावण मे होय ।।
तीज वाय उगूण को, आभे बादल ना आय ।
चौथ लकाऊ वायरो, बादल पूरब आय ।।
पाचम वाय धुराऊ हुया, आभे बादल ना होय ।
कार्तिक मे बिरखा हुवै, क्रम सू महिना जोय ।।

चैत्र शुक्ला द्वितीया से पचमी तक इन चार दिनो को चार मास के लिये वायुधारक मान कर क्रमश महीनो को समझे । द्वितीया को बादल एव वर्षा हो तो श्रावण मे वर्षा होगी । तृतीया को वायु पूर्व का हो और आकाश मे बादल नही हो तो भाद्र-पद मे वर्षा होगी । चतुर्थी को वायु दक्षिण का हो और बादल पूर्व से

आवे तो आश्विन मे वर्षा होगी। पचमी को वायु उत्तर का हो साथ ही आकाश मे बादल न हो तो कार्तिक मे वर्षा होगी।

(१०)

चैत सुदी जे पचमी, घटाटोप छा जाय।
सग्रह गेहूँ को करो, श्रावण लाभ कराय॥

चैत्र शुक्ला पचमी को आकाश मे बादलो की घटाएँ छा जाय तो गेहूँ की फसल पर इन्हे सग्रह कर लेना चाहिये। आगामी श्रावण महीने मे ये (गेहूँ) लाभ दिलावेंगे।

(११)

चैत सुदी पाचम दिने, जे बिरखा हो जाय।
तौ चौमासे सायबा, बिरखा अलप कराय॥

चैत्र शुक्ला पचमी को वर्षा हो जाय तो चौमासे मे वर्षा काल मे वर्षा कम होगी।

(१२)

चैत्र सुदी पाचम दिना, गुरु शनि जे होय।
जल तगी दुरभिक्ख हुवै, क्रम सू लीजो जोय॥

चैत्र शुक्ला पचमी के दिन गुरुवार हो तो आगामी वर्षा काल मे जल की कमी, शनिवार हो तो दुर्भिक्ष होगा, ऐसा समझें।

(१३)

पाचम सातम के दिना, चैत सुदी के माय।
बिरखा दरशण देय तो, आगे परचण्ड वाय॥

चैत्र शुक्ला पचमी और सप्तमी के दिन वर्षा (बादल) के दर्शन हो जाय तो आँधियाँ आवेंगी।

(१४)

चैत सुदी सातम दिनां, जे विरखा आ जाय ।
चौमासो सूखो रहै, ऐसी जोग बताय ।।

चैत्र शुक्ला सप्तमी को यदि वर्षा आ जाय तो आगामी वर्षा काल मे चारो महीनो मे वर्षा नहीं होगी ।

(१५)

आठम नौमी चैत सुद, मेह बीज जे होय ।
काल पड़ेलो बी दिशा, जी दिश ऐडो जोय ।।

चैत्र शुक्ला अष्टमी, नौमी को जिस दिशा मे वर्षा हो, बिजली चमके उस दिशा मे आगे चल कर अकाल पडेगा ।

(१६)

नव दिन कहिजे नौरता, सुकल चैत के मास ।
जल बूठै बिजली हुवै, जाणो गरभ विणास ।।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नोमी तक जो नौरता-नवरात्रि कहे जाते हैं, इन दिनो मे जल बरसे, बिजली चमके तो समझ लेना चाहिये कि, प्रकृति के उदर मे पोषण पाता हुआ वर्षा का गर्भ नष्ट हो गया । अर्थात् आगामी वर्षाऋतु मे वर्षा का अभाव रहेगा ।

(१७)

चैत्र शुक्ल दस दिवस मे, गरजै बरसै तोय ।
कार्तिकादि माघान्त का, गरभ गल्या यू जोय ।।

चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ के दश दिनो मे आकाश मे बादलों की गर्जना हो, मेह बरसे तो इन लक्षणो से यह समझ लेवें कि, कार्तिक से प्रारम्भ होकर चार महीनो के जो गर्भ हैं वे नष्ट हो गये हैं ।

(१८)

चैत मास उजाले पख। नव दिन बीज लुकोई रख ॥
आठम नम नीरत कर जोय। जा बरसै ता दुरभिख जोय* ॥

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक यदि बिजली की चमक आकाश मे न दीखे—(अष्टमी और नवमी को तो विशेष ध्यान पूर्वक देखना चाहिये) और कदाचित कही वर्षा हो जाय तो जहाँ वर्षा होगी वहाँ दुर्भिक्ष होगा।

(१९)

दस नक्षत्तर चैती तणा, बादर बीजुरी होय।
भद्रबाहु गुरु यू कहै, गरभ गल्या सब जोय ॥

जैन धर्मानुयायी श्री भद्रबाहु गुरु का कथन है कि चैत्र शुक्ल पक्ष के प्रारम्भ के दश नक्षत्रो मे यदि बादल, बिजली हो तो वर्षा के गर्भ नष्ट हो गये।

---

* इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तिये भी मिली हैं—

१ चैत मास उजियाले पाख। आठ दिवस वरखता राख ॥
नवे दिना जित बिजुरी होय। ता दिशि काल हलाहल होय ॥

२ चैत मास उजियाली पाख। आठे दिवस बरसती राख ॥
नव बरसे बीजल होय। ता दिशि काल हलाहल होय ॥

चैत्र शुक्ला अष्टमी के दिन आंधी आकर आकाश मे से मिट्टी-राख बरसे और नवमी के दिन जिस दिशा मे बिजली की चमक एव वर्षा दिखाई दे तो यह निश्चित है कि उस दिशा मे भयकर दुर्भिक्ष होगा।

नोट—यहाँ कुछ लोग "आठे दिवस बरसता राख" का उपरोक्त आशय मिट्टी या राख का बरसना भी लेते हैं।

(२०)

चैत्रे दस नक्षत्र जो, बादल बिजली होय ।
भडली तो एमज भणे, गरभ गल्या सहु कोय ॥
तिथि वधै तो तृण वधै, नक्षत्रे बहु धान ।
योग वधै तो रोग बहु, पहले दिन ए मान ॥

भडली का कथन है कि, चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से दशमी तक यदि आकाश मे बादल बिजली हो तो सब प्रकार के गर्भ नष्ट हो गये। इनमे पहला दिन प्रतिपदा तिथि बढ़े तो तृण की वृद्धि होगी। नक्षत्र बढेगा तो अन्न बहुत होगा और योग के बढने से रोगो की वृद्धि होगी।

(२१)

चैत उजाले पाखडे, मेख थकी नव दीह ।
जल आया बीजल खिवै, हाली मत तू बीह ॥

चैत्र शुक्ल पक्ष मे जिस दिन मेष की सक्रान्ति हो उसके नौवें दिन यदि आकाश मे बादल हो, बिजली चमके और वर्षा हो जाय तो कवि कहता है कि हे हाली ! अर्थात् कृषक तू डर मत। इस लक्षण से इस वर्ष अन्न बहुत उत्पन्न होगा।

(२२)

चैत्र मास दस रिक्षडा, जो कहुँ कोरा जाय ।
तौ चौमासे बादला, भली भाँत बरसाय ॥

चैत्र महीने के शुक्ल पक्ष के प्रथम दश दिन यदि स्वच्छ निकल जाय तो आगामी चातुर्मास (वर्षा काल) मे बादल भली प्रकार से वर्षा करेंगे।

(२३)

चैत्र मास ना बीजली, बादल मेह न गाज ।
पवन अँधेरी ना चलै, समो मनो हुई राज ।।

चैत्र मास मे न तो बिजली चमके न बादल, मेह एव गर्जना हो। हो, इस महीने मे जोर से पवन—आँधिये भी नही आवे तो आगामी वर्ष अच्छा होगा ।

(२४)

मेह पडग्या चैत, (तौ) खेतिहर ना खेत ।।

चैत्र मे वर्षा का होना कृषक को खेती से रहित कर देता है ।

(२५)

चैत मे पाणी, (तौ) सावण मे धूड उडाणी* ।।

चैत्र मे वर्षा का होना, श्रावण मे वर्षा का न होना और आँधियो (जोरदार वायु) का चलना होगा ।

(२६)

चैत चिरपडा, तो सावण निरबला* ।।

चैत्र की बूदा बाँदी श्रावण की वर्षा को बलहीन बना देती है ।

(२७)

चैत चिरपडो माघजी, फलै नही वनराय ।
माय बिसारे डीकरा, बच्छ बिसारे गाय ।।

---

* इसके समर्थन मे एक उक्ति यह भी है —
एक बूंद जे चैत मे पडै, सहस बूंद सावण की हरै ।।

चैत्र मास की वर्षा-बूंदाबादी फसल नही होने को सूचित करती है। कवि कहता है कि इस अकाल मे, माताएँ अपने पुत्रो तक को और गौएँ अपने बछडो तक को भूल जाती हैं।

(२८)

चैत सुदी दसमी दिवस, शनीवार आ जाय।
मघा नक्षत्र इण दिन हुया, चोखी बिरखा थाय॥

चैत्र शुक्ला दशमी को शनिवार और मघा नक्षत्र हो तो आगामी वर्षा काल मे अच्छी वर्षा होगी।

(२९)

चैत सुदी पडवा सू लगा, दसमी तक लो जोय।
सूरज आदरा आविया, स्वाती तक जो होय॥
जिण दिन विरखा धुन्ध, उण रिछ नहिं है मेह।
जिण दिन आभो निरमलो, उण रिछ होवे मेह॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक के दिनो को देखो। इनमे जिस दिन आकाश मे धुन्ध (कुहरा) वर्षा आदि हो तो सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आने से स्वाति नक्षत्र पर सूर्य होने तक क्रमश वर्षा काल मे उसी नक्षत्र पर वर्षा का अभाव रहेगा। जिस दिन आकाश निर्मल होगा उसी नक्षत्र में (उस दिन वाले नक्षत्र मे) वर्षा काल मे वर्षा होगी। जैसे—प्रतिपदा से आर्द्रा नक्षत्र, द्वितीया मे पुनर्वसु आदि।

(३०]

आदरा सू स्वाती तलक, छाटो छिडको होय।
पण पाणी बेहबे नही, (तो) समयो आछो होय॥

चैत्र शुक्ल पक्ष मे आर्द्रा से स्वाति तक के दश नक्षत्रो मे यदि साधारण बूंदाबांदी हो और पृथ्वी पर जल बहे नही तो आगामी वर्षा काल मे कृषि उत्तम होगी।

(३१)

पाचम सातम तेरसे, चैत सुदी के मांय।
बादल तो आछा कह्या, मेह बुरो कहवाय ॥

चैत्र शुक्ला ५चमी, सप्तमी, त्रियोदशी को आकाश मे बादलो का होना तो आगामी वर्षा काल के लिए शुभ है, किन्तु इनमे से किसी दिन या इन दिनों मे वर्षा का होना अच्छा नहीं।

वर्षा के गर्भ का ज्ञान

(३२)

चैत्र गरभियो माघ जी, फूली सहु बनराय।
पुत्र खिलावै कामणी, बच्छ खिलावै गाय ॥

चैत्र मास का वर्षा का गर्भ रहने से समस्त वन की वनस्पतियाँ फलती फूलती हैं। अत सुभिक्ष होगा। माताएँ और गौएँ प्रसन्नता पूर्वक अपने शिशुओ को खिलाती हैं।

वर्षा के गर्भ-नाश कारक योग

(३३)

पाचम आठम नवमी, पूनम लेवो साथ।
चैत सुदी महिनो हुवै, होवे विरखा पात ॥
चारमास बरसाद रा, सावण आद कराय।
चारू दिन क्रम सू लिया, गर्भ नाश मिलजाय ॥

चैत्र शुक्ला पचमी, अष्टमी, नवमी एव पूर्णिमा इन चार दिनों मे जिस दिन वर्षा हो उस तिथि क्रम से (श्रावण प्रथम तिथि का महीना मान कर) आने वाले महीनो मे गर्भनाश हो जाने के कारण वर्षा नही होगी।

(३४)

पाचम सातम नवमी, पूनम चैती जोय।
रोहण आदरा पुक्ख, स्वाति क्रम सू जोय॥
चौमासे बिरखा घणी, इण नखता सू आय।
गाज बीज विरखा हुया, गरभ शीत का जाय॥

चैत्र शुक्ला पचमी, सप्तमी, नवमी और पूर्णिमा को क्रमश रोहिणी आद्रा, पुष्य, स्वाति नक्षत्र हो तो वर्षा काल मे बहुत वर्षा होगी, किन्तु इन्ही दिनो मे बादलो का गर्जना, बिजली का चमकना, वर्षा हो जाना आदि हो तो इन लक्षणो के कारण शीत काल का मेघ का धारण किया हुआ गर्भ नष्ट हो जाने के कारण, आगामी वर्षा काल मे अनावृष्टि होगी।

(३५)

पाचम सू पूनम तलक, एक दिन आडो होय।
सुदी पक्ष होवे वली, मास चैत लो जोय॥
गाजै बरसै ओला पडे, बिजली बी चमकाय।
तो चौमासा के मायने, बिरखा अलप कराय॥

चैत्र शुक्ला पचमी से पूर्णिमा तक के दिनो मे से एक-एक दिन छोड कर पचमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी, त्रयोदशी और पूर्णिमा को बिजली चमके, बादलो का गर्जन हो, वर्षा हो, ओले पडे तो आगामी वर्षा काल के चार महीनो में कम वर्षा होगी।

(३६)

चैत सुदी तेरस दिना, आँधी बादल आय।
आगे बिरखा है नही, ऐसो जोग कराय॥

यदि चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को जोर की हवा (वायु-आँधी) आवे, मिट्टी उडे तो इस वर्ष, वर्षा न होने की सूचना है।

(३७)

चैती पूनम चित्त कर, जोशी रूंडा जोय।
शनी अदीता मगला, करसण करे न कोय ।।

ज्योतिषी भली प्रकार से पचाँग आदि देख कर कहता है कि चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को यदि शनि, रवि अथवा मङ्गल वार में से कोई सा वार आ जाय तो कोई भी व्यक्ति कृषि करने का प्रयास न करे। अर्थात् बोया हुआ अन्न भी व्यर्थ जावेगा।

(३८)

चैत मास जे बीज बिजोवे।
(तो) भर वैसाखा टेसू धोवे* ।।

चैत्र मास में बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो इस लक्षण से यह समझे कि बैसाख मास में इतनी वर्षा हो जायगी कि, टेसू के पुष्प का रग भी घुल जावेगा।

(३९)

चैत मास सुद पक्ष मे, जे आभो गरभाय।
रैयत सुखी राजा सुखी, सुखिया गोधा गाय ।।

---

* यह इस प्रकार भी मिलती है —

चैत मास जो बीज लुकोवे। धुर वैसाखा केसू धोवै।
जेठ मास जो जाय तपन्ता। तो कुण राखेगो जल बरसता।।

चैत्र मास मे बिजली का न दिखाई देना, वैसाख मास प्रारम्भ होते ही वर्षा का होना और ज्येष्ठ मास में अत्यधिक गर्मी पडना ये सभी लक्षण ऐसे हैं कि वर्षा अवश्य आवेगी। इसे रोकने की सामर्थ्य किसी में नही है।

चैत्र शुक्ल पक्ष में, वर्षा का गर्भ रहे तो परिणाम स्वरूप चराचर प्राणी सुख पाते हैं।

(४०)

चैती पूनम होय जो, सोम बुद्ध गुरु वार।
घर-घर होय बधावणा, घर-घर मंगलाचार ॥

चैत्र शुक्ल पूर्णिमा के दिन सोम, बुध, अथवा गुरुवार में से कोई सा वार हो तो यह वर्ष आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

(४१)

चैत सुदी पूनम दिने, स्वाति नखत जो होय।
विरखा पण हुय जाय तो, अलप वृष्टि समझोय ॥

चैत्र शुक्ला पूर्णिमा को स्वाति नक्षत्र हो और इस दिन थोड़ी सी वर्षा हो जाय तो भविष्य में अल्प वर्षा होगी।

(४२)

चैत कृष्ण मा तिथि वधै, शुक्ल पक्ष घट जाय।
मूंघी सारी वस्तुवा, लक्षण काल बताय ॥

चैत्र मास के कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़ जाय और शुक्ल पक्ष में घट जाय तो समस्त वस्तुएँ मँहगी होगी। यह अकाल के लक्षण हैं।

(४३)

चैत सुदी सु मेख सक्राति। नौ दिन एहु जल बरसाति ॥
तौ शङ्का कोउ ना करौ। घणो समो होई मूल ना डरौ ॥

चैत्र मास की मेख सक्रान्ति से नौवे दिन तक वर्षा हो तो कृषि उत्तम होगी। इस वर्षा के कारण कोई शङ्कित न हों।

(४४)

चैत मास में गाजियो, जो उजिजाले पाख ।
गरभ गल्या सह जाए जो, जोशी बोले साख ।।

ज्योतिष की साक्षी से कवि कहता है कि चैत्र शुक्ल पक्ष में बादलो का गरजना आगामी वर्षा काल में होने वाली वर्षा के गर्भ को नष्ट कर देता है । अर्थात् पर्याप्त वर्षा नहीं होगी ।

(४५)

वायु द्वारा वर्षा ज्ञान

आथूणी वायु बहै, 'चैत महीना माय ।
भादूडे मेह मोकलो, इण मे शशै नाय ।।

चैत्र मास में पश्चिम का वायु हो तो भाद्रपद में बहुत वर्षा होगी ।

(४६)

दक्षिण दिस वायु चलै, चैत मास जो होय ।
घण बरसै बिजली खिवै, समयो आछो होय ।।

चैत्र मास में दक्षिण दिशा का वायु हो, आकाश मे बिजली चमकती हो, वर्षा हो तो यह वर्ष अच्छा होगा ।

पूर्णिमा की मध्य रात्रि में तारे से वर्षा ज्ञान

(४७)

चित्रा सू व्है दाहिनो, चैती पून्यू चन्द ।
सरब धान सचै करो, व्हैगो काल दुखद ।।

चैत्र शुक्ला पूर्णिमा की रात्रि में मध्य रात्रि के समय चन्द्रमा, चित्रा नामक तारे से उत्तर में हो निकले तो जीवन-निर्वाह के लिये सब प्रकार के अन्न सग्रह कर लें । क्योंकि, इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा ।

(४८)

नक्षत्रों से वर्षा ज्ञान

असनी सू मघा तलक, चैत सुदी के माय ।
जे बादल हो जाय तो, गरभ जोग बण जाय ।।
सूरज आदरा आविया, स्वाती तक लो जोय ।
चौमासा के मायने, क्रम सू बिरखा होय ।।

चैत्र शुक्ल मे अश्विनी से मघा तक के दश नक्षत्रो में बादल आदि द्वारा गर्भ धारण हो तो सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र पर आने मे जब तक सूर्य स्वाति तक होगा, वर्षा काल मे उस-उस नक्षत्र के क्रम से वर्षा होगी । जैसे—अश्विनी मे गर्भ रहा तो आर्द्रा मे वर्षा होगी । भरणी मे गर्भ रहा तो पुनर्वसु, कृतिका में गर्भ रहने से पुष्य में वर्षा होगी, इस क्रम से समझे ।

(४९)

रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य और चित्रा से वर्षा ज्ञान

चैत सुदी के मायने, रोहण बरसे मेह ।
तो आषाढा के मायने, मेह देवेलो छेह ।।
चैत सुदी के ;मायने, आदरा बरसे मेह ।
तो सावण के मायने, मेह देवलो छेह ।।
चैत सुदी के मायने, पुक्खे बरसे मेह ।
तो भादरवा के ;मायने, मेह देवेलो छेह ।।
चैत सुदी के मायने, चित्रा बरसे मेह ।
आसोजा बरसै नही, गरभ गल्यो गिण लेह ।।

चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में रोहिणी नक्षत्र मे वर्षा हो तो आषाढ़, आर्द्रा मे हो तो श्रावण, पुष्य मे हो तो भाद्रपद और चित्रा मे हो तो आश्विन मे बरसने वाले मेह का गर्भ गल जाने से इन इन महीनों मे वर्षा नहीं होगी ।

(५०)

दस तरे रा गरभ है, माने जाणण हार ।
चैत सुदी मे बरसिया, बरसै नही लगार ।।

शीतकाल के मेघ के जो दस प्रकार के गर्भ माने गये हैं—इनके रह जाने पर भी यदि चैत्र शुक्ल पक्ष मे वर्षा हो जाय तो वर्षाकाल मे उपरोक्त रहे हुए गर्भों का कोई प्रभाव नही होगा । अर्थात् वे इस वर्षा से नष्ट हो गये हैं अत वर्षा काल मे लेश मात्र भी वर्षा नही होगी ।

(५१)

मेह वादला सुभ जाण जो, चैत वदी मे होय ।
सुदपख मे हो जाय तो, अशुभ गिणीजे सोय ।।

चैत्र कृष्ण पक्ष मे बादलो का होना, वर्षा होना शुभ माना गया है । परन्तु ,चैत्र शुक्ल पक्ष मे ऐसा होना अशुभ ।

(५२)

ग्रहण से वर्षा ज्ञान

चैती पूनम देख लो, चन्द्र ग्रहण जो होय ।
आभो दीसै निरमलो, तारा टूटता जोय ।।
धूल उडै बिजली खिवै, केतु उदय हो जाय ।
बरतन वासण बेचकर, भेलो धान कराय ।।
मास सातमे आय कर, अपणो फल बतावै ।
कोइयक वेला भादवै, दूणा दाम करावै ।।

देव जोग वैसाख मे, एहवा लक्खरण होय ।
कपास खरीदो खूब ही, आगे मूघो होय ।।
गेहूँ मूग उडद भेला करलो भाई ।
भादवडे के माँयने दूणो लाभ कराई ।।

चैत्र मास के चन्द्र ग्रहण मे आकाश निर्मल हो, तारे टूटे, भूकम्प हो, रजोवृष्टि, विद्युत्पात, केतु-उदय आदि कोई उत्पात दिखाई दे तो अपने खाने पीने के बर्तन बेच कर भी भविष्य के लिये अन्न सग्रह कर लेना चाहिये । उपरोक्त लक्षण अपना प्रभाव सातवे महीने मे दिखावेंगे । कभी-कभी तो भाद्रपद मे भी वस्तुओ का मूल्य दूना हो जाता है ।

कदाचित यही लक्षण बैसाख मे हो तो कपास खरीद कर लेना चाहिये । यह, आगे जाकर मँहगा हो जावेगा । इसी प्रकार से गेहूँ, मूग, उडद का सग्रह किया हुआ होगा तो भाद्रपद मास मे इन्हे बेचने से दूना लाभ हो जावेगा ।

(५३)

चैत सुदी रेवतडी जोय । वैसाखा मे भरणी जे होय ।।
जेठ मास हिरणी दरसन्त । पुनरवसु आसाढा वरतन्त ।।
नछत जे जित्तो वरताय । तेता सेरा नाज विकाय ।।

चैत्र शुक्ल पक्ष मे रेवती, बैसाख मे भरणी, ज्येष्ठ मे मृगशिरा और आषाढ मे पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घडी होगे इनके प्रभाव से अन्न उतने ही सेर के भाव से मिलेगा । (यहाँ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिनो मे उपरोक्त नक्षत्रो का होना वर्ष के चार स्तम्भ-दिवस माने गये हैं ।)

(५४)

चैत सुदी पडवा व्है जे वार। उणरो करलो यू विचार ॥
रवि शोष मगल विरखा। बुध मूघौ कतसी चरखा ॥
सोम सुक्कर गुरु व्है जो वार। पुहमी पीडित अन्न को भार ॥

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को जो वार आवे उसके आधार पर वर्ष भर का ज्ञान किया जाता है। इस दिन यदि रविवार होगा तो शोष, मङ्गल होगा तो वर्षा, बुध होगा तो कपास का अभाव होने से चरखे कतने मुश्किल हो जावेंगे। कदाचित इस दिन सोम, शुक्र किम्वा गुरु वार मे से कोई सा वार आ जायगा तो इसके फल स्वरूप अन्न की प्रचुरता होगी।

(५५)

चैत जेठ फागण कृति, सावण माघ कुवार।
सत्त पूर्ण निर्मल भली, बादल बीज खुहार ॥

चैत्र, जेठ, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, माघ और फाल्गुण इन सात महीनों की पूर्णिमा निर्मल होना शुभ माना है।

(५६)

पूनम पौ वैसाख की, भादू अघण असाढ।
वादल बीजल धुधवर, भला पवन मेह टाढ ॥

वैसाख, आषाढ, भाद्रपद, मार्गशीर्ष और 'पौष की पूर्णिमा को आकाश मे बादल, बिजली और धुन्ध होने से इस वर्ष वायु, मेह एव शीत अच्छे होंगे।

चैत्रमास—कृष्ण पक्ष

(१)

चैत वदी पडवा जो वार । ता को पण्डित करै विचार ॥
रविवार तो बहुत हो वाई । मंगल विग्रह कटक लडाई ॥
सोम शुक्र गुरु होवै वार । धन दूध होवै शुभ कार ॥
बुधवारी हुया काल पडन्त । शनि वारी इक फल होवन्त ॥
कूप नदी सर पाणी सूखै । मरै लोग चौपद बहु भूखै ॥
हा हा कार करै सब कोई । शनि वारी को फल श्रो जोई ॥*

चैत्र कृष्ण प्रतिपदा को जो वार आ जाय, भावी वर्ष के लिए इसके शुभाशुभ का विचार करें। इस दिन रविवार होने से वायु बहुत चलेगी। मगल वार हो गया तो देश मे विग्रह, परस्पर युद्ध होंगे। सोमवार, शुक्रवार किम्वा गुरुवार मे से कोई सा वार आ गया तो अन्न, दूध आदि की बहुलता रहने से यह वर्ष शुभ रहेगा। इस दिन बुधवार आ जाय तो अकाल होगा और दुर्भाग्य से शनिवार आ गया तो कूओं मे, नदियो मे, तालाबो मे कहीं भी जल नहीं मिलेगा और मनुष्य एव चतुष्पद जानवर भूख के मारे मर जावेंगे।

(२)

चैत्र मास रे पेहले दिन मे, वार फलावट जोय ।
सखरो नखरो करवरो, वार ढुके सो होय ॥

---

* इन से मिलती-जुलती उक्तियें निम्न मिली हैं—

चैत सुदी पडवा को जोवे। ता दिन वार जो कोई होवे ॥
समयो सारो इण सू जांण । वर्ष आगलो ले पहचांण ॥

रवि वायरो वाजसी, मगल विग्रह होय ।
शनिवारा दुर्भिच्छ पडे, विरलो जीवे कोय ॥
सोमे शुकरे सुरगुरे, मेघ बहुत बरसाय ।
बुद्ध करवरो होवसी, 'भडली' चिन्ता मिटाय ॥*

चैत्र मास के प्रथम दिन कृष्णपक्ष की प्रतिपदा को वर्ष भर के लिये यह देखना चाहिये कि, इस दिन कौन सा वार है । रविवार हो तो वायु जोरो से चलेगा । मगलवार हो तो विग्रह होगा । शनिवार हो तो दुर्भिक्ष पडने के कारण विरले ही जीवित रहेगे । सद्भाग्य से इस दिन सोम, शुक्र, किम्वा गुरुवार मे से कोई सा भी वार आ गया तो पृथ्वी पर बहुत वर्षा होगी । भडली को सम्बोधन करते हुए कवि कहता कि यदि इस दिन कदाचित बुधवार आ गया तो कृषि साधारण होगी । इसकी चिन्ता मत कर ।

(३)

चैत वदी पड़वा दिने, गरजे मेघ अपार ।
सावण भादू मायने, अनावृष्टि निरधार ॥

चैत्र कृष्णा प्रतिपदा को आकाश मे बादल हो और बहुत जोरो से गर्जना करे तो आगामी श्रावण और भाद्रपद मे वर्षा नही होगी ।

रवीवार जो होय तो, हवा चलै बहु देख ।
फल फूल कम नीपजै, इण मे मीन न मेख ॥
सम्वत आछो होय जद, आवे सोमां वार ।
अन्न तृण सारा नीपजै, आ निश्चै लेवो धार ॥

आछो नहीं है मगल वार । कम विरखा के मूसलधार ॥
बुध करवरो सम्वत् जाणो, गुरु शुक्कर शुभ सवत मानो ॥

(४)

चैत अंधेरी दूज दिन, बादल होय अपार।
ईं महिना मे मेह हुया, कातो मेह तयार॥

चैत्र कृष्ण द्वितीया को आकाश मे बादल, अधिक हो, इसी महीने में वर्षा हो जाय तो कार्तिक मास मे अधिक मेह होगा।

(५)

चैत आंधली बीज दिन, आभो निर्मल जोय॥
समयो होसी सातरो, भादू विरखा होय॥

चैत्र कृष्णा द्वितीया को आकाश स्वच्छ दिखाई दे तो आगामी भाद्रपद मास मे वर्षा होगी और कृषि अच्छी होगी।

(६)

चैत वदी दुतिया दिने, जे वायू चल जाय।
(तो) भर भादवडे मेहडो, पिरथी जल न समाय॥

चैत कृष्णा द्वितीया के दिन यदि वायु चलती रहे तो आगामी भाद्रपद मास मे इतनी वर्षा होगी कि, जल पृथ्वी पर नही समावेगा।

(७)

चैती कृष्णा तीज ने, पूरब उत्तर वाय।
जल बरसै हरखै प्रजा, आणन्द नहीं समाय॥

चैत्र कृष्णा तृतीया को पूर्व किम्वा उत्तर का वायु चले तो आगामी वर्षा काल मे इतना जल बरसेगा कि, लोग प्रसन्न हो जावेंगे और इनके हृदय आनन्दित होगे।

(८)

चैती कृष्णा चौथ ने, जे विरखा हो जाय ।
समयौ आछो व्है नही, दुरभिछ देय बताय ।।

चैत कृष्णा चतुर्थी को यदि वर्षा हो जाय तो आगामी फसल अच्छी नही होगी जिसके परिणाम स्वरूप अकाल पडेगा ।

(९)

चौथ पचमी चैत वद, बरसै वाजै वाय ।
काल पडे उण देश मे, ऐसो जोग बताय ।।

चैत कृष्णा चतुर्थी और पचमी को वर्षा हो जाय अथवा जोर का वायु चले तो उस देश मे अकाल पडेगा ।

(१०)

चैती पहली पचमी, वरखा किम्वा बीज ।
सातमे श्रावण हरै, नौमे भादर लीज ।।

चैत कृष्णा पचमी को वर्षा हो, बिजली चमके तो श्रावण कृष्णा सप्तमी को या भाद्रपद कृष्णा नवमी को वर्षा होगी ।

(११)

चैत्र वदी पाचम दिने हस्त नखत लो जाण ।
विरखा बादल होय तौ, समयो आछो जाण ।।
इण दिन जो आ जाय, भौम और बुधवार ।
घी गेहूँ मूघा बिकै, ऐसा शकुन विचार ।।*

---

* इनके विपरीत—

चैत वदी पाचम दिना, हस्त नखत ने पेख ।
बीज गाज बादल तथा, धुन्ध होय तो देख ।।

चैत्र कृष्णा पचमी को हस्त नक्षत्र हो और इस दिन यदि वर्षा किम्वा बादल हो तो आगामी वर्ष अच्छा होगा। कदाचित इस दिन मगल या बुध वार आ जाय तो परिणाम स्वरूप घी, गेहूँ मँहगे बिकेंगे।

(१२)

चैत्री पहली पंचमी, हस्त नखत जै होय।
गाज बीज धुध बादला (तो) समयो आछो होय ॥*

चैत्र कृष्णा पचमी को हस्त नक्षत्र हो और इस दिन आकाश मे बादल हो, गर्जना हो, बिजली चमके, कुहरा हो तो आगामी वर्ष अच्छा होगा।

(१३)

दुतिया सू पाँचम तलक, चैत वदी के माँय।
जै विरखा हो जाय तो. आगे खेंच कराय ॥

चैत्र कृष्णा द्वितीया से पचमी तक यदि वर्षा हो तो आगामी वर्षा-काल मे वर्षा की कमी रहेगी।

(१४)

चैत अधारी सप्तमी, जे मेघ झुके आकाश।
लाल वस्तु सूघो बिकै, फल होवे दो मास ॥

ई लक्खण विरखा नही, समी करवरी जाण।
जै ए नहिं हुवै, तो आछौ समयो माण ॥

चैत्र कृष्णा पचमी को हस्त नक्षत्र हो और इस दिन आकाश में बिजली चमकती हो, गर्जना होती हो, बादल हो एव धुन्ध दिखाई दे तो, इन लक्षणो से इस वर्ष वर्षा नही होगी और यदि इस दिन ये लक्षण नही होगे तो यह वर्ष उत्तम रहेगा।

चैत्र कृष्णा सप्तमी को आकाश मे बादलो का घटाटोप छा जाय तो दो महीनो के अन्दर ही लाल वस्तुएँ सस्ती हो जावेगी।

(१५)

चैत अधारे पाख की, दसमी कोरी जाय।
तौ चौमासे बादला, भली भाँति बरसाय ॥*

चैत्र कृष्णा दशमी कोरी ही निकल जाय तो आगामी (चातुर्मास) वर्षाकाल मे वर्षा भली प्रकार से होगी।

(१६)

चैत कृष्णा दशमी कदी, बादल बिजली होय।
तो जाणो चित मायने, गरभ गल्या सब जोय ॥

चैत्र कृष्णा दशमी को आकाश मे बादल दिखाई दे, बिजली चमके तो यह समझ लें कि, वर्षा का गर्भ नष्ट हो गया। अतः आगामी वर्षा-काल मे वर्षा का रग ढग होते हुए भी वर्षा धोखा दे देगी।

(१७)

पाचम नम तेरस दिनां, चैत वदी के मांय।
जे विरखा हो जाय तौ, गरभ गल्या केवाय ॥

चैत्र कृष्णा पचमी, नौमी और त्रयोदशी के दिनो मे यदि वर्षा हो जाय तो वर्षा काल मे बरसने वाले मेह का योग गल गया है अतः वर्षा की हानि होगी।

---

* चैत्र मास दस कृष्ण का, जे कबु कोरा जाय।
तौ चौमासे बादला, भली भाँति बरसाय ॥

(१८)

चैत अधारी पचमी, तेरस तक ले जोय।
फल इणरो यू होवसी, जे आभो निरमल होय ।।
भान आदरा आय कर, चित्रा तक जद जाय।
ई दिना के माँयने, बोली विरखा थाय ।।

चैत्र कृष्णा पचमी से त्रयोदशी तक के इन नौ दिनो मे यदि आकाश निर्मल रहे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र से चित्रा तक जावेगा तब तक वर्षा बहुत होगी।

इसे यो समझे—चैत्र कृष्णा पचमी से आद्रा नक्षत्र मे, षष्ठि से पुनर्वसु नक्षत्र मे, सप्तमी से पुष्य नक्षत्र मे इस क्रम से जिस दिन आकाश निर्मल होगा उस दिन के हिसाब मे उस नक्षत्र पर जब तक सूर्य रहेगा, बहुत वर्षा होगी।

(१९)

तेरस काली चैत दिन, सनीवार जे आय।
भान मीन पण आय तो, मूघो धान बिकाय ।।

चैत्र कृष्णा त्रयोदशी के दिन शनिवार हो और मीन की सक्राति लगे तो यह ऐसा योग बन जाता है कि तत्काल ही अन्न मँहगा हो जाता है।

(२०)

चैत मास ने पख अधियारा। आठम चवदश दो दिन सारा ।।
जिण दिस बादल उण दिश मेह।
जिण दिश निरमल उण दिश खेह ।।
गाज बीज धरणी धरडावे। जोशी समौ बुरौ बतावै ।।

चैत्र कृष्णा अष्टमी, चतुर्दशी इन दो दिनों में समस्त दिन भर जिस किसी दिशा से बादल आते रहेंगे तो वर्षा काल में उस दिशा मे पर्याप्त वर्षा होगी। जिस दिशा में इसके विपरीत लक्षण दिखाई दें अर्थात् आकाश मे बादल आदि न हो तो उधर वर्षा का अभाव ही रहेगा। ज्योतिषी कहता है कि, इन दिनो मे यदि बिजली कडके, आकाश की गर्ज ना हो तो आगामी वर्ष अच्छा नही बीतेगा।

(२१)

आठम चवदश चैत की, कृष्ण पक्ष जो होय।
आभै बादल उत्तर हवा, समयो आछो होय॥

चैत्र कृष्णा अष्टमी और चतुर्दशी को आकाश मे बादल हो और उत्तर दिशा का वायु हो तो कृषि उत्तम होगी।

(२२)

चैत्री मावस जेता घडी, बरती पत्रा मांय।
तेता सेरा चतर नर, कातिग धान बिकाय॥*

चैत्र कृष्णा अमावस्या पचांग मे जितनी घडी होगी आगामी कार्तिक मास मे अन्न उतने सेर के भाव से मिलेगा।

(२३)

नक्षत्रों से वर्षा ज्ञान

चैत अधारे पाख मे, नौ दिन गिणजै एह।
पाँचम सू तेरस तलक, जो आवे सो लेह॥

---

* यह उक्ति इस प्रकार भी मिलती है—

अमावस तो जेटली घडी, बरती पत्रा माय।
भडली सेरज तेटला, कार्तिक अन्न बिकाय॥

नोट—वृष्टि प्रबोध में यहाँ सेर के स्थान पर 'पायली' शब्द मिला है।

इणा दिनां में देखलो, आभो निरमल होय।
सूरज आदरा आविया चित्रा तक लो जोय॥
तिथि क्रम मेलवो, आदरा आदी होय।
चौमासे इण क्रम थकी, लेवो विरखा जोय॥

चैत्र कृष्णा पचमी से त्रयोदशी तक नौ दिनो मे जिन-जिन दिनो मे आकाश निर्मल हो तो सूर्य के आर्द्रा पर आने से क्रम पूर्वक तिथि एव नक्षत्रानुसार बहुत वर्षा होगी। जैसे—पचमी से आर्द्रा, षष्ठी से पुनर्वसु, सप्तमी से पुष्य को उन-उन नक्षत्रानुसार वर्षा होगी।

(२४)

मूल नखत सू भरणी तलक, चैत वदी के माय।
बादल विरखा होय तो, चौमासे विरखा नाय॥
निर्मल आभो दीखसी, दिक्खन वायु होय।
सूरज आदरा आविया, क्रम सू बिरखा जोय॥

चैत्र कृष्ण पक्ष मे मूल से भरणी तक इन ग्यारह नक्षत्रो मे आकाश मे बादल हो, वर्षा हो तो वर्षा काल मे अनावृष्टि होगी। किन्तु इन दिनो मे आकाश निर्मल हो, दक्षिण दिशा का वायु हो तो जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवेगा तब क्रमश—नक्षत्रानुसार—वर्षा होगी। अर्थात् मूल से आर्द्रा, पूर्वाषाढा से पुनर्वसु, इस प्रकार से क्रमश इन नक्षत्रो से वर्षा होगी।

(२५)

असनी गलियां अन्न विनासै। गली रेवती जल ने नासै।
भरणी नासै तृण सहूतो। कृतिका बरसै अन्न बहूतो॥

चैत्र मास मे अश्विनी नक्षत्र मे वर्षा हो तो आगामी चातुर्मास मे अन्न नही उपजेगा। रेवती मे वर्षा हो जाय तो वर्षा काल मे वृष्टि होगी ही नही। भरणी मे मेह हो तो घास का भी नाश हो जावेगा। यदि इस मास मे कृतिका नक्षत्र मे वर्षा हो जाय तो अन्त मे अच्छी वर्षा हो जाती है।

वैशाख मास शुक्ल पक्ष

(१)

*सुद वैसाखा प्रथम दिन, बादल बीज करै ।
दामा बिना विसायजे, पूरी साख भरै ॥

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को आकाश मे बादल हो, बिजली चमके तो कवि कहता है कि आगामी फसल के लिये बिना दाम दिये अर्थात् उधार लाकर कृषि मे लगा दो क्योंकि पूर्ण वर्षा होने की सम्भावना है। अत पूर्ण कृषि होगी और ऋण चुक जावेगा ।

(२)

पडवा सुद वैसाख की, भरणी रिछ जो होय ।
ढाढा पोषण वासते, घास घणेरो होय ॥

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा के दिन भरणी नक्षत्र हो तो वर्षा काल मे इतनी वर्षा होगी कि जिससे पशुओ के लिये घास बहुत होगी ।

(३)

वैसाख सुदी एकमे, घटाटोप हुइ मेह ।
धान घणेरो सग्रहो, समो न होवे तेह ॥

---

* ये उक्ति निम्न रूप से भी मिली है —

१ वैसाखी पडवा दिने, बादल बीज करेह ।
दाणा वेची धनकरो पूरी साख भरेह ॥

२ वैसाखी पडवादिने, बादल बीज करेह ।
दाणा वेची धनकरो भरडी साख भरेह ॥

३ वैसाख सुदी प्रथम दिन, बादर बिज्जु करेह ।
दामा बिना बिसाहिके पूरी साख भरेह ॥

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को आकाश मे बादलो का घटाटोप ही रहे तो निर्वाह के लिये अन्न एकत्रित कर लेना चाहिये क्योकि इस वर्ष फसल नही होगी ।

(४)

पडवा दूज वैसाख की, होय उजाले पाख ।
बादल थिर रह जाय तो, आछी निपजै साख ।।

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा और द्वितीया इन दोनो दिन आकाश मे बादल स्थिर रह जाय तो फसल अच्छी होगी ।

(५)

‡वैसाख ऊजली बीज ने, उत्तर ऊगे चन्द ।
तो जाणीजे भडुली, इला अवतरिये अन्द ।।

वैशाख शुक्ला द्वितीया को चन्द्रमा उत्तर दिशा की ओर उदय हो तो यह निश्चित रूप से मान ले कि, बहुत वर्षा होगी ।

(६)

पडवा दूज वैसाख की, आभै बादल छाय ।
चौमासे विरखा घणी,, इन्दर दौड्यो आय ।।

---

‡ मास वैसाखा जेठ मे, ध्रु दिस ऊगै चन्द ।
अन्न निपजैला मोकलो, विरखा करै अणन्द ।।

वैशाख मे अथवा ज्येष्ठ मास मे चन्द्रोदय के दिन आकाश मे देखें । इस दिन चन्द्रमा यदि उत्तर दिशा मे उदय हो तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि इस वर्ष, अन्न की उत्पत्ति बहुत होगी और वर्षा भी अच्छी होगी ।

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा और द्वितीया को आकाश मे बादल छाये हुए रहे तो आगामी वर्षाकाल मे बहुत वर्षा होगी।

(७)

आखातीज दूज की रात। बैठ अपर्चंन सुणले वात॥
गोष्ठी दम्पति कोई करै। ताकी सुण सब हिरदै धरै॥
राडे राड़ दुखी दुख जाणी। सम्पत सम्पत्ति विपत कुछ हाणी॥
इण विध सुकन वर्ष प्रति लेई। पैज बाध आगम कह देई॥

सम्पूर्ण वर्ष के भावीफल को जानने के लिये वैशाख शुक्ला द्वितीया की रात्रि मे कही एकान्त मे बैठे·· ···सोते दम्पति की बाते छुपकर सुने। यदि परस्पर लडने-झगडने का ढग हो तो, वर्ष भर लडाइयाँ ही होगी। कदाचित यह युगल परस्पर दुखी हो तो, दुख का वातावरण रहेगा। यदि किसी प्रकार की विपत्ति मे होगा तो इसका प्रभाव हानि कर होगा। सद्भाग्य से इन मे परस्पर प्यार-स्नेह आदि से ये प्रसन्न प्रतीत हो तो देश मे आनन्द ही रहेगा।

(८)

सुद वैसाखा तीज ने, आभै वादल छाय।
विरखा अवशै आयली, पण प्रजा रुग्ण होजाय॥

वैशाख शुक्ला तृतीया को आकाश मे बादल छाये रहे तो आगामी वर्षाकाल मे वर्षा, तो अवश्य आवेगी किन्तु, प्रजा मे रोग फैल जावेगा।

(९)

आखातीज दूज की रैण। जाय अचानक आचौ सैण॥
कछुक चीजमाओ नट जाय। तो जाणीजे काल सुभाय॥
हस कर देय नटे नहिं कोय। माधा सही जमानो होय॥

शुभ वाणी सूं शुभ हुवे, प्रशुभ दुःख की खाण ।
मीठी वाणी शुभ करै, कड़वी सू कुछ हांण ॥

अक्षय-तृतीया जैसे शुभ दिन में वर्ष भर का शुभाशुभ शकुन देखने के लिये कवि माघ नामक व्यक्ति को सबोधन करते हुए कहता है— द्वितीया की रात्रि मे अचानक आकर अपने किसी स्वजन से किसी वस्तु को मागो । इस प्रकार से मागी गई वस्तु के लिये यदि वह इन्कार हो जाय तो समझ लेना चाहिये कि इस वर्ष, अकाल होगा । किन्तु माँगने पर हसते हुए उसने आपकी इच्छित-वस्तु आपको दे दी तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा, ऐसा समझें ।

यह निश्चित है कि, इस प्रसग पर यदि आपके प्रति वह व्यक्ति कोई अशुभ वाणी कहे तो यह वर्ष दुखदायी रहेगा । इसके विपरीत प्रिय एव मीठी वाणी का फल शुभ ही होगा ।

(१०)

*अखैतीज के तिथ दिना, गुरु रोहण सजुत्त ।
भद्रबाहु गुरु कहत है, निपजै नाज बहुत्त ॥

वैशाख शुक्ला तृतीया को गुरुवार के साथ रोहिणी नक्षत्र आजाय तो भद्रबाहु गुरु कहते हैं कि, इस वर्ष अन्न बहुत उत्पन्न होगा ।

(११)

आखातीजा उत्तर बाजे ।
(तो) दिन इक्कीसा इंदर गाजे ॥

---

* इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें भी मिली हैं—

१ अखैतीज तिथि के दिना, गुरु होवे सजूत ।
तो भाखै यू भड्डुली, उपजै नाज बहुत ॥

२. अखैतीज तिथि के दिना गुरु रोहिणी सजूत ।
सहदेव जोषसी यू कहे, निपजै नाज बहुत ॥

पच्छम वायु सुख की खाण ।
दक्खण वायु करै खड हाण ।।
पूरब वायु अखण्डी होय ।
निपजै अन्न न जीमै कोय ।।

अक्षय-तृतीया के दिन उत्तर दिशा का वायु, इक्कीस दिन वर्षा का योग बनाता है । इस दिन वायु पश्चिम का हो तो यह सुख की खान माना जाता है । इस दिन, दक्षिण दिशा का वायु कृषि के लिये हानिकारक है । यदि यह वायु पूर्व दिशा का हो तो इस वर्ष अन्न बहुत होगा जो खाया नही जावेगा

(१२)

वायु द्वारा वर्षा ज्ञान ।।

आखातीजा के दिना, कर वायु को ज्ञान ।
समयो कैसो नीपजै, निश्चै करने जाण ।।
पूरब उत्तर वायरो, आछो समो बताय ।
दिक्खण अग्नी चालताँ, काल पडेलो आय ।।
वायु पच्छम चालता शुभ सम्वत ले धार ।
बोहली विरखा होवसी, सुख पावै नर नार ।।

अक्षय-तृतिया के दिन जिस दिशा का वायु है, इसके आधार पर वर्ष के शुभाशुभ का निश्चय करे । इस दिन पूर्व एव उत्तर का वायु हो तो फसल के लिये उत्तम है । दक्षिण एव अग्नि कोण का वायु अकाल सूचक है । सद्भाग्य से इस दिन पश्चिम का वायु चले तो यह शुभदायक होगा और पर्याप्त वर्षा होने के कारण लोग सुखी होगे ।

(१३)

आखातीजा के दिना, कर वायु को ज्ञान ।
समयो कैसो नीपजै, निश्चै मन ले जाण ।।

ईशाण पूरब उत्तरा, सुवृष्टि अर सुगाल ।
दिक्खण नेरुत अगनी हुया, अलपमेह अर काल ।।
वायव कूण सू अन बधे, पण टीड आय खाजाय ।
पच्छम सू विरखा घणी, पुहुमी सुख न समाय ।।
भूलै चूकै वायरो, जे चारू दिश हो जाय ।
सुख नहि पावे मानवी, विग्रह अवश कराय ।।

अक्षय-तृतिया के दिन ईशाण कोण, पूर्व एव उत्तर दिशा का वायु इस वर्ष के लिये सु-वृष्टिकारक एव सुभिक्षदायक होगा । वायव्य कोण का हो तो अन्न की उत्पत्ति तो होगी किन्तु टिड्डियो द्वारा अन्न नाश होगा । पश्चिम का वायु, अधिक वर्षाकारक एव सुखदायक होगा । किन्तु नैऋत्य कोण एव दक्षिण का वायु, वर्षा की कमी तथा दुर्भिक्ष सूचक रहेगा । कदाचित इस दिन वायु चारो ही दिशा मे चले तो इस वर्ष विग्रह अवश्य होगा, परिणाम स्वरूप लोग सुख नही पावेंगे ।

(१४)

आखातीज तणे दिन जो, पहर चौथ लो विचार ।
घडी बै पूर्व वायसे जी, असाडे मेह नो निरधार ।।
घडी बे उत्तर वायसे जी, श्रावणे मेह नो गाज ।
घडी बे पश्चिम नो होवेजी, तो भादरवे मेह नो वास ।।
घडी बे दक्षिण वायसे जी, तो ए सही निरधार ।
आसोजे विरखा होवेजी, एतो पाछलो पहर विचार ।।

अक्षय-तृतिया के पिछले प्रहर की आठ घडियो में वायु प्रथम की दो घडी पूर्व का हो तो वर्षा आषाढ मे होगी । दूसरी दो घडियो मे उत्तर का वायु होतो वर्षा श्रावण मे होगी । तीसरी दो घडियो मे वायु पश्चिम का हो तो वर्षा भाद्रपद मे होगी और शेष दो (चौथी) घड़ियों में वायु दक्षिण का हो तो वर्षा आश्विन मे होगी ।

(१५)

मध्याह्न-सूर्य के वर्ण से वर्षा ज्ञान

आखातीज दुपार की विरियां, भाण्डो जल सू पूर।
जिण दिश सूरज लाल व्है, उण दिश जुद्ध जरूर॥
लीलो पीली होय तो, रोग भय कराय।
टीड ऊदरा धूघले, धोलो भलो केवाय॥

अक्षय-तृतिया के दिन मध्यान्ह को किसी बरतन मे जल भरकर, इस जल मे सूर्य का प्रतिबिम्ब देखो। इस पात्र मे सूर्य का रग जिस दिशा मे लाल दिखाई देगा उस दिशा मे अवश्य ही युद्ध-विग्रह होगा। नीला या पीला दिखाई दे तो रोग का भय होगा। इसके विपरीत श्वेत दिखाई देने से इस वर्ष सुभिक्ष होगा। कदाचित् यह धुन्धला (अस्पष्ट) दिखाई दे तो कृषि पर टिड्डियो एव चूहो का आक्रमण होगा।

(१६)

आखातीजा साझ का, करो एकठो धान।
मन मे निश्चै धारकर, लेवो सातू धान॥
जा खेता मे ऊभकर, पूरब दिश लो हेर।
जूदा-जूदा राख कर, करो वृक्ष तल ढेर॥
पड्यो रात मे यूं ही राखो, दिगुण्यां ध्यान लगावो।
समयो कैसो नीपजै, आगम बात बतावो॥
बिखरी ढेरी देख कर, समझो मनके माय।
ओ ही नाज निपजसी, इण मे संशय नाय॥
साबत ढेरी देख कर, मन ने यूं समझावो।
ए धान नही नीपजे, 'वर्ष प्रबोध' दिखावो॥‡

---

‡ वर्ष प्रबोध पृष्ठ २७१ श्लोक स० २४६

अक्षय-तृतिया की सायकाल के समय पृथक-पृथक सातो अनाज लेकर किसी एकान्त स्थान की ओर पूर्व दिशा मे स्थित किसी पेड के नीचे इनकी अलग-अलग ढेरियें लगा दें। ये ढेरिये वहाँ रात भर पड रहे। दूसरे दिन प्रात काल जाकर इन्हे देखें। जिस अनाज की ढेरी बिखरी हुई होगी, इस वर्ष वह अनाज बहुत उत्पन्न होगा। जो ज्यो की त्यो पडी मिले उन-उन अनाजो का उत्पादन नही होगा, ऐसा 'वर्ष-प्रबोध' नामक सस्कृत ग्रन्थ का उल्लेख है।

(१७)

सियार द्वारा वर्ष ज्ञान

आखातीजा रात ने, जे नहि बोले स्याल।
खड पाणी बिन मानवी, मोटो पडे दुकाल॥
पूरब उत्तर बोलता, समयो भलो कहन्त।
पिच्छम कहिजे करवरो, दिक्खण काल महन्त॥
चहुदिश एक टहूकडो, वरस बडो विकराल।
कोइयक जावे मालवे, कोइयक सिधा पाल॥

अक्षय-तृतिया की रात्रि में ध्यान पूर्वक सियार (गीदड) की आवाज को सुनना चाहिये। यदि इस रात्रि भर सियार बोले ही नही तो इस वर्ष भयकर अकाल होगा और घास बिना पशु एव जल बिना मनुष्य कष्ट पावेंगे। यदि यह आवाज पूर्व किम्वा उत्तर दिशा की ओर से सुनाई दे तो वर्ष शुभ होगा और फसल अच्छी होगी। पश्चिम दिशा की ओर से इस आवाज का सुनाई देना सूचित करता है कि अन्नोत्पादन साधारण ही होगा। किन्तु दक्षिण दिशा की ओर से इसका सुनाई देना महान अकाल का सूचक है। कदाचित इस रात्रि मे सियार चारो दिशाओ मे बोलते हुए सुनाई दे और एक ही आवाज करे तो निश्चय

समझ लें कि इस वर्ष ऐसा भयकर अकाल पडेगा कि, कइयों को मालवे की ओर और कइयों को सिन्ध से पार जाना पडेगा।

(१८)

पहली पौरा रात ने, जम्बुक नाद करै।
पहले मास जो बरसना, नाडा नीर भरै॥
दूजी पौरा लागता, जम्बुक बोले जोर।
सावण मे विरखा घणी, मगल गावै मोर॥
तीजा पोरा रात ने, रुवाला राग करन्त।
भादवडे सरवर भरे, परजा भोग भरन्त॥
चौथी पोरा रात ने, जम्बुक बोले वन्न।
खड पाणी जह तह हुवै, रग रूली बहु अन्न॥
प्रहर प्रहर मास जु जाणिये, दिश दिश तणा विचार।
जिण दिश जम्बू बोले बहुत, तिण दिश मेह अपार॥
कम बोल्या कम समो, अधिका अधिक समोय।
जिण दिश बोली ना सुणो, काल पड्यो लो जोय॥

वैशाख शुक्ला तृतिया (अक्षय-तृतिया) की रात्रि के चारो प्रहरों मे सियार की आवाज से वर्षा को शुभाशुभ का ज्ञान करें। प्रथम प्रहर मे बोले तो वर्षाकाल के प्रथम मास आषाढ मे वर्षा होगी। द्वितीय प्रहर मे बोले तो श्रावण मे, तीसरे प्रहर मे बोले तो भाद्रपद में और चौथे प्रहर मे बोले तो आश्विन मे वर्षा होगी। किन्तु साथ में यह भी ध्यान रखें कि जिस प्रहर में जिस दिशा में बोले तो उसके क्रम से जो मास होगा और जो दिशा होगी उधर ही उसका फल होगा। जिस दिशा मे अधिक बोलेगा, उस दिशा मे अधिक और कम बोलने पर कम वर्षा होगी। जिस दिशा से आवाज ही नही आवेगी उस दिशा में अकाल होगा।

(१९)

प्रथम पूर्व उत्तर भलो, समयो भलो कहन्त ।
पच्छम कहिजे करवरो, दिक्खण काल करत ।।
चहुँ दिश एक टहूकडो, बरस बड़ो विकराल ।
कइयक जावे मालवे, कइयक गगा पार ।।
आखातीजा रातडे, जे नहि बोले स्याल ।
खड़ अम्बू बिन मानवी, मोटो पडे दुकाल ।।

सर्व प्रथम सियार की आवाज पूर्व या उत्तर की ओर से सुनाई दे तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। पश्चिम से सुनाई दे तो कृषि मध्यम। किन्तु दक्षिण की ओर से हो तो दुर्भिक्ष होगा । समस्त रात्रि मे सियार एक ही बार बोले तो भयकर अकाल होगा जिसके कारण जीवन निर्वाहार्थ मनुष्यो को मालवे की ओर अथवा गगा के पार जाना पडेगा। इसी प्रकार यदि समस्त रात्रि भर सियार बोले ही नहीं तो भयकर अकाल होगा ।

(२०)

सूर्य एवं चन्द्रमा द्वारा वर्षा ज्ञान

आखातीजा सांझका, देख चान्द अर भान ।
समयो कसो होवसी, करले भट अनमान ।।
बायो चन्दो वित्त हणे, दायो करै सुगाल ।
सामा सामा सचरिया, पडे अचिन्तो काल ।।

अक्षय-तृतीया के दिन सायकाल को आकाश मे सूर्य एव चन्द्रमा की ओर देखें। यदि चन्द्रमा, अस्त होते सूर्य से दक्षिण मे होतो वन-पशु आदि की हानि और दुर्भिक्षकारक होगा, और यही उत्तर मे हो तो

सुभिक्षकारक होगा। कदाचित, चन्द्रमा, सूर्य के स्थान पर ही-सम्मुख—हो तो इस वर्ष, अन्न अत्यन्त महँगा हो जावेगा। अर्थात् अचानक ही अकाल के लक्षण प्रतीत हो जावेंगे।

(२१)

आखातीजा परवा बाजै,
तो असलेखा गहरा गाजै।
भीजै राजा राणी भूलै,
रोग दोख मे परजा झूलै॥

अक्षय-तृतिया के दिन पुरवा हवा चले तो जब सूर्य आश्लेषा नक्षत्र पर आवेगा तब बादलो की गर्जना बहुत होगी और खूब मेह बरसेगा। सस्य श्यामला भूमि को देखकर राजा-राणी मनमे मुदित होंगे। किन्तु, अत्यधिक वर्षा के कारण प्रजा रोग-दोष मे झूलेगी अर्थात् ज्वरादि व्याधियो के कारण कष्ट मे होगी।

(२२)

जल बरसै मुख सर्पणी, अश्लेषा मे जोय।
ताव तिजारी नारवो, जानू डहरू होय॥

अश्लेषा नक्षत्र मे वर्षा हो तो शरद-ऋतु की (रबी की) फसल तो उत्तम होगी किन्तु प्रजा मे इकतरा, तिजारी आदि ज्वर, नहरुवा, जानु, डहरू आदि रोग होगे।

(२३)

कृतिका रोहणी मृगसिर, आखातीजां होय।
मध्यम चोखो अर बुरो, क्रम सू समयो जोय॥

अक्षय-तृतिया के दिन कृतिका नक्षत्र हो तो फसल मध्यम, रोहिणी हो तो उत्तम और मृगशिरा हो तो इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा।

(२४)

आखातीजा के दिना, जे ती रोहण होय ।
ते ती समयो होवसी, जाण लेवो सब कोय ।।

अक्षय-तृतिया के दिन रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी होगा उस वर्ष उसी प्रमाण से कृषि होगी। अर्थात् सम्पूर्ण हो तो पूरी होगी। इसके परिणाम स्वरूप रस तथा धान्य सस्ते होंगे।

(२५)

आखातीजा पीठ दे, वावल आवै मोडी ।
*जो वेगी दिन पाँच सात, त साख नीपजै थोडी ।।

अक्षय-तृतिया के बाद आन्धी विलम्ब करके (बहुत दिन बाद) आवे तो वर्षा ऋतु की वर्षा द्वारा अन्न बहुत होगा। कदाचित यह पाँच सात दिन में ही आजाय तो अन्न का उत्पादन कम होगा।

(२६)

आखातीजा इक मास दे वावल आवै काली ।
(तो) भर भादवडे गाजसी, मेघ घटा मतवाली ।।

अक्षय-तृतिया के एक मास बाद काली-पीली आन्धियें आवे तो वर्षाकाल मे भाद्रपद-मास मे मेघ उन्मत्त होकर बरसेंगे।

(२७)

चन्द्र छोडे हिरणी, तो लोग छोडे परणी ।।

---

* चमत्कार मेघमाला नामक पुस्तक मे इस उक्ति की दूसरी पंक्ति इस प्रकार से है—

जो वेगी दिन पांच दस, साख नीपजै थोडी ।

अक्षय-तृतिया को चन्द्रमा मृगशिरा नक्षत्र के तीनों तारो को छोड जाय अर्थात् इसके पूर्व ही अस्त हो जाय तो इस वर्ष, ऐसा भयकर अकाल पडेगा कि, लोग अपनी विवाहिता पत्नी तक को छोडकर अपने जीवन निर्वाह की चिन्ता मे पड जावेंगे।

(२८)

चौथ ऊजली वैसाख की, सिंझ्या वायु जोय।
जे उत्तर की हो जाय तो, समयो आछो होय ॥

वैशाख शुक्ला चतुर्थी की शाम को उत्तर दिशा की वायु चले तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा।

(२९)

पाचू सुद वैसाख की, सिंझ्या वायु देख।
जे दिस पूरब होय तो, भादू मूघो पेख ॥

वैशाख शुक्ला पचमी की सायकाल को पूर्व दिशा का वायु हो तो इस के प्रभाव से भाद्रपद मास मे अन्न का भाव महँगा हो जावेगा।

(३०)

सुद वैसाखा पचमी, आभो गरजै जोय।
तृण सगरे कर राखलौ, भादू मूघो होय ॥

वैशाख शुक्ला पचमी को सायकाल के समय आकाश मे बादलो की गर्जना होती रहे तो इस वर्ष के लिये घास का सग्रह कर लेना चाहिये। क्योंकि भाद्रपद मे यह महँगा हो जावेगा।

(३१)

सुद वैसाखां पचमी, रवी वार जो होय।
बिरखा थोड़ी होवसी, ध्यान देवो सब कोय ॥

सोम समन्दर भर देवे, मगल दगल जाण ।
बुध वावल आवसी, गुरु शुभ है पहचाण ।।
रगडा झगडा शुक्र मे, शनि रोग बरताय ।
आगम बाता देखकर, मन ने लो समझाय ।।

वैशाख शुक्ला पचमी को रविवार हो तो इस वर्ष, वर्षा कम होगी। सोमवार होने पर बहुत वर्षा होगी। मगलवार हो तो युद्ध, लडाई-झगडे होगे। बुधवार होने पर जोर से वायु (आँधियें) चलेंगे। गुरुवार का आजाना इस वर्ष के लिये शुभ है। शुक्रवार आजाय तो परस्पर रगडे-झगडे (कलह) होगे और शनिवार आने पर प्रजा मे रोग-वृद्धि होगी।

(३२)

वैसाख सुदी पाचम दिना, आभे बादल छाय ।
पूरब रो वायु चलै, गाज मेह हो जाय ।।
सग्रह अन को कर लेवो, मान लेवो सब कोय ।
भादवडे के मायने, निश्चै मूघो होय ।।

वैशाख शुक्ला पचमी के दिन आकाश मे बादल हो, पूर्व का वायु चले, गर्जना हो,वर्षा होजाय तो अन्नका सग्रह कर लेना चाहिये। यह भाद्रपद माम मे महगा होवेगा।

(३३)

वैसाख सुदी सप्तमी, बादल बिजली होय ।
पूरब की वायु चलै, बून्दाबान्दी होय ।।
सग्रह अन को कर लेवो, समझो मन के माय ।
भादू मूघो होवसी, इण मे सशय नाय ।।

वैशाख शुक्ला सप्तमी को आकाश मे बादल हो, बिजली चमके,

पूर्व की वायु हो और बूदाबादी हो जाय तो इन लक्षणो को देखते हुए अभी से अन्न का सग्रह कर लेना चाहिये। क्योकि निस्सदेह यह, भाद्रपद मे महगा हो जावेगा।

(३४)

एकम सू सातम तलक, वैसाख सुदी के माय ।
गाज बीज मेह बादला, समयो आछो थाय ॥

वैशाख शुक्ला प्रतिपदा से सप्तमी (इस एक सप्ताह) तक यदि बादल, बिजली, गर्जना एव वर्षा हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा।

(३५)

सुदी वैसाखा अष्टमी, जे आवै शनिवार ।
काल पडे विरखानही, जुद्ध होय भरमार ॥

वैशाख शुक्ला अष्टमी को शनिवार आजाय तो इस वर्ष, वर्षा के अभाव से अकाल पडेगा और युद्ध भी होगा।

(३६)

नवमी सुद वैसाख की, जे मेघाडम्बर होय ।
चौमासे विरखा नही, करसण मत कर कोय ॥

वैशाख शुक्ला नवमी को आकाश मे जोरदार बादल हो तो कोई भी कृषक, कृषि न करे। क्योकि वर्षा काल मे वर्षा का अभाव रहेगा।

(३७)

*एकम सातम अष्टमी, नवमी लीजो जोय ।
वैसाख सुदी बादल हुया, विरखा वेगी होय ॥

---

* इसके एव प्रतिपदा के विपरीत निम्न उक्ति भी मिली है—
पडवा दसमी ऊजली, मास वैसाखा जोय ।
चौमासे विरखा नहीं, जे इण दिन बादल होय ॥

वैसाख शुक्ला प्रतिपदा, सप्तमी, अष्टमी और नवमी को आकाश में बादल हो तो वर्षा शीघ्र आवेगी।

(३८)

सुद दसमी वैसाख की, शुभ बादल हो जाय।
पूरब वायु भादवे, मूघो धान बिकाय॥

वैशाख शुक्ला दशमी को बादल होना तो शुभ है किन्तु इस दिन पूर्व दिशा का वायु हो तो, भाद्रपद मास मे अन्न को महगा कर देता है।

(३९)

वैसाख सुदी एकादसी, बादल बीज करेह।
दूणा दाम विसाहिया, चित्त न साख धरेह॥

वैशाख शुक्ला एकादशी को आकाश मे बादल हो, बिजली हो तो भविष्य के लिये दूने मूल्य पर भी खाद्यान्न संग्रह कर लेना चाहिये। क्योंकि, चित्त मे यह विश्वास नही होता है कि, वर्षा काल मे अन्न की उपज हो जावेगी ही।

(४०)

वैसाख सुदी ग्यारस बारस तेरसे,
बादल छांटा होइ बिजली गाज लसै।
राज उपद्रव होइ तेहुँ आ वरसना,
छत्र भग इहिकालहि सब नर तरसना॥

वैशाख शुक्ला एकादशी, से त्रयोदशी इन तीन दिनो मे बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके, बूंदाबादी हो, बादल हो तो इस वर्ष राज्यो मे उपद्रव होवे, राज्य किम्वा राज नष्ट होंगे और लोग सुख एव शान्ति के लिये तरसेंगे, लालायित होंगे।

(४१)

वैसाख सुदी ग्यारसै, एहवा दीसै ठार ।
तेरस गाज बीजल खिवै, नहिं जाणीजै सार ।।

वैशाख शुक्ला एकादशी से त्रयोदशी तक बादलो की गर्जना हो, वर्षा हो, बिजली चमके तो समझ लेना चाहिये कि यह वर्ष सारहीन ही व्यतीत होगा । अर्थात् अकाल ही पड़ेगा ।

(४२)

सुद चवदस वैसाख की, जो बिरखा हो जाय ।
समयो आछो होवसी, मेह भलेरो थाय ।।

वैशाख शुक्ला चतुर्दशी को वर्षा हो जाय तो इस वर्ष वर्षा अच्छी होने से कृषि उत्तम होगी । अर्थात् सुभिक्ष होगा ।

(४३)

वैसाख सुदी पूनम दिना, जे विरखा हो जाय ।
भादूडा के मायने, मूघो धान कराय ।।

वैशाख शुक्ला पूर्णिमा के दिन यदि वर्षा हो जाय तो आगामी भाद्रपद मे अन्न महगा होगा ।

(४४)

*वैसाखी पूनम दिने, मेह आरम्भ करेह ।
धान मूघो होवसी, भडली वचन सुणेह ।।

---

* इस उक्ति के पक्ष और विपक्ष मे निम्न उक्तिये उपलब्ध हुई हैं '—

विपक्ष मे—

वैशाखा पूनम दिवस मेहारम्भ करै । धान मूहगो भादवै, भडली वेण धरै।।

पक्ष अर्थात् समर्थन मे—

जै वैसाखी पूनमे मेहारम्म करै । धान महगो भादवै, भड़ली वचन धरै ।।

वैशाख शुक्ला पूर्णिमा को वर्षा प्रारम्भ हो जाय तो भविष्य मे अनाज महगा हो जावेगा ।

(४५)

वैसाख मास के मायने, पाच होय रविवार ।
काल पडे विरखा बिना, दुख पावै नर नार ।।

वैशाख मास मे पाँच रविवार होने से वह वर्ष अकाल का होगा और प्रजा दु ख पावेगी ।

(४६)

पाचम सातम नवमी, ग्यारस तेरस जोय ।
वैसाख सुदी मे विरखा हुया. आछी विरखा होय ।।

वैशाख शुक्ला पचमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी और त्रयोदशी के दिनो मे वर्षा हो तो वर्षा काल मे अच्छी वर्षा होगी ।

(४७)

वैसाख मास के मायने, पाच मगल आजाय ।
अग्नि भय व्यापे बहु, विरखा भी खिंच जाय ।।

वैशाख महीने मे पाँच मगलवार आने से उस वर्ष अग्नि का प्रकोप होगा और कही-कही वर्षा भी विलम्ब से आवेगी ।

(४८)

वैसाखा जे घरण करै, पाँच वरण आकास ।
तो जाणीजे भड्डुली, पुहमी नीर निवास ।।

वैशाख महीने मे आकाश मे पचरगे बादल दिखाई दे तो भडली को सम्बोधन करते हुए कवि कहता है, पृथवी पर जल का निवास ही होगया है, ऐसा समझ लें ।

(४९)

‡वैसाखे बादर पचरग । अथवा चमकै बिजली सग ।।
तो अनेक घन जग बरसाई । सावण मे बहु अन्न नसाई ।।

वैशाख महीने में आकाश मे पचरग बादल दिखाई दे साथ मे बिजली चमकती हो तो इन लक्षणो को देखकर कवि कहता है, वर्षाकाल मे बहुत से बादल आ-आकर जल बरसा देंगे यहाँ तक कि, श्रावण का अन्न नष्ट हो जावेगा ।

(५०)

†आखातीज रोहण ना होई । पौष अमावस मूल न जोई ।।

---

‡ इस उक्ति के विपरीत निम्न भी मिली हैं ,—

१ बादल जो वैसाख मे, दीख पडै पचरग ।
अथवा मेघ वर्षही, चमक बीजु के सग ।।
तौ चौमासे वर्षही, मेघ मही पर जान ।
सावण मे उपजै घणो, नाज अनेक विधान ।।

२ पचरगा बादल हुवै, जे वैसाखा मास ।
गाज बीज व्है मोकली, तो कर फलरी यू आस ।।
भादरवा रे मायने, मेह बरसैलो आय ।
अन्न निपजैला मोकलो, लोग खुशी होजाय ।।

वैशाख मास मे पाँच वर्ण के बादल, बिजली एव गर्जना बहुत हो तो ये शुभ लक्षण हैं । इन लक्षणो के आधार पर वर्षा-ज्ञान के वेत्ता कहते हैं कि उस वर्ष भाद्रपद मास मे वर्षा होगी और अन्न का उत्पादन बहुत होगा ।

† आखातीजा न रोहणी, पौसी न दीखै मूल ।
राखी सरवण नहिं मिल्या, चहूँदिस उडसी धूल ।।

राखी श्रवणो हीनविचारो । कातिक पूनम कृतिका टारो ।।
महि मांहे खल बल ही परकासै । कहत भड्डली धान बिनासैं ।।

अक्षय-तृतीया को यदि रोहिणी न हो, पौष की अमावस्या को मूल न हो, रक्षा-बन्धन के दिन श्रवण न हो और कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका न हो तो, इन लक्षणो से भड्डरी कहता है कि उस वर्ष, पृथ्वी पर दुष्टो का बल बढेगा और धान अर्थात् चावल (सम्भव है यहाँ अन्न का भी सकेत हो) की उपज नही होगी।

(५१)

वइसाक जेटो तपे, टाड पडे जे पोस ।
खूब मरोडे खेड ुता, तो बाकडली मोस ।।

वैशाख और ज्येष्ठ मास की तीक्ष्ण गरमी और पौष मास में अधिक शीत ये लक्षण आगामी चातुर्मास मे अधिक वर्षा एव फसल का अच्छा पकना सूचित करता है। अत कवि कहता है कि इन लक्षणो को देख कर कृषक प्रसन्न होकर आनन्द मे उन्मत्त हो साभिमान अपनी मूंछो पर ताव देता है।

ए तीन्यू आरख मिल्या, जग मे हुवै जय जयकार ।
तीन्यू जे नहिं मिले, तो समो करवरो धार ।।
सारा आरख मे ए सिरै, सुगणी केव्है सुजाण ।
पैली आरख देखकर, पाछे मेह बखाण ।।

पौष कृष्णा अमावस्या के दिन मूल नक्षत्र, वैशाख शुक्ला तृतीया के दिन रोहिणी नक्षत्र और श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन श्रवण नक्षत्र न हो तो इस वर्ष चारो ओर धूल ही उडती रहेगी। सद्भाग्य से ये तीनो ही जिस वर्ष मिल जाते है तो इस वर्ष प्रजा मे सब प्रकार से आनन्द ही आनन्द होता है। इसलिये भविष्यवेत्ता को चाहिये कि वह सर्व प्रथम इन्हे देख कर ही भविष्यवाणी करे।

(५२)

वइसाके लइ जेठ हुदि, जो कोरामण जाय ।
पकवाड तो तण मयें, माती वरखा थाय ।।

वैशाख महीने से ज्येष्ठ तक जो वर्षा की हवाएँ आकाश मे जाय तो इस लक्षण से तीन पक्ष अर्थात् डेढ मास के अन्दर-अन्दर अच्छी वर्षा होने की सूचना है ।

(५३)

झरनी आवे जाय, तो वरती पासी थाय ।
दरियो हैलोरे सडे, वगडे रांक उलाय ।।

ये वर्षा की हवाए (समुद्र से मानसून उठने से) छीटे गिराती हुई आकाश मे से जाय तो वे बरसती हुई वापस आती है । परिणाम स्वरूप नदियो मे बहुत पानी आता है और जगल के वृक्ष हरे-भरे हो जाते हैं ।

(५४)

आठम चवदस वैसाख री, दिक्खण वाजे वाय ।
गाज बीज भी होय तो, आछो मेह कराय ।।

वैशाख मास के कृष्ण या शुक्ल किसी भी पक्ष मे दक्षिण का वायु हो और बिजली का चमकना, बादलों का गरजना भी हो तो भविष्य मे अच्छी वर्षा की यह अग्रिम सूचना है, ऐसा समझें ।

(५५)

सिझ्या पछ्या की बाद मे आभा कानी देख ।
रोहण पाँचू तारा थकी, ध्यान लगाकर पेख ।।
चन्दो होवे बीचमे, के लकाऊ हुय जाय ।
तो काल पडे परजा मरे, हा हा कार मचाय ।।

धूराऊ चन्दो हुया, निपजै आछी साख ।
सुभिक्ष क्षेम सारा हुवै, आ निश्चै मनमे राख ।।

वैशाख शुक्ल पक्ष मे रोहणी हो उस दिन सूर्यास्त के पश्चात 'पश्चिम दिशा मे चन्द्रमा को देखे । चन्द्रमा रोहिणी, जो पाच तारो द्वारा एक गाडी का आकार बन जाता है, इनके मध्य मे अथवा दक्षिण मे हो तो इस लक्षण से उस वर्ष भयकर अकाल होगा । कदाचित यह, उत्तर मे हो तो यह लक्षण शुभ है । अत उस वर्ष इसके प्रभाव से सुभिक्ष क्षेम एव अन्न की उत्पत्ति बहुत होगी ।

वैसाख मास कृष्ण पक्ष

(१)

पडवा कृष्ण वैसाख की, आभो लेवो जोय ।
भोर सम सूरुज ढक्यो, समयो आछो होय ।।

वैशाख कृष्णा प्रतिपदा को प्रात काल उदय होते हुए सूर्य को देखे । यदि यह बादलो से ढंका हुआ दिखाई दे तो, यह वर्ष अच्छा होगा अर्थात् इस वर्ष फसल उत्तम होगी ।

(२)

वैसाख वदी एकमे, बादल वायु सवार ।
मेह घणो बरसात मे, सुखी होय नर नार ।।

वैशाख कृष्णा प्रतिपदा को आकाश मे बादल वायु पर सवार

हुए दिखाई दे अर्थात बादल दौडते नजर आवे तो आगामी वर्षाकाल मे वर्षा बहुत होगी, जिसके परिणाम स्वरूप प्रजा आनन्दित होगी ।

(३)

वैसाखे अन्धारिये पडवा ऊनमणाय ।
जे दिस घन ऊनम्यो, बरसे मेह उलाय ॥

वैशाख कृष्णा प्रतिपदा को आकाश मे बादल उमड-उमड कर आवे, गर्जना करे तो जिस दिशा की ओर बादल उमडे हुए होगे, उधर वर्षाकाल मे इतनी वर्षा होगी कि नदी, तालाब आदि सब भरे ही रहेगे ।

(४)

जिण दिस आजे वादला, उण दिस साची जाँण ।
धन धान रसावली, भड्ली करै वखाण ॥

भडली, विशेष जोर दे कर कहता है कि, इस दिन जिस ओर बादल उमडेंगे उस दिशा मे धन-धान्य एव रसादि पदार्थ बहुतायत से होगे ।

(५)

पडवा कृष्ण वैसाख सू, सात दिना तक देख ।
घण गरजै विजली खिवै, समयो आछो पेख ॥
उगै भाण दीखै नही, इणा दिना के माय ।
विरखा आछी होवसी, इण मे सशय नाय ॥

वैशाख कृष्णा प्रतिपदा से सात दिनो तक देखो । इन दिनो मे आकाश मे बादल गरजे, बिजली चमके तो वर्षा अच्छी होने से कृषि उत्तम होगी । इन दिनो मे उदय होता हुआ सूर्य बादलों के कारण दिखाई न दे तो अच्छी वर्षा होने मे लेश मात्र सशय नही है ।

(६)

पड़वा कृष्ण वैसाख की, रिछ सू घडी मिलाव ।
कमती हुया विरखा कमी, इधके इधक बताव ॥

वैशाख कृष्णा प्रतिपदा की घडियों को इस दिन के नक्षत्रो की घडियो से मिलावें । यदि नक्षत्र की घडियो से वे कम हैं तब तो वर्षा कम होगी और कदाचित अधिक हुई तो आगामी वर्षाकाल मे वर्षा अधिक होगी ।

(७)

सातम शनिवार की, वैसाख वदी के माय ।
भरणी कृतिका रोहणी, मृगसिर जे आजाय ॥
आवे मगल नक्षत्र पर, समझ लेवो सब कोय ।
कासी ताम्बो पीतल भी, अवशे मूघो होय ॥
श्रीफल सुपारी पीपरी, लाल वस्त्र मिल जाय ।
मगरे कर राखो सबी, मूघा मोल बिकाय ॥

वैशाख कृष्णा सप्तमी के दिन शनिवार हो और भरणी, कृतिका रोहिणी तथा मृगशिरा इनमे से किसी पर भी मगल हो तो कांसी, ताम्ब पीतल, नारियल, सुपारी, पीपर एव लाल वस्त्र इनका सग्रह कर लो । क्योकि आगे चलकर ये महँगे हो जावेंगे ।

(८)

वद वैसाखां अष्टमी, गाज बीज बरसाय ।
लकाऊ वायु चल्या, समयो आछो थाय ॥

वैशाख कृष्णा अष्टमी को बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके, वर्षा हो, दक्षिण दिशा का पवन हो तो वर्षाकाल मे अच्छी वर्षा होने से कृषि उत्तम होगी ।

(९)

वद वैसाखा एकमे, नवमी निरती जोय ।
जे घण दीसे उणमणा, वरसै सगला लोय ॥

वैशाख कृष्णा प्रतिपदा और नवमी के दिनो को ध्यान पूर्वक आकाश की ओर देखे । इन दिनो मे आकाश मे बादल उमडते हुए दिखाई दे (गर्जना करे) तो वर्षाकाल मे सर्वत्र वर्षा होगी ।

(१०)

ग्यारस वद वैसाख की, मेघ प्रबल् होजाय ।
अन बेचो करसण करो, समयो आछो थाय ॥

वैशाख कृष्णा एकादशी को आकाश मे मेघ प्रबल हो तो संचित अन्न को बेच दो और कृषि मे जुट जाओ । क्योकि, यह उत्तम कृषि होने का योग है ।

(११)

वद वैसाखा तेरसे, रवि मगल जे आवे ।
पान खाण्ड सीधो नमक, मूघो होय बतावे ॥

वैशाख कृष्णा त्रयोदशी को रवि, मगल इन मे से कोई-सा वार हो तो, पान, खाण्ड अर्थात चीनी, सैन्धा नमक महँगे हो जावेंगे ।

(१२)

वद वैसाखा चौदसे, गुरु सुक्कर आ जाय ।
समयो आछो होवसी, पुहुमी अन न समाय ॥

वैशाख कृष्णा चतुर्दशी को गुरु या शुक्र मे से कोई-सा वार आ जाय तो इस वर्ष अन्न का इतना उत्पादन होगा कि रखने को स्थान नही मिलेगा ।

(१३)

मावस मास वैसाख ने, रवि शनि मगलवार ।
छत्र भग के घन सबल, लोग हुवे लाचार ।।

वैशाख कृष्णा अमावस्या को शनि, रवि या मगलवार मे से काई-सा वार आ जाय तो इस वर्ष किसी राजा का नाश होगा या अति-वृष्टि के कारण जनता कष्ट पावेगी ।

(१४)

वद वैसाखां मावसे, रेवति होय सुगाल ।
मध्यम होवे अश्विनी, भरणी करै दुकाल ।।

वैसाख कृष्णा अमावास्या को रेवती नक्षत्र का होना उत्तम कृषि होने की सूचना है । यदि अश्विनी हो तो मध्यम और दुर्भाग्य से भरणी हो तो इस वर्ष अकाल होगा ।

(१५)

वैसाख वदी मावस देखो, किरण निखता पर आवे ।
असनी समयो करवरो, ऐसो जोग बतावे ।।
भरणी व्याधि फैलसी, लोग दुखी होजाय ।
कृतका मे कम मेवडो, चोर लूट कर खाय ।।
लड़े परस्पर राजवी, भय पामे ससार ।
जे रेवति आ जाय तो, सुख पावे नर नार ।।
भूलै चके रोहणी, इण दिन जे आजाय ।
चैन न पावे मानवो, दुखी जगत हो जाय ।।

वैशाख कृष्णा अमावास्या को रेवती नक्षत्र हो तो वर्ष अच्छा निकलेगा । किन्तु अश्विनी आ गया तो यह वर्ष साधारण ही रहेगा अर्थात् कही पर अन्न उत्पन्न होगा और कही पर नहीं भी । इस दिन

भरणी नक्षत्र होने से प्रजा मे रोग फैल जाने से लोग दुखी रहेगे । दुर्भाग्य से कृत्तिका नक्षत्र हुआ तो वर्षा-ऋतु मे वर्षा कम होगी और चोर-डाकू राहगीरो को लूटेंगे तथा राजा लोग परस्पर एक दूसरे पर चढाई करेंगे जिससे प्रजा चिन्तित रहेगी । इस दिन रोहिणी नक्षत्र का होना भी लोगो को अनेक प्रकार के कष्ट उत्पन्न करेगा ।

ज्येष्ठ मास शुक्ल पक्ष

(१)

जेठ सुदी पडवा दिने, वार शनी को जोग ।
छत्र भग अर जुद्ध भय, अन्न न पावे लोग ।।

ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को शनिवार हो तो इस वर्ष कोई राजा मरेगा, युद्ध भय रहेगा और लोगो को सुखपूर्वक अन्न नही मिलेगा ।

(२)

जेठ सुदी पडवा दिने, वार बुद्ध जे होय ।
अन बिन तरसे मानवी, काल पड्यो लो जोय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा के दिन बुधवार का आना अच्छा नही माना गया है । यदि ऐसा योग आजाय तो इसके प्रभाव से उस वर्ष दुर्भिक्ष होगा ।

(३)

शशि सूरज दूज दिन, जेठ सुदी के माय ।
रोहणी पर आजाय तो, दुर्भिक्ष अवश कराय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को सूर्य एव चन्द्र रोहिणी पर आजाय तो

अवश्य दुर्भिक्ष होगा और भय आदि के कारण प्रजा इस वर्ष दुःखी रहेगी ।

(४)

जेठ सुदी दुतिया दिवस, रिच्छ रोहणी होय ।
श्रावण रोहणी रिच्छ दिन, विरखा लेवो जोय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया के दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो अन्न महँगा होगा । इस दिन वर्षा हो तो जिस दिन श्रावण महीने मे रोहिणी नक्षत्र होगा, उस दिन वर्षा होगी ।

(५)

*जेठ सुदी की दूज मह, अथवा सारो पाख ।
गाज बीज घन बादला, गरभ गल्यो तो दाख ।।

ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को या इस पक्ष भर मे आकाश मे बादल हो, बिजली चमके, गर्जन हो तो आगामी वर्षाकाल मे होने वाली वर्षा का गर्भ नष्ट हो गया । अत वर्षाकाल मे वर्षा नही होगी ।

(६)

रोहणी दुतिया जेठ सुद, विरखा बादल होय ।
अति वृष्टि अर अलप मेह, क्रम सू लेवो जोय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया के दिन रोहिणी नक्षत्र हो और इस दिन

---

* इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें भी उपलब्ध हुई हैं—

१ जेठ बीजे गरजियो, जे अजवाले पक्ष ।
गरभ गल्या सहु पाछला, कहु तुझने प्रत्यक्ष ।।

२ जेठ मास मे गाजियो, जे उजियाले पाख ।
गरभ गल्या सै पाछला, जोसी बोले साख ।।

मेह बरसे तो वर्षाकाल में बहुत वर्षा होगा। कदाचित इस दिन केवल बादल ही रहे तो (मध्यम अल्प) वर्षा होगी।

(७)

रोहण दुतिया जेठ सुद, आभो निरमल होय।
चन्द्र रोहणी स्वच्छ हुया, अनावृष्टि लो जाय॥

ज्येष्ट शुक्ला द्वितीया को रोहिणी नक्षत्र हो इस दिन, दिन मे आकाश स्वच्छ प्रतीत हो और रात्रि मे चन्द्रमा एव रोहिणी तारा निर्मल दिखाई दे तो इस वर्ष, वर्षा नही होगी।

(८)

दूज तीज सुद जेठनी, जे आदरा आजाय।
इण दिन विरखा होय 'तो, घोर काल होजाय॥

ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया किम्वा तृतिया को यदि आर्द्रा नक्षत्र हो और वर्षा होजाय तो, इस वर्ष, भयकर दुर्भिक्ष होगा।

(९)

सुद पडवा अर बीज दिन, जेठ चन्द ने जोय।
धुर दिस ऊग्या है भलो, लकाऊ भलो न होय॥

ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा अथवा द्वितीया, जिस दिन चन्द्रोदय हो उस स्थान को देखे। यह स्थान सूर्यास्त के स्थान से उत्तर मे दिखाई दे तब तो शुभ दायक है और कदाचित दक्षिण की ओर दिखाई दे। तो उस वर्ष इस योग का फल अशुभ ही होगा।

(१०)

*जेठ ऊजली तीज दिन, आदरा रिख बरसंत।

---

* इनके सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें भी मिली हैं —

१. जेठ ऊजली तीज दिन, आदरा रिख वरसन्त।

भद्रबाहु गुरु यू कहै, दुरभिच्छ अवस करन्त ॥

भद्रबाहु गुरु फरमाते हैं कि, ज्येष्ठ शुक्ला तृतिया को यदि आर्द्रा नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा होजाय तो, इस वर्ष दुर्भिक्ष पडेगा ।

(११)

पाचंम जेठ सुदी की आय,
आभो निरमल दिक्खरण वाय ।
तेल तिल रस सहु मूघा होसी,
या लखरणा सू भाखै जोसी ॥
जे ईं जोगा बादल हुय जावै,
तो जो सारो धान भेलो कर लावै ।
बेचे मास आसोजा आय,
तो ईं जोगा सू नफो कमाय ॥

ज्येष्ठ शुक्ला पचमी के दिन दक्षिण-दिशा का वायु हो, उस समय आकाश निर्मल हो तो इस लक्षण के प्रभाव से उस वर्ष रस, तिल, तैल और इस दिन आकाश बादलो से ढका रहे तो या गर्जना हो तो सम्पूर्ण धान्य जो खरीद कर रखे और आसोज मास मे बेचे तो उसे बहुत लाभ होगा ।

(१२)

वायु द्वारा वर्षा ज्ञान

जेठ सुदी पाचम दिना, पूरब पच्छम वाय ।
समयो आछो होवसी, ईशारा दुरभिच्छ कराय ॥

पिछले पृष्ठ के फुटनोट का शेषांश—

जोसी भाखै भड्डरी, दुरभिच्छ अवसि करन्त ॥
२. जेठ सुदी तृतिया दिने, आद्रा जो वरसन्त ।
भड्डली भाखै जोश थी, नक्की दुरभिक्ष करन्त ॥

धूराऊ सुभिक्ष कर, पण टीड जोर खा जाय ।
वायव वृष्टि व्है नहिं, अग्नि क्लेश कराय ।।
दिक्खण नेरुत भलो नहिं, दुरभिख जोग बताय ।
जे चौबाया चल जाय तो, सरव नाश हो जाय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला पचमी को पूर्व, पश्चिम एव उत्तर का वायु सुभिक्ष-कारक, ईशान, दक्षिण एव नैऋत्य कोण का वायु दुर्भिक्षकारक, अग्नि-कोण का वायु क्लेश कारक तथा वायव्य कोण का वायु अनावृष्टिकारक होगा । यद्यपि पूर्व, पश्चिम और उत्तर दिशा के वायु सुभिक्षकारक माने जाने पर भी उत्तर दिशा के वायु के लिये यह बताया गया है कि इस दिशा का वायु सुभिक्षकारक होते हुए भी इस वर्ष यह वायु अपने प्रभाव से साथ-साथ ही टिड्डियो के आक्रमण की सूचना देता है ।

(१३)

जेठ सुदी सातम दिना, दिक्खण वाजे वाय ।
गाज वीजथी तिल तेल मे, कातिक लाभ कराय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी के दिन दक्षिण दिशा का वायु हो, आकाश मे बादल हो, गरजना होती हो तो इन लक्षणो से यह प्रतीत होता है कि यदि इस मास मे तिल, तेल सग्रह कर लिया जाय तो आगामी कार्तिक मास मे इनको बेचने से लाभ हो जावेगा ।

(१४)

जेठ सुदी आठम दिना, बादल विरखा होय ।
चौमासा के मायने, बेगी विरखा जोय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी को आकाश मे बादल हो, वर्षा हो जाय तो आगामी चातुर्मास मे वर्षा शीघ्र ही आवेगी ।

(१५)

जेठ सुदी दसमी दिना, आकाशा मे जोय ।
चन्द्र न दीसै रात मे, तो मेह धडाधड होय ॥

ज्येष्ठ शुक्ला दशमी की रात्रि को आकाश मे बादलो के कारण चन्द्र नही दीखे तो इस लक्षण से आगामी वर्षाकाल मे बहुत वर्षा होगी ।

(१६)

जेठ सुदी दशमी दिना, शनीवार जे आवै ।
ढाढा मे दुख ऊपजै, विरखा खच करावै ॥

ज्येष्ठ शुक्ला दशमी को यदि शनिवार आजाय तो इस वर्ष पशुओ मे पीडा और वर्षा की तगी रहेगी ।

(१७)

जेठ सुदी की निरजला, जेती घडिया होय ।
भाग सात को देय कर, ऊबरता फल जोय ॥

बिहु अके वरसे अपार । चिहु वरसे तो अधि घन सार ॥
पचे पच शब्द परिवाय । छट्ठे मेह जु थोडी थाय ॥
एक तीन वा शून्य मिले । भणे भड्डली वरसे सगले ॥

ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी जितनी घडी हो उनमे सात का भाग देकर जो शेष बचे उससे वर्ष का भविष्य निश्चय करे। दो शेष रहने पर अत्यधिक वर्षा होगी। चार शेष रहने पर बादल अधिक होगे और वर्षा भी होगी। पाँच शेष रहने से प्रचण्ड वायु का प्रकोप रहेगा। छह शेष रहने से अल्प-वृष्टि एव एक, तीन तथा शून्य इनमे से कोई भी शेष रहने पर सर्वत्र वर्षा होगी ।

(१८)

आठम स एकादशी, जेठ सुदी के माय ।

एक सरीखो देखलो, उत्तर वाजे वाय ।।
शुभ लक्खण है ए वरस का, देख लेवो सब कोय ।
चारू महिना वरससी, धान घणेरो होय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक इन चार दिनो मे उत्तर दिशा की वायु चलती रहे तो शुभ है। इस लक्षण से इस वर्ष, वर्षाकाल के चारो महीनो मे वर्षा होगी और अन्न का उत्पादन बहुत होगा।

(१९)

आठम सू ग्यारस तलक, जेठ सुदी के माय ।
पूरब उत्तर ईशान को, कोमल वाजे वाय ।।
आभो स्निग्ध बादल ढक्यो, कुण्डल बिजली गाज ।
या लक्खणा शुभ नीपजै, सुखी होय समाज ।।
देव जोग सू एकसा, होवे नहिं जे एह ।
तो निश्चै करने जाणजो, चोर अग्नि भय करेह ।।

ज्येष्ठ शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक इन चार दिनो तक पूर्व, ईशान या उत्तर दिशा का मृदु वायु हो, आकाश स्निग्ध, बादलो से ढका हुआ, बिजली, कुण्डल एव गर्जना आदि हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। कदाचित इन चार दिनो मे ये लक्षण एकसे न हो तो इस वर्ष चोर, अग्नि-भय आदि रहेगा।

(२०)

ग्यारस सू चवदस तलक, जेठ सुदी के मांय ।
वायु उत्तर को चल्या, विरखा अवश कराय ।।
दिक्खण वायु होय तो, अनावृष्टि हो जाय ।
तिथि क्रम सू महिना गिण्या, चार मास बण जाय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला एकादशी से चतुर्दशी तक इन चार दिनो मे उत्तर का वायु चले तो इस वर्ष, वर्षाकाल मे अवश्य वर्षा होगी। यदि यही वायु

दक्षिण दिशा का हुआ तो, अनावृष्टि रहेगी। इसे एकादशी से श्रावण, द्वादशी से भाद्रपद, त्रयोदशी से आश्विन और चतुर्दशी से कार्तिक गिने।

(२१)

पच्छम वायु होय तो, अनावृष्टि दुरभिक्ख।
भय पावे महा राजवी, देख लेवो परतच्छ॥

इन दिनो मे पश्चिम का वायु हो तो इस वर्ष अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष होगा। महाराजाओ तक को भय रहेगा।

(२२)

परदच्छण पथ सू चालतो, जे वायु बह जावै।
चारू महिना बरससी, प्रजा आनन्द मनावै॥
इण सू ऊंधो चालिया, अनावृष्टि हो जाय।
पण सीयाला रे मायने, आवै बिरखा थाय॥

यह वायु प्रदक्षिणा करता हुआ (उत्तर से पूर्व, पूर्व से दक्षिण इस क्रम से) इन चारो दिनो मे बहे तो आगामी वर्षाकाल के चारो महीनो मे वर्षा होगी। किन्तु यही वायु यदि इसके विपरीत (उत्तर से पश्चिम, पश्चिम से दक्षिण इस क्रम से) चले तो वर्षाकाल मे अनावृष्टि होगी परन्तु शीतकाल मे वर्षा होगी।

(२३)

वायव पच्छम नेरुता, वायु बहतो आय।
तो सावण काती मेह नही, भादू आसू थाय॥
ईशान पूर्व अग्नि हुया, भादू आसू नाय।
सावण काती मायने, मेह बरसेलो आय॥

इन्ही चार दिनो मे यह वायु, वायव्य, पश्चिम किम्वा नैऋत्य कोण का हो तो आगामी श्रावण और कार्तिक मास मे वर्षा नही होगी

और भाद्रपद तथा आश्विन इन दो महीनो मे होगी । यदि यही वायु ईशान कोण, अग्नि कोण एव पूर्व दिशा का हो तो भाद्रपद आश्विन मे वर्षा न होकर श्रावण एव कार्तिक मास मे वर्षा होगी ।

(२४)

पाच ग्रह इक राशि पर, आवे सूरज साथ ।
जेठ महीनो होय तो, विरखा खेंचे हाथ ।।

ज्येष्ठ मास मे पाँच ग्रह सूर्य के साथ आजाय तो वर्षाकाल मे वर्षा की तगी रहेगी ।

(२५)

जेठ अन्त तिथि रात मे, रहे मेघ जो छाय ।
कहे घाघ उण वरस मे, जल दे भूमि बहाय ।।

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा की रात्रि मे आकाश मे बादल छाये हुए रहे तो इस लक्षण के आधार पर घाघ कहता है कि आगामी वर्षाकाल मे बहुत वर्षा होगी ।

(२६)

जेठ मास जे रवि तपै, वाजै ऊनो वाय ।
तो जाणीजे भड्डली, पुहमी नीर न माय ।।

ज्येष्ठ मास मे अत्यन्त तीक्ष्ण धूप हो गर्म हवा (लू) चले तो भड्डली को सबोधन करते हुए कवि कहता है कि, आगामी वर्षाकाल मे बहुत वर्षा होगी ।

(२७)

जेठ रहे दिन दोय, ता मह जो जलधर पडत ।
नीर निमाणो होय, इन्द्र मुचे आप जल ।।

ज्येष्ठ मास के अन्तिम दो दिनो (चतुर्दशी एव पूर्णिमा) मे यदि

बूदाबांदी हो जाय तो, जल कूओ, तालाबो मे ही मिलेगा । वर्षाकाल में बादलो से नही मिलेगा ।

(२८)

*जेठ अन्तना बे दाडला, जे कदि गाजे भड ।
नदी काठे रूखडा, अर कूवा काठे खड ॥

ज्येष्ठ मास के अन्तिम दो दिनो मे आकाश मे बादलो की गरजना हो तो इस वर्ष नदी के किनारे के वृक्ष अथवा कूए के पास का घास जिस प्रकार इन दोनो नदी-कूप के उपयोग का नही है वैसे ही इन बादलो के गरजते का कोई उपयोग नही होगा ।

(२९)

‡जेठ महीना मायने, ये लक्खण आ जाय ।
दिखणादी वायु हुवे, मेघ गरजना थाय ॥
तिल तैल अर धान को, झट सगरेकर भाय ।
चार मास के मायने, खूब नफो दे जाय ॥

---

* इस पर निम्न उक्तिये भी मिली हैं —

१. जेठा अत बिदहडा, जे बरसे सी भड्ड ।
नीर निवाणा पाइजे, कै समुद्रां की जड्ड ॥
२ पौनम जुआरी जेटनी, बरखा नो सजोक ।
खेतर हेडे बेयने, करसक मेले पोक ॥

यदि ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णमासी के दिन वर्षा का सयोग आ मिले अर्थात् वर्षा होजाय तो फसल अच्छी न पकने के कारण कृषक-लोग खेतो की सीमाओ पर बैठ कर रोते हैं अर्थात् उन्हे अत्यन्त दुख होता है ।

‡ याद नही किसी ग्रन्थ मे ज्येष्ठ शुक्ला पचमी को इस योग के होने का वर्णन आया था ।

यदि ज्येष्ठ मास मे दक्षिण दिशा का वायु हो, आकाश मे बादलो का गर्जन होता हो तो, तिल, तेल एव अन्न का सग्रह कर लो। चार मास के अन्दर ही अन्दर इनसे बहुत लाभ हो जावेगा।

(३०)

मृगसिर वाय न वाजिया, रोहण तपी न जेठ।
गोरी वीणे काकरा, खडी खेजडे हेठ॥

ज्येष्ठ मास मे रोहिणी नक्षत्र मे गरमी न पडे और मृगशिर नक्षत्र मे प्रचण्ड लू न चले तो इस वर्ष अकाल पडेगा। वर्षा न होने के कारण कृषक-पत्नी खेत मे से ककर ही चुनेगी और शमी वृक्ष के नीचे खडी रहकर विश्राम लेगी।

(३१)

‡ जेठ ऊजले पाख मे, आदरादिक दस रिच्छ।
सजल होय निरजल कहो, निरजल सजल प्रतच्छ॥

ज्येष्ठ मास मे आर्द्रा से स्वाति तक के दश नक्षत्रो मे वर्षा हो जाय तो आगामी वर्षा काल मे सूर्य आर्द्रा आदि नक्षत्रो पर आने पर वर्षा नही होगी। अपितु इन दिनो मे वर्षा न होने पर वर्षा काल मे अवश्य वर्षा होगी।

(३२)

† जेठ सुदी पूनम दिना, मूल नखत जे होय।
इण दिन मेह वरसिया, दुरभिख लेवो जोय॥

इन पर निम्न उक्तियें भी मिली है —

‡ दश ऋक्षतपै दश दिवस माय। अति होत वृष्टि जल कमि नाय॥

† इस उक्ति के विपरीत —

१ जेठी पूनम मूल नहीं, अथवा नहि घन बिन्दु।
तो सावण सूखो गिणो, समो वुगे अनि मन्द॥

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को मूल नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा आ जाय तो आगामी वर्षा काल मे वर्षा का अभाव रहेगा, अत दुर्भिक्ष होगा।

(३३)

जेठे मूल नखत मह, गाज बीज जलधार।
सावण भादू सूखसी, समो न होय लगार॥

ज्येष्ठ मास के मूल नक्षत्र मे आकाश मे बादल हो, बिजली चमके, वर्षा हो तो आगामी श्रावण-भाद्रपद मास मे वर्षा का सर्वथा अभाव रहने से कृषि नही होगी।

(३४)

* जेठ मूल बिराठ मा, श्रावण लील न होय।
जिमि श्रावण तिमि भादवो, नीर निवाणा जोय॥

ज्येष्ठ मास के मूल नक्षत्र मे बूंदाबादी होजाय तो श्रावण-भाद्रपद मास मे पृथ्वी हरी-भरी नही दीखेगी और जल कूओ या तालावो मे ही मिलेगा।

(३५)

च्यारज पाया मूल रा, तपै जेठ के मास।
च्यार पाख मे जाणजे, अत घण पावस आस॥

पृष्ठ ६५ का शेष—

२ जेठ पूनम मूल न होय, अहवा मेह न बुट्ठ।
तो जाणीजै भड्डली, काल निरन्तर दिट्ठ॥

ये उक्तियें निम्न प्रकार से भी मिली है —

* जेठ घडाहड जो कर, सावण सलिल न होय।
ज्यू सावण त्यू भादवो नीर निवाणा जोय॥

ज्येष्ठ मास मे जब चन्द्रमा मूल नक्षत्र पर आवे तब उसके चारो पाये खूब ही तपे अर्थात् जिन दिनो मे चन्द्रमा मूल नक्षत्र पर रहे तब तक पर्याप्त गर्मी पडे तो निश्चित है कि चार पक्ष (दो–मास) के अन्दर ही बहुत वर्षा हो जावेगी ।

(३६)

जेठ मास जो तपै निरासा । तो जाणो विरखा की आशा ॥

ज्येष्ठ मास मे अत्यधिक गर्मी हो तो वर्षा आने की आशा रखनी चाहिये ।

(३७)

जेठ मे आवै पूर, तो छोरा फाकै धूर ॥

ज्येष्ठ मास मे वर्षा होकर नदियो मे जल आ जाय तो इस वर्ष अकाल पडेगा और बच्चो को खिलाने के लिये भी अन्न शेष न रहने से वे धूर (मिट्टी) ही फाकेंगे ।

(३८)

* जै दिन जेठ बैव्है परवाई, तै दिन सावण धूड उडाई ॥

ज्येष्ठ मास मे जितने दिन पूर्व का वायु बहेगा, उतने ही दिन श्रावण मे मिट्टी ही उडेगी और वर्षा नही होगी ।

(३९)

जेठ मास तपै नही, माहे शीत न होय ।
तो जाणीजे भड्डरी, विरखा शायद होय ॥

ज्येष्ठ मास मे गर्मी नही हो और इससे पूर्व विगत माघ मास मे सर्दी नही पडी हो तो इस लक्षण के आधार पर कवि, भड्डली से कहता है कि इस वर्षा काल मे वर्षा शायद ही हो । अर्थात् वर्षा नही होगी ।

---

* जेठ चलै पुरवाई, तो सावण सूखो जाई ॥

(४०)

जेठ मूघा, तो सदा सूघा ॥

ज्येष्ठ मास मे महगाई का रहना, वर्ष भर के लिये सस्तेपन का द्योतक है।

(४१)

जेठ सुदी पून्यू तथा, पडवा आगली जोय।
ज्येष्ठा मूल नखत हुया, निश्चै दुरभिक्ख होय ॥

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा तथा आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को ज्येष्ठा किम्वा मूल नक्षत्र हो तो इस वर्ष अकाल होगा।

(४२)

‡ पण आगे आषाढ वद, पूर्वाषाढा आय।
गाज बीज इण मे हुया, सगला दोष मिटाय ॥

किन्तु आगे आषाढ कृष्ण पक्ष मे पूर्वाषाढा नक्षत्र पर आकाश गर्जन करे, बिजली चमके तो पूर्वोक्त समस्त दोष (बाधक-योग) नष्ट हो जाते हैं।

(४३)

जेठा मूली पून्यू, दुरभिख जोग कराय।
इण दिन आन्धी बीजली, या अषाढ वदी के माय ॥
श्रवण नखत बिरखा हुवै, के घन रिछ्‌ वरसाय।
इण सुगण रे कारणे, दोष सबी मिटजाय ॥

ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को ज्येष्ठा या मूल नक्षत्र होने के कारण जो दुर्भिक्ष योग बनता है, वह इस दिन आँधी सहित वायु हो अथवा

‡ यह योग विक्रम सम्वत १९९५ मे आया था।

आषाढ कृष्ण पक्ष में श्रवण किम्वा धनिष्ठा मे वर्षा हो जाय तो उपरोक्त सारे दोष नष्ट हो जाते हैं।

(४४)

ज्येष्ठा मूल विणट्ठिया, तू धण रोवे काय।
श्रवण घनिष्ठा बरससी, तो होसी अन्न सवाय॥

ज्येष्ठा, मूल के नक्षत्रो के प्रभाव से कृषि न होने के भय से रोती हुई कृषक पत्नी को सम्बोधन करते हुए वह पति कहता है कि, चिन्ता मत कर, मत रो। श्रवण, धनिष्ठा मे वर्षा हो गई है अत सदा से सवाया अन्न उत्पन्न होगा।

(४५)

जेठी पून्यू सू लगा, वीज तलक लो जोय।
सुभिक्ष मध्धम दुरभिच्छ ने, मूल थी लेवो जोय॥

ज्येष्ठा शुक्ला पूर्णिमा से आषाढ कृष्णा द्वितीया तक मूल नक्षत्र को देखे। और क्रमश सुभिक्ष, मध्यम एव दुर्भिक्ष का निरधारण करलें, अर्थात् पूर्णिमा को हो तो इम वर्ष सुभिक्ष, प्रतिपदा को हो तो मध्यम तथा द्वितीया को हो तो इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा।

(४६)

† मावस पूनम जेठ की, रात दिना लो जोय।
बादल सू आभो ढक्यो, पवन आथूणो होय॥
भूल चूक विरखा हुवै, तो असाड सावण माय।
नहितो अगला मास भी, कोरा ही रह जाय॥

इसके सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें भी मिली हैं—

† जेठी पूनम रातका, मेघ भयानक होय।
कुछ कुछ पछवा सचरिया, महा वृष्टि कर सोय॥

ज्येष्ठ मास की अमावस्या और पूर्णिमा को भली प्रकार से देखें। इस दिन—इन दिनो मे रात दिन आकाश बादलो से ढका रहे, पश्चिम की वायु हो तो इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा। यदि भूल चूक से वर्षा हो भी तो कही-कही आषाढ–श्रावण मे कुछ वर्षा हो सकती है, अन्यथा अगले महीने भी सूखे जावेंगे।

(४७)

† चित्रा स्वाति विशाखा तीनो। बादल गाज जेठ में कीनो॥
तो विरखा वरसै तीनू मास। निहचै जाणौ सुभिक्ष की आश॥

ज्येष्ठ मास में चित्रा, स्वाति और विशाखा इन तीनो नक्षत्रो मे आकाश मे बादल, बिजली हो तो आषाढ आदि तीनो महीनो मे वर्षा होगी इसके कारण निश्चय ही सुभिक्ष होगा।

पृष्ठ ६९ का शेष—

ज्येष्ठ पूर्णिमा की रात्रि मे बादलो का घटाटोप हो, कभी-कभी पश्चिम का वायु हो तो, यह लक्षण अच्छी वर्षा के हैं।

एक स्थान पर अमावस्या को दिन मे हो तो आषाढ, रात्रि मे हो तो श्रावण, पूर्णिमा को दिन मे हो तो भाद्रपद में और रात्रि में हो तो आश्विन मे वर्षा नहीं होगी, लिखा मिला है।

† इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें भी मिली हैं —

१ स्वाति विसाखा चित्तरा, जेठ मास बरसाय।
सावण मे विरखा नही, मूगो धान कराय॥

२ स्वाति विसाखा चित्तरा, आभो निरमल जोय।
आसाडे वरसै नही, सावण बिरखा होय॥

३ स्वाति विसाखा चित्तरा, जेठ सुकेडवा जाय।
पिछला गरभ गल्या कहो, चती साख मिट जाय॥

४ स्वाति विसाखा चित्रिका, ज्येष्ठ शु कोरा जाय।
गर्भ गल्या पुठना सहु, वणिक साख मिटाय॥

(४८)

जेठ उतरता बोले दादर । केव्हे भड्डली बरसेला बादर ।।

ज्येष्ठ मास के उतरते ही मेढक बोलने लग जाय तो समझ लें, वर्षा शीघ्र ही होगी ।

(४९)

*दसतपा मे जे बरसे मेह, (तो) विरखा रिछ हलका कह देह ।

ज्येष्ठ मास मे मृगशिर नक्षत्र के अन्त के दश दिनो को दश तपा कहते हैं । यदि इन दश दिनो मे वर्षा होजाय तो, वर्षा-योग के जो भी नक्षत्र होंगे वे सभी कमजोर हो जावेंगे ।

(५०)

जेठा अन्त बिगाडिया, पूनम ने पडवा ।।

ज्येष्ठ की पूर्णिमा और प्रतिपदा को छींटे पड जाय तो यह अच्छा नहीं है ।

(५१)

जेठी पूनम के दिना, पछी लोटे धूर ।
तो यू जाणो सायबा, विरखा है भरपूर ।।

ज्येष्ठी पूर्णिमा को पक्षियो को (चिडियाँ आदि को) मिट्टी मे लोटने हुए—रज-स्नान करते हुए देखकर पत्नी अपने पति से कहती है, इस लक्षण से इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी ।

---

* इसके समर्थन मे—तपा जेठ जो चुइ जाय ।
सभी नखत हलके परिजाय ।।

अर्थात् मृगशिरा के अन्त के दिनो (तपा जेठ) में पानी चू जाय, (वर्षा हो जाय) तो वर्षा के नक्षत्र (आर्द्रा से स्वाति तक) हलके पड जायेंगे ।

(५२)

जेठ तपे ने रोयणो, पो मागे नें टाड ।
थाये तण्णा-कार तो, वेल सडे ने वाड ।।

ज्येष्ठ मास मे रोहिणी नक्षत्र पर सूर्य हो और तेज गर्मी न हो, पौष, माघ मे तेज सरदी न हो तो इन लक्षणो से घोर तृण-काल हो जाता है और बेले भी बाड पर नही चढती हैं ।

(५३)

जेठ दीत भादू शनि, माह जे मगल होय ।
परजा भटके अन्न विना, विरला जीवे कोय ।।

ज्येष्ठ मास मे पॉच इतवार, भाद्रपद मे पाच शनिवार, माघ मास मे पाच मगलवार का होना बुरा है । इनके प्रभाव से इस वर्ष अकाल पडेगा और प्रजा अन्न के लिये इधर-उधर भटकेगी । बिरले व्यक्ति ही जीवित रहेगे ।

(५४)

जेठ मास मे माघ जी, जे कृतिका वरसन्त ।
तीज हिडोरे कामणी, खेलें कन्त बसन्त ।।

ज्येष्ठ मास मे जब कृतिका पर सूर्य हो और वर्षा हो जाय तो यह वर्ष अच्छा रहेगा । स्त्रिये प्रसन्नता के मारे झूले झूलेगी और पुरुष-वर्ग वसन्तोत्सव समान आनन्द मनावेगे ।

(५५)

जेठ सुदी के मायने, आदरा सू गिण स्वात ।
वादल विरखा व्है जाय तो, अनावृष्टि कर जात ।।
सूरज आदरा आविया, तपती व्है सो जोय ।
जे बादल विरखा नही, तो आछी विरखा होय ।।

ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष मे आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र तक देखें। जिस नक्षत्र-काल मे आकाश मे बादल दिखाई दे तो या वर्षा हो तो जब सूर्य आर्द्रादि दश नक्षत्रो पर आवेगा तो उस नक्षत्र की अवधि मे वर्षा नही होगी। यदि ये लक्षण नही होगे और सूर्य की धूप बहुत तपेगी तो उस नक्षत्र मे जबतक सूर्य रहेगा सुवृष्टि होगी, यह निश्चित है।

ज्येष्ठ मास कृष्ण पक्ष

(१)

वैसाखी पून्यूं लगा, आठम तक लो जोय।
पुरवाई चल जाय तो, विरखा आछी होय॥
जे पच्छम वायु चले, समो गयो परवार।
आगे विरखा व्है नही, निश्चै मन मे धार॥

वैशाख शुक्ला पूर्णिमा मे ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी तक पूर्व का वायु चले तो वर्षाकाल मे अच्छी वर्षा होगी। यदि यही वायु पश्चिम का हो तो यह निश्चित है कि, वर्षा नही होगी।

(२)

आद्रा सूरज आविया, चित्रा तक लो जोय।
नखत गिणो दिन क्रमा, उण विध विरखा होय॥
दिनरी घडिया साठ व्है, पनरे चौघडिया होय।
नक्षत्रा तणा दिन गिणो, पनरे लेवो जोय॥

वैशाख शुक्ला पूर्णिमासे अष्टमी तक पूर्व का वायु इन नौ दिनो मे जिस-जिस दिन बहे अथवा लगातार इन नौ दिनो तक बहे तो इसका फल जब सूर्य आर्द्रा पर आकर चित्रा तक रहेगा, तब तक होगा। एक

दिन की साठ घडियें होती हैं और एक नक्षत्र के दिन भी पन्द्रह होते हैं। अत प्रत्येक दिन के एक-एक चौघडिये से प्रत्येक नक्षत्र के एक-एक दिन की वर्षा का निश्चय करलें।

(३)

आठम तक गिणती करो, वैसाखी लो साथ।
आदरा सू चित्रा तलक, नौनखत हो हाथ॥
उत्तर वायु जद चले, सूरज देखो जोय।
इणा रिछा पर आवता, विरखा आछी होय॥

वैशाखी पूर्णिमा से अष्टमी तक आर्द्रा से चित्रा तक नौ नक्षत्र आवे और जिस दिन जो नक्षत्र हो उस दिन उत्तर की वायु चले तो वर्षाकाल मे सूर्य के उस नक्षत्र पर आते ही वर्षा होगी।

(४)

जेठ मास अर पख अधारा। पड़वा दिन का करो विचारा।
चैती पडवा ज्यू लक्खण देखो। उणीज भात सू फलने पेखो॥

ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा का विचार उसी भाँति से करो जिस भाँति से चैत्र कृष्णा प्रतिपदा का किया जाता है।

(५)

जेठ महीने प्रतिपदा, अम्बर जे घहराय।
आषाढे ना बरससी, सावण कोरो जाय॥

ज्येष्ठ मास की प्रतिपदा को आकाश मे बादलो की गर्जना सुनाई दे तो आगामी आषाढ मास और श्रावण बिना वर्षा के कोरे ही रह जावेंगे।

(६)

जेठ पहल पडवा दिने, बुववासर जे होय।
मल असाडी जे मिले, तो पिरथी कम्पै जोय॥

ज्येष्ठ मास की प्रतिपदा को बुधवार का होना, और साथ ही आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को मूल नक्षत्र का आजाना, पृथ्वी पर अनेक उपद्रवो के होने को सूचित करते हैं । जिनके प्रभाव से पृथ्वी काँपने लग जावेगी । अर्थात् अकाल पडेगा ।

(७)

जेठ आगली पडवा देखो । कौन वासरा है यू पेखो ॥
रविवासर अति बाढबढाव । मगलवारी व्याधि बताव ॥
बुधा नाज मूघो करसी । शनिवार सू परजा हरसी ॥
चन्द्र शुक्र के व्है गुरुवारा । परसन परजा धान कोठारा ॥

ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को रविवार हो तो वायु तेज हो । मगलवार हो तो प्रजा मे व्याधि फैले । बुधवार हो तो अन्न महँगा होगा । शनिवार हो तो प्रजा का नाश होगा । सद्भाग्य से इस दिन सोम, शुक्र किम्वा गुरुवार मे से कोई-सा वार आ जाय तो अन्न के भण्डार भरे रहने से प्रजा प्रसन्न रहेगी ।

(८)

रोहरण सारी तपे, आखो तपै जे मूर ।
पडवा तपे जे जेठ की, तो सातू निपजे तूर ॥

रोहिणी और मूल दोनो सारे ही भली प्रकार से तपे एव ज्येष्ठ की प्रतिपदा भी तपे तो इस लक्षण से इस वर्ष समस्त अन्न उत्पन्न होंगे ।

(९)

रोहणी सारी गली, गलियो और जु मूल ।
जेठ वदी पडवा तपी, जल मे चारू चूल ॥

रोहिणी एव मूल नक्षत्र गल जाय तो भी यदि ज्येष्ठ कृष्णा प्रतिपदा को गर्मी अधिक तपे तो आगामी वर्षाकाल मे यथेच्छ वर्षा होगी ।

(१०)

जेठ अंधारी पचमी, वाजै दिक्खरण वाय।
तिल तैल घी सगरो, लाभ आसोजा माय॥

ज्येष्ठ कृष्णा पचमी को दक्षिण दिशा का वायु चले तो तिल, तेल एव घी का सग्रह करलो, आगामी आसौज मास मे इनसे लाभ होगा।

(११)

जेठ वदी दसमी दिना, रिच्छ रेवती होय।
समयौ आछौ होवसी, जाण लेवो सब कोय॥
ग्यारस बारस के दिना, जे रेवती आवे।
खण्ड वृष्टि अर कष्ट सू, प्रजा दुखी हो जावै॥

ज्येष्ठ कृष्णा दशमी को रेवती नक्षत्र हो तो कृषि उत्तम होगी। कदाचित यह एकादशी किम्वा द्वादशी को हो तो क्रमश खण्ड-वृष्टि एवं प्रजा को कष्टदायक यह वर्ष होगा।

(१२)

÷ जेठ वदी दसमी दिवस, शनीवार जे होय।
पाणी होय न धरण मे, विरला जीवै कोय॥

ज्येष्ठ कृष्णा दशमी के दिन शनिवार होने से पृथ्वी पर वर्षा का अभाव रहेगा, परिणामस्वरूप विरले व्यक्ति ही जीवित रह सकेगे।

पाठान्तर —

— जेठे जे अंधारिये, थावर दशमी थाय।
पडे हरडतो कार तो, मनक मनक ने खाय॥

ज्येष्ठ कृष्णादशमी शनिवार का होना भयकर काल की सूचना है।

(१३)

‡ दसमी जेठा मास नी, आवै जे रविवार।
पाणी न पडे जन मरे, दुकाल भड्डुली धार ॥

ज्येष्ठ कृष्णा दशमी को रविवार का होना इस वर्ष, वर्षा का अभाव, जन-हानि एव अकाल को सूचित करता है ।

(१४)

| आठम चवदम दो दिना, जेठ वदी के माय।
लकाऊ वायु चल्या, विरखा जोग बताय ॥

ज्येष्ठ कृष्णा अष्ठमी, चतुर्दशी इन दो दिनो मे दक्षिण दिशा का वायु चले तो आगामी वर्षाकाल मे वर्षा होगी।

---

‡ दाडो जे दितवारनो, आवे दशमी जेट।
कार पडे ने मानवी, मरे कुटी ने पेट ॥

ज्येष्ठ मास की दशमी के दिन रविवार का होना अकाल को सूचित करता है। भूख के कारण मनुष्य, अपना पेट कूट-कूट (पीट-पीट) कर मर जाते है अर्थात् प्रजा भूखो के मारे मर जाती है।

ये उक्तिये निम्न रूप मे भी उपलब्ध हुई हैं —

‡१ जेठ वदी पडवा दिने, जे होवे रविवार।
वायु घणी तो चलत है, मगल रोगजु कार ॥
गुरु शशि शुक्करवार होइ घणो मेघ अरु धान।
वुधवारी दुर्भिक्ष हो कैही उच्च एवान ॥
जे होवे शनिवार तो छत्र भग करेह।
मेह बरसत भूमि पर परजा सब्ब मरेह ॥

२ जेठ आगली पडवा देख। कौन वासरा है, यू पख ॥
रविवार अति वाजै वाय। मगलवारा व्याधि बताय ॥
बुधा नाज मृघो करई। शनीवार परजा थरहरही ॥
चन्द्र शुक्र मुरगुरु वारा। होय तो अन्न भरो ससारा ॥

| आठम चवदम जेठ वद, दिक्खण वाजै वाय।
जे विरखा हुय जाय तो, भादू मेह कराय ॥

(१५)

ग्यारस बारस जेठ की, कृष्णपक्ष के माय।
घण गरजै बिजली खिवै, समयौ आछौ थाय ।।

ज्येष्ठ कृष्णा एकादशी एव द्वादशी को आकाश मे बादलो का गर्जन हो, बिजली चमके तो इस वर्ष, कृषि उत्तम होगी।

(१६)

जेठ वदी अमावसै, घटाटोप हो जाय।
अनावृष्टि दुर्भिक्ष हो, इणमे सशय नाय ।।

ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या को आकाश मे बादल हो, वर्षा हो तो अनावृष्टि किम्बा अल्प वर्षा होगा।

(१७)

जेठ वदी अमावसा, बादल जे होजाय।
सुद तेरस अरु पूनमा, तो वायु जोर कराय ।।

ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या, ज्येष्ठ शुक्ला त्रयोदशी और पूर्णिमा को बादल हो तो इस वर्ष, वायु का जोर रहेगा।

(१८)

जेठ मासनी अमावस, जे शनिवार नी होय।
मेह न वरसै धन मरै, तो छत्र भग लौ जोय ।।

ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या को शनिवार हो तो इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा, पशु-धन का नाश होगा और किसी पृथ्वीपति की-राजा की मृत्यु होगी।

ज्येष्ठ कृष्णा अष्टमी और चतुर्दशी के दिनो मे दक्षिण दिशा का वायु चले तो यह शुभ लक्षण है। इसके प्रभाव से वर्षा काल मे सुवृष्टि होगी यदि इन दिनो मे वर्षा हो जाय तो भाद्रपद मास मे बहुत वर्षा होगी।

(१९)

* रवि शनि मगलवारनी, मावस जेठी जान।
चोर अग्निभय काल दु ख, उपजत नहि जग धान ।।

ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या को रवि, शनि किम्वा मगलवार मे से कोई-सा वार हो तो उस वर्ष, देश मे चोरो का भय, अग्निकाण्ड एव दुर्भिक्ष-भय रहेगा। इस वर्ष अन्न उत्पन्न नही होगा।

(२०)

| जेठ पक्ष पहले विषय, गाज बीज लसकार।
थोडा होवे चौपदा, घणा मरे पदचार।

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष मे बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके तो इस वर्ष चतुष्पद-प्राणी (गाय-बैल आदि) उत्पन्न तो कम होगे और मरेंगे अधिक।

(२१)

मावस आदरा मेह नहि, पडवा बखत नहि धान।
दूज पुक्ख होजाय तो, घास नही है मान ।।

ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या को आर्द्रा नक्षत्र होने से इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा। ज्येष्ठ शुक्ला प्रतिपदा को पुनर्वसु का होना, अन्न का अभाव सूचित करता है। इसी प्रकार से ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया को पुष्य नक्षत्र होगा तो घास का अभाव रहेगा।

ये उक्तिये निम्न प्रकार की भी मिलती है —

* जेठ पहले पाखडे, जे गाजै गमरोह।
छोड्या गवाल बाछडा, कहियो डक एह ।।

| जेठह मास जे रवि, सनीसर होय।
देव न बरसे घणा मरे, छत्र भग करेह ।।

(२२)

— जेठ वदी अमावसे, रवि आथमतो जोय ।
बीज ऊगसी चन्द सो, साख भरे सो होय ।।
उत्तर उत्तम चारियो मझे पच्छम काल ।
सूरज थी शशि दाहणो, तो थासे देस दुकाल ।।

ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्या का सूर्यास्त और ज्येष्ठ शुक्ला का चन्द्रोदय-स्थान, वर्ष भर का शुभाशुभ जानने के लिये देखना चाहिये । जिस स्थान पर अमावस्या को सूर्य अस्त हुआ है, शुक्ला द्वितीया का चन्द्र, उस स्थान से उत्तर की ओर उदय हुआ है तब तो उत्तम आचार वाला अर्थात सुभिक्षदायक होगा । सूर्यास्त के स्थान पर ही उदय हुआ है तो यह वर्ष मध्यम अर्थात साधारण होगा । परन्तु दक्षिण की ओर चन्द्र का उदय होना दुर्भिक्ष-सूचक है।

(२३)

सूर्य अस्त की सीध पर, कील एक रुपवाय लो ।
चन्द्र अस्त सू दूरको, माप ज्ञान बणाय लो ।।
चन्द्र दीख तिथि जेठ की, अस्त सूर्य को जोय ।
दूज चन्द्र रवि पर गया, वरस करवरो होय ।।
हाथ वेत दस आगल्या, अस्त चन्द्र को जोय ।
सूरज थकि उत्तर दिशि, काल कदे नहिं होय ।।

यह उक्ति इस प्रकार भी उपलब्ध हुई है —

— आधे जेठ अमावस्या रवि आथम तो जोय ।
बीजनो चन्दो ऊगसी सौ साख भरेला सोय ।।
उत्तर होय तो अति भलो दक्खण होत दुकाल ।
रवि माथे शशि आथमे, तो आवो होय सुगाल ।।

यही चार हाथ दूर हुआ तो इतनी वर्षा होगी कि, सरोवरो के बाध टूट जावेंगे। दक्षिण की ओर हो तो दुर्भिक्ष, किन्तु इस ओर चार हाथ दूर हुआ तो भयानक दुर्भिक्ष होगा।

(२४)

जेठ वदी के मायने, श्रवण घनिष्ठा जोय।
गाज बीज बादल हुवै, घडी देखलो सोय॥
उण घडिया ए होय तो, उण दिन बिरखा देख।
गरग वचन साचो खरो, इण मे मीन न मेख॥

ज्येष्ठ कृष्ण मे श्रवण और घनिष्ठा नक्षत्र की घडियो को देखो। इन दिनो मे जिस घडी मे बिजली-बादल या गर्जना हो तो वर्षाकाल मे उसी दिन या उन दिनो मे वर्षा होगी।

इसे इस प्रकार समझले —

अगर श्रवण, घनिष्ठा दोनो साठ-साठ घडी (दोनो मिलाकर एक सौ बीस घडी) हो तो इन एक सौ बीस घडियों को वर्षाकाल के चातुर्मास के एक सौ बीस दिन समझें और जिस घडी मे उपरोक्त लक्षण दिखाई दे क्रमश उसी दिन वर्षा होगी। जैसे—प्रथम घडी मे उक्त लक्षण दृष्टिगोचर हो तो वर्षाकाल के प्रथम दिन, द्वितीय से द्वितीय दिन, तृतिय से तृतिय दिन वर्षा होगी।

आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष

(१)

पडवा सुद असाड ने, पुनर्वसु जे आवै।
बित्तीज विरखा होवसी, जित्ती घड़ी बतावै ॥

आषाढ शुक्ला प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र जितनी घडी होगा इस वर्ष, चातुर्मास (वर्षा काल) मे उतनी ही वर्षा होगी। तात्पर्य यह है कि, यह नक्षत्र पूर्ण अर्थात् ६० घडी का हो तो चार महीनो तक, पैतालीस घडी हो तो तीन मास तक, तीस घडी हो तो दो मास तक और केवल पद्रह घडी हो तो एक मास तक ही वर्षा होगी।

(२)

सुदी असाडा दूज दिन आभे बादल छाय ।
पण विरखा होवे नही, तो सावण मे वरसाय ॥

आषाढ शुक्ला द्वितीया को आकाश मे बादल छाये हुए हो किन्तु इस दिन वर्षा न हो तो श्रावण मे वर्षा होगी।

(३)

सुद असाडा दूज दिन, नखत पुक्ख ने देख।
जित्ती घडिया होवसी, समयो उत्तो पेख ॥

आषाढ शुक्ला द्वितीया को पुष्य नक्षत्र जितनी घडी होगा उस हिसाब से ही उस वर्ष का अनुमान लगाले। यदि यह, साठ घडी होगा तो वर्ष बीस विश्वा होगा, तीस घडी होगा तो वर्ष दश विश्वा होगा। कदाचित यह पन्द्रह घडी ही हो तो उस वर्ष समय अर्थात् फसल पाच विश्वा ही होगी।

(४)

*असाढ सुदी दुतिया दिवस, जे विरखा आ जाय।
तो सावण बरसै मोकलो, पुहुमी नीर न माय ॥

आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की द्वितीया के दिन यदि वर्षा हो जाय तो इस योग के परिणामस्वरूप श्रावण मास में बहुत वर्षा होगी।

(५)

पड़वा सू दिन तीन तक, सुदी असाडा मांय।
इंणा दिनाके मायने, जी दिन विरखा थाय ॥
एक बारा अर सोलआ, द्रोण मान तू लेह।
चौमासा मे बरससी, क्रम सू ध्यान धरेह ॥

आषाढ शुक्ला प्रतिपदा के दिन वर्षा हो तो वर्षाकाल मे मेह एक द्रोण, द्वितीया को हो तो बारह द्रोण एव तृतीया को हो तो सोलह द्रोण वर्षा होगी।

(६)

दूज तीज चौथ अर, पाचम ने ले साथ।
बादल विरखा वायरो, जे ईसाणखूट रो थात ॥
तो मेह मोकलो होवसी, समयो आछो थाय।
खाली वाजै वायरो, तो काल् पडेलो आय ॥

आषाढ शुक्ला द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी और पचमी इन तीन दिनो मे आकाश मे बादल, वर्षा और ईशाण कोण का वायु हो तो इन लक्षणो से उस वर्ष सुवृष्टि, तथा सुभिक्ष होगा। कदाचित इन दिनो मे

---

* सुदी असाडा बीज ने, जे बरसेलो मेह।
तो सावण महिना मायने, इन्दर जोर करेह ॥

बादल तथा वर्षा तो न हो और केवल ईशाण कोण का वायु ही हो तो इसके परिणामस्वरूप दुर्भिक्ष होगा।

(७)

सुद असाडा चौथ दिन, गाज बीज मेह होय।
समयो होसी सातरो, सोच करो मत कोय॥

आषाढ शुक्ला चतुर्थी के दिन आकाश मे बादल, बीजली गरजना हो तथा उस दिन मेह हो जाय तो उस वर्ष सुभिक्षकारक उत्तम वर्षा होगी।

(८)

सौमा सुकरा सुरगुरा, जे चन्दो ऊगत।
डक्क कहे है भड्डुली, जल थल एक करन्त॥

डक्क, भड्डली से कहते हैं कि आषाढ मास का चन्द्रोदय सोमवार, गुरुवार किम्वा शुक्रवार इनमे से किसी एक वार के दिन हुआ है तो पृथ्वी पर इतनी वर्षा होगी कि, जल एव स्थल सब एक-से हो जावेंगे। अर्थात् बहुत वर्षा होगी।

(९)

सावण मे तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाढ॥

श्रावण मास का चन्द्रोदय देखने पर चन्द्र सोया हुआ-सा दिखाई देना अच्छा होता है। इसी प्रकार से आषाढ़-मास का चन्द्रोदय – चन्द्रमा का उदय — खड़ा हुआ-सा दिखाई दे तो इस वर्ष, वर्षा अच्छी होगी।

(१०)

सुदी असाढ़ा तीज दिन, पुरवाई जे आय।
पूरब आवै बादला, तो भादूं खूब धपाय॥

आषाढ शुक्ला तृतिया को पूर्व की वायु चले और पूर्व दिशा में बादल दिखाई दे तो भाद्रपद मास में बहुत वर्षा होगी।

(११)

सुदी आसाडा चौथ दिन, गाज बीज नही आय।
के जल दीखै समुन्दरा, के पोथी के माय ॥

आषाढ शुक्ला चतुर्थी के दिन आकाश मे बादलो की गर्जना न हो, बिजली नही चमके तो इस वर्ष, वर्षा का अभाव ही रहेगा।

(१२)

सुदी असाडा चौथ ने, दिक्खण वाजै वाय।
बादल पूरब जाय तो, मेह असोजा आय ॥

आषाढ शुक्ला चतुर्थी को दक्षिण दिशा का वायु हो बादल पूर्व की ओर जाते हो तो आगामी आश्विन मास मे वर्षा होगी।

(१३)

धोरी असाडी पचमी, बादल होय ना बीज।
बेचो हल अर बलदिया, निपजै काई न चीज ॥

आषाढ शुक्ला पचमी को आकाश मे न बादल हो और न बिजली ही हो तो कवि कृषक को कहता है कि, इस वर्ष कुछ भी उत्पन्न नही होगा। अत हल और बैलो को बेच कर अपना जीवन निर्वाह करलो।

(१४)

*सुद असाडा पचमी, गाज घमाधम जोय।
तो यू जाणो भड्डुली, मध्यम मेहा होय ॥

---

* सुदी असाडी पचमी, गाजत घन घनघोर।
भड्डुली कहे ते जाणजे, मधुरो मेघा सोर ॥ अर्थात् अच्छी वर्षा होगी।

आषाढ शुक्ला पंचमी को आकाश में बादलो की गडगडाहट बहुत हो तो कवि भड्डली को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, इस वर्षं वर्षा साधारण ही होगी।

(१५)

*सुद असाडां पचमी, जे झबूके बीज ।
दाणा सर्वे वेचिने, राखो बलद ने बीज ।।

आषाढ शुक्ला पचमी को आकाश मे बिजली चमके तो सग्रहित अन्न को बेच दो। इसमे से केवल बोने योग्य अन्न और बैलो को तैयार रखो। क्योंकि इस वर्ष बहुत वर्षा होगी।

(१६)

सुद असाडा की पचमी, जो खेवसी बीज ।
मूडाबोली बेच कण, हल ना राखे बीज ।।

पिछले पृष्ठ के फुटनोट १४ का शेषाश—

गाज बीजने वायरो, पांमम सुद आहाड ।
ढरवी दे जे थायतो मेह वगी ने पाड ।।

आषाढ शुक्ला पचमी के दिन गरजना, बिजली चमकना और वायु चले तो जोर से वर्षा होगी जो पहाडो को भी ढहा दे सकती है।

---

* असाड सुदी पचमी, जो झबूके बीज ।
दाणा वेची घरकरो राखो वदलने बीज ।।

इसके समर्थन मे —

* १ धोरी असाडी पचमी थाय गाज ने बीज ।
बाद्या मूडा बेचदो, राखो बरदां बीज ।।

* २ असाड सुद पचमी, जौर खिवेली बीज ।
कोठा छोडो बेच कण, वावण राखो बीज ।।

आषाढ शुक्ला पचमी को आकाश मे बिजली चमकती हुई देख कर कवि कहता है कि प्रकृति स्वय अपने मुह से कह रही है कि, सचित अन्न को बेच दो। हलों के द्वारा बोया हुआ अन्न व्यर्थ नही जावेगा।

(१७)

चौथ पचमी असाड सुद, जे झबूके बीज।
सारा अन्न उपजावसी, काल जावसी खीज॥

आषाढ शुक्ला चतुर्थी और पचमी को आकाश मे बिजली चमके तो इस वर्ष समस्त अन्न उत्पन्न होगे और इस बिजली की चमक को देख कर दुष्काल अपने मन ही मन मे खीजने लग जावेगा।

(१८)

असाड सुदी की पचमी, बादल जो हो जाय।
छाटो छिडको होय तो, सावण मेह बुलाय॥

आषाढ शुक्ला पचमी को बादल हो कर बू दाबादी हो जाय तो श्रावण मे वर्षा होगी।

(१९)

सुदी असाडा पचमी, छाटा जे आ जाय।
ई जोगा इक मास तक, मेह दौडतो आय॥
जो छाटा नव पडै, तो पख अन्धारा माय।
कौइयक कोइयक ठौड पर, थोडो मेह कराय॥

आषाढ शुक्ला पचमी के दिन बूदाबादी हो जाय तो इस तिथि से एक मास तक के अन्दर वर्षा होगी। यदि इस दिन बूदाबादी न हो तो केवल श्रावण कृष्ण पक्ष मे कही-कही किंचित वर्षा होगी।

(२०)

पाचम सुद असाड की, उत्तर वायु होय ।
ऊंचा ऊंचा बादला, काती मेह लो जोय ।।
वायुव्है जे जोर को, अतिवृष्टि हो जाय ।
इण जोगा रे कारणे, दुरभिख लेवे बुलाय ।।
तीज पचमी दो दिना, भलो इशाणी वाय ।
जे नेऋत हो जाय तो, लेवे काल बुलाय ।।

आषाढ शुक्ला पचमी को उत्तर दिशा का वायु हो, ऊंचे ऊंचे बडे-बडे बादल हो तो, आगामी कार्तिक मास मे वर्षा होगी । यदि इस दिन जोर का वायु हो तो अति-वृष्टि होकर दुर्भिक्ष हो जावेगा ।

आषाढ शुक्ला तृतिया और पचमी इन दो दिनो मे ईशाण कोण का वायु हो तो अन्न बहुत उत्पन्न होगा । किन्तु यही वायु यदि नैऋत्य का हो तो दुर्भिक्ष हो जावेगा ।

(२१)

असाड सुदी पाचम दिना, वाजै पच्छम वाय ।
गाज बीज बिरखा सहित, इन्द्र धनुष होजाय ।।
ज्ञानवान यू चेतवे, भेलो करलो अन्न ।
कार्तिक महीने बेचिया, खूब कमासो धन्न ।।

आषाढ शुक्ला पचमी को पश्चिम दिशा का वायु हो, बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके, वर्षा हो, इन्द्र-धनुष हो तो समझदार व्यक्ति कहते हैं कि अन्न-सग्रह कर लेना चाहिये । इससे आगे चल कर कार्तिक मे बेचने पर अच्छा लाभ होगा ।

(२२)

चौथ पाचम असाड सुद, बिजली वायु जोय ।
पूरब दिश सुभिक्षकर, अग्नि मेह लुकोय ।।

दक्खरण सू मध्यम समो, नेरुत संवत नेष्ट।
पच्छम हुया मध्यम समौ, उत्तर गिणलो श्रेष्ट ॥
वायव टिड्डी आदि भय, ईशाणकोण सुगाल् ।
अ-समान चोवाया हुवे, ओ समया को हाल ॥
जिण दिस खीवे बीजली, वायु ऊधी- होय।
भात भात को ईति भय, इसो जमानो जोय ॥
शुभ दिस पेली खिवै, पाछे अशुभ चमकाय।
धान घणेरो नीपजे, उपदरो बोत कराय ॥
अशुभ दिसा पेली खिवै, पीछे शुभ मे जोय।
विरखा आछी होवसी, पण धान न निपजै कोय ॥

आषाढ शुक्ला चतुर्थी और पचमी इन दोनो दिनो मे बिजली एव वायु पूर्व दिशा के हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। उत्तर के हो तो बहुत श्रेष्ठ, पश्चिम के हो तो मध्यम, अग्नि कोण के हो तो अनावृष्टि, नेऋत्य कोण हो तो नेष्ठ, वायव्य के हो तो टिड्डी आदि का उपद्रव और ईशान कोण के हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। यदि ये चारो ओर के हो तो विषम वर्षा होगी।

बिजली जिस दिशा मे चमकती हैं और पवन उसकी विपरीत दिशा का हो तो भिन्न-भिन्न प्रकार की ईति (चूहे टिड्डी आदि) भय होगा। बिजली पहले शुभ दिशा मे चमक कर बाद मे अशुभ दिशा मे चमके तो इस वर्ष अन्न तो अधिक ही उत्पन्न होगा किन्तु साथ ही साथ अन्य उपद्रव भी अधिक ही होगे। इसके विपरीत अशुभ दिशा मे चमक कर बाद मे शुभ दिशा मे चमके तो वर्षा अच्छी होगी परन्तु अन्न उत्पन्न नही होगा।

(२३)

‡सुदी असाडां पचमी, जो आ जावै वार ।
समयो कैसो होवसी, इणरो करो विचार ॥
रविवार जे आय तो, मेह सरासर होय ।
सोमवार रे कारणे, चोखी विरखा होय ॥
मगल अतिवृष्टि करै, बुध वाजैलो वाय ।
गुरुवार आधी आसी, शुक्र जोर कर जाय ॥
भूले चूके इण दिनां, शनीवार जो आवै ।
दुखी प्रजा सारी हुवै, हा हा कार मचावै ॥

आषाढ शुक्ला पचमी को रविवार हो तो वर्षा साधारण होगी । सोमवार हो तो सुवृष्टि (अच्छी वर्षा) होगी, मगल हो तो अतिवृष्टि, बुध हो तो वायु चले, गुरु हो तो आंधी (तूफान) आवे, शुक्रवार हो तो भयकर (तूफान) आवे, कदाचित इस दिन शनिवार आ जाय तो नाशकारक स्थिति होजाने से प्रजा हा-हाकार करेगी ।

---

‡ इसके विपरीत —

सुदी असाडा पचमी, कौण वार है देख ।
मगल तो दगल करै, सोमे मेह विसेख ॥
सुभदायक बुधशुक्कर है, गरू खेम करजाय ।
अलपमेह सूरज तणो, सनी हा-हाकार कराय ॥

तात्पर्य है कि रविवार को अल्प वर्षा, सोम हो तो अति वर्षा, मगल हो तो युद्ध, बुध एव शुक्र हो तो शुभ एव सुख-दायक, गुरुवार हो तो क्षेपकारक, शनिवार हो तो विनाश कारक योग बनता है ।

(२४)

‡असाड‡ सुदी छठ ने भाल । लपकै बीज क बादल नाल ॥
सुगन समया का जाणो भला । होत सुपूरण षोडश कला ॥
गरजै घोर मेघ हुइ, जे बादल शिखर करेह ।
(तो) नीची ठोडा भू पड़ा, ऊंची ठौड़ बन्धेह ॥

आषाढ शुक्ला षष्ठी को आकाश मे देखें । बादल एव बिजली की चमक लगातार रहे तो इस वर्ष सम्पूर्णरूप से कृषि उत्पादन होगा । इस दिन बादलो की गर्जना हो, बहुत बादल हो एक के बाद एक शिखरवत् चढते हुए दिखाई दे तो इस वर्ष, वर्षा के कारण नीचे स्थान मे बने हुए झोपडे अवश्य ही वहाँ से हटकर ऊंची जगह पर बचेगे । अर्थात् अत्यधिक वर्षा होगी ।

(२५)

सातम सुद व्है निरमली, आठम बादल होय ।
तो सावण माहे जाणलो, विरखा घणी सलोय ॥

आषाढ शुक्ला सप्तमी को आकाश निर्मल रह कर अष्टमी को बादल हो तो श्रावण मास मे बहुत वर्षा होगी ।

---

‡ छठ ऊजली असाडरी, घन बरसै जो आय ।
तो सावण मे विरखा घणी, समयो आछो थाय ॥
ईं दिन जे वरसै नही, तो सावण कोरो जाय ।
आसोजा के मायने रस कस मूघा थाय ॥

आषाढ शुक्ला षष्ठि के दिन यदि वर्षा होजाय तो श्रावण मे वर्षा होगी । कदाचित इस दिन वर्षा न हो तो श्रावण-मास मे अनावृष्टि होगी और आश्विन मे रस-कस महगे बिकेंगे ।

(२६)

सातम सुद असाड री, जे बरसैलो मेह ।
तो भादरवाके मायने, बोलो मेह करेह ॥
ईं दिन जे बरसै नही, तो भादू कोरो जाय ।
पोसफागरण के मायने, हीरा कपड़ा मूघा थाय ॥

आषाढ शुक्ला सप्तमी के दिन वर्षा हो जाय तो इसके फलस्वरूप भाद्रपद मास मे बहुत वर्षा होगी । किन्तु इस दिन वर्षा न हो तो उस वर्ष अनावृष्टि योग होगा और हीरा, कपास एव सूत पौष अथवा फाल्गुन मास मे महगे हो जावेंगे ।

(२७)

पाचम सू आठम तलक, आसाड सुदी के माय ।
चारू दिन विरखा हुया, मास चार बरसाय ॥

आषाढ शुक्ला पचमी से अष्टमी तक इन चार दिनो तक लगानार या किसी दिन वर्षा हो तो, वर्षा काल मे चारो महीनो मे या उस तिथि के क्रम से जो मास आता होगा उसमे वर्षा होगी ।

(२८)

आसाडी सुद पूनसे, घरण बादल वरण बीज ।
नाला कोठा खोल दो, राखो हल ने बीज ॥

आषाढ शुक्ला नवमी को आकाश मे बादलो की घटाए हो और बिजली चमकती हो तो सग्रहित अन्न को बेच दो । केवल बोने योग्य अन्न (बीज) एव हलो को तैयार रखो । इस वर्ष बहुत अन्न होगा ।

(२९)

सातम आठम नवमी, असाड सुदी के माय ।
शशि सूरज मलीन रह्या, चार मास बरसाय ॥

आषाढ शुक्ला सप्तमी, अष्टमी, और नवमी को दिन में सूर्य और रात मे चन्द्र बादल, वर्षा, कुहरा आदि के कारण मलीन दिखाई दे तो वर्षा काल मे अधिक वर्षा होगी।

(३०)

न गिनव चैत न गिनव बैसाख। न गिनव बार तीन सौ साठ ॥
गिनव एक मास असाड। नवमी शुक्ला वार बखान ॥

मगल परे तो हर परे, बुद्ध परे दुख काल।
देव बिछोहा होय तो परे शनीचर वार ॥
सोमे सुक्रे रवि गुरु, भूमे अन्न कराय।
छत्तर टूटै महि डिगै, जो फिर शनि परिजाय ॥

चैत्र-वैशाख या वर्ष के तीनसौ साठ दिन और वार पर विचार करने की आवश्यकता नही है। केवल आषाढ शुक्ला नवमी का ही विचार करना चाहिये। यदि इस दिन मगलवार हो तो इस वर्ष हल पडे रहेंगे। बुधवार होगा तो प्रजा मे दुख बढेगा, अकाल पडेगा। कदाचित ईश्वर नितान्त ही विपरीत हो तो इस दिन शनिवार आता है। शनिवार के पडने पर भारी सकट आता है। प्रभु-कृपा से इस दिन सोमवार, गुरु-वार, शुक्रवार और रविवार मे से कोई-सा वार होता है तो इस वर्ष अन्न उत्पन्न होता है। यदि लगातार दो वर्षों तक इस दिन शनिवार आता रहे तो इसके प्रभाव से राज-भग एव भूकम्पादि उपद्रव होगे। नोट—पीछे सख्या १७ पर भी ऐसा ही वर्णन आया है। इस सबंध मे उपलब्ध पाठान्तर यहां नीचे फुट नोट में बता दिया गया है।‡

---

‡ पाठान्तर—

मगल है तो युद्ध घणो, बुध शुभ हो जाय।
गुरु क्षेम उपजाय दे, शुक्कर सुख बताय ॥

(३१)

‡असाडे सुद नवमी दिने, घण बादल घण बीज ।
कोठा खेर खखेर दो, राखो बलद ने बीज ॥

आषाढ शुक्ला नवमी को आकाश मे अधिक बादल और जोर से बिजली चमकती दिखाई दे तो इस वर्ष कृषि-उत्पादन बहुत होगा । अत सचित अन्न निकाल दो केवल बीज के लिए अन्न और बैलो को तैयार रखो ।

(३२)

*सुदी असाडा नम्म ने, शशि जो निरमल देख ।
जा पीव तू मालवै, भीख मागणी पेख ॥

आषाढ शुक्ला नवमी की रात को आकाश मे चन्द्रमा को निर्मल देखकर कृषक-पत्नी अपने पति से कहती है कि इस वर्ष वर्षा नही होगी अत आप मालवे की ओर पधार जावे जिससे भीख माग कर भी आप अपना निर्वाह करके जीवन टिकाये रख सकें ।

(३३)

†असाड सुद नवमी दिने, नहि बादल नहि बीज ।
हल चीरो ईंधन करो, ऊबा फाको बीज ॥

---

‡ असाड सुदी नवमी दिने, घण बादल घण बीज ।
नेडा राखो बलदिया, खोला राखो बीज ॥

* इससे मिलती हुई —

सुदी असाडी सप्तमी, ससि जो निरमल देख ।
जा पिय तू तो मालवे, भीख मागवी पेख ।

† १ आसाडा री सुद नम, ना बादल ना बीज ।
हल फाडो ईन्धण करो, बैठा चाबो बीज ॥

२ आसाडे सुद नवमी, नइ बादल ना बीज ।
हल फाडो इन्धण करो, बैठा चाबो बीज ॥

आषाढ़ शुक्ला नवमी को आकाश में बादल नहीं हो, बिजली नही चमके तो इस वर्ष, वर्षा नही होगी । अत. कवि कहता है कि हलों को चीर कर ईंधन करलो और बीजो को भून-भून कर खड़े होकर ही फाकते रहो ।

(३४)

असाड सुदी नवमी निरमल देखिये ।
साझ समै व्है बादल तामे फल पेखिये ॥
भादव होवै घनो नही अन्त ही ।
सरकी फूटै पाल जु नीर चलन्त ही ॥

आषाढ शुक्ला नवमी को दिन भर निर्मल देखकर सायकाल के समय आकाश मे बादल हो जाय तो भाद्रपद मास मे इतनी वर्षा होगी कि, सरोवरो के बांध टूट कर जल बहेगा ।

(३५)

नवमी असाडा ऊजली, बादल करै वियाल ।
भाद्रवडे भर पावसी, सरवर फूटे पाल ॥

आषाढ शुक्ला नवमी को वायु चल कर बादल हो जाय तो भाद्रपद मास मे इतना मेह होगा कि, सरोवरो के बांध टूट जावेगे ।

(३६)

‡सुद असाड नवमी दिवस, बादल भीनो चन्द ।
तो यूं जाणो भड्डली, भूमी घणो अणद ॥

---

‡ इसके विपरीत —

१ आसाडी पूनम दिने, बादल भीनो चद ।
तो भडुली जोशे कहू, सगला नर आनद ॥

आषाढ शुक्ला नवमी की रात्रि मे चन्द्रमा बादलो से घिरा हुआ ही रहे तो कवि कहता है कि, वर्षा पर्याप्त होगी और पृथ्वी पर लोग अत्यन्त आनन्द मनावेंगे।

नोट —एक स्थान पर चन्द्रमा पर हलका बादल हो, लिखा मिला है।

(३७)

असाढ सुद नौमिये, सारो दिन वा जोई।
जे बादल गाजै कितै, समो सबै अति होई।।

आषाढ शुक्ला नवमी को दिन भर वायु चलकर बादलो की इस दिन कभी भी गर्जना हो जाय तो यह वर्ष उत्तम रहेगा। इस वर्ष, वर्षा अच्छी होगी।

(३८)

सुदी असाडा नवमी, मेह वरसण को जोग।
वरसै मूसलधार तो, गयो समुद्रा भोग।।

पिछले पृष्ट के फुटनोट का शेषाश—

२ आसाढी पूनम दिना, बादल झीणो चद।
जोशी कहे भड्डली सगला नरा आनद।।

३ आसाढी पून्यो दिना, बादल भीनो चद।
भद्रबाहु गुरु यू कहै, सगला नरां आनद।।

नोट —ये सभी नवमी के स्थान पर पूनम के दिन का समर्थन करने वाली उक्तियां हैं। इसीलिये विपरीत मान कर यहां सकेत के अन्तर्गत दी गई है।

इन सभी के विपरीत :—

आसाढी पून्यो दिना, बादल भीनो चद।
पंजाबो पिव मालवै, इठै छै दुःख दद।।

जे बरसै फूहा फूही, मत्स्य-वृद्धि व्है डक कही ।
मन्द मन्द जे विरखा करै, अन्न-वृद्धि सू पुहुमी भरै ॥

आषाढ शुक्ला नवमी को मेह बरसने का योग मिल जाय तो उस वर्षा का परिणाम इस प्रकार होगा । यदि मूसलाधार हुई तो बोया हुआ सब बहकर समुद्र मे चला जावेगा । यदि वर्षा बराबर रही तो इस वर्ष डङ्क के मतानुसार मछलियो की वृद्धि अधिक होगी । यही वर्षा कदाचित मन्द-मन्द होगी तो इसके परिणाम स्वरूप पृथ्वी अन्न से परिपूर्ण भरी रहेगी ।

(३९)

ढक्यो चन्द बादल सू रहै, सुद नवमी की रात ।
शीत काल विरखा घणी, परजा सुखी होजात ॥

आषाढ शुक्ला नवमी की रात्रि मे चन्द्रमा बादलो से ढका हुआ ही रहे तो इस लक्षण से आगामी शीतकाल मे बहुत वर्षा होगी ।

(४०)

° असाड सुदी नवमी दिने, निरमल ऊगै सूर ।
भरे वहु आभा करै, मेह होय भरपूर ॥
जाण खरू भडली कहै, मास चार बरसेय ।
सोच न हवे को करो, जोशी शूज करेय ॥

आषाढ शुक्ला नवमी को प्रात. काल सूर्य निर्मल उदय हो तो आकाश काली घटाओ से भरपूर रहेगा और अत्यधिक वर्षा होगी ।

भड्डली को सम्बोधन कर कवि कहता है कि, इसे सत्य समझो कि इस लक्षण से वर्षा चार महीनो तक होगी । चिन्ता क्यो करते हो ? इसमे ज्योतिषी का कोई वश नही है, वह क्या करेगा ।

° नोटः—कोई-कोई यहाँ सूर्य न मान कर रात्रि मे चन्द्रमा का निर्मल होना मानते हैं ।

(४१)

नवमी दशमी दोय दिन, सुद असाड की होय।
जे विरखा होजाय तो, समयो आछो होय॥
विरखा जे होवे नही, इणा दिना के माय।
खाली बाजै वायरो, दुरभिच्छ देवो बताय॥

आसाढ शुक्ला नवमी, दशमी को आकाश मे बादल, वर्षा हो तो इस वर्ष कृषि उत्पादन उत्तम होगा। कदाचित इस दिन वर्षा न हो और केवल वायु ही चले तो इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा।

(४२)

नवमी दशमी असाड का, बादल गाज करे।
चोमासे विरखा घणी, नदिया नीर भरै॥
इणा दिना बादल नही, नदिया जावे सूख।
अनावृष्टि के कारणे, परजा मचावे कूक॥

आषाढ शुक्ला नवमी, दशमी को आकाश मे बादल हो, तो वर्षा काल मे चारो महीने अच्छी वर्षा होगी। इसके परिणामस्वरूप नदियो मे पूर्ण जल होगा। कदाचित इन दिनो मे बादल नही हो तो नदियो का रहा सहा जल भी सूख जावेगा-अनावृष्टि होगी, जिसके कारण प्रजा मे जल के लिए हा हाकार होगा।

(४३)

* शनि अदीता मगला, जे पौडे सुरराय।
अन्नज मूघो होवसी, धोरा चालसी वाय॥†

---

* इसके समर्थन मे —
थावारे के मगरे दीते पौडे देव। पडवा कारण कार, ने थूली नें घेव॥
इसमे थूली और घेव से तात्पर्य दलिया-घाट और छाछ से है। अकाल पड जाने से ये भी नसीब नही हो सकेगी।

† कोई-कोई 'धोरा चालसी वाव' के स्थान पर 'जोरा चालसी वाव' भी कहते हैं।

सुर-राय अर्थात् देवताओ के राजा विष्णु के शयन के दिन देव-शयनी एकादशी को शनि, रवि किम्वा मगलवार मे से कोई-सा वार हो तो इस वर्ष, अन्न महगा होगा और प्रचण्ड वायु चलेगा।

(४४)

रवि टीण्ड बुध कातरा, मगल मूसा जोय ।
जे हर पौढ़े शनीचरा, तो विरला जीवे कोय ॥

यदि देव-शयनी एकादशी को रविवार हो तो इस वर्ष टिड्डियो के आक्रमण होगे बुधवार हो तो कातरा (एक प्रकार का वर्षा काल मे उत्पन्न होने वाला कीडा) बहुत पैदा होगा। इस दिन मगलवार हो तो इस वर्ष चूहे अधिक होगे और कदाचित शनिवार इस दिन आ जाय तो ऐसा सकट आवेगा कि, विरले व्यक्ति ही जीवित रहेगे।

(४५)

सोमा सुक्करा सुरगुरा, जे पौडे सुरराय ।
अन्न बहोलो नीपजे, पुहुमी सुख सरसाय ॥

देव-शयनी एकादशी को सोम, शुक्र किम्वा गुरुवार मे से कोई-सा वार आ जाय तो इस वर्ष, अन्न का उत्पादन अधिक होगा अत प्रजा सुख मे मस्त रहेगी ।

(४६)

असाढ़ महीने दो दिन सारा,
आठम पूनम घोर अन्धारा ।
भडली केव्है मे जाण्यो भेद,
जित्ता बादल बितो मेघ ॥

आषाढ़ शुक्ला अष्टमी और पूर्णिमा इन दो दिनो को भली

प्रकार से देखें। भड्डुली कहते हैं कि इन्हे देखकर मैंने रहस्य समझ लिया है। वह यह है कि बादलो के कारण इन दिनो में दिन मे अन्धेरा हो जाय तो जैसे बादल (कम या अधिक) होगे, वर्षा काल मे वैसी ही वर्षा (कम या अधिक) होगी।

(४७)

असाड सुदी चवदस दिना, रिछ जेठा रविवार।
धानज मूघो होवसी, सशे नही लगार॥

आषाढ़ शुक्ला चतुर्दशी को ज्येष्ठा नक्षत्र और रविवार हो तो इस वर्ष अन्न महगा होना निश्चित है।

(४८)

असाड़ सुदी चवदश दिना जे विरखा हो जाय।
तो पजूसणां के मायने, मेह बरसेलो आय॥

आषाढ शुक्ला चतुर्दशी के दिन वर्षा हो जाने से जैन धर्मानुयायियो के पर्यूषण पर्व के दिनो मे वर्षा होगी। पर्यूषण पर्व भाद्रपद कृष्णा १४ से भाद्रपद शुक्ला ४ तक होता है।

(४९)

आषाडी पून्यूं दिना, पूर्वाषाडा होय।
अन निपजै सगली जगा, शान्ति सुख लो जोय॥
मूल उत्तराषाड सूं, साख थोडी निपजावै।
तारो टूटे ग्रहण हुवे, तो अवसै दुरभिक्ख लावै॥

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा को पूर्वाषाढा नक्षत्र हो तो इस वर्ष शान्ति एव सुख रहेगा और समस्त जगह अन्न उत्पन्न होगे। इस दिन मूल किम्वा उत्तराषाढा मे से कोई एक नक्षत्र आ जाय तो यह वर्ष मध्यम बीतेगा अर्थात् कृषि कम होगी। किन्तु इस दिन, रात्रि में तारे टूटे किम्वा ग्रहण हो जाय तो इस वर्ष अवश्य दुर्भिक्ष होगा।

(५०)

जे पूनम वाजे नही, फुरके नही लगार।
गर्भ्यो श्रावण भादवो, बरसे एकहि धार॥

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को सूर्यास्त के समय (जब सूर्य आधा दिखाई दे और आधा छुप जाय तब) वायु बिलकुल बन्द हो तो, इस लक्षण से श्रावण-भाद्रपद में अच्छी वर्षा होगी।

(५१)

पडवा पूनस द्वादसी, वाजे पवन प्रचण्ड।
तो घण थोडा बरससी, मेह गया नव खण्ड॥

यदि आषाढ शुक्ला प्रतिपदा, द्वादशी और पूर्णिमा इन तीन दिनो मे तीनो दिन या इनमे से किसी भी दिन प्रचण्ड वायु चले तो इस वर्ष, वर्षा साधारण ही होगी।

(५२)

पूनम नवमो साड सुद, निरमल निसा मयक।
दुरभिख नहचे जाणिजे, रुले राव अरु रक॥

आषाढ शुक्ला नवमी एव पूर्णिमा के दिन रात्रि मे चन्द्रमा निर्मल प्रतीत हो तो—बादल आदि न हो तो—इस वर्ष ऐसा दुर्भिक्ष होगा कि धनिक एव दीन (अमीर एव गरीब) सभी छटपटा जावेंगे।

(५३)

निरमल पूनम साड की चान्द निरमलो जोय।
दूणा तीणा चौगुणा, कण का फोड़ा होय॥

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा की रात्रि में चन्द्रमा निर्मल दिखाई दे तो इस लक्षण से इस वर्ष अकाल ही होगा और अन्न अत्यन्त कठिनाई से प्राप्त हो सकेगा।

(५४)

सुदी असाडा चवदसा, पूनम देखौ जोय।
जे कमती आ जाय तो, अन्नज मूंघो होय।।
घणी हुया सस्तो हुवे, सम समभाव समान।
जे पूनम टोटे हुवे, तो अन्न न निपजे जान।।

आषाढ शुक्ला चतुर्दशी को और पूर्णिमा को इन दोनो तिथियो की घडियें देखें। यदि चतुर्दशी से पूर्णिमा की घडियें कम हो तो इस वर्ष अन्न का भाव महगा होगा। समान (बराबर-बराबर) होने से सम भाव, तथा अधिक होने से इस वर्ष अन्न सस्ता होगा। कदाचित पूर्णिमा तिथि टूट गई तो इस वर्ष अन्न उत्पन्न ही नही होगा।

(५५)

असाडी पून्यू बध्या, तीन मास सुभिक्ष।
टूट्या अन्न ना नीपजे, ऐसो पडे दुरभिक्ष।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा की तिथि बढने से तीन महीनो तक अन्न सस्ता रहेगा। कदाचित यह तिथि टूट जाय तो इस वर्ष अन्न का उत्पादन ही न हो, ऐसा दुर्भिक्ष होगा।

(५६)

आसाडी पून्यूं दिना, बादल बीजल गाज।
चान्द सूरज के सेवरो, निपजे सातूं नाज।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को आकाश मे बादल हो, बिजली चमके, गर्जना हो और चन्द्र एव सूर्य के ऊपर बादलो का सेवरा रहे तो इन लक्षणो से इस वर्ष इतनी वर्षा होगी कि सातो अनाज (समस्त अनाज) उत्पन्न होगे।

(५७)

असाड सुदो पून्यो दिना, आभै बादल छाय।
पूरब उत्तर ईशान हवा, मेह घणेरो आय।।

खाली होवे वायरो, बादल जे नहि होय।
मेह न आवे बून्द भर, दुरभिख लेवो जोय॥
पच्छम वायव वायरो, अलप वादला होय।
थोडी विरखा होवसी, समयो मध्यम होय॥

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को आकाश मे बहुत से बादल हो, पूर्व किम्वा उत्तर की वायु हो तो सुभिक्ष, सुवृष्टि एव आरोग्यकर यह वर्ष होगा। परन्तु इस दिन केवल वायु ही चले और बादल न हो तो दुर्भिक्ष होगा। कदाचित इस दिन वायु पश्चिम किम्वा वायव्य का हो और आकाश मे थोडे से बादल हो तो इस वर्ष, वर्षा कम होगी और इसके परिणाम-स्वरूप कृषि मध्यम होगी।

(५८)

आसाडा की पूनमे दिक्खरण नेरुत वाय।
छारण न छावो माघजी रहस्या वडले जाय॥

आषाढ की पूर्णिमा को दक्षिण अथवा नैऋत्य का वायु हो तो अनावृष्टि योग होने के कारण कवि माघजी को सम्बोधन कर कहता है कि इस वर्ष, वर्षा मे रक्षा करने हेतु छप्पर छाने की आवश्यकता नही है। बरगद के पेड के नीचे रह कर ही समय गुजार लेना।

(५९)

आसाडा की पूर्णिमा, अग्नि कोरण की वाहाल।
औरा देसा करवरो, मारू देसा काल॥

आषाढ की पूर्णिमा को अग्निकोण का वायु हो तो मरुस्थल (मारवाड) के अलावा अन्य देश (प्रान्तो) मे सामान्य वर्ष होगा किन्तु इस मारवाड मे तो अकाल ही होगा।

(६०)

आसाडा की पूनमे, पूरब वाजे वाय।
मारू देसा करवरो, काल पड़े गुजरात॥

आषाढ मास की पूर्णिमा को यदि पूर्व दिशा का वायु हो तो इस लक्षण से मारवाड मे तो सामान्य वर्षा एव कृषि होगी किन्तु गुर्जर-प्रदेश (गुजरात) मे अकाल पडेगा ।

(६१)

आसाडा की पूनमे, उत्तर वाजे वाय ।
छत्र भंग दुरभिख दुसह, परजा भोगे ताव ।।

आषाढ मास की पूर्णिमा को उत्तर दिशा का वायु होने से किसी राजा की मृत्यु या राज्य-भग, भयकर दुर्भिक्ष और प्रजा मे ज्वरादि व्याधियो की वृद्धि होगी ।

(६२)

आसाडी चौबाया वाजे । कठेक तरसे कठेक गाजे ।।
टूटे ध्वजा चढे आकाश । तो वरसे मेह न निपजे घास ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को चारो ओर से जोर का वायु हो तो इस लक्षण से कही वर्षा होगी और कही लोग वर्षा के लिये तरसते ही रहेंगे । यदि यह वायु इतना प्रचण्ड हो कि ध्वजा टूट कर आकाश मे चढ जाय, नीचे नही पडे तो इस वर्ष मेह सर्वथा नही होगा—यहाँ तक कि घास भी उत्पन्न नही होगा ।

(६३)

आसाडी पून्यूँ तणी, पनरा घडी तक रात ।
सावण सूँ आसू तलक, पाँच-पाँच मे आत ।।
उत्तर पूरब वायरो, जिण घडियाँ मे होय ।
उण महिने विरखा हुवे, न्यूनाधिक लो जोय ।।
आभो निरमल जे हुवे, जी पाँच घड़ी के माँय ।
वी महिना के माँयने, बिरखा जाय लुकाय ।।

आषाढ़ शुक्ला पूर्णिमा की रात्रि की पन्द्रह घडियो तक वायु एव बादलो को देखे । इस समय उत्तर किम्वा पूर्व का वायु हो तो पाँच-पाँच घडी के हिसाब से श्रावण प्रथम गिन कर जिस भाग मे उपरोक्त लक्षण हो तो क्रमश उसी महीने मे वर्षा होगी । वायु किम्वा बादलो की न्यूनाधिकता के प्रभाव मे वर्षा भी उसी प्रकार की होगी ।

इसी प्रकार से उपरोक्त पाँच-पाँच घडियो के समूह में से जिस समूह (पाँच घडियो) मे आकाश निर्मल दिखाई दे तो क्रमश आने वाले उस महीनें मे वर्षा नही होगी ।

(६४)

असाडी पून्यूँ की साँझ । वरस भलेरो ले इण भाँत ।।
पूरव उत्तर अर ईशाण । जोर बहै तो समयो जाण ।।
अगनी नेरुत दागज कोण । समयो जासे चले जुपौन ।।
दक्खण पच्छम आधौ समयो । सहदेव जोयसी एसो भणयो ।।

आषाढी पूर्णिमा को पूर्व, उत्तर किम्वा ईशानकोण का वायु जोर का हो तो यह वर्ष अच्छा होगा । अग्नि, नैऋत्य आदि कौन का वायु हो तो कृषि-उत्पादन नही होगा । किन्तु, इस दिन दक्षिण किम्वा पश्चिम दिशा का वायु होगा तो आधी ही फसल होगी ।

(६५)

‡ असाड मास पुन गौना । धुजा बाँधने देखो पौना ।।
जो पवन पूरब सू आवै । निपजै अन्न मेघा झड लावै ।।
अगन कूण जे बहै समीरा । पडे काल दुख सेवै सरीरा ।।
लकाऊ व्हैता हुवे सुकाल । लडै सूरमा दे दे ताल ।।

इसके विपरीत —

‡ आषाढी पून्यो की साँझ । वायु देखो नभ के माँझ ।।
नेऋत भई बूद ना परै । राजा परजा भूखन मरै ।।

नेरुत कूण बूंद नही पडसी । राजा परजा भूखाँ मरसी ।।
आथूणो व्हैता भलेरो जाणो । पालो पडसी साँची मानो ।।
वायव व्हैता विरखा भारी । होसी मूमा दुख पामी नारी ।।
धूराऊ व्हैता धान घणेरो । करसी मौजा करसो भलेरो ।।
कूण ईशाणा नौपत गाजै । घरा घरा मे तोरण छाजै ।।

आषाढ की पूर्णिमा को ध्वजा बान्ध (झण्डा गाड) कर वायु का रुख देखें । इस दिन पूर्व की वायु हो तो फसल अच्छी होगी और वर्षा यथेष्ट होगी । अग्निकोण की वायु हो तो इस वर्ष अकाल होगा

अगिन कोण जो बहै समीरा । परै काल दुख सहै सरीरा ।
उत्तर से जल फूहा परै । मूस साँप दोनो अवतरै ।।
पश्चिम समय नीक करि जानो । आगे बहे तुसार प्रमाण्यो ।।
जो कहुँ बहै ईसाना कौना । नापो विस्वा दो-दो दौना ।।
जो कहुँ हवा अकासे जाय । परै न बूंद काल परि जाय ।।
दक्खिन पच्छिम आधा समै । भड्डर जोसी ऐसे भनै ।।

आषाढी पूर्णिमा को सन्ध्या समय की वायु को देखे । नैऋत्य कोण का वायु चलने पर एक बूंद भी पानी नही बरसेगा और राजा-प्रजा को भूखो मरना पडेगा । अग्निकोण का वायु चले तो अकाल पडेगा और लोगो को शारीरिक कष्ट होगा । उत्तर का वायु चलने पर फूहाफाही वर्षा होगी तथा चूहे और साँप अधिक पैदा होगे । पश्चिम का वायु होने पर समय अच्छा समझो, पर पाला पडेगा । ईशान कोन की वायु चलने पर विश्वा मे दो दौने से अधिक उत्पादन नही होगा अर्थात् अनाज की कमी ही रहेगी । दक्षिण और पश्चिम का वायु चलने पर भड्डली ज्योतिषी का कहना है कि उत्पादन आधा होगा । यदि यह वायु आकाश की ओर जाय तो इस लक्षण से इस वर्ष, वर्षा नही होगी और अकाल पड़ेगा ।

और लोगो को शारीरिक कष्ट मिलेगा। दक्षिण दिशा की वायु हो तो बहुत वर्षा होगी, किन्तु बडे-बडे योद्धा परस्पर लडेंगे। नैऋत्य कोण का वायु हो तो वर्षा की एक बूँद भी नही गिरेगी और राजा-प्रजा भूखो मरेगे। पश्चिम दिशा की वायु को अच्छा बताया गया है, किन्तु शीत काल मे पाला अधिक पडने की सूचना देता है। वायव्य कोण का वायु हो तो वर्षा बहुत होगी, किन्तु चूहे भी अधिक पैदा होगे, जो हानि पहुँचावेंगे और स्त्रियों को दु:ख होगा। उत्तर दिशा की वायु धन-धान्य की बहुत उपज होने के कारण किसानो को आनन्दित करेगी। ईशान कोण की वायु से भी उत्पादन अच्छा होने की सूचना है। इस वर्ष प्रजा में विवाहोत्सव बहुत होगे।

(६६)

पून्यूं मास असाढ की, वायू पूरब होय।
जे दिन भर चलतो रहै, बिरखा आछी होय॥
अग्निकूण को वायरो, खण्ड वृष्टि कर-जाय।
राजा की मृत्यु हुवै, अग्नि भय कराय॥
लकाऊ वायु हुया, अनावृष्टि हुय जाय।
नेरुत कूण को वायरो, घोर काल ले आय॥
पच्छम दिस वायु हुया, समयो आछो होय।
धूराऊ को ह्वै जायतो, धान घणेरो होय॥
वायव कूण को वायरो, फसल सरासर होय।
नौल्या मूसा टीड भर, मकडी नेक्षो जोय॥
ईसाण कूण को वायरो, आछो मेह करावै।
करसण होवै मोकलो, चोर नाश हो जावै॥
च्यारूं दिस वायु बहै, आछो नही है जोग।
अन्न मूघो अगन भय, परजा भोगमी भोग॥

आमो सामो वायरो, आवै अर जाव।
धान नाश दुरभिच्छ करै, रोग जुद्ध करावै ॥
सव्य भलैरौ जाणजो, अपसव भलौ न होय।
आठूं दिस वायु हुया, तृण भी मूधो होय ॥

आषाढी पूर्णिमा के दिन वायु पूर्व का हो तो इस वर्ष, वर्षा अच्छी होगी, जिससे अन्न सस्ता होगा। इस दिन वायु अग्नि कोण का हो तो खण्ड-वृष्टि (कही वर्षा होना और कही नही होना) किसी राजा की मृत्यु और अग्नि-काण्ड होगे। दक्षिण दिशा का वायु हो तो अनावृष्टि, दुर्भिक्ष एव परस्पर युद्ध होगे। अत ऐसी स्थिति मे जीवन निर्वाहार्थ बहुमूल्य वस्तुओ को बेच कर अन्न सग्रह कर लेना चाहिये। पश्चिम दिशा का वायु हो तो समय-समय पर इतनी वर्षा होगी कि समस्त अन्न उत्पन्न हो जावेगे। इसी प्रकार उत्तर दिशा का वायु भी वर्षा एव अधिक अन्न की उत्पत्तिकारक, सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यादि का दाता होगा। वायव्य कोण का वायु, वर्षा एव अन्न के लिये साधारण ही रहेगा और नेवलो, चूहो, टिड्डियो, मकडियो आदि की वृद्धि होगी। ईशाण कोण का वायु उत्तम वर्षा, कृषि मे वृद्धि एव सुभिक्षकारक तथा चोरो का नाश करने वाला होगा। कदाचित इस दिन वायु चारो दिशा का हो तो खण्ड-वृष्टि, अन्न महँगा एव अग्नि-काण्ड के उपद्रवो का भय रहेगा। इस दिन यह वायु आमने-सामने (पूर्व से पश्चिम, पश्चिम से पूर्व तथा उत्तर से दक्षिण, दक्षिण से उत्तर) का हो तो इस वर्ष अन्न का नाश, दुर्भिक्ष, रोग एव परस्पर युद्ध होगे। यहाँ, यह अवश्य ध्यान मे रखे कि यह वायु सव्य (पूर्व से उत्तर, उत्तर से पश्चिम, पश्चिम से दक्षिण) इस प्रकार हो और साथ ही शीतल, सुखदायक हो तो यह वर्ष सुभिक्ष, क्षेम, आरोग्यादि का देने वाला होगा। किन्तु इससे

विपरीत अपसव्य (पूर्व से दक्षिण, दक्षिण से पश्चिम) हो तो अल्प वर्षा, अन्न-नाश, रोग आदि होंगे। यदि यह वायु आठों ही दिशाओं का हो और वेग सहित हो तो अनावृष्टि के कारण घास तक महँगा होगा।*

(६७)

जे ध्वज हिलै नही, निश्चल रैव्है वाय।
तौ नवखण्ड सारा डोलसी, भय घणेरी थाय॥

आषाढी पूर्णिमा को वायु की गति देखने के लिये ध्वजा रोपकर देखे। यदि ध्वजा फरके नही और इस दिन वायु निश्चल रहे तो समस्त भू-मण्डल पर कोई भयङ्कर आपत्ति आवेगी।

(६८)

आसाडी पून्यूँ दिना, बाजै नही सुवाव।
मेह न बरसै माघजी, अन को बरतै भाव॥

आषाढी पूर्णिमा के दिन वायु का नही चलना इस वर्ष, वर्षा का अभाव सूचित करता है। इसलिये इस वर्ष अन्न उत्पादन होना कठिन ही है।

(६९)

चित्रा स्वाति बिसाखडे, जे बरसै आसाड।
चालो नरा विदेशडे, पडसी काल सुगाढ॥

---

* इस दिन निम्न सम्वतो मे निम्न दिशाओ के वायु रहे थे—

दक्षिण दिशा—वि० स० १९२५, १९३४, १९४८ और १९५६.

उत्तर दिशा का वायु—विक्रम सम्वत १९५७.

वायव्य कोण का वायु — वि० स० १९५०

ईशाण कोण का वायुः—वि० सं० १९४९.

इन वर्षों मे उपरोक्त फल दृष्टिगोचर आये थे।

आषाढ मास मे चित्रा, स्वाति, विशाखा इन तीन नक्षत्रों मे वर्षा हो तो इस वर्ष भयङ्कर अकाल होगा ।

(७०)

पूर्वाषाढा सू तीन दिन, जे होवे शुभ बार ।
घर-घर होवे बधामणा, घर-घर मँगलाचार ।।

आषाढ मास मे पूर्वाषाढा नक्षत्र के तीन दिन बाद शुभ वार आ जाय तो इस वर्ष लोग आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगे ।

(७१)

सुद पूनम असाड री, साठ घडी जे होय ।
समयो आछो होवसी, सोच करो मत कोय ।।
तीस घडी जे होय तो, छः महीना सुख पाय ।
इण सू आधी होय तो, चौमासे सुख थाय ।।
पनरा सू आघी हुया, दुख ही दीखे आय ।
वायु बादल सजोग सूं, फरक पडे लो आय ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा यदि साठ घडी हो तो इस वर्ष, वर्ष भर सुभिक्ष रहेगा । तीस घडी होने पर छ महीने सुख और छ महीने कष्ट होगा । यदि यह तिथि केवल पन्द्रह घडी ही की है तो चातुर्मास पर्यन्त ही सुभिक्ष रहेगा । कदाचित पूर्णिमा इससे कम हो तो दु ख ही की सम्भावना होगी । किन्तु इस दिन वायु, बादल आदि के कुछ शुभ लक्षण हो जाँय तो उपरोक्त फलो मे भी न्यूनाधिकता हो जावेगी ।

(७२)

आसाडी पून्यों दिना, घडियाँ लेवो जोय ।
पाँच-पाँच का भाग सू, श्रावण आदि होय ।।
जिण भागाँ बीजल खिवे, बादल सहिते गाज ।
पूरब उत्तर वायरो, उण महीने इन्द्र समाज ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा जितनी घडी हो, उनमे पाँच का भाग दे और श्रावण को आदि मानकर यह देखें कि, इस दिन के किस भाग मे बिजली चमकती है, बादल होते हैं और गर्जना भी होती है। इस दिन उत्तर का वायु हो तो क्रम से उसी महीने मे वर्षा होगी।

(७३)

आसाडाँ बादल करै, जे चाले उत्तर बाय।
तो जाँणो कातिक थकी, सावण महँ बरसाय॥

आषाढी पूर्णिमा को उत्तर दिशा का वायु हो तो इस लक्षण से श्रावण कार्तिक मे वर्षा होगी। कातीसरा—वर्षा द्वारा होने वाला अन्न बहुत होगा।

(७४)

आसाडी पूनम दिनै, चन्द्र दरसण न थाय।
तो अतिवृष्टि मेघनी, जन समाज अकुलाय॥

आषाढी पूर्णिमा को आकाश मे चन्द्रमा नही दिखाई दे तो इस लक्षण से यह सिद्ध होता है कि इस वर्ष, वर्षा अधिक होगी जिससे लोग तङ्ग आ जावेंगे।

(७५)

असाड मास पूनूँ दिवस, बादल घेरे चन्द।
तो भड्डुली इम भणे, होवै परम अणन्द॥

आषाढ मास की पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा बादलो से घिरा ही रहे तो भड्डुली कहते हैं कि इस लक्षण से वर्षा अच्छी होगी और लोगो मे परम आनन्द रहेगा।

(७६)

आसाडी पून्यूँ दिनाँ, निरमल ऊगे चन्द।
तुम पिव जाबो मालवे, अट्ठैं छै दुख द्वन्द॥

आषाढी पूर्णिमा को चन्द्रमा स्वच्छ उदय होता देख पत्नी अपने पति से प्रार्थना करती है कि आप मालवा प्रदेश की ओर चले जावें। यहाँ तो कठिन दु ख भोगना पड़ेगा।

(७७)

*आसाडो पूनम दिनाँ, गाज बीज वरसन्त।
विणस्या लक्खण कालरा, आणन्द माणे सन्त॥

आषाढी पूर्णिमा को आकाश मे बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके, वर्षा हो तो अकाल के लक्षण नष्ट हो गये। इस वर्ष, पर्याप्त वर्षा होगी।

(७८)

असाड सुद पूनम दिनै, गाज बीज खेवेह।
नीचा परिहर झूपडा, डूँगर सिखर करेह॥

आषाढी पूर्णिमा को आकाश मे गर्जना हो, बिजली चमके तो इन लक्षणो को देख कर कवि कहता है कि अपने झोपडे नीचे की ओर बनाना मत। इन्हे किसी ऊँची जगह डूगर की चोटी पर बनाना, क्योंकि वर्षा बहुत होगी।

---

* इससे मिलती हुई निम्न उक्तियें भी मिली हैं —

१—आसाडी पूनम दिने, गाज बीज वरसन्त।
　होय न लक्खण काल को, आणन्दी हो सन्त॥

२—आसाडी पूनम दिनो, गाज बीज वरसन्त।
　नासै लक्खण काल का, सुख माणे सब सन्त॥

३—आसाडी पूनों दिना, गाज बीजु बरसन्त।
　नासै लच्छन काल का, आनन्द मानो सन्त॥

(७९)

आसाडे उजवालिये, पूनम निरमली जोय।
रवि रोग बुध शीतला, विरलो जीवै कोय॥

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को आकाश निर्मल हो और इस दिन रविवार हो तो इस वर्ष, अनेक रोगो का उपद्रव रहेगा। कदाचित इस दिन बुधवार आ जाय तो शीतला (चेचक) का प्रकोप बढेगा।

(८०)

आसाढी पूनम दिने ससि ऊगतो कमेह।
तो जाणीजे भड्डुली, साव देश वरसेह॥

आषाढी पूर्णिमा को चन्द्र बादलो से ढका हुआ ही रहे तो इस लक्षण से यह पता चलता है कि इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी।

(८१)

धुर असाडी पूनमे, आभे बिजली जोय।
सोमा सुक्रा गुरु दिना, तो मेह घणेरो होय॥

आषाढी पूर्णिमा के दिन सोमवार, गुरुवार या शुक्रवार मे से कोई-सा वार हो और इस दिन आकाश मे निरन्तर बिजली चमकती रहे तो इसके प्रभाव से बहुत वर्षा होगी।

(८२)

पूनम पडवा बेउ जे, वीज असाडा माय।
दिन बेओत्तर लेवसी, विरखा खूब कराय॥

आषाढ मास की दोनो प्रतिपदाए और पूर्णिमा के दिन आकाश मे बिजली चमकती दिखाई दे तो इस लक्षण से वर्षा बहत्तर दिन तक बरसेगी।

(८३)

असाड सुद पूनम जोई । रविवारी गोरी दुख होई ।।
बुधवारी बालक बहु मरै । दोष शीतला घर घर करै ।।
मगलवारी का हो मेह । शनि दुर्भिक्ष न जीवै केह ।।
गुरु शुक्र शशिवारी भाल । समो घणो दु ख सगले टाल ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को रविवार हो तो स्त्रियो को कष्ट होगा । बुधवार हो तो शीतला प्रकोप से बालक बहुत मरेंगे । मगलवार होगा तो इस वर्ष, वर्षा अच्छी होगी । गुरु, शुक्र एव सोमवार मे से कोई-सा वार होगा तो कृषि उत्पादन बहुत होकर समस्त दु खो का निवारण होगा । किन्तु दुर्भाग्यवश इस दिन शनिवार होगया तो भयकर अकाल पडेगा ।

(८४)

उजियाली आसाड री, पूनम निरखी जोय ।
वार शनीचर जे मिले, तो विरला जीवे कोय ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा के दिन शनिवार हो तो इस वर्ष ऐसा सकट आवेगा कि विरले व्यक्ति ही जीवित रह सकेंगे ।

(८५)

आसाडे सुद पूनम वादल गाजही ।
होत समो अति घनो सकल जल राजही ।।
जे निरमल हुई 'रात तो समो नहि जाणिये ।
काल पडे सहु ठौर यही सु बखानिये ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को आकाश मे बादलो की गर्जना हो तो इस वर्ष, वर्षा बहुत होने से कृषि उत्पादन उत्तम होगा । किन्तु, यदि यही रात्रि निर्मल दिखाई दे तो इस वर्ष अकाल ही पडेगा ।

(८६)

आसाडी सित पूनमे, पूरब न उत्तर वाय ।
काक घणो नर शीशमह, देसी मस्तक पाय ।।

आषाढ शुक्ला पूर्णिमा को पूर्व या उत्तर की वायु न हो तो इस वर्ष कौवे अधिक होगे और मनुष्यो के शिर पर बैठेंगे । यह वर्ष अच्छा नही बीतेगा ।

(८७)

घर घर भीख ही माग सी, कोई करै ना दान ।
भूख दोष नर पशु मरै, निश्चै मन कर आन ।।

अतः लोग उदर निर्वाहार्थ घर-घर भीख माँगते फिरने लगेंगे किन्तु कोई अन्न-दान नही कर सकेगा । भूख के मारे मनुष्य एवं पशुओ की मृत्यु होगी ।

(८८)

एकम चौथ पाचम छट लीजे ।
सातम अमावस पूनम पण गिणीजे ।।
मास असाडाँ बादल आया ।
मेह घणेरो बरसै भाया ।।

आषाढ मास की प्रतिपदा, चतुर्थी, पचमी, षष्ठी, सप्तमी, अमावस्या और पूर्णिमा इन दिनो मे यदि आकाश मे बादल हो तो प्रायः वर्षा हो जाया करती है ।

(८९)

चौथ पाचम छठ सप्तमी, पूनम लेवो जोय ।
असाडी मावस वादला, अवशै विरखा होय ।।

आषाढशुक्ला चतुर्थी, पचमी, षष्ठी, सप्तमी, पूर्णिमा एव अमावास्या को आकाश मे बादल हो तो वर्षा के दिनो मे अवश्य वर्षा होगी ।

(९०)

‡ सुद असाड मे बुद्ध कौ, उदै हुवो जो देख ।
शुक्र अस्त सावण लखौ, महा काल अवरेख ॥

आषाढ शुक्ल पक्ष मे बुध का उदय और श्रावण मे शुक्र का अस्त हो तो इस वर्ष भयकर अकाल पडेगा ।

(९१)

माम असाड अर पख उजियाले । बुध जो ऊगे किसही काले ॥
मेह न बरसै मण्डल सारै । कण कौडी न मिले तिसवारे ॥

आषाढ शुक्ल पक्ष मे किसी भी समय बुध का उदय हो तो इस वर्ष वर्षा का अभाव रहेगा और जनता अन्न के लिये इधर-उधर भटकती रहेगी ।

(९२)

बुध शुक्र असाड मे, एक साथ आ जाय ।
सूरज साथे नहि हुया, मेह घणोरो थाय ॥

आषाढ मास मे बुध-शुक्र का एक साथ हो जाना बहुत वर्षाकारक होता है । किन्तु इनके साथ यदि सूर्य आ जाय तो इस वर्ष अनावृष्टि योग बन जाता है ।

---

‡ इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तिये उपलब्ध हुई हैं—

१. आसाडे बुध ऊगमे, शुकर सावण मास ।
महुली हूँ तुफने कहूँ, कणवी पीवँ छास ॥
२. सुदी असाडा बुद्ध ने उदय शुक्र जे होय ।
होय अस्त सावण मही, महाकाल अवरेख ॥

(९३)

*मगलरथ आगै चलै, पीछे चलै जो सूर ।
मद वृष्टि तब जाणिये, पड़सी सगलै भूर ।।

आषाढ मास मे मगल आगे और पीछे सूर्य हो तो इस योग के कारण इस वर्ष वर्षा कम होगी ।

(९४)

आगे मगल पीछे रवि, जो असाड के मास ।
चौपद नाशै चहुँ दिशा, विरले जीवन की आस ।।

आषाढ मास मे मगल आगे हो और सूर्य इसके पीछे हो तो यह वर्ष ऐसा भयानक होगा कि चतुष्पद प्राणियो का नाश होगा और विरले ही जीवित रह सकेंगे ।

(९५)

†रवि आगे पीछे चले, मगल जो असाड ।
तो वरसै अन मोकलो, पृथ्वी आणंद गाढ ।।

---

*मगल आगल पछि रवि, जे आसाडे मास ।
चौपद नाशै चार दिशै, विरला जीव्यां आस ।।
आगे मगल होय जद, पीछे होवे भान ।
जे विरखा होजाय तो, बरसै ओस समान ।।
मगल रथ आगे हुवै, लारे हुवै जो भान ।
आरमिया यूही रेवे, ठाली रेव्है निवाण ।।
आगै मगल पीछे भान । तो विरखा होसी ओस समान ।।

†पीछे मगल सूर्य के, आषाढा मे जाय ।
बरसै मूसलधार ही, पृथ्वी अन्न न समाय ।।
आगे रवि पीछे चन्दै, मगल जो आसाड ।
तो बरसै अनमोल ही, पृथ्वी अनन्दे बाढ !

आषाढ मास मे मगल पीछे और इससे आगे सूर्य हो तो इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी, अन्न भी बहुत होगा और लोग आनन्द मनावेंगे ।

(९६)

कीडी कण असाड मे, बारे न्हाखे आण ।
वरस भलो विरखा घणी, भीलणी करे बखाण ।।

चिउटिये अपने दर मे से अन्न के कण आषाढ मास मे बाहर लाकर पृथ्वी पर डालती हुई दिखाई दे तो इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी, अन्न का उत्पादन भी अधिक होगा ।

(९७)

कीडी कण असाड मे, माय ले जाती देख ।
तो अन्न तृण को काल व्है, भीलण कहे विसेख ।।

आषाढ मास मे चिउटियो को अपने दर मे अन्न को ले जा कर सग्रह करती हुई देख कर भीलणी कहती हैं कि, इस वर्ष तो अन्न एव तृण अर्थात् घास का विशेष अभाव रहेगा । तात्पर्य यह है कि इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा ।

(९८)

नवमी सुद असाडरी, सनि अनुराधा आय ।
कठेक निपजै कठेक खोवै, कठेक काल बताय ।।

आषाढ शुक्ला नवमी के दिन शनिवार और अनुराधा नक्षत्र हो तो इस योग के प्रभाव से उस वर्ष कही-कही तो अन्न का उत्पादन होगा और कही-कही बोया हुआ भी नही उगेगा । किसी किसी स्थान पर अकाल की स्थिति भी आ जावेगी ।

(९९)

आसाडी नम ऊजली, सूरज निरमल प्रात ।
दोपारा सिझ्या समै, बादल सू ढक जात ।।

ईं जोगा रे कारणे, समयो आछो होय।
महिना च्यारू बरससी, सोच करो मत कोय ॥
ईसू ऊधा लक्खण हुया, फल होवै इण भाँत।
जल दीखै मोटी नदी, नही बरसै बरसात ॥

आषाढ शुक्ला नवमी के दिन प्रात काल सूर्य उदय होते समय तो निर्मल दिखाई दे और मध्याह्न मे एव सूर्यास्त के समय वह बादलों से ढका रहे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि वर्षा काल के चारो महीनो मे अवश्य ही वर्षा होगी। कदाचित इस दिन सूर्य उदय होते समय तो बादलो से ढका रहे और मध्याह्न एव सूर्यास्त के समय वह निर्मल दिखाई दे तो यह लक्षण उत्तम नही है। इसके प्रभाव से उस वर्ष अनावृष्टि होगी और जल के दर्शन बडी बडी नदियो अर्थात् गङ्गा, यमुना आदि मे ही होगे।

(१००)

पून्यू मास असाड री, बिन बादल ह्वै जे रैन ॥
धराऊ ऊगूणारो, वायु देवै चैन ॥
चार पोर आधा किया, भाग आठ हो जाय।
ई लक्खणा बिरखा हुवै, सावण आद कराय ॥

आषाढी पूर्णिमा की रात्रि के समय आकाश निर्मल अर्थात् बिना बादलो के हो और पूर्व अथवा उत्तर दिशा का आनन्द दायक वायु चल रहा हो तो रात्रि के चार प्रहर के आठ भाग कर जिस भाग मे ये लक्षण प्रतीत हो उस क्रम से श्रावण मास को आदि मे रख कर आठ मास मे होने वाली वर्षा का निश्चय करले।

(१०१)

आषाडी पून्यू दिना, जे बरसेलो मेह।
मास एक मूघोकरी, पछि सस्तो धान करेह ॥

आषाढी पूर्णिमा को वर्षा हो जाय तो इसके प्रभाव से एक मास तक तो समस्त अन्न मँहगे बिकेंगे और इस अवधि के पश्चात् वे सस्ते हो जावेंगे।

आषाढ मास कृष्ण-पक्ष

(१)

धुर असाड की पडवा जोय, जह बरसै तह दुरभिक होय।
गाज सुणे तहा कुररा जाण, दीखै बीज तह कछु हाण।।

आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को देखे। इस दिन वर्षा हो तो इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा। यदि इस दिन आकाश मे बादलो की गर्जना सुनाई दे तो वर्ष कुररा होगा और इस दिन बिजली दिखाई दे तो कुछ हानि होगी।

(२)

असाड वदि एकमे, गाज वीज पुनि वाइ।
सावण भादू सूखसी, खेती मती कराय।।

आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को आकाश मे बादलो की गर्जना हो, बिजली चमके और जोर का वायु हो तो श्रावण, भाद्रपद मास मे वर्षा का अभाव रहेगा अत कृषि न करे।

(३)

धुर असाड पडवा दिवस, जे अम्बर गरजन्त।
छत्री छत्री जूझवै, निहचै काल पडन्त।।

आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को आकाश मे बादलों का गर्जना हो तो इस वर्ष राजाओ मे परस्पर युद्ध होगा, निश्चित अकाल पडेगा।

(४)

असाड बदी पडवा दिनों, घन चमकै तत्काल।
अनावृष्टि दो मास ह्वै, ऐसो समझो हाल ॥

आषाढ कृष्ण प्रतिपदा को आकाश मे बादल हो बिजली चमके तो आगामी दो मास तक वर्षा न होगी।

(५)

*पेली पडवा गाजै। तो दिन बहत्तर बाजै ॥

आषाढ मास की प्रथम प्रतिपदा को आकाश मे बादलो की गर्जना हो तो केवल इस लक्षण के आधार पर ही यह निश्चित समझें कि इस दिन से बहत्तर दिन तक हवा ही चलेगी और वर्षा न होगी।

(६)

कृष्ण असाडी प्रतिपदा, जे उत्तर गरजन्त।
घाघ केह्वे सुण भड्डुली, निश्चै काल पड़न्त ॥

आषाढ मास की कृष्ण प्रतिपदा को उत्तर दिशा में बादल गर्जे तो इस लक्षण को देख कर घाघ कवि भड्डुली को सम्बोधित कर कहता है कि इस वर्ष निश्चय ही अकाल पडेगा।

(७)

जेठ बीती पेल पडवा, वार शनी जे होय।
नीर न बरसै धरण पर, विरला जीवे कोय ॥

---

* इससे सम्बन्धित निम्न है —

पून्यूँ पडवा गाजै, तो दिन बहत्तर नाजै ॥

आषाढी पूर्णिमा एव प्रतिपदा को आकाश मे गर्जना हो तो ७२ दिन तक वर्षा नही होगी।

आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को शनिवार हो तो पृथ्वी पर वर्षा नही होगी। लोगो का जीवन सकट मे पड जावेगा।

(८)

*जेठ बीती पेल पडवा, जे अम्बर थरहरे।
असाड सावण काड कोरो, भादरवै विरखा करे॥

ज्येष्ठ मास की समाप्ति के बाद प्रथम दिन (आषाढ कृष्ण प्रतिपदा को) यदि आकाश मे बादलों की गर्जना हो तो समस्त आषाढ एव श्रावण ये दोनो महीने वर्षा न होकर भाद्रपद मे होगी।

(९)

गाज सुने तहँ करवरो जाण। दीखै बीज तहँ कुछ हाण॥

आषाढ कृष्णा प्रतिपदा को आकाश मे बादलो का गर्जन हो तो यह वर्ष साधारण होगा और इस दिन बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो कृषि को कुछ हानि होगी।

(१०)

धुर असाड दुतिया दिवस, चमक निरन्तर जोय।
सोमा-सुक्करा सुरगुरा, तो मेह घणेरो होय॥

आषाढ कृष्ण द्वितीया के दिन सोम, शुक्र, बृहस्पतिवार मे से कोई सा वार हो और इस दिन आकाश मे निरन्तर बिजली चमकती ही दिखाई दे तो इस वर्ष वर्षा अधिक होगी।

---

* इसका पाठान्तर :—

जेठ बीती पैल पडवा, जे अम्बर थरहरे।
असाड सावण जाय कोरो, भादरवै विरखा करे॥

(११)

‡धुर असाड दुतिया दिवस, निरमल चन्द उगन्त।
सोमा सुकरा सुरगुरा, जल थल एक करन्त॥

आषाढ कृष्णा द्वितीया की रात्रि को आकाश मे चन्द्रमा उदय हो और वह निर्मल दिखाई दे, साथ ही इस दिन सोम, शुक्र या गुरुवार मे से कोई सा वार हो तो वर्षा इतनी होगी कि जल-स्थल एक होगे।

(१२)

असाड बदी दुतिया दिवस, मूल नखत जे होय।
अति वृष्टि या अनवृष्टि सू, नाश धान को होय॥

आषाढ कृष्णा द्वितीया को मूल नक्षत्र हो तो इस वर्ष अति-वृष्टि किम्वा अनावृष्टि द्वारा बोये हुए अनाज का नाश हो जावेगा।

(१३)

पडवा बद असाड सू, तीज तलक लो जाण।
श्रवण धनिष्ठा होय तो, भेलो करलो धान॥

आषाढ कृष्ण प्रतिपदा से तृतीया तक इन तीनो दिनो मे श्रवण, धनिष्ठा मे से कोई सा नक्षत्र आ जाय तो, इस वर्ष अन्न का सग्रह कर लेना लाभदायक होगा।

(१४)

कृष्ण असाडी चौथ ने, जे आथमतो सूर।
बिन वरस्या ओ जाय तो, जल रो तोडो पूर॥

---

‡ इससे मिलती-जुलती निम्न है —

सोम सुकर गुरु साड मे, जो चन्दो उगन्त।
डवक कहै हे भड्डली, जल थल एक करन्त॥

आषाढ कृष्णा चतुर्थी को आकाश मे सूर्य उदय होकर अस्त हो जाय और इस समस्त दिन में वर्षा नही हो तो, इस वर्ष प्रजा को जल का कष्ट पूर्णरूप से रहेगा।

(१५)

कृष्ण असाडी चौथ ने, मेघाडम्बर जे होय।
तीन मास को बीच दे, विरखा आछी होय॥

आषाढ कृष्णा चतुर्थी को आकाश मे बादलो का घटाटोप छा जाय तो तीन मास तक वर्षा न हो कर बाद मे मेह बरसेगा।

(१६)

कृष्ण असाडी चौथ ने, धूहर छाँटा करै।
तो चौमासे विरखा घणी, समयो होय सिरै॥

आषाढ कृष्णा चतुर्थी को धूहर (कोहरा-सा) हो अथवा बूदा-बाँदी हो तो इस चातुर्मास मे अच्छी वर्षा होगी।

(१७)

आसाढ़ा वद पञ्चमी, नहिं बादल नहिं बीज।
करसा करसण मत करो, धरण न नाखो बीज॥

कृषको को सम्बोधन करते हुए कवि कहता है कि यदि आषाढ़ कृष्णा पञ्चमी को आकाश मे न बादल हो और न बिजली की चमक ही दिखाई दे, तो तुम्हे कृषि नही करनी चाहिये। उत्पादन की इच्छा से पृथ्वी पर बीज मत डालो।

(१८)

धुर असाढ़ा पञ्चमी, बादल होय न बीज।
बेचो गाड़ी बलदिया, निपजै काई न चीज॥

आषाढ कृष्णा पञ्चमी को आकाश मे बादल न हो, बिजली की चमक न हो तो कवि कृषक से कहता है कि इस वर्ष कुछ भी उत्पन्न

नहीं होगा, अतः अपने जीवन निर्वाहार्थ बैलो को बेच कर उदर-पूर्ति हेतु खाद्यान्न प्राप्त कर लो।

(१९)

असाड वदी छट के दिनां, शनिवार जे आवै।
गहुँ सू कोठो भर लेवो, दूणो लाभ दिरावै॥

आषाढ कृष्णा षष्ठि को शनिवार हो तो- गेहूँ सग्रह कर लेना चाहिए। इससे आगे चल कर दूना लाभ होगा।

(२०)

*धुर असाड को सत्तमी, जे शशि निरमल दीख।
पीव पधारो मालवे, मागत डोला भीख॥

कृषक पत्नी अपने पति से कहती है, आषाढ कृष्णा सप्तमी को आज चन्द्रमा निर्मल दिखाई दे रहा है अत हमे मालवे की ओर चले जाना चाहिए, जहाँ भीख माँग कर भी अपना जीवन टिका रख सकेंगे।

(२१)

‡धुर आसाडा अष्टमी, चन्द्र सेवरा छाय।
चार मास चवतो रेवै, जिउ भाडेरो राय॥

आषाढ कृष्णा अष्टमी की रात्रि मे चन्द्रमा बादलो मे ही रहे तो

इनके सम्बन्ध मे निम्न अन्य उक्तियें भी मिली हैं —

*धुर असाडरी अस्टमी, शशि जो निरमल दीख।
पीव चालस्या मालवै, माँगत फिरस्या भीख॥१॥
धुर आसाडरी सत्तमी, ससि निरमलियो दीख।
परजा सिंध सिधावसी, मागत फिरसी भीख॥२॥

दोहा २१ की टिप्पणी अगले पेज पर।

इस वर्षा काल मे (चारो महीनों मे) पानी इस प्रकार बरसता रहेगा, जिस प्रकार से किसी मिट्टी के बर्तन मे से टपकता रहता है।

(२२)

धुर असाडा अष्टमी, उत्तर बेह्वै समीर।
इन्द्र महोत्सव माधजी, सावण बरसै नीर॥
जै पूरब तो करबरो, जे दक्खिन तो काल।
समौज सखरौ नीपजै, बाजै पच्छिम वाल॥

माघजी को सबोधन करते हुए कवि कहता है कि, आषाढ कृष्णा अष्टमी को उत्तर का वायु बहे तो श्रावण महीने मे पानी बरसेगा। कदाचित यह वायु पूर्व की ओर का हुआ तो इस वर्ष जमाना (फसल-कृषि) साधारण ही होगा और दुर्भाग्य से दक्षिण दिशा का वायु बहा तो इस वर्ष अकाल ही पडेगा। किन्तु यही वायु पश्चिम दिशा का बहेगा तो इस वर्ष कृषि अच्छी होगी।

(२३)

धुर असाडे अस्टमी, चन्द्र बादला छाय।
चार मास वरसादना, जाणे मोटो राय॥

आषाढ कृष्णा अष्टमी की रात्रि मे चन्द्र बादलो मे छुपा ही रह जाय तो इस चातुर्मास की वर्षा का भविष्य प्रभु ही जानता है।

---

[१]आसाडे धुर अष्टमी, शशि सेहरे छायो।
चार मास नीझर झरै, जाणे भाडो रायो॥१॥
असाड माम आठम अँधियारी। जे निकलै चन्दो जलधारी॥
चन्दो निकलै बादल फोड। तीन मास दिन पनरा है विरखा रो जोर॥२

नोट —एक स्थान पर "साढ़े तीन मास बिरखारो जोर" आया है।

(२४)

*असाड धुर अष्टमी, चान्द ऊगतो जोय।
काला बादल करवरो, धौले होय सुगाल।
जे चन्दो निरमल हुवै, तो पडे अचिन्त्यो काल ॥

आषाढ कृष्णा अष्टमी की रात्रि को चन्द्रमा उदय हो उस समय उसकी ओर काले रङ्ग के बादल हो तो यह वर्ष साधारण सा ही व्यतीत होगा। यदि श्वेत वर्ण के हो तो वर्ष उत्तम रहेगा। कदाचित आकाश निर्मल ही प्रतीत हो तो उस वर्ष अचानक अकाल हो जावेगा।

(२५)

असाड अँधारी अष्टमी, सनी रेवती जोग।
बिरखारो अवरोध ह्वै, दुख पावै सहु लोग ॥

आषाढ कृष्णा अष्टमी के दिन शनिवार और रेवती नक्षत्र आ जाय तो इस योग के प्रभाव से उस वर्ष वर्षा का अवरोध हो जाने के कारण जनता को बहुत सकट का सामना करना पडेगा।

(२६)

कृष्ण असाडा अष्टमी, मेह गाज हो जाय।
तो चौमासे विरखा घणी, ऐसो जोग बणाय ॥

आसाढ कृष्णा अष्टमी को बादल गर्जना करे, वर्षा हो तो वर्षा काल में इन चार महीनो मे बहुत वर्षा होगी।

(२७)

वदी असाडा मायने, मूल नखत जद आवै।
ई दिन विरखा होयतो, फल इण भाँत बतावै ॥

---

*यह इस प्रकार से भी मिली है —
काला बादल करवरो, धोला करै सुगाल।
चन्दो ऊगो निरमलो, पडै अचिन्त्यो काल ॥

चार पाया ले मान तू, घडी साठ परमांण।
पेले पाये असाड वद, बीजै सुद पख जांण॥
तीजो वद सावण करै, चौथो सुद ओही बतावै।
पूरो दिन बरसिया, दो महीना खंच करावै॥

आषाढ कृष्ण पक्ष मे जब मूल नक्षत्र आवे इस दिन की साठ घडी मान कर इसके चार भाग कर लें और इन चार भाग मे के प्रत्येक भाग को एक पक्ष मान कर वर्षा का ज्ञान कर लें। प्रथम भाग मे इस दिन वर्षा हो जाय तो उसके परिणाम स्वरूप आषाढ कृष्ण पक्ष, दूसरे भाग मे वर्षा हो जाय तो आषाढ शुक्ल पक्ष तीसरे भाग मे हो तो श्रावण का कृष्ण पक्ष और चौथे भाग मे वर्षा हो जाय तो श्रावण शुक्ल पक्ष मे अनावृष्टि ही रहेगी। कदाचित् इस दिन समस्त दिन भर ही वर्षा होती रहे तो यह निश्चित है कि दो महीनो तक वर्षा का अभाव ही रहेगा।

(२८)

कृष्णा नवमी साड की, बादल बिजली होय।
सञ्चित अन ने बेच दो, करसण सारो होय॥

आषाढ कृष्णा नवमी को आकाश मे बादल हो, बिजली चमके तो सग्रह किये हुए समस्त अन्न को बेच दो। क्योंकि इस वर्ष कृषि उत्तम होगी।

(२९)

धुर असाडा बीजली, नौमे निरखी होय।
सोमे सुक्करे सुरगुरे, तो जल बन्धारण होय॥

आषाढ कृष्णा नवमी को सोम, गुरु या शुक्र वार मे से कोई-सा वार हो, इस दिन आकाश मे बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो वर्षा होने के चिह्न हैं।

(३०)

*असाड लागते मास मे, दसमी रोयरा थाय।
तो तट हूती भड्डुली, दूर करै घर जाय॥
अथवा ग्यारस होय तो, पडसी आधो काल।
जे कोई आवै बारसै, तो देस। पडै दुकाल॥
लोग खपै चौपद मरै, रस कस मूघा होय।
डक्क ऋषीश्वर इमि भरो, विरलो जीवै कोय॥
जं तेरस ने आ जाय तो, आछी बाजै वाय।
भूले चूकै चौदसा, राज युद्ध करवाय॥

आषाढ कृष्णा दशमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो इस वर्ष इतनी वर्षा होगी कि जिसकी कल्पना कर कवि, भड्डुली को सम्बोधन करते हुए कहता है कि नदी, सरोवर आदि के तट से दूर ही अपनी झोपडी बांधना। अन्यथा, बह जावोगे। यही रोहिणी एकादशी को आवै तो आधा अकाल होगा। यदि यह द्वादशी को आ जाय तो दूर-दूर तक भयंकर अकाल पडेगा। डक्क ऋषि कहते हैं कि इस वर्ष मनुष्य एव पशु आदि मर मिटेंगे और रस-कस आदि मँहगे हो जाने से विरले ही जीवित रहेंगे। कदाचित यह रोहिणी नक्षत्र त्रयोदशी को आ जाय तो वर्षा के स्थान पर बहुत प्रचण्ड वायु चलता रहेगा। दुर्भाग्यवश यह चतुर्दशी को आ जाय तो राजाओ मे परस्पर युद्ध होने से नर-संहार होगा।

(३१)

तेरस दिन जे रोयणी, एक घडी जो होय।
घणी आन्धिया चालसी, विरखा बून्द न होय॥

इसके सम्बन्ध मे निम्न उक्ति भी उपलब्ध हुई है।—

* धुर असाड दशमी दिवस, रोहरा नखतर होय।
सस्तो धान बिकावसी, हाथ न घाले कोय॥

आषाढ कृष्णा त्रयोदशी को रोहिणी नक्षत्र का होना, इस वर्ष बहुत आंधियो का आना और वर्षा का बिलकुल नही होना सूचित करता है ।

(३२)

जे आवै चौदसे, समौ करवरो जाण ।
छत्र भग हुइ राज को, निश्चै कर मन आण ।।

यदि यह रोहिणी नक्षत्र चतुर्दशी को आ जाय तो वर्ष साधारण होगा । किसी राजा की मृत्यु होगी ऐसा निश्चित है ।

(३३)

असाड वदी एकादशी, गाज वीज वलि वाय ।
म कर करसण सायबा, सावण भादू सुकाय ।।

आषाढ कृष्णा एकादशी को आकाश मे बादल, बिजली एव गर्जना हो, वायु चलता हो तो आगामी श्रावण, भाद्रपद मे वर्षा नही होगी । इसलिये खेती मत करो ।

(३४)

शनि रेवती अष्टमी, कृष्ण असाडी होय ।
अनावृष्टि का योग सू, कष्ट घणेरो होय ।।

आषाढ कृष्णा अष्टमी को शनिवार के साथ-साथ रेवती नक्षत्र हो तो इस वर्ष अनावृष्टि होगी और इसके कारण प्रजा को बहुत कष्ट होगा ।

(३५)

दसमी कृष्ण असाड की, मगल रोहण होय ।
सस्तो धान विकावसी, हाथ न घाले कोय ।।

आषाढ़ कृष्णा दशमी को मगलवार और रोहिणी नक्षत्र हो तो इस वर्ष अन्न इतना सस्ता होगा कि कोई छूएगा ही नही।

(३६)

† नवें असाडी बादली, जे गरजै घनघोर।
भड़ली भाखै जोश थी, काल तणू -घणा जोर॥

आषाढ कृष्णा नवमी को बादलो की गर्जना जोरो से हो तो जोशी (ज्योतिषी) से भड्डली कहता है कि इस वर्ष तो दुर्भिक्ष ही होगा।

(३७)

न गिन तीन सौ साठ दिन, ना कर लगन विचार।
गिण नवमी असाड वद, होय कोणसे वार॥
रवि अकाल,मगल जग डिगै,बुध समयो सम भाव स लगै॥
सोम सुक्र सुरगुरु जो होय। पुहुमी फूल फलन्ति जोय॥
दैव जोग जो शनि मिलै, निहचै रोरव होय॥

वर्ष के तीन सौ साठ दिन एव लग्नो की गिनती तथा इन पर विचार न कर, वर्ष के शुभाशुभ के लिये केवल यही देख लो कि, आषाढ कृष्णा नवमी को कौनसा वार है। इस दिन रविवार होने से अकाल होगा, मगलवार होने से ससार चल-विचल (डगमगा जायगा) होगा। इस दिन यदि सोमवार, शुक्र किम्वा गुरुवार मे से कोई सा वार आ

---

† इसके सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें इस प्रकार से भी मिली है —

१ नवें असाढी बादली, जो गरजै घनघोर।
कहहिं भड्डली जोयसी, काल पडै चहु ओर॥

२ नवै असाडी बादलो, जो गरजै घनघोर।
भद्रबाहु गुरु यू कहै, काल पडै चिहु ओर॥

जायगा तो पृथ्वी फलती-फूलती दीखेगी। इस दिन बुधवार होने से कृषि (उत्पादन) साधारण होगा। किन्तु, दुर्भाग्यवश इस दिन शनिवार हो गया तो रौरव नरक-सा कष्ट भोगना पडेगा।

(३८)

नक्षत्र और वायु से वर्षा-ज्ञान

कृष्ण असाडा रोहणी, वायु शुभ है सव्य।
अशुभ वायरो बो हुवै, जे होवे अपसव्य॥
आठ पो'र दिन रात रा, ए पख चौमासा माय।
पौरा पक्खा मान लो, अधघडी दिवस मनाय॥
जिण पो'रा शुभ वायरो, व्है उण पक्खा मेह।
वायु वल बलवान व्है, अशुभा मेह रो छेह॥

आषाढ कृष्ण पक्ष मे जिस दिन रोहिणी नक्षत्र हो उस दिन के वायु से वर्ष भर के शुभाशुभ फल देखें। इस दिन वायु सव्य (ईशान से पूर्व इस क्रम से) हो तो शुभ और अपसव्य (उत्तर से वायव्य, वायव्य से पश्चिम इस क्रम से) हो तो यह अशुभ होगा। एक अहोरात्रि (दिन-रात) मे आठ प्रहर होते हैं और वर्षा काल के चातुर्मास (चार महीनो) के भी आठ ही पक्ष होते हैं। अत जिस प्रहर मे जो वायु चले उसी क्रम से उस पक्ष पर उस वायु का प्रभाव समझें। इसे अत्यन्त सूक्ष्म-रूप से देखना हो तो आधी-आधी घडी से एक दिन का अनुमान लगाकर निश्चय कर लें। जिस प्रहर या जिस घडी में वायु बलवान हो उसी के अनुसार उसी पक्ष अथवा दिन पर भी इसका प्रभाव पडेगा। शुभ वायु, शुभ फल-दाता (उस पक्ष अथवा उस दिन मे वर्षा होना) और अशुभ वायु, अशुभ फल-दाता अर्थात अनावृष्टिकारक योग होगा।

(३६)

नक्षत्र एवं बादलों के रंगादि द्वारा वर्षा-ज्ञान

दही सरीखाऊजला, बुगला रजत समान।
काजल के भवरा जिसा, होवे रग समान॥
ताम्बो मजीठ सिन्दुर ज्यू, वा तोते पन्ने रग।
सोना जिसा पीवला, रेशम केरा ढग।
मोर पप्पैया डेडका, भाखर रूख समान।
बोहत बडा चिकरणा थका, कट्या न नीचे जाण।
इण वरणा आभो हुवै, धनुषबीज अरु गाज।
दो तीन वा एक दिन, फैले अभ्र समाज॥
इण लखरणा विरखा घरणी, सुभिक्ष जोग लो जोय।
परजा आनन्दित हो रेव्है घर घर मगल होय॥
प्रेत निसाचर वायसे, मरकट ऊट मजार।
रूक्ष अल्प ऊतावला, होवै बुरा आकार॥
गाज हीन प्रात घरणा, दिन मे टपके तोय।
अनावृष्टि दुर्भिक्ष अरु, अकल्याणकारी होय॥
पूरब वायु वादला, धान घरणेरो होय।
अग्नि कूरण अग्नि भय, दिक्खरण नाज न होय॥
नेऋत आधो अन्न व्है, पच्छम उत्तम मेह।
खण्ड वृष्टि हो वायवे, उत्तर आछो मेह॥
ईशारण कूरण को वायरो, करसरण खूब कराय।
धान घरणेरो नीपजे, ऐसो जोग बताय॥

आषाढ कृष्ण पक्ष मे रोहिणी नक्षत्र के दिन बादल दही, बगुला, किम्वा चान्दी के समान उज्वल, स्वेत, काजल के समान किम्वा भौंरे के समान कृष्ण-वर्ण के हो, ताम्बा, मजीठ तथा सिन्दूर के समान लाल,

तोते किम्वा पन्ने के समान अत्यन्त हरे, सुवर्ण के समान पीले एव रेशम के समान चमकीले, मोर, पपैया, मेढक, पहाड, वृक्ष आदि के आकार के बडे-बडे, नीचे से कटे हुए न हो ऐसे बादल आकाश में फैले हो, इन्द्र-धनुष, बिजली, मेघ-गर्जना, आदि एक, दो अथवा तीन दिन रहे तो इस वर्ष अत्यन्त वर्षा तथा सुभिक्ष होने के कारण, प्रजा आनन्दित होगी। इसके विपरीत प्रेत राक्षस, कौवे, बन्दर, ऊ ट, बिल्ली आदि बुरे आकार के, रूक्ष, अल्प शीघ्र चलने वाले, गर्जना रहित, प्रात काल तो अधिक किन्तु रात्रि मे नही, मध्याह्न मे इन बादलो से बू दाबादी हो तो यह वर्ष, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष एव अकल्याणकारी फल दायक होगा। बादल पूर्व के हो तो अन्न बहुत, अग्निकोण के हो तो इस वर्ष अग्नि भय, दक्षिण के हो तो अन्न-नाश, नैऋत्य के हो तो आधा अन्न-नाशकारक, पश्चिम के हो तो उत्तम वर्षा, वायव्य के हो तो कही-कही वायु के साथ वर्षा कारक, उत्तर के हो तो सुवृष्टि कारक एव ईशान कोण के बादल हो तो अन्न बहुत होगा, ऐसे योग बन जाते हैं।

रोहिणी, वायु द्वारा वर्षा ज्ञान

(४१)

पूर्व ईशान उत्तर, वायु रोहिणी ना होय।
छाटा छिडको तक नही, दुरभिक्ख लैसो जोय॥

आषाढ मे रोहिणी नक्षत्र के दिन पूर्व-ईशान, उत्तर मे से इस क्रम से इनमे से किसी भी दिशा का वायु न हो और इस दिन लेश मात्र भी वर्षा न हो तो इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा।

(४२)

सूरज तपै जे मोकलो, दिन मे आभो स्वच्छ।
तारा झलेरा टिमटिमे, निरमल रात सुभिच्छ॥

आषाढ मे रोहिणी नक्षत्र को दिन मे सूर्य खूब तपे, आकाश

बिना बादलो के स्वच्छ हो तथा रात्रि निर्मल हो और तारे स्वच्छ टिम-टिमाते हुए दिखाई देते रहे तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा।

(४३)

आसाडी मावस दिन जोई। आदरा पुनर्वसु रिछ जे होई॥
काल सुकाल हि समता भाऊ। ना लेवो ना बेचो राऊ॥

आषाढ कृष्णा अमावस्या को आर्द्रा, पुनर्वसु इन नक्षत्रो मे से कोई सा भी नक्षत्र हो तो इस वर्ष किसी भी वस्तु को न तो खरीदना ही चाहिये और न बेचना ही। क्योकि, यह वर्ष साधारण सा ही रहेगा।

(४४)

आसाडी मावस दिना, चन्द्रवार जे होय।
मिरगा मू गिण सात तक, समयो आछो होय॥

आषाढी अमावस्या को सोमवार हो और इस दिन मृगशिरा नक्षत्र से पूर्वाफाल्गुणी तक के इन सात नक्षत्रो मे से कोई एक आ जाय तो इस वर्ष, कृषि उत्पादन अच्छा होगा।

(४५)

जे सुद जेठ बरसतो आवै। घुर आसाडा झडी लगावै॥
तदपि पडवा को जोय। जह वर्षे तह तृण नहि होय॥

यद्यपि ज्येष्ठ शुक्ला से मेह बरसता आ रहा है तो वह आषाढ कृष्ण पक्ष में भी वर्षा की झडी लगा देता है। फिर भी यदि आषाढ कृष्ण प्रतिपदा के दोषो को (जो इस मास के प्रारम्भ मे लिखे हैं) देखो। यदि वे हैं, तो इनके प्रभाव से जहाँ-जहाँ वर्षा है वहाँ वहाँ घास भी नहीं होगी।

(४६)

जे असाड के मायने, जी दिन बरसै मेह।
सावण भादू ब्या दिना, अवसै मेह करेह॥

ज्येष्ठ मास तथा आषाढ मास के जिन जिन दिनो मे वर्षा होगी आगे चलकर प्रायः उन्ही उन्ही दिनो मे श्रावण तथा भाद्रपद मास मे वर्षा हो जाया करती ही है ।

प्रथम वृष्टि के वार से वर्षा योग का ज्ञान

(४७)

जेठ असाढ जी मास मे, पहली विरखा आय ।
रवीवार जे होय तो, काल पडेलो आय ॥
सोम सुभिक्ष बुध रोग ह्वै, मङ्गल वाजै वाय ।
अगन भय पण होवसी, ऐसो जोग बणाय ॥
गरूवार है भलौ, पण बालक पीडा ;बतावै ।
वार सुक्र जे होय तो, मेह घणेरो आवै ॥
भूले 'चूके ई दिना, वार सनी जे आय ।
अनावृष्टि दुरभिक्ख ह्वै, ऐसो जोग बणाय ॥

जब प्रथम ही प्रथम वर्षा ज्येष्ठ-आषाढ मे हो उस दिन जो वार हो उस पर ध्यान करो । उस दिन रविवार होगा तो उस वर्ष दुर्भिक्ष होगा । सोमवार होने पर वायु का जोर रहेगा साथ ही अग्नि-भय भी रहेगा । बुधवार रोग, गुरुवार होने पर सुभिक्ष तो होगा ही किन्तु शिशुओ मे रोग-पीडा कारक होगा, शुक्रवार उत्तम है, इसके होने से उस वर्ष वर्षा बहुत होगी । यदि दुर्भाग्य से इस दिन शनिवार आगया तो इसके फलस्वरूप अनावृष्टि, एव दुर्भिक्ष होने के कारण प्रजा सकटग्रस्त ही रहेगी ।

श्रावण-मास शुक्ल पक्ष

(१)

सावण तो सूतो भलो, ऊभो भलो असाड ॥

चन्द्रोदय (शुक्ल पक्ष की द्वितिया को उदय होता हुआ चन्द्र) श्रावण मे सोया हुआ सा, और आषाढ़ मे खड़ा चन्द्रमा, वर्ष भर के लिये शुभ होता है।

(२)

सावण सुद की चौथ दिन, पूर्वा फाल्गुणी जो आय।
बिरखा इण दिन होय तो, धान घणेरो थाय ॥

श्रावण शुक्ला चतुर्थी को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा आ जाय तो, अन्न का उत्पादन बहुत होगा।

(३)

सावण सुदी पञ्चमी, जोरा चालै वाय।
भडली कहै देशे घण , गौ पक्षी नसवाय॥

श्रावण शुक्ला पञ्चमी को जोर से वायु चले तो इस वर्ष, गौ-धन एव पक्षियो का नाश होगा।

(४)

पाचम छठ सावण सुदी, दिक्खण पच्छम वाय।
जे विरखा हो जाय तो, धान नाश कर जाय ॥

श्रावण शुक्ला पञ्चमी, षष्ठि को दक्षिण पश्चिम का वायु हो तो इस वर्ष अन्न का नाश होगा। परिणाम स्वरूप दुर्भिक्ष होगा।

(५)

सावण शुक्ला सप्तमी, जे गरजै अधरात।
बरसै तो सूखो पडै, नहि तो समो सुकाल ॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को मध्य-रात्रि में बादलो की गर्जना हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। किन्तु, इस समय वर्षा हो गई तो अकाल पडेगा।

(६)

‡ सावण शुक्ला सप्तमी, जे बरसै अधरात।
हम पिव जइहैं मायके, तुम जावो गुजरात॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को मध्य रात्रि मे वर्षा हो तो अपने पति को सम्बोधन करते हुए कृषक पत्नी कहती है कि, मैं तो अपने माय के (माता-पिता के यहाँ) चली जाऊँगी और आप जीवन निर्वाहार्थ गुजरात की ओर पधार जावे।

(७)

❋ सावण सुद री सत्तमी, स्वाती ऊगे सूर।
रिखीवरा डूगर चढो, नदी बहै भरपूर॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को स्वाति नक्षत्र में सूर्य उदय हो तो इतनी वर्षा होगी कि, नदी-नाले भरपूर बहेगे।

---

‡ इसकी दूसरी लाइन का पाठान्तर इस भाँति मिले हैं—
तुम जावो पिय मालवै, हूँ जाऊ गुजरात॥
थे जावो पिव मालवा, म्हैं जावा गुजरात॥
तुम पिय जावो मालवा, हम जावें गुजरात॥

❋ इससे मिलती हुई निम्न उक्तियें भी मिली हैं—
सावण सुद री सत्तमी, स्वाती उगे सूर।
डूगर करजो भू पडा, नहिं तो घरवहशै पूर॥
सावण सुदरी सत्तमी, स्वाती ऊगे सूर।
डूगर बान्धो घर भू पडा, पादर आवै पूर॥

(८)

* सावण शुक्ला सत्तमी, जे ऊगत दीखै भान।
(तो) पाणी मिलसी कूप मे, क गङ्गा असथान ॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को उदय होता हुआ सूर्य दिखाई दे (इस समय आकाश में बादलो के कारण सूर्य छुपा हुआ न रहे) तो इस वर्ष जल का अभाव रहेगा। यह या तो कुओ मे मिलेगा या गङ्गा-स्थान (गगा नदी) में मिलेगा।

(९)

❀ सावण शुक्ला सप्तमी, छुप कर ऊगै भाण।
तब तक मेघा बरससी, जब आवे देव उठाण ॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को उदय होता हुआ सूर्य बादलो में छुपा रह कर निकले तो इस वर्ष देवउठनी एकादशी न आ जावे तब तक वर्षा होगी।

---

* इससे मिलती हुई—

सावण शुक्ला सप्तमी, उभरै निकले भान।
मैं जाऊ पिय मायके, थे जावो गुजरात ॥
सावण शुक्ला सप्तमी, ठह ठह रैनि करन्त।
की जल भैंटिये गङ्ग तट, की तिय कूप भरन्त ॥
सावण शुक्ला सप्तमी, लकुदय ऊगे सूर।
हल बलदिया दूरा राखो, विरखा गई है दूर ॥
सावण शुक्ला सप्तमी, उभरे निकले भान।
हम जायें पिय माइके, तुम करलो गुजरात ॥

❀ इससे मिलती हुई—

सावण शुक्ला सप्तमी, ऊगत न दीखै भान।
तब तक मेघा बरससी, जब लग देवउठान ॥

(१०)

सावण शुक्ला सत्तमी, गगन स्वच्छ जे होय।
कहे 'घाघ' सुन 'भड्डरी', पुहमी खेती होय॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को आकाश बादल रहित (स्वच्छ) दिखाई दे तो इस लक्षण को देख कर घाघ नामक पण्डित, भड्डरी से कहते हैं कि इस वर्ष खेती नहीं होगी अर्थात् अकाल पडेगा।

(११)

सावण शुक्ला सत्तमी, रैण होय मसियारी।
कहै 'डक्क' सुण 'भाण्डरी', परबत उपजै सारी॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को चन्द्रमा दिखाई नही दे तो डक्क, भाण्डरी (भड्डरी) से कहते हैं कि इस लक्षण से यह प्रतीत होता है कि यदि पर्वत पर भी बो दिया जावे तो भी इस वर्ष उत्पन्न हो जावेगा। अर्थात् फसल अच्छी होगी।

(१२)

सावण शुक्ला सप्तमी, बीज बादला होय।
करसण होसी मोकलो, सोच करो मत कोय॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को बादल हो, आकाश में बिजली चमके तो इस लक्षण से कृषि अच्छी होने की सूचना है।

(१३)

सावण शुक्ला सप्तमी, रिमझिम बरसै मेह।
तो यू जाणो सायबा, आछी साख करेह॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन रिमझिम करता हुआ मेह हो तो कृषक पत्नी अपने पति से कहती है कि, इस लक्षण से इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी।

(१४)

सावण शुक्ला सप्तमी, निरमल चाद उगन्त।
कै जल मिलसी समन्दरा में, कै कामणि कूप भरन्त॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को आकाश में चन्द्रमा स्वच्छ दिखाई दे तो समझ ले कि वर्षा गई। जल के दर्शन या तो समुद्र में होगे या स्त्रियो कूओ पर से लावेगी तब होंगे।

(१५)

सावण शुक्ला सप्तमी, जे बरसै घरराय।
तो यू जाणो सायबा, आछी साख कराय॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को आकाश में जोरदार गर्जना के साथ वर्षा हो तो इस लक्षण से कृषि अच्छी होगी।

(१६)

सावण शुक्ला सप्तमी, सूर्य अस्त के बाद।
आभे बादल ना वायरो, मेह करो मत याद॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को सूर्यास्त के बाद आकाश मे बादल न हो और वायु चले तो इस वर्ष, वर्षा को याद करना व्यर्थ है। अर्थात् वर्षा नही आवेगी।

(१७)

सावण शुक्ला सप्तमी, चन्दा छिटक करै।
कै जल दीखे कूप मे, कै कामणि शीश धरै॥

श्रावण शुक्ला सप्तमी को आकाश स्वच्छ हो, चाँदनी अच्छी तरह हो तो इस वर्ष जल नही बरसेगा, यह या तो कूओ मे दीखेगा या वहाँ से घडे भर कर घर को लाती हुई महिलाओ के शिर पर ही दीखेगा।

(१८)

सावण सुद सातम दिना, हस्त नखत लो जोय ।
सोमवार जे आय तो, दुरभिक्ष निहचै हो ।।

श्रावण शुक्ला सप्तमी को हस्त नक्षत्र और सोमवार हो तो इस वर्ष, निश्चित ही दुर्भिक्ष होगा ।

(१९)

* सावण शुक्ला सप्तमी, ह्वै स्वाती नो सजोग ।
बौहलौ नीर ने अन्न घणौ, भड पाया सजोग ।।

श्रावण शुक्ला सप्तमी को स्वाति नक्षत्र हो तो इस वर्ष, वर्षा बहुत होगी । अन्न अत्यधिक उत्पन्न होगा । ऐसा योग भाग्य से ही आता है ।

(२०)

‡ चित्रा स्वादि विशाखडी, श्रावण नव वरसन्त ।
धान तुरन्त सग्रह करौ, बमणौ मौल करन्त ।।

श्रावण महीने मे चित्रा, स्वाति, विशाखा इन नक्षत्रो मे वर्षा न हो तो इस वर्ष अन्न का उत्पादन कम होगा या होगा ही नही ।

इस सम्बन्ध मे निम्न —

* श्रावण शुक्ला सप्तमी, स्वाती नो जो योग ।
हुवै नीर अरु अन्न बहु, भल पायो सजोग ।।

इस सम्बन्ध मे निम्न —

‡ चित्रा स्वाती विशाखडी, श्रावण नव वरसन्त ।
अन्न तुरन्त सहु सग्रहो, बमणु मूल करन्त ।।

अत अन्न संग्रह कर लेना चाहिये। अन्यथा यह, दूने मूल्य पर प्राप्त होगा।

(२१)

श्रावण रोहिणी कोरी जावै। आगे होकर काल बुलावै।

श्रावण मास मे रोहिणी नक्षत्र के दिन वर्षा न होना, इस वर्ष दुर्भिक्ष को आमन्त्रित करना है।

(२२)

सावण महीने रोहिणी, जे विरखा हो जाय।
तो काती सुद ग्यारसै, चोखी विरखा आय॥

श्रावण मास मे रोहिणी नक्षत्र मे वर्षा हो जाय तो कार्तिक शुक्ला एकादशी को अच्छी वर्षा होगी।

(२३)

सावण सुद की अष्टमी, प्रात काल के माय।
सूरज बादल मे ढक्यो, मेह घणेरो लाय॥

श्रावण शुक्ला अष्टमी को प्रात कालीन सूर्य बादलो में ही ढंका रहे तो इस वर्ष बहुत वर्षा होगी।

(२४)

*जीवोदय भृगु अस्त जो, होय श्रावणे मास।
अनावृष्टि दुरभिच्छ सू, करे प्रजा ने त्रास॥

इससे सम्बन्धित निम्न है —

* बुध शुक्र जे देऊ गमण, जे ह्वै सावण मास।
तो जाणीजे भड्डली, मिले न तिण में छास॥

श्रावण महीने में शुक्र का अस्त होना और बुध का उदय होना इस वर्ष अनावृष्टि एवं दुर्भिक्ष का द्योतक है। अत इस वर्ष प्रजा को कष्ट उठाना होगा।

(२५)

शुक्कर तारो आब मे, सावण में नहिं दरसाय।
तो जाणोजो साथबा, काल पडेलो आय ॥

श्रावण मास मे आकाश मे शुक्र का तारा नही दिखाई दे तो इस लक्षण मे इस वर्ष अकाल पडने की सूचना मिलती है।

(२६)

सावण सूनो पूनम विधान।
रिच्छ श्रवण ह्वै उण दिन निधान ॥
कमती छाटा करै सुगाल।
बेसी छाटां वरसिया मध्यम के दुकाल ॥

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र हो इस दिन कम बूंदाबादी हो तो सुभिक्ष, अधिक से वर्ष मध्यम एवं वर्षा से दुर्भिक्ष होगा।

(२७)

सावण सुद पून्यूं की संझ्या, उदय होवतो चन्द।
वादल सू ढकियो मिलिया, पुहँमी होय आनन्द ॥

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के सायकाल को उदय होता हुआ चन्द्रमा बादलो से ढका रहे तो इस वर्ष प्रजा आनन्दित रहेगी। अर्थात् पर्याप्त वर्षा होने से कृषि उत्पादन बहुत होगा।

(२८)

राखी पून्यूं के दिनां श्रवण रिच्छ जे होय ।
विरखा आछी होवसी, धान घणेरो होय ॥

श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र के होने से इस वर्ष, वर्षा एव अन्न बहुत होंगे ।

(२९)

सावण की सिक्रांत ने ह्वै विरखा को जोग ।
तो धान घणेरो होवसी, प्रजा भोगसी भोग ॥

श्रावण मास की सक्रान्ति को वर्षा हो जाने से इस वर्ष अन्न तो बहुत होगा किंतु प्रजा मे रोग फैलने से अन्न की हानि होगी ।

(३०)

पाच शनि दुर्भिक्ष हो, सावण महीने जाण ।
गुरु पाच हो जाय तो, होवे विरखा ताण ॥

श्रावण महीने मे पाच शनिवार दुर्भिक्ष कारक एव पाच गुरुवार वर्षा की कमी कारक माने गये हैं ।

(३१)

सावण सुद के मायने, शुक्र सिंह को होय ।
कं तो विरखा ह्वै नही, ह्वै तो घणेरी होय ॥

श्रावण शुक्ल पक्ष मे सिंह का शुक्र हो तो या तो वर्षा होगी ही नही और यदि हो गई तो बहुत ही होगी । साथ ही कार्तिक मास मे रोग फैल जावेगा ।

(३२)

सावण कृष्ण पक्ष में देखो । तुल को मगल होय विशेखो ।
कर्क राशि मे गुरु आवै । सिंह राशि पर शुक्र सुहावै ॥

(३२)

सावण कृष्ण पक्ष मे देखो । तुल को मगल होय विशेखो ॥
कर्क राशि मे गुरु आवें । सिह राशि पर शुक्र सुहावे ॥
ताल जो सोखे बरसै धूर । कठेई न उपजै सातू तूर ॥
सावण ऊजल पक्ष मे, जे ए सब दरसाय ।
दण्ड होय छत्री लडै, भिडै पृथ्वीपति राय ॥

श्रावण कृष्ण पक्ष मे मगल तुला राशि पर, गुरु कर्क राशि पर, शुक्र सिह राशि पर आ जाय तो इस वर्ष भरे हुए तालाव—सरोवर सूख जावेंगे, आँधिये आवेगी (मिट्टी बरसेगी), और कही भी किसी प्रकार का अन्न उत्पन्न नही होगा ।

कदाचित ये योग श्रावण शुक्ल पक्ष मे आ जाय तो राजाओ मे परस्पर युद्ध होगे ।

(३३)

‡ कर्कज भीजै काकरो, सिह अभीनो जाय ।
तो तुम जाणो चतुर नर, कीडी फिरकिर खाय ॥

सूर्य कर्क राशि पर हो उस समय इतनी कम वर्षा हो कि केवल ककर ही भीगे और सिह राशि पर सूर्य आवे तब वर्षा हो ही नही तो कृषि उत्पादन असम्भव है । इस वर्ष चिउटिये भी मिट्टी खा कर निर्वाह करेगी ।

---

‡ इससे सम्बन्धित निम्न भी है —

कर्कज भीजै काकरी, सिह अभीनो जाय ।
तो भाखै यू भड्डरी, टीडी फिर फिर खाय ॥
कर्कज भीजै काकरी, सिह अभीनो जाय ।
भडली तो एमज भणै, कीडी फिरफिर खाय ॥
कर्कज भीजै काकरी, सिह अभीनो जाय ।
ऐसो बोलै भड्डली, कीडी फिर फिर खाय ॥

(३४)

सावण सुद दसमी दिना, बार शनीचर होय।
सिंह सक्राति लागिया, मेह घणेरो होय ॥

श्रावण शुक्ला दशमी को शनिवार हो और इस दिन सिंह की सक्रान्ति लगे तो इस वर्ष वर्षा बहुत होगी।

(३५)

नाडा टाकण बलद बिकावण, मत बाजे तू आधे सावण ॥

कृषक, वायु से कहता है कि हे दक्षिण-पूर्वी वायु ! तू आधे श्रावण मे मत बहना, यदि तुम्हारे द्वारा ऐसा हो गया (वायु चलने लग गया) तो इस वर्ष अकाल हो जावेगा और मुझे अपने बैल बेच देने पड़े गे।

(३६)

+ सावण मास व्हैवै परवाई
(तो) बेचौ बलद अर मोलावो गाई।

श्रावण मास मे पूर्व दिशा का वायु हो तो वर्षा नही होगी। अत बैलो को बेच कर जीवन निर्वाहार्थ गाय खरीद लेना हितकर होता है।

(३७)

सावण पूरब आन्धी आवै। कूरा मडवा ने उपजावै ॥
बीजो नाज मिलै नहिं जोय। फल इण रो इण विध होय ॥

श्रावण मास मे पूर्व दिशा मे जोरदार वायु हो तो कूरा मडवा आदि ही उत्पन्न होगे। अन्न मिलना कठिन है। इस लक्षण का यही फल होगा।

+ सावण मास चालै परवाई। बलद देयने ले ले गाई ॥

(३८)

कुरज उडी कुरलाय, मकडी जालो मेलियो ।
माघा मेह न थाय, दस दिन पवन झकोयले ।।

कुरज नामक पक्षी अपने निवास स्थान (ताल-तलैया) को छोडते समय विलाप (दु खपूर्ण वाणी द्वारा क्रन्दन) करते हुए अन्यत्र जाते हुए दिखाई दे, मकडियें अपने जाल बनाना प्रारम्भ करदे तो इन लक्षणो को देखकर कवि कहता है, हे माघ ! अब वर्षा नहीं होगी और दस दिन तक वायु ही चलेगा ।

(३९)

× सावण महीना मांयने, गरमी जी अकुलाय ।
भादवडे ठण्डक हुया, लावे मेह बुलाय ।।

श्रावण महीने मे गरमी बहुत होने के कारण चित्त व्याकुल होता हो, भाद्रपद मे, ठण्डक मालूम हो तो वर्षा शीघ्र आवेगी ।

(४०)

— सावण री पछिवा दिन दो चार ।
तो विरखा व्है अपरम्पार ।।

× इसके विपरीत —

सावण भादरवै पडे, जे वो तडकोह ।
औ सो कै वदतो वरे तौ एवो दडकोह ।।

श्रावण एव भाद्रपद मास मे हलकी या तेज जैसी धूप पडती है वैसी ही मेह की झडी लगती है ।

सावन उष्मे भादो जाड । बरखा मारे ठाढ कछाड ।।

— इससे सम्बन्धित —

आथूणी दिस रो वायरो, सावण महिना मांय ।
दोय च्यार दिन व्हैजाय तो, धान घणोरो थाय ।।

श्रावण महीने मे दो चार दिन भी पश्चिम का वायु बहे तो अत्यन्त वर्षा होगी और अन्न बहुत उत्पन्न होगा।

(४१)

— सावण पछिवा भादू पुरवा, आसौजा ईसान।
कातिक कन्था सीक न डोलै, राजी सभी किसान॥

श्रावण मास मे पश्चिम दिशा की, भाद्रपद मे पूर्व दिशा की, आसोज मे ईशान की वायु बहे तो पत्नि अपने पति से कहती है कि कार्तिक मे एक सीक भी नहीं हिलेगी। अर्थात् वायु नही चलेगी और किसान-वर्ग प्रसन्न होगा।

(४२)

सावण ऊखमे, भादू ठण्ड (तो) बिरखा व्है परचण्ड॥

श्रावण मास मे गरमी प्रतीत हो और भाद्रपद मे सरदी, तो इस लक्षण को वर्षा अधिक होने की सूचना समझो।

(४३)

सावण बाजै पूरबी, भादू पच्छम वाय।
बलदिया सारा बेच कर, टाबर लेवौ जिवाय॥

श्रावण मास मे पूर्व दिशा का वायु हो, भाद्रपद मे पश्चिम दिशा का वायु हो तो पत्नि इस लक्षण पर से अपने पति से कहती है कि इस वर्ष, वर्षा कम होगी। अत बच्चो की जीवन रक्षार्थ बैलो को बेच कर अन्न सग्रह कर लो।

— इस सम्बन्ध मे निम्न —

कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय, कहाँ के रख बहु धान॥
कार्तिक कन्ता सीक न डोले, गाजै सबै किसान॥

(४४)

सावण पछवा वेसे दिन चार । तो चूल्हा लारै पण निपजै सार ।
बरसै रिमझिम निशदिन वारी । कहगया पण्डत वचन उचारी ॥

श्रावण महीने मे चार दिन भी यदि पश्चिम का वायु बह जावे तो रात-दिन वर्षा बरसने का योग है । इसके प्रभाव से भोजन बनाते समय अन्न के कण यदि चूल्हे के पीछे गिर गये होंगे तो वे, वहा पर भी उग आवेंगे ।

(४५)

सावण पूरब भादू पच्छम, आसौजा नेऋत ।
काती मे जो सीक न डोले, नहि उपजे निश्चित ॥

श्रावण मास मे पूर्व का, भाद्रपद मे पश्चिम का, आश्विन मे नैऋत्य का वायु हो और कार्तिक मे वायु नही चले अर्थात् एक भी सीक नही हिले तो इन लक्षणो से निश्चित है कि, इस वर्ष अन्न उत्पादन नही होगा ।

(४६)

सावण भादरवे वरो, मे ने भरे नवाण ।
तो भर ओनारा मये, हूका हूका पाण ॥

श्रावण भाद्रपद मे वर्षा होकर यदि निर्वाण (जलाशय) न भरे गये तो यह निश्चित है कि, ग्रीष्म-काल मे उनमे जल के स्थान पर केवल सूखे पत्थर ही दृष्टिगत होगे ।

(४७)

सुद सावण की चौथ ने देख उगन्तो भान ।
नहि दीखिया भडुली, पुक्ख न बरसता जाण ॥

श्रावण शुक्ला चतुर्थी के उदय होते हुए सूर्य को देखे। इस दिन यह बादलो मे ढका हुआ रहे और उस समय नहीं दिखाई दे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि सूर्य जब पुष्य नक्षत्र पर आवेगा तब उन दिनों मे वर्षा नहीं होगी।

(४८)

सावण महिना मायने, गाज बीज ने देख।
जे ए इधका हुवै तो, बिरखा होय विसेख।

श्रावण मास मे यदि आकाश मे बादलो का गरजना, बिजली चमकना अधिक मात्रा मे होता हुआ दिखाई दे तो यह शुभ लक्षण है। इस लक्षण से उस वर्ष सुभिक्ष एव सुवृष्टि होगी।

श्रावण–मास कृष्णपक्ष

(१)

सावण लगता प्रथम दिन, ऊगत न दीखे भाण।
चार महीना बरसे पाणी, इण रो है परमाण॥

श्रावण कृष्णा प्रतिपदा को सूर्योदय के समय, बादलो के कारण सूर्य के दर्शन न हो तो यह निश्चित है कि चार महीनो तक वर्षा होती रहेगी।

(२)

सावण वदी चौथ ने, बादल दिन रा हुये।
जे बिरखा हो जाय तो, आछो समयो हुवे॥

श्रावण कृष्णा चतुर्थी को दिन रात आकाश मे बादल छाये रहे और वर्षा हो जाय तो इस वर्ष, कृषि उत्पादन (फसल) उत्तम होगा।

(३)

सावण वदी चौथ ने रात्यू बरसे मेह।
तो मास दोय तक जल बरसासी मेह॥

श्रावण कृष्णा चतुर्थी को रात्रि मे वर्षा हो तो दो मास तक वर्षा होगी।

(४)

— सावण पैली चौथ दिन, जे मेहा बरसाय।
तो भाखै यूं भड्डुरी, साख सवाई थाय॥

श्रावण कृष्णा चतुर्थी को वर्षा हो जाय तो भड्डुरी कहते हैं कि इस वर्ष, कृषि उत्पादन सवाया होगा।

(५)

+ धुर सावण दिन चौथ ने, बादल घणा करेह।
पौर अठारे मझ घण, जल थल एक करेह॥

श्रावण कृष्णा चतुर्थी को आकाश मे बादल हो तो अठारह प्रहर मे ऐसी वर्षा होगी कि जल-स्थल एक हो जावेंगे।

(६)

* श्रावण वदी चौथ ने, पूर्वा भाद्रपद होय।
मेह हुया मेह बरससी, नहि तौ ऊभा जोय॥

× इसके विपरीत —

सावण बदी चौथ दिन, निरमल होय अकाश।
तऊ अठारे याम मे, जलधर करै विकाश॥

— इसके समर्थन मे —

श्रावण पैली चौथ ने, जै मेघा बरसाय।
श्री सद्गुरु के वचन सू, साख सवाई थाय॥

* इसके समर्थन मे —

पूर्वाभाद्रपद रिखडी, सावण वद मा आय।
जै आवै दिन चौथ ने, बरस्या बिरखा थाय॥

श्रावण कृष्णा चतुर्थी को पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा हो तो वर्षाकाल मे वर्षा होगी । यदि इस दिन वर्षा नही हुई तो खडे-खडे प्रतीक्षा ही करते रहेगे ।

(७)

+ सावण धुर दिन चौथ के, अर पाचम लीजै जोय ।
गाजै बरसै घमघमें, सही जमानो होय ।।

श्रावण कृष्णा चतुर्थी एव पचमी को दिन मे बादलो की गर्जना हो, घमासान मेह बरसै तो कृषि उत्पादन अच्छा होगा ।

(८)

— सावण वदी चौथ दिन, उगत भाण ना दीस ।
भडली इम बोले सुणो, बरसै दिन चालीस ।।

श्रावण कृष्णा चतुर्थी को सूर्योदय के समय बादलो के कारण सूर्य दिखाई न दे तो भड्डरी कहते है कि चालीस दिनो तक वर्षा होगी ।

× इससे मिलती हुई निम्न है —

श्रावण कृष्णा चतुर्थी, और पचमी जोय ।
गाजै बरसै दमदमे, तो सही जमानो होय ।।
श्रावण कृष्णा चतुरथी, माघ पचमी जोय ।
गाजै बरसै दमदमै, तौ सही जमानौ होय ।।

— इससे मिलती हुई —

सावण वद चौथ सम्भार । चढै जु रवि बादल मझार ।।
तौ पैंतालीस दिन लौ मेह । बरसै नित न आवै छेह ।।
इससे मिलती हुई पर पृष्ठाङ्कित हैं—

(९)

सावण चौथ'र पचमी, बीज गाज नहिं मेह।
निहचै दुरभिख होवसी, पावस उडसी खेह ॥

श्रावण कृष्णा चतुर्थी एव पचमी को आकाश मे बादल, बिजली गर्जना एव मेह न हो तो यह निश्चित है कि इस वर्ष दुर्भिक्ष होगा और पावम (वर्षा-ऋतु) मे आँधिया आवेंगी (मिट्टी उडेगी ।)

(१०)

सावण पेली पचमी, जे धडूकै मेव।
च्यार मास बरसै सही, सत भाखै सहदेव ॥

सहदेव नामक कवि कहते है कि यह सही समझो कि श्रावण कृष्णा पचमी को आकाश मे बादलो की गर्जना हो तो वर्षा काल मे चारो महीने मेह बरसता रहेगा।

(११)

मावण वद की पचमी, अरघ निशा लो भाल।
जे बादल गरजै नही, तो पडसी जग मे काल ॥

श्रावण कृष्णा पचमी की मध्य-रात्रि मे यदि बादलो की गरजना न हो तो इस वर्ष अकाल ही होगा।

(१२)

— मावण पेली पचमी, मेह न माडे आल।
पीव पधारो मालवे, म्है जासा मोसाल ॥

इससे मिलती हुई निम्न उक्तियाँ हैं—

— सावण पेली पचमी जौ न घड्के व्याल।
तू पिव जावो मालवे हू जाऊ मोसल ॥
सावण पहला चार दी, मेघ न माडे राह।
पीयु पधारो मालुवे अमे जशु मोशाल ॥

धुर सावण की पचमी, बीज गाज नहिं मेह।
क्यू हल जोतै बावला, निहचै उडसी खेह ॥

इमसे मिलती हुई —

सावण पहली पचमी जै दडूके मेह।
चार मास बरसै सही, भाखै सद्गुरुदेव ॥

श्रावण कृष्णा पचमी तक वर्षा प्रारम्भ न हो तो कृषक पत्नी अपने पति से कहती है कि, इस वर्ष कृषि-उत्पादन कैसे होगा। इसलिए जीवन निर्वाहार्थ आप तो मालवे की ओर पधार जावें और मैं अपने मायके चली जाऊंगी।

(१३)

+ सावण पेली पचमी, जोरा चलै बयार।
थे जावो पिव मालवे, म्है जाऊ मौसाल ॥

श्रावण कृष्णा पचमी को जोर की वायु देख कर कृषक-पत्नी अपने पति से कहती है कि, वर्षा का कोई ठिकाना नही। अत जीवन-निर्वाहार्थ आप मालवे की ओर पधार जावे और मैं अपने पिता के यहाँ चली जाऊ।

(१४)

सावण पेला पचमी, झीणी छाट पडै।
डक कहे हे भड्डुली, सफला रूख फलै ॥

श्रावण कृष्णा पचमी को छोटी-छोटी बूंदें गिरे तो डक, भड्डुली से कहते हैं कि, इस वर्ष फल वाले समस्त वृक्ष-फूलेंगे और फलेंगे।

(१५)

× सावण पेली पचमी, आभौ निरमल होय।
पौर अठारा मायने, विरखा आई जोय ॥

+ इसमे पाठान्तर —थें जावो पिव मालवे, म्है जाऊ पितुसार ॥

सावण पहली पचमी, जे चालै या पोन।
मा रहसियौ देशडा, पछी करै ज्यू गौन ॥
सावण पहली पचमी, जे वाजै बहु वाय।
काल पडै सहु देश मे मिनख मिनख ने खाय ॥

× इससे मिलती हुई ही पीछे स० ५ पर भी है, वहाँ पचमी के स्थान पर चतुर्थी है।

श्रावण कृष्णा पचमी को आकाश निर्मल दिखाई दे तो अठारह प्रहर में अर्थात् सवा दो दिन मे वर्षा आ जायेगी।

(१६)

सावरण पेली पचमो, गरभै ऊदै भान।
बिरखा होसी अति घरणी, ऊचो जावै धान।।

श्रावण कृष्णा पचमी को प्रात काल सूर्य बादलो मे ही उदय हो (दिखाई न दे बादलो के गर्भ में ही छुपा रहे) तो इस वर्ष, बहुत वर्षा होगी और अन्न प्रचुर मात्रा मे उत्पन्न होगा।

नोट —यहा धान से तात्पर्य चावल से हो सकता है।

(१७)

— सावरण पेली 'पचमो, ना बादल ना बीज।
हल फाडो ई धरण करो, ऊवा चाबो बीज।।

श्रावण कृष्णापचमी को आकाश मे न बादल हो और न बिजली की चमक दिखाई दे तो कवि कृषक को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, हलों को फाड कर ईंधन के स्थान पर उपयोग मे ले लो और जो अन्न, बोने के लिये बीज सग्रह कर रखा है उसे खाकर अपना जीवन निर्वाह कर लो। क्यो कि, इस वर्ष वर्षा नही होगी।

(१८)

सावरण वद सातम दिना, वार शनीचर होय।
तो मेह बरसबा की समै, अधिकै बिरखा होय।।

श्रावण कृष्णा सप्तमी को शनिवार हो तो वर्षाकाल मे अधिक वर्षा होगी।

— इस सम्बन्ध मे आषाढ़-मास में आषाढ़ शुक्ला ५ का भी लेख है।

(१६)

सावण पेली सप्तमी, असिनी रेल प्रकार।
नित प्रति जग आनन्द हुवै, घर घर मंगलाचार ॥

श्रावण कृष्णा सप्तमी को अश्विनी नक्षत्र हो तो इस वर्ष प्रजा आनन्द से रहेगी और घर-घर मगलाचार होंगे।

(२०)

× सावण पेले पाख मे, दशमी रोहण होय।
मू घो नाज अर अलप जल, विरला जीवै कोय ॥

श्रावण कृष्णा दशमी को रोहिणी नक्षत्र हो तो अन्न महगा होगा, वर्षा कम होने के कारण बिरले व्यक्ति ही जीवित रहेंगे।

(२१)

— सावण वद एकादशी, जेटली रोहण होय।
सामो निपजै तैटलो, चिन्ता करो न कोय ॥

× इससे सबधित निम्न हैं

सावण पहले पक्ष मे दसमी रौहण होय।
महगो धान अर अलप जल, बिरखा विलसै कोय ॥
विशेष रूप से —
निथि बध्या धान नसावे। रिछ बध्यां अन्न उपजावैं ॥
तिथि रिछ होवैं समतूल। पुहुमी उपजै तूलमतूल ॥

— इस से सम्बन्धित निम्न हैं —

सावण वद एकादशी जैती रौहण होय।
ते ती समौज नीपजैं, चिन्ता करो न कोय ॥
सावण वद एकादशी, जितनी घडीक होय।
तितनी सम्वत नीपजे, चिन्ता करै न कोय ॥

श्रावण कृष्णा एकादशी को रोहिणी नक्षत्र जितनी घडी होगा, उसी के अनुसार इस वर्ष कृषि-उत्पादन होगा । अर्थात् पूर्ण होने से पूरी कम होने से उसके अनुसार कम फसल होगी ।

(२२)

सावण वद एकादशी, रौहण बरसै मेह ।
नृप नदै, विलसै प्रजा, इम भाखे सहदेव ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को रोहणी नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा हो जाय तो सहदेव कवि कहते हैं कि इस वर्ष राजाओ मे आनन्द और प्रजा, सुख का भोग भोगेगी ।

(२३)

†धुर सावण एकादशी, मेह गरजै अधरात ।
तू पिव जावो मालवे, हूँ जाऊ गुजरात ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को आधी रात मे मेह की गर्जना हो तो इस वर्ष कृषि उत्पादन नही होगा । अत: कृषक-पत्नी अपने पति से कहती है कि आप तो मालवे की ओर पधार जावे और मैं गुजरात की ओर चली जाऊ ।

---

† इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तिये भी है —

श्रावण कृष्ण एकादसी, गरजै मेघ अघरात ।
तुम मालवे दिस जावजो, कै जाज्यो गुजरात ।।

श्रावण कृष्णा एकादमी, गरजै मेघ अघरात ।
जाओ झट पिउ मालवे, हूँ जाशू गुजरात ।।

श्रावण कृष्ण एकादशी, गरजि मेह घहरात ।
तुम जाओ पिय मालवा, हो जइहो गुजरात ।।

(२४)

सावण वद एकादशी, इण दिन बरसै मेह ।
समयो आछो होवसी, इण मे नहिं सन्देह ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को वर्षा हो जाय तो इस वर्ष, कृषि-उत्पादन अच्छा होगा ।

(२५)

*सावण वद एकादशी, बादल ऊगै सूर ।
तो यू भाखै 'भड्डरी', घर-घर बाजै तूर ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को सूर्य बादलो मे ही उदय हो (दिखाई न दे) तो भड्डरी कहते हैं कि, यह वर्ष आनन्द से व्यतीत होगा ।

(२६)

सावण वद एकादशी, जे वाजै उत्तर वाय ।
घर-घर होवै वधामणा, घर-घर मगल थाय ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को उत्तर दिशा का वायु बहे तो यह वर्ष आनन्द से व्यतीत होगा ।

(२७)

सावण वद एकादशी, गरभा भाण उगन्त ।
लोग सुखी विरखा सुभिक्ष, चारमास बरसन्त ।।

श्रावण कृष्णा एकादशी को सूर्य बादलो मे ही उदय हो तो, इस वर्ष चार मास (वर्षा काल) मे पर्याप्त वर्षा होने के कारण सुभिक्ष होगा और प्रजा सुखी रहेगी ।

---

* इस सम्बन्ध मे :—

सावण वद एकादशी, बादल ऊगै सूर ।
सुखै बसो सब लोक तुम, घर-घर बाजै तूर ।।

(२८)

*सावण वद एकादशी, तीन नखत्तर जोय।
कृतिका होवे करवरो, रोहण होय सुगाल ॥
टुक इकध्यावे मिरगलो, 'पड़ै अचित्त्यो काल।

श्रावण कृष्णा एकादशी से वर्ष भर का शुभाशुभ इस प्रकार से देखना चाहिये। इस दिन कृतिका नक्षत्र हो तो कृषि साधारण होगी। रोहिणी हो तो सुकाल (सुभिक्ष) होगा और कदाचित इस दिन मृगशिर नक्षत्र आ जाय तो बिना कल्पना किये ही······अचानक······वर्षा का अभाव होकर दुर्भिक्ष हो जावेगा।

(२९)

बारस सावण कृष्ण की, मघा रात मे होय।
बादल जल वृष्टि करे, तो मेह सवायो होय ॥

श्रावण कृष्णा द्वादशी की रात्रि मे मघा नक्षत्र हो और उस समय आकाश से वर्षा हो तो भविष्य मे अत्यन्त जल बरसेगा।

(३०)

सावण वद एकादशी, कृतिका मध्यम जाण।
रोहणी शुभ सम्वत कह्यो, मृगशिर काल पिछाण॥

श्रावण कृष्णा एकादशी को कृतिका नक्षत्र हो तो उत्पादन उत्तम होगा, किन्तु इस दिन यदि मृगशिर नक्षत्र आ जाय तो दुर्भिक्ष ही होगा।

---

* इस सम्बन्ध मे निम्न उक्तियें भी मिली हैं —

जो कृतिका तो करवरौ, जो रोहण होय सुकाल।
जो मृगशिर आवै तहाँ, पडे अचिन्त्या काल ॥
जो किरतका तो किरवरौ, रोहण होय सुगाल।
जे मिगसर रिछ हो जाय तो, निहचै पडे दुकाल् ॥

(३१)

जे होवे बारस शशि तांय । मध्यम समौ बखाणो योय ।।
तेरस दिन रोहिणी नक्षत्र । काल पडे जाणो सर्वत्र ।।

श्रावण कृष्णा द्वादशी को रोहिणी नक्षत्र हो तो उत्पादन मध्यम होगा । किन्तु यही रोहिणी त्रयोदशी को हो तो सर्वत्र दुर्भिक्ष होगा ।

(३२)

विरखा बादल मावसैं, जे सावण मे हो जाय ।
चराचर ने सुख ऊपजै, आनन्द बोत मनाय ।।

श्रावणी अमावस्या को आकाश मे गहरे बादल हो, वर्षा हो जाय तो इस वर्ष अच्छा उत्पादन होने से चराचर सुखी होकर बहुत आनन्द मनावेंगे ।

(३३)

सावण काली मावसे, पुख असलेखा आवै ।
मघा नखत भी होय तो, थोडो मेह करावै ।।

श्रावणी एकादशी को पुष्य, अश्लेषा एव मघा इन नक्षत्रों मे से कोई सा भी नक्षत्र हो तो इस वर्ष, वर्षा कम होगी ।

(३४)

*सावण मावस मगल वार । अल्प अन्न अर पीडाकार ।
भूख दोष जग बहुते मरं । कही मेघ कही सूखा पडै ।।

---

* इसी सम्बन्ध मे —

सावण मावस के दिना, सोमवार जे आय ।
अन्न थोडो नीपजै, हा हाकार कराय ।।
कठेक बरसै कठेक सूखै, मरै बोत नर नार ।
काल पडे इण जोग सूं, जोतिस थी समझाय ।।

श्रावणी अमावस्या को मंगलवार हो तो इस वर्ष कहीं वर्षा होगी, कहीं न होगी। इसके परिणाम स्वरूप अन्न कम होने के कारण भूख से पीड़ित कई व्यक्ति मर जावेंगे और कई कष्ट उठावेंगे।

(३५)

सावण वद के मायने, कृतिका मेह बुलाय।
च्यारू महिना वरससी, धान घणो निपजाय॥

श्रावण मास मे जिस दिन कृतिका नक्षत्र हो उस दिन मेह आ जाय तो वर्षा काल मे (चारो महीनो मे) वर्षा होगी। इसके परिणाम-स्वरूप बहुत-सा अन्न उत्पन्न होगा।

(३६)

सावण कृष्णा पाख मे, जद अस्वनी आवै।
जे विरखा आ जाय तो, समयो भलो बतावै॥

श्रावण मास मे जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो उस दिन मेह आ जाय तो इस वर्ष कृषि उत्पादन अच्छा होगा।

(३७)

सावण पहला पाख मे, हयरिछ प्यासो जाय।
दुनिया मरै दुरभिक्ख सू, टाबर बेचे माय॥

श्रावण कृष्ण पक्ष मे आश्विनी नक्षत्र के दिन वर्षा न हो तो संसार मे दुर्भिक्ष के कारण माताएँ अपने बच्चों को बेच देंगी और लोग भूख के कारण मरेंगे।

(३८)

चित्रा स्वाति विसाखिया, सावण कोरा जाय।
कनक बेच कण लेवजो, ज्ञानी कहै समझाय॥

श्रावण मास में चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्रों मे वर्षा न हो तो इस वर्ष सुवर्ण बेच कर अन्न संग्रह कर लेना चाहिये, ऐसा बुद्धिमान्-व्यक्तियों का मत है।

(३९)

चित्रा स्वाति विसाखड़ी, जद सावण वरसन्त।
अन धन निपजे मोकलो, परजा करे आणन्द॥

श्रावण मास में चित्रा, स्वाति, विशाखा नक्षत्रों मे वर्षा हो जाय तो इस वर्ष धन-धान्य की उत्पत्ति एवं वृद्धि बहुत होने से प्रजा आनन्दित रहेगी।

(४०)

‡ मूल गल्या पुनि भड्डली, बोले विश्वा वीस।
सावण को पंचक झडी, श्रास समै की दीस॥
भड्डली तू क्यूं दूमणी, दिन पिछला ने झूर।
सावण का पंचक सज्यां, नदी बहेली पूर॥

श्रावण के धनिष्ठा आदि पांच नक्षत्रों में वर्षा हो जाय तो, ज्येष्ठ शुक्ला किम्वा आषाढ कृष्णा में मूल नक्षत्र मे वर्षा होने से जो दोष हो गये हैं, वे नष्ट हो जावेंगे और सुभिक्ष योग्य वर्षा हो जावेगी।

कवि भड्डली को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, तू पिछले दिन ज्येष्ठ आषाढ की अवर्षण-योग की घटना से उदास क्यों है ? श्रावण के इस (पचक में वर्षा होना) योग से इतनी वर्षा होगी कि, नदियों में जल नहीं समावेगा।

---

‡ इससे सम्बन्धित—

जेठे मूल विणासियो, ताको डर नहीं कोय।
बरसै पचक सावणै, समो भणो ही होय॥

(४१)

व्है नक्षत्र रोहणी, सुबे शाम व्है मेह।
दोपारा वायु चल्या, सावण भादू मेह॥

श्रावण महीने मे रोहिणी नक्षत्र के दिन प्रात साय वर्षा हो और मध्यान्ह मे वायु चले तो श्रावण एव भाद्रपद मे वर्षा निश्चित होगी।

(४२)

दिन भर वायु वहै, रिच्छ रोहणी होय।
विरखा जोग वणावसी, शुभ फलदायी होय॥

श्रावण मास मे रोहिणी नक्षत्र के दिन, दिनभर वायु चलती रहे तो वर्षा योग बन जाता है।

(४३)

सावण पहले पाख मे, जे तिथि ऊणी जाय,
कइयक कइयक देश मे टाबर बेचे मांय॥

श्रावण कृष्ण पक्ष मे किसी तिथि के टूट जाने से इस वर्ष ऐसा अकाल होगा कि, कही-कही अपने प्राणों की रक्षार्थ माताए अपनी सतानों तक को बेच देगी।

(४४)

सावण पहले पाख मे, जे असनी रेलेह।
पडियो काल समेट दे, भावी काह करेह॥

श्रावण कृष्ण पक्ष मे जिस दिन अश्विनी नक्षत्र हो उस दिन वर्षा आ जाय तो इस वर्ष इतनी वर्षा होगी कि, अकाल की सम्भावना होगी तो वह नष्ट हो जावेगी।

भाद्रपद-मास शुक्लपक्ष

(१)

‡ भाद्रू सुद की दूज ने, जे नहि दीखै चन्द।
अन्न बहोली होवसी, लोग करै आनन्द।।

भाद्रपद शुक्ला द्वितीया को उदय होता हुआ चन्द्र दिखाई नहीं दे तो इस वर्ष, अन्न का उत्पादन बहुत होने से लोग आनन्दित होंगे।

(२)

मगल वारी तीज जे, भादवडे सुद आवै।
उतरा फाल्गुणी मिलजाय तो आयो मेह गुमावै।।

भाद्रपद शुक्ला तृतीया को मगलवार और उत्तराफाल्गुणी नक्षत्र हो तो, आई हुई वर्षा भी नहीं बरसती है अर्थात् बादल उमडे हुए होने पर भी मेह नही होगा।

(३)

भादू सुद चौथ दिन, सोम शुक्र गुरुवार।
उतरा हस्त चित्रा हुया, सुभिक्ष जोग विचार।।

भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी को सोमवार, गुरुवार किम्वा शुक्रवार मे से कोई वार हो और उत्तरा फाल्गुणी, हस्त एव चित्रा नक्षत्रों में से कोई-सा नक्षत्र हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा।

(४)

भादू ऊजली पचमी जे नहि होवै मेह।
तो जाणीजे भड्डली, मेहा आयो छेह।।

भाद्रपद शुक्ला पचमी को वर्षा न हो तो भड्डली का कथन है कि, अब वर्षा का अन्त ही आ गया, ऐसा समझलें।

---

‡ एक स्थान पर शुक्ल द्वितीया के स्थान मे कृष्णा द्वितीया का उल्लेख भी मिला है।'

(५)

* भादव छट छूट्यो नहीं बिजली रो भणकार।
तू पिव जावो मालवे, मू आऊं मौसाल॥

भाद्रपद की षष्ठी को बिजली की चमक दिखाई नहीं दे तो इस वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा। अतः कृषक पत्नी अपने पति से कहती है कि, जीवन-निर्वाहार्थ आप तो मालवे की ओर पधार जावें और मैं अपने माता-पिता के यहां चली जाऊंगी।

(६)

भादरवो जग रेलसैं, छठ अनुराधा होय।
गर्भ उर्भ ना करैं, विरला भड्डली जोय॥

भड्डली यह देखकर कि, भाद्रपद की षष्ठी को अनुराधा नक्षत्र है, अपने विचार व्यक्त किये हैं कि, गर्भ आदि का कोई विचार ही मत करो पर्याप्त वर्षा होगी।

(७)

† भादव सुद की पंचमी, स्वात संजोगी होय।
दोन्यू शुभ जोगज मिल्या, मंगल वरतै लोय॥

भाद्रपद शुक्ला पंचमी को स्वाति नक्षत्र का होना प्रजा के लिये मंगलदाता है।

(८)

सावण स्वाति न बूठियो, कांई चिन्ता नांह।
भादरवें जुग रेलसी, छठांअनुराधाह॥

---

* यहां कृष्ण-पक्ष या शुक्ल-पक्ष का कोई स्पष्ट वर्णन नहीं है।

† भादरवा सुद पंचमी, जोग स्वाति नो होय।
शुभ जोगे ए बे मिले, मंगल वरतै लोय॥

कृषक पत्नी अपने पति से कहती है कि, श्रावण मास में स्वाति नक्षत्र पर वर्षा न होने की चिन्ता मत करो। क्योंकि, भाद्रपद की षष्ठी को अनुराधा नक्षत्र है। अतः पर्याप्त वर्षा होगी।

(९)

‡ भादू में जुग रेलसी, छठ अनुराधा जोय।
पिछला गरभ खड़ा करै, चोखी बिरखा होय॥

भाद्रपद की षष्ठी को अनुराधा नक्षत्र होने से पिछले गर्भ खड़े होकर, अच्छी वर्षा करते हैं।

---

‡भादवडे जुग रेलसी, छठ अनुराधा होय।
पिछला गरभ खण्डन करो, चोखी बिरखा होय॥
भादवडे जग रेलसी, जे छठ अनुराधा होय।
डक कहै सुण भड्डली, चिन्ता करो न कोय॥
भादू सुद अनुराधा में, गाज बीज अर मेह।
बादल भी हुय जाय तो, पिछला दोष मिटेह॥
मेह हुवै अन्न मोकलो, परजा सुखी हुय जाय।
जे ए च्यारूं हुवै नहि, तो काल पडेलो आय॥

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष मे जब अनुराधा नक्षत्र हो तब आकाश मे बादल, बिजली, गरजना और मेह हो जाय तो शुभ लक्षण हैं। इनके प्रभाव से यदि किसी कारण से किसी प्रकार का कोई दोष हो गया हो तो वह स्वयमेव नष्ट होकर उस वर्ष सुभिक्ष होगा। कदाचित ये चारों नही हो तो उस से दुर्भिक्ष ही होगा।

अनुराधा और छठ तिथ, भादू उजले पाख।
बीज बादला मेह हुवा, तो आछी नेपै साख॥

यदि भाद्रपद शुक्ला षष्ठि के दिन अनुराधा नक्षत्र हो तो अन्य नक्षत्रों के दोषों को मिटा कर यह योग सुभिक्षकारक हो जाता है।

(१०)

भादो छठ की चान्दणी, जे अनुराधा होय।
ऊबड़ खावड बोय दे, अन्न घणेरो होय॥

भाद्रपद शुक्ला षष्ठी को अनुराधा नक्षत्र हो तो इस वर्ष कही भी (ऊबड खाबड जमीन मे भी) अन्न बो दो, खूब ही उत्पन्न होगा।

(११)

जेठ गयो असाड गयो, सावणिया तू जाह।
भादरवै जुग रेलसी, छठ अनुराधाह॥

जेठ गया, आषाढ भी गया और सावण तू भी चला जा—हमे कोई चिन्ता नही। भाद्रपद की षष्ठी के दिन अनुराधा नक्षत्र है, यह इतनी वर्षा करेगा कि ससार प्रसन्न हो जायगा।

(१२)

*भूलै चूकै सप्तमी, जे अनुराधा लावै।
विरखा थोडी होवसी, ऐसो जोग बतावै॥

कदाचित यह अनुराधा नक्षत्र भाद्रपद की सप्तमी को आ जाय तो इस वर्ष—अनावृष्टि, अल्प वर्षा का योग है।

(१३)

नवमी भादू मास की, जे विरखा लै आय।
आगे विरखा अलप है, ऐसो जोग बणाय॥

---

*सुद भादू सातम दिना, रिछ अनुराधा होय।
छाटोछिडको भी ना हुया, काल पड्यो लो जोय॥

भाद्रपद शुक्ला सप्तमी के दिन अनुराधा नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा यदि एक बूद भी न गिरे तो यह अनावृष्टि योग है। इसके फल-स्वरूप उस वर्ष, वर्षा नही होगी।

भाद्रपद की नवमी को यदि वर्षा हो जाय तो भविष्य में वर्षा कम होगी, ऐसा योग बन जाता है।

(१४)

स्वाति नखत साथ लै, भादू नवमी आवै।
घी अन्न बहु होवसी, परजा सुखी हो जावै॥

भाद्रपद की नवमी को स्वाति नक्षत्र हो तो इस वर्ष, घी एवं अन्न बहुत होंगे। अतः प्रजा आनन्दित रहेगी।

(१५)

सुद ग्यारस भादवै, जे विरखा हो जाय।
धान घणेरो होवसी, सस्ते भाव विकाय॥

भाद्रपद शुक्ला एकादशी को वर्षा हो तो इस वर्ष अन्न अधिक उत्पन्न होने के कारण सस्ते मूल्य पर बिकेगा।

(१६)

सुद ग्यारस भादू मास की, रात समै गरजाय।
टीड उपदरो लावसी, ऐसौ जोग बणाय॥

भाद्रपद शुक्ला एकादशी की रात को बादलों की गर्जना हो तो इस वर्ष कृषि पर टिड्डियों के आक्रमण होंगे।

(१७)

पूनम भादू मास की, बादल बीज अर गाज।
संचित अन्न ने बेच दे निरमल् लेव अनाज॥

भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा को आकाश मे बादल, बिजली एवं गर्जना हो तो सञ्चित अन्न को बेच दो। कदाचित इस दिन आकाश निर्मल (स्वच्छ) हो तो अन्न खरीद कर संग्रह कर लेना चाहिये।

(१८)

चौथ पांचम सप्तमी, आठम पूनम होय।
गाज बीज बादल हुया, बेगो मेह लो जोय ॥

भाद्रपद शुक्ला चतुर्थी, पञ्चमी, सप्तमी, अष्टमी और पूर्णिमा इन दिनों मे आकाश में बादल हों, बिजली चमके, गर्जना आदि गर्भ धारण के लक्षण हों तो वर्षा शीघ्र होगी।

(१९)

भादू मे भरणी रिछ जोई। बादल छांट अमोघा होई ॥
सर्व देश मे विरखा जाण। लोग सुखी जग मे बहु मान ॥

भाद्रपद मास मे जब भरणी नक्षत्र हो तब आकाश मे बादल, बूदाबादी आदि हो तो सर्वत्र वर्षा होने के कारण लोग आनन्दित होंगे।

(२०)

चित्रा स्वाति विसाखडी, भादू सुद में आय।
जे विरखा नही होय तो, मेह गयो विलाय ॥

भाद्रपद शुक्ल पक्ष में चित्रा, स्वाति, विशाखा इन नक्षत्रों में वर्षा न हो तो समझ लेना चाहिये कि अब वर्षा विलीन होगई।

(२१)

* भादू जे दिन पछवा व्यारी। तै दिन माघ पडे तुषारी ॥

---

* इस सम्बन्ध में :—

१ जै दिन भादो बहे पछार। तै दिन पूस मे पडे तुसार ॥

२ आथूणो ह्वै बायरो, भादू महीना मांय।
उतरा दिन लो पोस रा, जल ने देय जमाय ॥

भाद्रपद मास में जितने दिन पश्चिम का वायु बहे, उतने ही दिन आगामी माघ में तुषार पड़ेगा।

(२२)

भादू महिना मांयने, चालै आथूणी वाय।
कै तो विरखा ह्वै नहिं, जे ह्वै तो झडी लगाय॥

भाद्रपद मास में पश्चिम दिशा का वायु बहै तो वर्षा होगी ही नहीं और कदाचित वर्षा हो भी गई तो झडी ही लगा देगी।

(२३)

भादू महीना मायने चालै चहू दिस वाय।
आयौ मेह उड़ाय दे, परजा दुखी हो जाय॥

भाद्रपद मास मे चारो दिशा का वायु चले तो इस लक्षण से वर्षा के बादल आये हुए हो तो उड जाते हैं। इसके कारण (आई हुई वर्षा न बरसने से) प्रजा दुःखी हो जाती है।

(२४)

अगस्त ऊग्या मेह न मंडे। जे मंडे तो धार न खडे॥

भाद्रपद मास मे जब अगस्त उदय होता है तब वर्षा बन्द हो जाती है। किन्तु इस अवसर पर यदि वर्षा प्रारम्भ हो जाय तो फिर अत्यधिक वर्षा होगी।

(२५)

‡ भादू मासे ऊजली, लखो मूल रवि वार।
तो यू भाखै भड्डरी, साख भली निरधार॥

---

‡ इस सम्बन्ध मे :—

भादो मासे ऊजली, लखो मूल रविवार।
'भद्रबाहु' गुरु यू कहै, साख भली निरधार॥

भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष मे रविवार के दिन मूल नक्षत्र हो तो भड्डरी का कथन है कि इस वर्ष खेती अच्छी निपजेगी। अन्न बहुत होगा।

(२६)

डेलो भादरवाह नो, वरेय जे णे ठाम।
त्या तो हेलो पण बिजै, कोरो काढे गाम ॥

डेलो, अर्थात् भाद्रपद मास का बडा बादल-खण्ड जिस स्थान पर बरसने लगता है उसी स्थान पर अधिक मात्रा मे बरस जाता है और अन्य स्थानो को सूखा ही छोड देता है।

(२७)

भादरवा आहो मयें, ठार पडे अदरात।
निश्चै करी ने जाणवो, तो नें वरे वरात ॥

भाद्रपद एव आश्विन में मध्य-रात्रि मे ओस गिरने लग जाय तो इस लक्षण से यह निश्चित है, कि अब वर्षा नही होगी।

(२८)

भादवडे पूरब पवन, अग्निकोण की धार।
काणा काचर काकडी, पोटे जाय जवार ॥

भाद्रपद महीने मे वायु पूर्व दिशा का या अग्निकोण का हो तो इसके परिणाम स्वरूप ककडी, काचरे आदि मे जीव पड जावेंगे अर्थात् ये काणे होगे तथा जवार की भी यही दशा होगी।

नोट :—कोई-कोई जवार के लिये ऐसा भी कहते हैं कि बहुत होगी।

(२९)

भादू सुद सातम दिने, आभा कानी जोय।
गाज बीच बादल हुया, समयो आछो होय ॥

जे ए तीन्यूं हुवै नहीं, तौ ऐसो जोग बणावै।
अन्नबिन तरसै मानवी, लोग दुखी हो जावै॥

भाद्रपद शुक्ला सप्तमी को आकाश की ओर देखें। इस दिन बादल हो, गर्जना हो, बिजली चमके तो इन लक्षणों के आधार पर यह निश्चित है कि उस वर्ष वर्षा अच्छी होगी और सुभिक्ष होगा। कदाचित ये लक्षण न हों तो उस वर्ष दुर्भिक्ष ही होगा।

भाद्रपद मास कृष्णपक्ष

(१)

पड़वा भादू मास की, होय अन्धारे पाख।
श्रवण गुरु साथे हुयां, आछी निपजै साख॥

भाद्रपद कृष्णा प्रतिपदा को गुरुवार और श्रवण नक्षत्र हो तो अच्छी वर्षा होने के कारण कृषि उत्पादन उत्तम होगा।

(२)

दूज अन्धेरे भादवे, सोमवार नी आवे।
धन धान बहु नीपजे, लोग सुखी हो जावै॥

भाद्रपद कृष्णा द्वितीया को सोमवार हो तो इस वर्ष धन (पशुधन), धान्य बहुत होंगे और इस कारण से प्रजा आनन्दित रहेगी।

(३)

वद भादू की तीज ने, पहर तीसरो जोय।
उत्तर दिश बादल हुयाँ, सुखी जगत लो जोय॥

भाद्रपद कृष्णा चतुर्थी को शनिवार हो तो राज्य-भङ्ग एवं दुर्भिक्ष के कारण कोई सुखी नहीं रहेगा।

(४)

चौथ अन्धेरे भादवें, वार शनी जे होय।
देश भग दुरभिच्छ ह्वै, सुख नांहि पावै कोय॥

भाद्रपद कृष्णा तृतीया के तीसरे पहर में [उत्तर दिशा की ओर बादल दिखाई दे तो इस लक्षण से यह वर्ष प्रजा के लिये सुखदायी होगा।

(५)

भादू वद आठम दिना रिच्छ रोयणी जे होय।
ई जोगा सू समो, शुभदायी तो जोय॥

भाद्रपद कृष्णा अष्टमी को यदि रोहिणी नक्षत्र आजाय तो इस योग के कारण यह वर्ष जन-साधारण के लिए शुभदायी होगा।

(६)

भादू वद एकादशी, जे ना छिटकै मेघ।
चार मास बरसै नही कहै भड्डरी देख॥

भाद्रपद कृष्णा एकादशी को वर्षा नही हुई तो चारमास तक वर्षा नही है।

(७)

— रवि उगन्ता भादवै, अमावस रविवार।
धनस उगन्ता पच्छिमा, होसी हा - हा कार॥

भाद्रपद की अमावस्या को रविवार हो और पश्चिम दिशा मे इन्द्र धनुष दिखाई दे तो प्रजा मे अकालादि के कारण हा-हाकार मच जावेगा।

— दिन उगन्ते भादरवो, अम्मावम रविवार।
उगै धनस पच्छम में होयज हा हा कार॥

(८)

मुदगर जोगज भादवै, अम्मावस रविवार।
उज्जणी की अथमणी, हो सी हा हा कार॥

भाद्रपद की अमावास्या, रविवार मुदगर-योग हो तो उज्जैन के पश्चिम की ओर हा-हाकार मच जावेगा अर्थात् अकाल होगा।

(९)

मावस भादू मास की, चन्द्रवार जे आय।
क्षेम आरोग्य विरखा घणी, प्रजा सुखी हो जाय॥

भाद्रपद की अमावास्या सोमवार की हो तो इस वर्ष बहुत वर्षा होगी, प्रजा मे आरोग्य-क्षेम होने के कारण सुख होगा।

(१०)

मावस भादू मास की, भौमवार जे आवै।
अलपवृष्टि विग्रह बधै, धन की हाण करावै॥

भाद्रपद मास की अमावस्या मंगलवार की हो तो, इस वर्ष, वर्षा कम होगी, विग्रह बढ़ेगा और धन (पशु-धन) की क्षति होगी।

(११)

मावस भादू मास की, बुधवारी जे होय।
हुं दुरभिक्ख परजा दुखी, अन्नज थोड़ो होय॥

भाद्रपद की अमावास्या बुधवार की हो तो इस वर्ष दुर्भिक्ष होने के कारण प्रजा दुखी रहेगी, अन्न का उत्पादन कम होगा।

(१२)

मावस भादू मास की, गुरुवारी जो आय।
प्रजा सुखी अन धन घणा, एसो जोग बताय॥

भाद्रपद की अमावास्या को गुरुवार हो तो इस वर्ष अन्न-धन बहुत होने के कारण प्रजा सुखी रहेगी।

(१३)

मावस भादू मास की, दैत्य गुरु जो होय।
घर खेती उपद्रव घणा, निहचै रेवे न कोय ॥

भाद्रपदी अमावास्या को शुक्रवार हो तो इस वर्ष अनेक उपद्रवों के कारण लोग घरों मे खेतो मे—कहीं भी निश्चिन्त नहीं रह सकेंगे।

(१४)

शनिवारी मावसै, भादूडे जे आवै।
पिता पुत्र मे सप नही, समयो ऐसो आवैं ॥

भाद्रपद की अमावास्या को शनिवार हो तो यह इतना बुरा है कि, पिता एव पुत्र में भी अनबन रहेगी।

आश्विन-मास शुक्ल पक्ष

(१)

पडवा सुद आसीज की, जे आवे शनिवार।
सगरे अन को कर लेवो, मतना करो विचार ॥

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को शनिवार आ जाय तो बिना किसी विचार के भविष्य के वास्ते अन्न सग्रह कर लेना हितकर होगा।

(२)

मगल शनि की तीज हो, सुद आसोजा मय।
लाय लगण को जोग है, मू गो धान कराय ॥

आश्विन शुक्ला तृतिया को मगल किम्वा शनिवार हो तो इस वर्ष अग्निकांड होंगे और अन्न महगा बिकेगा।

(३)

सुद आसोजा चौथने, रवी वार हो जाय।
घी बेचों अन मेलवो, चोखा दाम दिराय॥

आश्विन शुक्ला चौथ को रविवार हो तो घी बेच दो और अन्न संग्रह कर लो। इससे अच्छा लाभ होगा।

(४)

सातम सुद आसौज की, सोमवार ने आवै।
हस्त नखत हो जाय तो, नेहचै काल बतावै॥
धण पिव ने यू कहै, मत ना सोच करावौ।
म्हें म्हारी भोग सू, आप मालवे जावौ॥

आश्विन शुक्ला सप्तमी को सोमवार और हस्त नक्षत्र हो तो यह निश्चित है कि वर्षा का अभाव रहेगा और अकाल पड जावेगा। अत. कृषक-पत्नी अपने से कहती है कि, मै मायके चली जाऊंगी, आप मेरी चिन्ता न करे और स्व-जीवन रक्षार्थ आप स्वय मालवे पधार जावें।

(५)

सुद आसोजा की सत्तमी, शनीवार ने आवे।
श्रवण धनिष्ठा जे होय तो, हा हा कार मचावै॥

आश्विन शुक्ला सप्तमी शनिवार की हो और इस दिन श्रावण धनिष्ठा मे से कोई-सा भी नक्षत्र हो तो यह ससार के नाश का योग है।

(६)

आठम सुद आसोज की, बुधवारी जे आय।
संग्रह घी को कर लेवो, कातो लाभ दिराय॥

आश्विन शुक्ला अष्टमी बुधवार की हो तो घी संग्रह कर रखें। आगामी कार्तिक में ही इससे अच्छा लाभ हो जावेगा।

(७)

सातम आठम दो दिना, सुद आसोजां मांय ।
जे विरखा हो जाय तो, पुहुमी आनन्द थाय ॥

आश्विन शुक्ला सप्तमी एवं अष्टमी, इन दो दिनों में वर्षा हो जाय तो सुभिक्षदायक एवं राज्यपक्ष के विग्रह को शान्ति करनेवाला तथा पृथ्वी पर आनन्ददायक वर्ष होगा ।

(८)

मंगल वारी नवमी, सुद आसोजा मांय ।
उडद रुई झट संग्रहो, चोखो लाभ दिराय ॥
चैत महीना मायने, बेच देवो जो होय ।
दूणा दाम उठायलो, संसै करो न कोय ॥

आश्विन शुक्ला नवमी मंगल वार की हो तो उडद, रुई का संग्रह कर लेना चाहिये । आगामी चैत्र मास में इन्हें बेचने से दूना लाभ होगा ।

(९)

दसमी सुद आसोज की, मंगल वारी जे होय ।
परजा दुखी चिन्ता घणी, रोग घणेरो होय ॥

आश्विन शुक्ला दशमी मंगलवार की हो तो इस वर्ष प्रजा में रोगों की वृद्धि, चिन्ता की अधिकता एवं दुःख व्याप्त होगा ।

(१०)

दसमी सुद आसोज की, बीज बादला आय ।
तिल उड़द मूंघा करै, जे विरखा आ जाय ॥

आश्विन शुक्ला दशमी को आकाश में बादल हो, बिजली चमके तथा वर्षा हो जाय तो तिल और उडद महंगे बिकेंगे ।

(११)

एकम आठम दसमी दिनां,सुद आसोजां के मांय।
जे बादल हो जाय तो, वेगो विरखा आय॥

आश्विन शुक्ला प्रतिपदा, अष्ठमी,दशमी इन दिनों में आकाश में बादल दिखाई दे तो वर्षा जल्दी आवेगी।

(१२)

शनिवारी एकादशी, सुद आसोजा आवै।
छत्र भग परजा दुखी, चोरी बोत करावै॥

आश्विन शुक्ला एकादशी को शनिवार हो तो छत्र-भंग (राजा की मृत्यु) तथा नगर ग्रामादि का भग हो, दुर्भिक्ष हो, शत्रुओं एवं चोरियों के कारण प्रजा दुखी रहेगी।

(१३)

* आस वाणी, भाग वाणी॥

आश्विन की वर्षा भाग्य से ही होती है।

(१४)

मइनो आहो आवते, उडवा लागे खेह।
भायग मोटो होय तो, कँयक वरसे मेह॥

आश्विन मास के आते ही सूखी धूल उडना यह सूचित करता है कि भाग्य से ही इस मास मे कहीं कहीं ही वर्षा होती है।

---

* इससे मिलती जुलती—

आ हो अवाणी, ने भायग पाणी॥

(१५)

आसोजा रा मेड़वा, दोय बात विणास।
बोरटिया में बोर नही, विणिया नही कपास ॥

आश्विनी मास की वर्षा से दो बात की हानि होती है। एक तो बेर के वृक्षो मे बेर नही होते हैं और दूसरा कपास के पौधों से कपास नहीं मिलेगा।

(१६)

मेह की अवस्था

मेहो बारक आहडे, सावणे मोटियार।
भादरवे गरडो थई, आहो जाय पदार ॥

आषाढ मे मेह की बाल्यावस्था, श्रावण मे युवावस्था और भाद्रपद मे प्रौढावस्था (वृद्ध मनुष्य के समान) तथा आश्विन मे सर्वथा वृद्ध होकर अन्त्यावस्था को प्राप्त हो जाने के कारण प्रस्थान कर देता है।

(१७)

वरे हरादे मेउलो, के बरसे नवरात।
तो पाके माली घणी, ए नारू नी हात ॥

यदि श्राद्ध पक्ष अथवा नवरात्रि मे मेह बरसता है तो इस लक्षण से उन्हालू की माल (फसल) अच्छी पकती है।

(१८)

दो आसोज दो भादवा, दो आसाड जे आय।
सोनो चाँदी बेच कर, धान बसावो लाय ॥

जिस वर्ष दो आषाढ, दो भाद्रपद या दो आश्विन मास (इनमे से कोई भी) आ जाय तो उस वर्ष अन्न महगा होगा इसलिये कवि कहता है कि सोना, चादी, बेचकर भी जीवन-निर्वाहार्थ अनाज खरीद कर लेना चाहिये।

आश्विन मास कृष्ण पक्ष

(१)

सासू जितरे सासरो, अर आसू जितरे मेह ॥

जिस प्रकार ससुराल मे जब तक सास विद्यमान रहती है तब तक बहू को गृहस्थ भार की चिन्ता नही रहती है और सास के इस ससार से चले जाने पर चिन्ताएँ आ घेरती है (सास की उपस्थिति मे वह आनन्द-मगल से रहती है) उसी प्रकार जब आसोज मास आता है, तब तक वर्षा हो जाने से कृषक-वर्ग आनन्दित हो जाता है और आसोज के समाप्त हो जाने से, वर्षा न होने से सारे आनन्द-मङ्गल नष्ट होकर चिन्ता होने लग जाती है।

(२)

होय शुक्र अस्त आसोज मास। सब लोग सुखी आनन्द तास ॥

आसोज मास मे शुक्र अस्त हो तो यह वर्ष सबके लिये सुखप्रद है।

(३)

सूरज ऊगण की बखत, चौथ आसोजी देख।
आभे बादल होय तो, समयो आछो पेख ॥

आश्विन की चौथ को सूर्योदय से पूर्व आकाश बादलों से छाया हुआ दिखाई दे तो, यह शुभ लक्षण है। इस लक्षण से उत्तम वर्षा एव वर्ष कल्याणकारक होगा।

नोट—"वर्ष-प्रबोध" कार ने उत्तर भाग के द्वितीय स्थल मे अथ वृष्टि विचार माह शीर्षक के अन्तर्गत यह वर्णन दिया है वहाँ कृष्ण अथवा शुक्ल पक्ष का कोई उल्लेख नहीं किया है। इसी मत को "वृष्टि-प्रबोध" कार ने भी ज्यों का त्यों ही लिया है।

(४)

†आसोज वदी मांवसां, जे आवे शनिवार।
समोज होसी करवरो, पण्डित केव्है विचार॥

आसोज की अमावस्या को शनिवार आ जाय तो कृषि साधारण ही उत्पन्न होगी।

कार्तिक मास शुक्ल पक्ष

(१)

कार्तिक सुदी पडवा दिने, होये जो बुधवार।
वरस होय ते करवरु, न करीश वली विचार॥

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को बुधवार होने से इस वर्ष को साधारण ही समझें। इसमें किसी प्रकार का विचार (सन्देह) न करें।

---

† इस सम्बन्ध में निम्न उक्तियें भी मिलती हैं :—

धुर आसोज अमावसां, जे आवै शनिवार।
समयो होसी करवरो, पण्डित कहै विचार॥

आसोज वद अमासडी, जे आवै शनिवार।
समय आवसै आकरो, जोशी जोश विचार॥

आसो वदी अमावसी, जे आवे शनिवार।
समय आवसी आकरो, केहिक खण्ड दुकाल॥

(२)

* कार्तिक सुदी दुतिया दिने, चढ़त चन्द्र जो लाल ।
पच्छम दिस जे बादल् रकत,तो मेटत जग को काल् ॥
गरभ रह्यो ता समै को, विघन न होवे कोय ।
तो बरसै जलधर दूणो, कोई दुखी ना होय ॥

कार्तिक शुक्ला द्वितीया के सायकाल को उदय होता हुआ चन्द्र लाल रग का दिखाई दे, पश्चिम दिशा के बादल लाल रग के दिखाई दें तो इस समय का वर्षा के लिये रहा हुआ गर्भ, यदि किसी प्रकार उत्पात न हो तो वर्षा काल मे बहुत वर्षा करके प्रजा को आनन्दित करेगा ।

(३)

काती सुद पाचम दिना, सोमवार जे होय ।
सौभाग पाचम नाम है, समयो आछो होय ॥

कार्तिक शुक्ला पचमी को सोमवार का आजाना इसके सौभाग्य-पचमी नाम को सार्थक करता है । इस दिन यह योग बन जाने से इस वर्ष राजा एव प्रजा सभी सुख पावेंगे ।

(४)

†काती सुद पाचम दिना, जे आवे भौमवार ।
धन-कण राखी सग्रहो, जग मां सहु नरनार ॥

---

* काती मास गयणलो, रगत वरण ऊगेह ।
तो जाणी जे भड्डली, जल धारा वरसेह ॥

† दीवा वीती पचमी, जे आवे आदित वार ।
धन-कण राखी सग्रहो, जग मा सहु नरनार ॥
मालवड़े मरकी थशे, दिक्खण मा उत्पात ।
पूरब विग्रे जागशे, झलभलशे गुजरात ॥

जग भर मा मरकी थशे, दक्खण में उत्पात।
पूरब कलहै सौराष्ट्र ने, खलभलशै गुजरात ॥

कार्तिक शुक्ला पचमी को मगलवार हो तो लोगो को चाहिये कि, धन एव धान्य (अन्न) का सग्रह कर रखे। इस वर्ष प्लेग आदि सक्रामक व्याधि, दक्षिण में उत्पात, पूर्व मे कलह और सौराष्ट्र मे तथा गुजरात मे खलभलाहट मच जावेगी।

(५)

दीवा बीती पञ्चमी, मूल नखत्तर होय।
खप्पर हाथा जग भमै, भीख न घाले कोय ॥

कार्तिक शुक्ला पचमी को मूल नक्षत्र आ जाय तो ससार हाथ मे खप्पर लिये घूमेगा किन्तु भीख डालने योग्य कोई नही होगा, अर्थात् इस वर्ष दुर्भिक्ष का योग है।

(६)

दीवा बीती पञ्चमी, जे शनी मूल पडन्त।
त्रिवणा तिवणा चौगणा, मूगा अन्नकरन्त ॥

कार्तिक शुक्ला पचमी को शनिवार और मूल नक्षत्र हो तो, अन्न इतना महगा हो जावेगा कि दूने, तीन गुने और चौगुने दाम तक खर्चने प`गे।

(७)

दीवा बीती पञ्चमी, सोम शुक्र गुरु मूर।
'डक्क' कहै हे 'भड्डली', निपजै सातू तूर ॥

कार्तिक शुक्ला पचमी को सोमवार, गुरुवार एव शुक्रवार मे से कोई-सा भी वार आ जाय तो डक्क, भड्डली से कहते हैं कि इस वर्ष बहुत वर्षा होगी और समस्त अन्न उत्पन्न होगे।

(८)

†दीवा बीती पचमी, गुणता एह वार।
वर विरखा के जोतसी, एता अक्षर सार॥
दस सूरज बीस सोमज, मगल अष्टम जाण।
बुध बारे, गुरू अठारै, सुक्कर सोलै परमाण॥
देव जोग जे शनि पडै, तो निश्चै दुरभिख जाण॥

कातिक शुक्ला पचमी को रविवार हो तो आगे वर्षा काल मे सम्वत (फसल-कृषि उत्पादन) दश विस्वा, सोमवार हो तो बीस विस्वा, मगलवार हो तो आठ विस्वा, बुधवार हो तो बारह विस्वा, गुरुवार हो तो अठारह विस्वा और शुक्रवार हो तो सोलह विस्वा होगा। दुर्भाग्यवश इस दिन शनिवार हो तो दुर्भिक्ष होगा।

---

† कातिक सुदीजु पञ्चमी रवि जे वारिया।
होई समो विस्वे दस देख विचारिया॥
दस पसेरी अन्न बिकै तो जाणिये।
पूछी 'भडली बात डक' इमि भाणिये॥
शशिजु वार हुई गार तो विस्वे बीस है।
बीस पसेरी अन्न बिकातो दीस है॥
मङ्गलवारी होई तो विस्वे आठ है।
अठ पसेरी अन्न बिकै नही घाट है॥
विस्वे बाराज ना बुध जे वार है।
तितिन पसेरी अन्न बिकतु विचार है॥
होइ बृहस्पतिवार जु विस्वे अठदसा।
तितनौ ही है अन्न पसेरी सब दिसा॥

(शेष अगले पृष्ठ के अधो भाग मे)

(६)

‡ कातिक सुद एकादशी, बादल बिजली होय।
तो असाढ मे 'भड्डली', बिरखा चोखी होय॥

भड्डली को सम्बोधन करते हुए कवि कहते हैं कि, कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन आकाश मे बादल, बिजली हो तो आगामी आषाढ़ में अच्छी वर्षा होगी।

---

‡ इस सम्बन्ध में निम्न उक्तियाँ भी मिली हैं—

१—काती सुदी एकादसी, बादल बीजली होय।
आसाडे 'भडली' केव्है, बिरखा सार्च जोय॥

२—काती सुद एकादसी, बिरखा बादल होय।
चारमास बिरखा घणी, सर्स करो ना कोय॥

३—कातिक सुद एकादसी, बादल बीजल होय।
तो असाड मे चतुर नर, बिरखा होसी जोय॥

४—काती सुद एकादसी, बादल बीजल् होय।
आसाडे 'भडली' कहूृ, बिरखा आछी होय॥

पिछले पृष्ठ के अधो भाग का शेषांश—

भृगु लिखे है सात पसेरी सात है।
जे होवै शनिवार तो काल विख्यात है॥
होवै हा-हाकार ! चौपद बहु मरै।
सूखै खेती पञ्चमी शनिज अनुसरै॥

रवि मगल दुइ चार मण, सोम पञ्च बुध तीन।
जीव शुक्र दिन दोह मण, शनि दुर्भिक्ष सुकीन॥
तोल कह्यो ए तीस को, सेरी मण अनाज।
पिछला चालीस सेर को, मण पञ्चास पिछांण॥

(१०)

कातिक सुद बारस दिने, बादल छाया होय।
तो असाढ़ मे बरससी, उपजै अनुभव कोय॥

कार्तिक शुक्ला द्वादशी को आकाश में बादल छाये रहे तो आगामी आषाढ में वर्षा होगी।

(११)

सुद बारस काती मास की, रात निरमली होय।
गरभतणो ऋतु बीजबल, बन्द हुयोड़ो जोय॥
भूले चूके बादला, पच रगा जे आवै।
ऋतु खुलो है जाणजो, जे गाज बीज बरसावै॥

कार्तिक शुक्ला द्वादशी की रात्रि निर्मल प्रतीत हो तो मेघ धारण करने वाली विद्युत-शक्ति का ऋतु-धर्म बन्द है, समझें। कदाचित इस दिन आकाश मे भिन्न-भिन्न पाँच रगो के बादल, बिजली की चमक, गर्जन एव वर्षा हो तो समझलें कि वर्षाकाल की वर्षा के लिये, ऋतु-धर्म खुला हुआ है।

(१२)

काती मास उजालिये, पांचम सातम जोय।
नवमी ने एकादसी, जे घन बादल होय॥
इहा दिवसाह घन जे, घण चिहुं न होय।
तो जाणीजै 'भहुली', विरलो जीवै कोय॥

आगामी वर्ष की वर्षा का भविष्य देखने के लिये, कार्तिक मास की शुक्ला पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी इन तिथियो को देखें। यदि इन दिनो में आकाश मे बादल, बिजली हो तो वर्षा काल मे बहुत वर्षा होगी, जिसके कारण प्रजा आनन्द मनावेगी। किन्तु, इन दिनों में बादल (जल) चिरमी जितना भी न हो तो यह वर्ष इतना बुरा होगा कि, पृथ्वी पर विरला व्यक्ति ही जीवित रहेगा।

(१३)

पाचम सातम नवमो, तथा ग्यारस बारस होय ।
काती सुद मे बरसिया, जेठ बदी लो जोय ॥

कार्तिक शुक्ला पञ्चमी, सप्तमी, नवमी, एकादशी एव द्वादशी इन दिनो मे वर्षा हो तो आगामी ज्येष्ठ मास के कृष्ण पक्ष मे वर्षा होगी ।

(१४)

काती रो मेह, कटक बराबर है ।

कार्तिक मास की वर्षा कृषि के लिये उतनी ही हानिकारक है, जितनी युद्ध के लिये सेना ।

(१५)

भूल्या फिरै गँवार, कातिक भालै मेवडा ।

वे लोग, जो कार्तिक मास मे मेह की ओर देखते हैं, भूल मे हैं । एस व्यक्ति गँवार कहे जाते हैं । कारण, इन दिनो मे वर्षा होना असम्भव है ।

(१६)

काती महिना मायने, जे दिन दरसै मेह ।
उत्ता दिन असाड मा, बिरखा अवश करेह ॥

कार्तिक मास मे जितने दिन आकाश में बादल दिखाई दें, तो इस लक्षण से यह निश्चिन समझले कि उतने ही दिन आषाढ मास मे वर्षा होगी ।

(१७)

दीपमालका नीकै जोय । निश्चै रात निवाई होय ।
काती पूनम निरमल् चन्द । धान खरीदे वो मतिमन्द ॥

दीपमालिका के दिन वायु आदि का उपद्रव न हो और इस दिन जलाये गये दीपक भली प्रकार से जलें, रात्रि मे गरमी प्रतीत हो एव

कार्तिक-पूर्णिमा की रात्रि मे चन्द्रमा निर्मल दिखाई दे तो इन लक्षणों के होते हुए भी जो अन्न खरीद कर रखेगा वह मतिमन्द ही माना जावेगा ।

(१८)

काती सुद पूनम दिना, रिच्छ होय सो जोय ।
समयो कैंमो होवसी, ध्यान करौ सब कोय ॥
असनी हुया मध्यम समौ, रोहण बतावै काल ।
भरणी तो भली नही, करदे हाल बेहाल ॥
अन्न नीपजै मोकलो, जो रिछ किरतका आवै ।
शान्ती बधै राजा थकी, समयो सिरै जतावै ॥
तिथि नखत बेऊकदी, तीन वीसी जे होय ।
फल पूरो देखाडसी, जैनो जेतो होय ॥

कार्तिकी पूर्णिमा को जो नक्षत्र होगा, वर्ष का भविष्य भी उसी के अनुसार ही होगा । इस दिन अश्विनी नक्षत्र हो तो आगामी वर्षा-काल मे वर्षा एव अनाज की उत्पत्ति मध्यम होगी । भरणी हो तो कही वृष्टि, कही अनावृष्टि तथा वात-रोग पीडा आदि के कारण प्रजा इधर-उधर भटकती फिरेगी । इस दिन कृत्तिका हो तो सम्पूर्ण कृषि उत्तम (समस्त अन्नो का उत्पादन श्रेष्ठ) एव राजाओ मे शान्ति रहेगी । किन्तु इस दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो दुर्भिक्ष होगा ।

(१९)

पूनम भरणी रिच्छ हो, कातिक महिना माय ।
काल पडेला आकरो, आधि व्याधि हो जाय ॥

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को भरणी नक्षत्र होने पर घोर दुर्भिक्ष एव आधि-व्याधियो से पूर्ण यह वर्ष व्यतीत होगा ।

(२०)

काती सुद पूनौ दिवस, जे किरतका रुक्ख हुन्त ।
जे बादल बीजू खिवै, मास चार बरसन्त ॥

कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र हो, इस दिन आकाश में बादल हो और बिजली चमके तो इस लक्षण के आधार पर कवि कहते हैं कि चार महीनो तक वर्षा होगी।

(२१)

काती सुद पूनम दिना जे किरतका रुख होई।
तामे बादल बीजली, जे सजोगे होई॥
चार मास तो बिरखा होसी। भली भात यू भाखै जोसी।

कार्तिक पूर्णिमा को कृतिका नक्षत्र हो, इस दिन आकाश में बादल-बीजली आदि दिखाई दे तो इन लक्षणो के आधार पर ज्योतिषी कहता है कि, वर्षा-काल के चारो महीनो में भली प्रकार से वर्षा होगी।

(२२)

कार्तिक पूनम किरतिका, अदकी होवै जेम।
पलो बधै जे वरस मा, भारै विरखा तेम॥

कार्तिक पूर्णिमा के दिन कृतिका नक्षत्र जितने अधिक पल होगा, उसी के अनुसार उस वर्ष मे वर्षा होगी।

(२३)

काती पूनम कृति, चन्द मध्याने जोय।
आगे पाछे दाहणै, जिण सूँ निश्चै होय॥
आगे व्है तो अन्न नही, पासे व्है तो ईत।
पीठ हुया बरजा सुखी, निस दिन रेवो नचीत॥

कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि को कृतिका तारे को देखें। यदि यह चन्द्रमा के सम्मुख है तो इस वर्ष अन्न उत्पन्न नहीं होगा। पास ही में दाहिनी ओर हो तो इस वर्ष ईति-भय रहेगा। पीछे की ओर है तो प्रजा सर्व प्रकार से सुखी रहेगी।

(२४)

कार्तिक सुद पूनम आधी रात। बुध लखै कृतका चन्द्र साथ ॥
दिखणादे किरती दुरभिख थाय। उत्तरादे किरती सुभिक्ष कराय ॥
बेंत हाथ कुल्हाडी डण्डा। तो खेती निपजै चारूँ खण्डा ॥
कृतिका आगे गाडो की धुरी। तो मूगो अनाज ने सस्तो तुरी ॥
घिलमिल समाय ससि कृत आय। कर वरा सम्वंत केव्हो सुभाय ॥

कार्तिकी पूर्णिमा की मध्य रात्रि में आकाश मे चन्द्रमा और कृतिका तारे को देखें। यह तारा, चन्द्रमा से उत्तर या एक बालिश्त किम्वा एक अथवा डेढ़ हाथ अनुमान पूर्व में हो तो इस वर्ष सुभिक्ष होगा। किन्तु, दक्षिण अथवा साढ़े तीन हाथ आगे पश्चिम मे हो तो दुर्भिक्ष के कारण अनाज महँगा होगा और घोड़े आदि पशु सस्ते बिकेंगे। कदाचित् दोनो अत्यन्त समीप हो तो सम्वत (फसल) मध्यम होगा।

(२५)

काती महिना मायने, अम्बर गरजत होय।
मूगो धान बिकावसी, घास घणेरो होय ॥

कार्तिक मास में आकाश मे बादलो की गर्जना सुनाई दे तो, इस लक्षण से इस वर्ष अन्न महँगा होगा और घास बहुत उत्पन्न होगा।

(२६)

कातिग डम्बर नाम जल, गैली देख न भूल।
रूपाला गुण बायरा, ए राहीडेरा फूल ॥

कृषक अपनी पत्नी से कहता है कि, पगली! कार्तिक में इन आडम्बरयुक्त बादलो को देखकर धोखे में मत आ, इनसे वर्षा नहीं होगी। ये तो सुन्दर रूप वाले किन्तु सुगन्ध-रहित रोहीड़े के पुष्प के समान केवल शोभा के लिये हैं।

(२७)

पक्षी द्वारा वर्षा ज्ञान

कोड्या कातिक मास मे, दरसै देख सुजान।
घर मगरी पर देखिया, मगल बरस बखाण ॥
अन धन सुख सम्पती, माख दोय निपजन्त।
नदियाँ नवी नवेलियाँ, जय-जयकार करन्त ॥
वा पङ्कज पर देखियाँ, नागफणी पर सोय।
वा हाथी घोडा ऊपरे, समयो सरस यू होय ॥
फल विरछा का विरछ पर, अथवा हरी सुडाल।
अन धन सुख सम्पती, कोड्या करत सुगाल ॥
हाड राख पर देखिया, सूखा लकड सुजाण।
पत्थर सूखा घास पर, केश चरम कु बखाण ॥
पडे काल भयभीत सब, रोग शोक अति होय।
रुण्ड मुण्ड युत मेदनी, विरला बचै जो कोय ॥

दीपावली को खजन-पक्षी मकान की छत, छप्पर पर बैठा हुआ दिखाई दे तो आगामी वर्ष मे वर्षा अच्छी होगी, दोनो फसले अच्छी होगी और अन्न-धन, सुख-सम्पत्ति आदि की वृद्धि होगी। कमल, सर्प के फरा, घोडे किम्वा हाथी पर बैठा हुआ दिखाई दे तो वर्ष अच्छा होगा। फल-फूल वाले वृक्ष किम्वा हरी टहनी पर बैठा हुआ दिखाई दे तो सब प्रकार के आनन्द मगल होगे। कदाचित यह पक्षी हड्डियो पर, राख के ढेर पर, सूखी लकडी किम्वा घास पर, पत्थर पर, केश पर, चमडे किम्वा बुरे स्थान पर बैठा हुआ दीखे तो इस लक्षण के फलस्वरूप अत्यन्त भयकर दुर्भिक्ष, रोग-शोक होगे और बहुत से मनुष्यो की मृत्यु होगी।

(२८)

डोबी तो पाडो जिणै, भउ रे जन्मे धीय।
तीनूं खोटा जाणजौ, जे काती बरसै मीय ॥

भैंस के पाडा (नर पुत्र) जन्म ले, बहू के लड़की उत्पन्न हो और कार्तिक महीने मे वर्षा हो तो ये तीनो अशुभ माने गये हैं।

(२९)

मेह करे जे कादवी, दीवारी दसराव।
धान भले होवन हरौ, होगे होगे भाव ॥

दशहरे या दीवाली के दिन वर्षा इतनी हो कि पृथ्वी पर कीचड हो जाय तो इस लक्षण से यह सूचित होता है कि इस वर्ष विभिन्न अन्न सस्ते भाव मे प्राप्त होगे।

(३०)

कातिक सुद एकादसी, मगसर बद आटेम।
दसम अदारी पौहनी, मा सुकला हातेम ॥
मा वद नो हातेम ने, पासम सावण मास।
एणी तेथे बीजरी, थाय गाज अगास ॥
(तो) आहड सावण भादवो, आहो माँ निरधार।
गाजी गरुडी मेउलो, बरसै महना च्यार ॥

कार्तिक शुक्ला एकादशी, मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी, पौष कृष्णा दशमी, माघ कृष्णा एव शुक्ला सप्तमी तथा श्रावण कृष्णा पचमी इन तिथियो मे आकाश मे बिजली हो, मेघ गर्जना हो तो इनके प्रभाव से क्रमश आषाढ, श्रावण, भाद्रपद और आश्विन मे इन चारों महीनो मे बहुत जोर से गर्जना करता हुआ मेह बरसता है।

कार्तिक-मास कृष्णपक्ष

(१)

काली पडवा कातकी, जे बुधवारी आय।
कठेक बिरखा होवसी, बाकी काल बताय।।

कार्तिक कृष्णा प्रतिपदा को बुधवार आ जाय तो इस वर्ष किसी-किसी ही स्थान पर वर्षा होगी, शेष अकाल पडेगा।

(२)

दूज तीज काती बदी, जे विरखा हो जाय।
तो आगे बिरखा बौत है, ऐसौ जोग बताय।।

कार्तिक कृष्णा द्वितीया या तृतिया को वर्षा का रंग हो जाय तो आगामी वर्ष, अधिक वर्षा होगी।

(३)

कातिक बद पाँचम दिना, रिच्छ आदरा जे होय।
अलपवृष्टि व्हैला मही, तृण सग्रहो जोय।।

कार्तिक कृष्णा पचमी को आर्द्रा नक्षत्र हो तो वर्षा कम होगी यह निश्चित है अत आगामी वर्ष के लिये घास सग्रह कर रख ले। अन्यथा घास बिना पशुओ को कष्ट होगा।

(४)

+ काती बद बारस बादल री छाया।
(तो) आसाडे धुर बरसै लो भाया।।

कार्तिक कृष्णा द्वादशी को आकाश मे बादलो के कारण छाया रहे तो आगामी आषाढ (कृष्ण-पक्ष) मास मे वर्षा अवश्य होगी।

+ कार्तिक बारस मेघा दरसै। तो मेघा आसाडे बरसै।।

(५)

कातिक मावस जे मेघा दरसै। सो मेघा आसाड ही बरसै॥

कार्तिक की अमावाश्या को आकाश में बादल दिखाई दे तो आगामी आषाढ मे वर्षा अवश्य होगी।

(६)

+ कातिक मावस देखै जोसी,
रवि, शनि, सोमवार जो होसी।
स्वात नक्षत्रो आयुष योगे,
काल पडे अरु नासै लोगे॥

कार्तिक मास की अमावाश्या को स्वाति नक्षत्र हो, आयुष्य योग हो और रवि, शनि किम्वा मङ्गलवार मे से कोई-सा वार हो तो इस वर्ष अकाल होगा तथा युद्ध आदि भय के कारण प्रजा इधर-उधर भागती फिरेगी।

(७)

स्वाती दीवा ना बलै, विसाखा न खेले गाय।
कै तो धरणीपति मरै, कै समयो निरफल जाय॥

+१ मावस काती मास की, शनि मगल जे आवै।
अन्नज मू घो होवसी, अग्नि घोर लगावै॥

२ रविवार ने आ जाय तो, लडे राजवी लोग।
परजा दुखी हर भात सू, भोगे दुख का भोग॥

३ जुओ जोसी कातिक मास। रवि शनि भोमे जे हो मास।
स्वात योग आयुष तो पास। काल करावै नासानास॥

यदि दीपावली स्वाति नक्षत्र मे न हो, गौ क्रीडा के समय विशाखा नक्षत्र नही हो तो किसी राजा की मृत्यु होगी अथवा इस वर्ष उत्पादन के लिये किया गया श्रम व्यर्थ ही जावेगा।

(८)

* स्वाती दीवा जे बलै, विसाखा खेले गाय।
भडली तो साचूं भणै, वरस सवायो थाय॥

दीपावली के दिन स्वाति नक्षत्र हो और कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा को विशाखा नक्षत्र मे चन्द्रोदय हो तो भडली सत्य ही कहता है कि, इस वर्ष अन्नोत्पादन सवाया होगा।

(९)

रवि शनि मगलवार मह, स्वात आयुष ह्वै जोग।
दीपमालका होय तो, बधै बोत नर रोग॥
छत्र भग परबत गिरै, जड पद महगो होय।
गरभ पडत तिय कटक को, जुद्ध उपद्रव जोय॥

---

* इसके समर्थन मे —

स्वाती दीवा जो बलै, विसाखा खेले गाय।
पृथवी मे सुख ऊपजै, अन्न तृण बोहला थाय॥

इसके विपरीत —

१ स्वाती दीपक जो बरै, खेल विसाखा गाय।
घणा गयन्दा रण चडे, उपजी साख नसाय॥

२ स्वाते दीपक प्रज्जलै, विसाखा पूजे गाय।
लाख गयन्दा धड पडे या साख निरफ्फल जाय॥

दीपमालिका के दिन स्वाति नक्षत्र, आयुष्य योग और रवि, शनि मङ्गलवार मे से कोई-सा वार आ जाय तो भविष्य मे मनुष्यो में रोग फैलेंगे, राजा का नाश होगा, पहाड कट कर गिर पडेंगे, मनुष्य के उपयोग मे आने वाले पदार्थ महगे हों, युद्ध आदि उपद्रवो के भय से व्याकुल महिला-वर्ग के गर्भ गिर जावेंगे।

(१०)

‡ सोम सुक्कर आवे दिवाली। जीवै रक मरै भण्डसाली ॥
शनि मगल आवै दीवाली। मरै रक जीवै भण्डसाली ॥
बुध या गुरु आवै दीवाली। जीतै रक हारै भण्डसाली ॥
रविवारी जे आवै दीवाली। हारै रक जीतै भण्डसाली ॥

दीपमालिका के दिन सोम, बुध, गुरु या शुक्रवार हो तो अनाज सस्ता होगा और रवि, शनि एव मगल होने से अन्न मंहगा एव प्रजा को कष्ट होगा।

(११)

दीपमालिका के वार पर वर्षा ज्ञान

(वर्षा काल में वर्षा-दिन परिमाण)

दिन पचास रविवार रा, सौ दिन सोम सुजान।
दो बीसी दिन मगल तणा, बुध साठ परमाण ॥
गुरु अस्सी भृगु दस बधै, शनि बीस ही होय।
होसी विरखा इत्ता दिना, चौमासे लो जोय ॥

---

‡ इसके विपरीत —

मगलवार की आवै दीवारी।
हँसे करसो रोवे बेपारी ॥

दिवाली के दिन रविवार होने से पचास दिन, सोमवार होने से सौ दिन, मगलवार होने से चालीस दिन, बुधवार होने से साठ दिन, गुरुवार होने से अस्सी, शुक्र होने से नब्बे दिन और शनिवार होने से आगामी वर्षाकाल मे केवल बीस दिन ही वर्षा होगी ।

(१२)

वायु एवं दिशाओं द्वारा वर्षा ज्ञान

दीपमालका पवन विचार । अमावस चवदस तत्सार ।
सन्धि मिले तब दीपक जोय । दीप बुझै तह दुरभिख होय ।।

पूरब केरा वायरा, दीवाली आथण ते होय ।
समयो कहीजे करवरो, ऊन्हाली सरसी जोय ।।

अग्निकोण का वायरा, आथण वाजै वाय ।
साखा पोची नीपजे, भिड जावे गढ राय ।।

दक्खिण दिस वाज्या बुरो, समो विकारी जाण ।
खड अन्न मूंघा करै, मिनखा लावै माण ।।

नैरित पवन भल वाजिया, समयो भलो सुकाल ।
घीणा धान होवै घणा, लडै मरै भूपाल ।।

पिच्छम वाजै वायरो, असाडे वरसै मेह ।
भादरवो कोरो कह्यो, अन पहले सगरेह ।।

वायु कोण को वायरो, जे वाजै सब ही देश ।
साखा पोटे सूखवै, नर नारी कुशले वेश ।।

उत्तर पवन भल वाजिया, इन्द्र पधारै आप ।
घर घर मगलचार ह्वै, पण रोग घणेरो ताप ।।

ईशाण पवन घर ऊपरै, मेह वरसै झड लाय।
मूंग जवार अर बोत गहू, कोठे धान भराय॥

दीवाली के दिन जोर का वायु चलने से जलाये हुए दीपक यदि बुझ जाय तो उस देश मे दुर्भिक्ष होगा। इस दिन सायकाल के समय पूर्व का वायु हो तो खरीफ की साख (फसल) कही श्रेष्ठ और कही नेष्ठ होगी किन्तु रवी की फसल अच्छी होगी। यह वायु, अग्नि कोण का हो तो राजाओ मे युद्ध एव खेती कम होगी। दक्षिण का वायु हो तो दुर्भिक्ष, घास एव अन्न महगा होगा तथा व्याधि फैलेगी। नैऋत्य कोण का हो तो सुभिक्ष, घृतादि पदार्थ, धान्य, घास की उत्पत्ति अधिक होगी, किन्तु इस वर्ष राजा लोग आपस मे लडेगे। पश्चिम का वायु हो तो आषाढ मे वर्षा होगी, किन्तु भाद्रपद मे मेह नही बरसेगा, जिसके कारण अन्न महगा हो जावेगा। वायव्य कोण का वायु हो तो अनाज के सिट्टे निकलने पर फसल सूख जावेगी, किन्तु मनुष्यो मे आरोग्यता रहेगी। उत्तर की वायु हो तो वर्षा अधिक होगी साथ ही विवाहादि मागलिक-कार्य भी इस वर्ष अधिक होगे, किंतु ज्वरादि उपद्रव भी रहेगे। ईशान कोण का वायु हो तो वर्षा की झडियें लगेगी जिसके परिणामस्वरूप दोनो साखे (खरीफ और रवी की फसल) अच्छी होगी।

(१३)

कातिक चौदस मावस्या, चौदस पूनम सग।
जिण वेला चालै पवन, काल पडे दुख द्वद॥

कार्तिक कृष्णा और शुक्ला चतुर्दशाये, अमावास्या एव पूर्णिमा इन चार दिनो मे से किसी भी दिन वायु तेज चले तो इस लक्षण से अकाल पडने की सूचना मिलती है।

इनमे से एक-दो-तीन या चारो दिन ही ऐसा हो तो इसके प्रभावानुसार वैसा ही अकाल पडेगा।

(१४)

दीवाली रा दीया दीटा । काचर बोर मतीरा मीठा ॥

काचर-ककडी, बेर एव मतीरे (तरबूज के समान एक फल) दिवाली तक पक कर मीठे हो जाते हैं ।

(१५)

चित्रा दीपक चेनवैं, स्वाती गोवरधन्न ।
डङ्क कहै हे भड्डली, अथक नीपजै अन्न ॥

दीपावली को चित्रा नक्षत्र हो और दूसरे दिन (गोवर्द्धन पूजा के दिन) स्वाति नक्षत्र हो तो डक्क, भड्डली से कहता है कि, इस वर्ष अन्न बहुत उत्पन्न होगा ।

(१६)

जे चित्रा मे खेले गाय । (तो) निश्चै खाली साख न जाय ॥

कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा गोवर्द्धन पूजा, अन्नकूट गौ-क्रीडा के दिन चित्रा नक्षत्र मे चन्द्रमा हो तो, कृषि द्वारा उपज अच्छी होगी ।

(१७)

दीपमालिका दिया बुझावै । होली झल उत्तर दिस जावै ॥
साडी पूनम दिक्खण वाव । (तो) अन्न बिकैलो आने पाव॥

दिवाली के दिन दीपक वायु के कारण बुझ जावे, होली जलते समय उसकी ज्वाला उत्तर दिशा की ओर हो और आषाढी पूर्णिमा को दक्षिण दिशा का वायु हो तो इन सभी लक्षणो से उस वर्ष फसल अच्छी होने के कारण यह अन्न सस्ता बिकने को सूचित करता है ।

मार्गशीर्ष—मास शुक्लपक्ष

(१)

मिगसर सुद दसमो लखो, रजनो उत्तर वाय।
मेघ गरभ धारण करण, वीज ऋतु अस्नान कराय।।

मार्गशीर्ष शुक्ला अष्टमी की दशमी की रात्रि मे उत्तर दिशा का वायु चलता हो तो आगामी वर्ष, वर्षा काल के लिये मेघ रूपी गर्भ धारण करने वाली स्त्री का बिजली ऋतु-स्नान करा रही है अर्थात् वर्षा उत्तम होगी।

(२)

* मगसर सुद दस्सम तिथि, बारस काती रात।
पौणी पाचम फेर सुण, माघो तिथ ले सात।।
आभो बादल जो दिखावै। (तो)चार तास विरखा लाव।।

मार्गशीर्ष शुक्ला दशमी, कातिक शुक्ला द्वादशी, पौष शुक्ला पञ्चमी और माघ शुक्ला सप्तमी को आकाश मे बादल हो तो आगामी वर्षा काल मे चारो मास वर्षा होगी।

(३)

‡ मिगसर सुद एकादशी रवीवार ने आवै।
कपास सूत वैसाख मे, मूंगो होय बतावै।।
भूने चूके इण दिना, शनीवार जे आय।
परजा नाश विरखा नही ऐसो जोग बताय।।

मार्ग शीर्ष शुक्ला एकादशी को रविवार हो तो कपास,सूत वैशाख मास मे महगे होगे। कदाचित इस दिन शनिवार आ जाय तो वर्षा का अभाव रहने के कारण प्रजा का नाश होगा।

---

* एक स्थान पर मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी मिला है।

‡ वृष्टि-प्रबोध नामक ग्रन्थ मे मार्गशीर्ष शुक्ला एकादशी के स्थान पर शुक्ल पक्ष किंवा कृष्ण पक्ष इस प्रकार का उल्लेख है।

(४)

※ अगहन द्वादसी मेघ असार। तो असाड बरसै अछनाधार ॥

मार्गशीर्ष शुक्ला द्वादशी को आकाश मे बादल छाये हुए हो तो आगामी आषाढ मास मे वर्षा बहुत होगी।

(५)

‡ मिगमर मास बीजल खिवै, आयो जलधर मुद्ध।
होवे गरभ जे मेघ तो, देख जमानो सुद्ध ॥

मार्गशीर्ष मास मे आकाश मे बादल हो, बिजली चमके तो इस लक्षण मे यह समझ लें कि आगामी वर्षा काल का गर्भ रह गया है। अत भावी वर्ष उत्तम रहेगा।

(६)

† मिगसर महिना मायने, तपै न जेठा मूल।
बोले भड्डली एम जो, निपजै अन्न अतूल ॥

※ एक स्थान पर कम वर्षा होना ऐसा उल्लेख मिला है—
मार्ग वदी आसाडं दिन दरसै। सो मेघा भर सावण बरसै ॥

‡ मगसर जो बिजली खिवें, आयो जलह शुद्ध।
हुयो गरभ मत चिन्त कर, म्हैं भाख्यो छे शुद्ध ॥

† जेठा मारग सीस मा, बली तपै जो मूल।
बोले भडली एम जे, निपजे अन्न अतूल ॥

इसके विपरीत —

माह महीना मांह, ज्येष्ठा तपै न मूल।
भद्रबाहु गुरु यू कहे निपजै अन्न अमूल् ॥

मार्गशीर्ष मास में ज्येष्ठा एव मूल नक्षत्र नही तपै तो भड्डली कहते है कि आगामी वर्ष अन्न बहुत होगा ।

(७)

मिगसिर की सक्रान्ति ने, जे विरखा हो जाय ।
थान घणेरो नीपजै, सस्ता मोल बिकाय ।।

मार्गशीर्ष मास की सक्रान्ति के दिन वर्षा हो जाय तो इस लक्षण से आगामी वर्ष, अन्न का उत्पादन अधिक होने से वह सस्ता बिकेगा ।

(८)

सुदी पक्ष की तिथि घटै, मिगसर महीना माय ।
राज ध्वश अरु रुज बधै, भूख मरी फैलाय ।।

मार्गशीर्ष मास के शुक्ल पक्ष की किसी तिथि का घट जाना राज्य-विध्वश, रोगोत्पादक एव उदर-पूर्ति के साधनो मे कठिनाई का द्योतक है ।

(९)

* मिगसर वद के सुद मही, आधे पोह उरै ।
घु वरन भीजे धूर तो, समयो हुय सिरै ।।

मार्गशीर्ष मास के कृष्ण किवा शुक्ल पक्ष अथवा पौष के प्रथम पक्ष मे प्रात काल के समय कुहरा हो तो कृषि उत्तम होगी ।

---

* इस सम्बन्ध में .—

यहां एक स्थान पर धु वरन शब्द मिला है और इसके विपरीत—

मिगसर वद वा सुद मही, आधे पोह उरै ।
धु वर न भीजैं धूल तो करसण काहे करै ।।

मार्गशीर्ष के प्रथम या द्वितीय पक्ष अथवा पौष के प्रथम पक्ष में मिट्टी ओस से गीली न हो तो कृषि करना व्यर्थ है ।

(१०)

जातो मगसर जे मेह बरसावै। धन-धन वो मुल्क केह्लावै।।
पूस बरसिया दूणो होय। माघ सवायो लीजो जोय।।
फागण बरसियो नहि मन भावै। घर मे पडियो धान गुमावै।।

मार्गशीर्ष मास के समाप्त होते होते यदि वर्षा हो जाय तो वह सर्वोत्तम मानी गई है। पौष मे हुई वर्षा से उत्पादन दूना होता है। माघ की वर्षा उत्पादन को सवाया कर देती है और फाल्गुन की वर्षा तो कृषि का सर्वथा नाश ही कर देती है जिसके परिणामस्वरूप जो कुछ अन्न घर मे रखा है उसे भी खा-पी कर खतम कर देना पडता है।

मार्गशीर्ष मास—कृष्ण पक्ष

(१)

पडवा मिगसर मास नी, कृष्ण पक्ष मे आय।
गाज बीज विरखा नही, गरभ रह्यो छै भाय।।

मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा को आकाश मे बादल, गजना, बिजली चमकना, वर्षा होना आदि हो तो इन लक्षणो से भावी वर्ष के लिये वर्षा का गर्भ स्थिर है। अर्थात् आगामी वर्षाकाल मे अच्छी वर्षा होगी।

(२)

चौथ पचमी कृष्ण को, मिगसर महिना माय।
जे बादल हो जाय तो, जल थल एक कराय।।

मार्ग शीर्ष कृष्ण चतुर्थी किम्वा पचमी को आकाश मे बादल हो तो आगामी वर्षाकाल मे बहुत वर्षा होगी।

(३)

मिगसर वद पाचम दिना, घटा होय चहूँ ओर।
बरसत बिरखा काल मे, चार मास जल जोर ॥

मार्गशीर्ष कृष्णा पचमी को आकाश मे चारो ओर बादलो की घटाएँ छाई हुई हो तो आगामी वर्षाकाल के चारो महीनो मे बहुत जल बरसेगा।

(४)

❀ मिगसर पाचम मेघाडम्बर। तो बरसे सगलो सम्वत्सर ॥

मार्गशीर्ष कृष्णा पंचमी को आकाश मे घटाटोप बादलों का छा जाना आगामी वर्ष वर्षा अच्छी होने की शुभ सूचना है।

(५)

‡ मगसर वद आठम घटा, बीज समेती जोय।
तो सावण बरसै भलो, साख सवाई होय ॥

मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी को आकाश मे बिजली सहित बादलो की घटाएँ दिखाई दे तो आगामी श्रावण मास मे इतनी वर्षा होगी कि, वर्षा द्वारा उत्पादित अन्न सवाया उत्पन्न होगा।

(६)

चौथ अन्धेरी असलेखा होय। पाचम लेवो मघा ने जोय ॥
पूर्वाफाल्गुणी जे छठ ने आवै। मिगसर महिना माय बतावै ॥
तो असाड मे विरखा होसी। पतडो अब क्यू देखे जोशी ॥

❀ अगहन पचमी मेघ घटा। भरि सावन कौन मेटा ॥

‡ एक स्थान पर मार्गशीर्ष कृष्णा के स्थान पर इसकी हिन्दी टीका करते हुए शुक्ल पक्ष का उल्लेख किया हुआ भी मिला है।

पाठान्तर—मगसर तणी जे अस्टमी, बीज बादला होय।
सावण बरसै भडुली, साख सवाई जोय ॥

मार्गशीर्ष कृष्णा चतुर्थी को अश्लेषा नक्षत्र हो या पचमी को मघा नक्षत्र हो किम्वा षष्ठि को पूर्वा फाल्गुणी नक्षत्र हो तो इन तीनो मे से किसी भी दिन मे यह योग मिल जाय तो बिना पचाग देखे ही कहा जा सकता है कि आगामी आषाढ मे वर्षा होगी।

(७)

मिगसर वद आठम दिना, स्वाती चित्रा जे होय।
इणदिन बादल हुवै रेहवै, तो समयो लीजो जोय॥
असाड महीना मायने, जद स्वाती चित्रा आवै।
उण दिना विरखा होवसी, परजा आनन्द मनावै॥

मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी को स्वाति किम्वा चित्रा इन नक्षत्रो मे मे कोई-सा नक्षत्र हो और इस दिन आकाश मे बादल हो जाय तो आगामी आषाढ मास मे जिस दिन यह नक्षत्र होगे उस दिन वर्षा होगी।

(८)

*मिगसर वद आठम जे घन दरसे, सो मेघा भर सावण बरसै॥

मार्गशीर्ष कृष्णा अष्टमी को आकाश मे बादल, बिजली आदि दिखाई दे तो आगामी श्रावण मे वर्षा होगी।

(९)

मगसर मावस क्रूर हो वार। अलप मेह अर देश विडार।
महि मे होवै तनिक अनाज। करसण को बिगडे सहु काज॥

मार्गशीर्ष की अमावाश्या को कोई क्रूर वार आ जाय तो आगामी वर्षा काल मे वर्षा कम होने के कारण अन्न का उत्पादन कम होगा, कृषि करने के कार्यों मे बाधा आवेगी, क्योकि इस वर्ष देश मे कोई विघ्न होगा।

---

* मार्ग बदी आठैं घन दरसै। तो मग्घा भरि सावण बरसै॥

(१०)

कृष्ण पक्ष की तिथि बढ़ै, मिगसर महिना माय ।
तो जुद्ध निमन्त्रण होवसी, परजा दुखी हो जाय ।।

मार्गशीर्ष के कृष्ण पक्ष की तिथि बढने से भविष्य मे युद्धादि के कारण प्रजा को कष्ट होगा ।

पौष मास—शुक्ल पक्ष

(१)

पोस सुदो चौथ दिन, रात दिना लो जोय ।
आठ पोर का ध्यान सू , समयो कैसो होय ।।

आभै बादल बीजली, गाज छाट जे होय ।
मत्स्य धनुष कु डल हुया, रह्यो गरभ लो जोय ।।

छ महीना पनरे दिना, चौथ सावण जो आत ।
विरखा आछी होवसी, भर चौमासे बरसात ।।

पोष शुक्ला चतुर्थी को दिन-रात पहरा लगाकर आकाश को भली भाँति से देखे । इस दिन, आकाश मे दिन या रात्रि मे किसी भी समय इन्द्र-धनुष, मत्स्य, कुण्डल, बादल, बिजली, गर्जना एव बू दाबादी दिखाई दे तो ये गर्भ धारण के लक्षण है । केवल इस एक ही दिन ध्यान पूर्वक देखने से आगामी वर्ष की वर्षा का पता लग जाता है । यदि इस दिन वर्षा के लिये गर्भ धारण हो जाय तो आगामी श्रावण कृष्णा चतुर्थी जो इस दिन से ठीक साढे छ महीने बाद आती है, उस दिन वर्षा होगी । इतना ही नही, सम्पूर्ण वर्षा काल के चारो महीनो मे वर्षा होगी ।

(२)

पोस मास की पचमी, पख उजाले होय।
वायु बादल बीजली, रिछ शतभिखा के होय ॥
गरभ रह्यौ विरखा तणो, वायू सास्त्र जतावै।
कृष्णा असाडो चौथ सू, सात रात बरसावै ॥

पौष शुक्ला पञ्चमी को शतभिषा नक्षत्र हो और इस दिन वायु, बादल एव बिजली की चमक दिखाई दे तो इस लक्षण से वर्षा का गर्भ रहना है। इसके परिणाम स्वरूप आगामी आषाढ़ कृष्णा चतुर्थी से वर्षा प्रारम्भ होकर सात दिन-रात तक जम जाती है।

(३)

पौस ऊजली पचमी, शीतल वायु होय।
घण गरजै बिजली खिवै, उदै गरभ लो जोय ॥

पौष शुक्ला पचमी के दिन शीतल वायु बहे, आकाश मे बादलो की गजना हो, बिजली चमके तो इन लक्षणो से निश्चय ही गर्भ का उदय हो गया है, ऐसा समझ ले।

(४)

पोस मास की पचमी, होय उजाले पाख।
बर्फीलो वायु चल्या, आछो नेपे साख ॥

पौष शुक्ला पचमी को बर्फ से युक्त (शीतल) वायु हो तो आगामी वर्ष के हित मे गर्भ पीडा करता है। अर्थात् वर्षा अच्छी हगी और इसके परिणामस्वरूप फसल अच्छी होगी।

(५)

पोस उजाले पाख की, पांचम लीजो जोय।
बादल ह्वै अर हिम पडे, भलो चौमासो होय॥

पौष शुक्ला पंचमी के दिन आकाश में बादल हो, बर्फ गिरे तो आगामी वर्षा-काल में अच्छी वर्षा होगी।

(६)

छठ उजाली पौस की, जे बिरखा हो जाय।
(तो) सावण महिना मायने, अवसै विरखा थाय॥

पौष शुक्ला षष्ठी के दिन वर्षा हो जाय तो आगामी श्रावण में अवश्य वर्षा होगी।

(७)

पौस सुदी छठ ग्यारस, जल रस जाणिय,
घडी सम्पूरण होय तो यू पेहचाणिये।
मावस घडी सु थोडी जाणो पण्डिता,
मास असाडहि बरसे जलजु अखण्डिता॥

पौष शुक्ला षष्ठी, एकादशी, सम्पूर्ण घडी हो और अमावास्या थोडी घडी हो तो आषाढ मे अखण्डित वर्षा होगी।

(८)

पौस सुदी सातम दिना, जे विरखा आ जाय।
(तो) सुद सावण की सातमे, विरखा अवस कराय॥

पौष शुक्ला सप्तमी के दिन यदि वर्षा हो तो श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन अवश्य वर्षा होगी।

(९)

पौस सुदी सातमे, रिच्छ रेवनी होय।
आठम होवै अस्वनी, नवमी भरणी जोय॥
तीनू दिन के एक दिन, मेघ बीज चमकावै।
महिना च्यारू बरससी, कन्ता क्यू घबरावै॥

पौष शुक्ला सप्तमी को रेवती, अष्टमी को अश्विनी एव नवमी को भरणी नक्षत्र हो तो ज्योतिष-शास्त्र मे पारगत महिला अपने कृषक पति से कहती है कि, इनमें से किसी एक दिन या तीनों दिनों मे बादल बरसना, बिजली चमकना आदि लक्षण हो तो आगामी चातुर्मास मे वर्षा होने की सूचना मिलती है, अत आप क्यो घबराते हो।

(१०)

पौस सुदी सातम आठम । अथवा देखो आगे नव्वम ।।
गाज बीज बादल होवै । उपजै अन्न घणो सुख जोवै ।।

पौष शुक्ला सप्तमी, अष्टमी एव नवमी इन दिनों मे आकाश में बादल हो, बिजली गर्जना करे तो यह निश्चित है कि आगामी वर्ष यथा समय वर्षा हो जाने से प्रजा के सारे कार्य भली प्रकार से सम्पन्न होगे।

(११)

†पौस ऊजली सत्तमी, आठ्यू नौमी गाज ।
निस्चै बिरखा होवसी, सारा सरसी काज ।।

पौष शुक्ला सप्तमी, अष्टमी एव नवमी इन दिनो मे आकाश मे बादल हो, बिजली गरजना करे तो इन लक्षणो से यह निश्चित है कि आगामी वर्ष यथा समय वर्षा हो जाने मे प्रजा के सारे कार्य भली प्रकार से सम्पन्न हो जावेगे।

(१२)

नवमी अर एकादशी, पौस सुदी के माय।
बादल गरजै उगूण मे, तो घास नष्ट होजाय ।।

---

† पूस उजंली सप्तमी, अष्टमी नौमी गाज ।
मेघ होय तो जाण लो, अब सुभ होसी काज ।।

पौष शुक्ला नवमी और एकादशी के दिन बादलों का गर्जना पूर्व दिशा में हो तो इसके परिणाम स्वरूप तृणादि नष्ट हो जावेंगे।

(१३)

पौस सुदी एकादशी, रोहण आवै ले' र।
जे विरखा हुय जाय तो, आगे विरखा ढेर॥

पौष शुक्ला एकादशी के दिन रोहिणी नक्षत्र हो और इस दिन वर्षा हो जाय तो आगामी वर्षा काल मे अच्छी वर्षा होगी।

(१४)

‡सुद चवदस ह्वै पोस की, बिजली चमकै जोर।
तो असाड अन्धारा पाख मे, बादल बरसै घोर॥

पौष शुक्ला चतुर्दशी को आकाश मे जोरो के साथ बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो आगामी आषाढ मास के कृष्ण पक्ष मे बहुत वर्षा होगी।

(१५)

पूनम महिना पौस को, मेह परगट हुय जाय।
चन्दा सू दिक्खण उत्तरे, बिजली चमकै आय॥
इण दिन जे नखत्त ह्वै, वणी नखत के माय॥
विरखा रुत के मायने, निस्चै विरखा थाय॥

पौष मास की पूर्णिमा के दिन आकाश मे बादल प्रकट हो और चन्द्रमा से दक्षिण-उत्तर बिजली चमके तो इस दिन जो नक्षत्र होगा उसी नक्षत्र मे वर्षा ऋतु मे वर्षा होगी।

---

‡ लौकिक मे यहाँ श्रावण मास के कृष्ण पक्ष की भी किम्वदन्ती है।

—जयशङ्कर देवशङ्कर शर्मा

(१६)

पूनम महिना पोस की, शशि दस्टो नहिं आय ।
बिजली दीखै खोवती, उत्तर दिक्खण मांय ।।
घटाटोप आभो हुवै, ऐ लक्खन जे होय।
तो सावण मासे मावसे, मेह घणेरो होय ।।

पौष मास की पूर्णिमा के दिन आकाश मे बादलो के घटाटोप के कारण चन्द्रमा दिखाई न दे, उत्तर-दक्षिण की वायु हो, बिजली चमकती हो तो आगामी श्रावण मास की अमावाश्या के दिन जोरदार वर्षा होगी।

(१७)

पूनम दुतिया पोस की, आभै बिजली जोय ।
घटाटोप बादल हुया, धान घणेरो होय ।।

पौष मास की पूर्णिमा और द्वितिया के दिन आकाश मे बादलों का घटाटोप छाया हो, बिजली चमकती दिखाई दे तो इन लक्षणों से यह पता लग जाता है कि, अन्न-धन की वृद्धि होगी ।

(१८)

पोस मास बिजली गिरि जाई । बादल डोले पुरवाई ।।
गरभजु लच्छण आछो जाण ।
बरसै सावण मे घन आन ।।

पौष मास मे बादल हो, बिजली कडकती हो और पूर्व दिशा का वायु हो तो ये वर्षा के गर्भ के लिए शुभ लक्षण हैं। परिणाम स्वरूप श्रावण में अच्छी वर्षा होगी ।

(१९)

पोस मास बिजली खिवै, वाजै पूरब वाय ।
तो जाणी जे भड्डली, जल हर बान्धो आय ।।

पौष मास में पूर्व दिशा का वायु हो, आकाश में बिजली चमकती हो तो भड्डली को सम्बोधन करते हुए कवि कहते हैं कि, अब अभी से महादेवजी द्वारा बान्ध दिये जाने के कारण, वर्षा काल में यहाँ से आगे न जाकर यहीं आकर बरसेगा ।

(२०)

पोस माघ के मायने, चाले दिखणादी वाय ।
(तो) सावण महिना मांयने, आछो जोग बणाय ॥

पौष और माघ महीने में यदि दक्षिण दिशा का पवन चले तो इसके प्रभाव से श्रावण मास के दिन अच्छे रहेंगे, अर्थात् यह वर्षा एवं कृषि के लिये अच्छा योग है ।

(२१)

दिखणादी कुलक्खणी, (पण) पो माह मे सुलक्खणी ॥

दक्षिण दिशा का वायु अन्य दिनों में तो अच्छा नहीं माना जाता किन्तु यदि यह पौष माघ के महीनो मे हो तो उत्तम माना जाता है ।

(२२)

पोस महीना मायने, गाज बीज बादल हुवै ।
(तो) चौमासे असाड मे, अधकी बिरखा हुवै ॥

पौष महीने में बादल होना, बिजली चमकना एवं गर्जना होना इन लक्षणो से आगामी आषाढ़ मास में अधिक वर्षा होगी ।

(२३)

ठण्ड पड़ै पालो जमै, पोस माघ के माय ।
रात्यू टहुकै लूकड़ी, तो सही जमानो थाय ॥

पौष माघ के महीनों में इतनी सर्दी पड़े कि पानी जम जाय ।

रात के समय जंगल में से लोमड़ियों की आवाज सुनाई दे तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि इस वर्ष फसल अच्छी होगी।

(२४)

धुर बरसाले लू कडी, ऊंचो बिल्ल खिरणन्त।
भेली होयर खेल करै, तौ जलधर अति बरसन्त॥

वर्षा काल मे वर्षा का आगमन जान कर लोमडियें अपना बिल ऊचाई पर ही खोदती हैं। ऐसा विदित हो जाय अथवा इनका समूह एक स्थान पर एकत्रित हो परस्पर विनोद (खेल) करे तो ये लक्षण भी अच्छी वर्षा होने को सूचित करते हैं।

(२५)

पोही पूनम देख लो, बादल बीजल गाज।
धूहर ठण्ड अर पालौ पडै, निपजै सातू नाज॥

पौष मास की पूरिणमा को आकाश मे बादलो का होना, बिजली चमकना, गर्जन होना, धूंहर पडना, सर्दी (ठण्ड) होना और पाला पडना (बर्फ जम जाना) ये लक्षण हो तो यह भविष्य मे अच्छी वर्षा होने की सूचना है। इस वर्ष समस्त अन्न भली भाँति उत्पन्न होगे।

(२६)

पोस महीने सक्रान्ति देखो। वार कोण से आयो पेखो।
इण दिन वार रवि जे आवै। दूणा दामा धान बिकावै॥
शनिवार हो तो तिगणो मोल। मगलवार चौगणो खोल॥
वार सोम गुरु जे आवै। तो आधा दामा धान बिकावै॥

पौष मास की सक्रान्ति के दिन रविवार हो तो अन्न का मूल्य दूना, शनिवार हो तो तिगुना, मगल हो तो चौगुना और सोमवार हो तो या इस दिन गुरुवार हो तो इन दो वारो के कारण अन्न का मूल्य आधा ही रह जावेगा।

(२७)

पोस सक्रान्ति जे हो रवि वारिया,
धानहि तिगणो लाभ मास षट कारिया।
शनिवार ते लाभ चौगणो धान ते,
छटे मास मह जान कहूँ मैं मान ते ॥

पौस मास की सक्रान्ति के दिन रविवार हो तो छः महीने में अन्न का मूल्य तिगुना होगा और यदि इस दिन शनिवार हो तो इसी अवधि मे अन्न का मूल्य चौगुना हो जावेगा।

(२८)

भृगुवारी ह्वै सकरत, सस्तो धान बिकाय।
जे आवै सुरगुरु दिना, दाम सू आधो थाय ॥

पौस मास की सक्रान्ति के दिन यदि शुक्रवार हो तो अन्न सस्ता बिकेगा। कदाचित इस दिन गुरुवार आ जाय तो अन्न आधे दामो पर बिकेगा।

पौष मास कृष्ण पक्ष

(१)

पोष वदी पडवा दिना, जे होवै बुधवार।
नफो धान सू चौगुणो, बरसै ना जलधार ॥

पौष कृष्णा प्रतिपदा के दिन यदि बुधवार आ जाय तो वर्षा-ऋतु मे वर्षा का अभाव रहने से अन्न का मूल्य चौगुना हो जावेगा।

(२)

पोष पैले पाखडे, जे पड़वा बुध होय।
बिमणो तिगणो चौगणो, कईक अवसर जोय ॥

पौष कृष्णा प्रतिपदा के दिन बुधवार आ जाय तो कभी-कभी ऐसा अवसर आ जाता है कि अन्न-संग्रह करने से दूना, तीन गुना ही नहीं यहां तक कि चोगुना लाभ भी हो जाता है।

(३)

पोष वदी पडवा दिने, जो रोहण आ जाय।
अन्न मूंधो राजा लडै, सात महीना मांय ।।

पौष कृष्णा प्रतिपदा के दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो सात महीनों के अन्दर अन्दर ही लडाई छिड जावेगी। इस अवसर पर संग्रह किया हुआ अन्न लाभदायक सिद्ध होगा।

(४)

कृष्णा पंचमी पोस की, मंगल वारी होय।
अन्न घणेरो नीपजै, बिरखा आछी होय ।।

पौष कृष्णा पंचमी के दिन मंगलवार आ जाय तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होने के परिणाम स्वरूप बहुत अन्न उत्पन्न होगा।

(५)

कृष्णा पंचमी पोस की, भोमवार जे आय।
जलधर बिरखा कर दिया, पुहुमी अन्न न समाय ।।

पौष कृष्णा पंचमी को मंगलवार हो और इस दिन वर्षा हो जाय तो इतना अन्न उत्पन्न होगा कि अन्न-भंडार भर जावेंगे।

(६)

पोस अन्धारी छट्ठ दिन, आभै बरसै मेह।
भादू वद के मायने, अवसै मेह करेह ।।

पौष कृष्णा षष्ठि के दिन यदि वर्षा हो तो आगामी भाद्रपद के कृष्ण पक्ष मे अवश्य वर्षा होगी।

(७)

पोष अन्धारी सत्तमी, बिन जल बादल् जोय।
तो सावरण सुद पूनम दिनां, अवसै विरखा होय ॥

पौष कृष्णा सप्तमी के दिन बादल हो किन्तु मेह नहीं बरसे तो इस लक्षरण से यह निश्चित है कि श्रावण शुक्ला पूर्णिमा के दिन अवश्य वर्षा होगी।

(८)

* पोष वदी जो सातमे, जलधर ना बरसेह।
तो आदरा में बरस कर, जल्-थल एक करेह ॥

पौष कृष्णा सप्तमी के दिन यदि मेह नहीं बरसे तो सूर्य जब आर्द्रा नक्षत्र पर आवेगा तब इतनी वर्षा होगी कि जल एवं स्थल एक हो जावेंगे।

---

* इससे मिलती-जुलती कुछ अन्य उक्तियाँ निम्न हैं :—

पोस अन्धारी सप्तमी, जे घरण मह बरसेह।
तो आदरा मे भडुली जल थल एक करेह ॥१॥

पोस मास नी सातमे, नभै पारणी नव जोय।
तो बरसै आदरा सही, जल्-थल एकज होय ॥२॥

पोस अन्धारी सत्तमी, जे नहिं बरसे मेह।
तो आदरा बरसे सही, जल-थल् एक करेह ॥३॥

पोस अन्धारी सत्तमी, जे घरण नी बरसेह।
तो आदरा माहे आदरै, जल-थल एक करेह ॥४॥

पूस अन्धारी सत्तमी, जो पानी नहिं देह।
तो आदरा बरसे सही, जल-थल् एक करेह ॥५॥

(९)

पोष अन्धारी सत्तमी, बिन जल आभा छाहि ।
सावण सुद सातम दिने, जलधर दीना वाहि ॥

पौष कृष्णा सप्तमी के दिन बादल केवल गर्जना ही करे और बरसे नहीं तो श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन अत्यन्त वर्षा होगी ।

(१०)

पोष वदी सातम दिना, बिन जल वादल छाय ।
सावण सुद सातम दिना, बरसत मेह उछाह ॥

पौष कृष्णा सप्तमी के दिन यदि बादल हो और बरसे नही तो आगामी श्रावण शुक्ला सप्तमी के दिन वर्षा जोरो से होगी ।

(११)

पोष वदी जे सातमे, आभ बीजली छाय ।
तो सावण सुद पूनमे, निहचै विरखा थाय ॥

पौष कृष्णा सप्तमी के दिन यदि आकाश मे बिजली चमकती हुई दिखाई दे तो यह निश्चित है कि आगामी श्रावण की पूर्णिमा को अवश्य वर्षा होगी ।

(१२)

पोस अन्धारी सत्तमी, स्वाती रिच्छ जो होय ।
सुभिच्छ छेम आरोग्य ह्वै, संसै करो न कोय ॥

पौष कृष्णा सप्तमी के दिन यदि स्वाति नक्षत्र हो तो वर्षा काल मे इतनी वर्षा होगी कि, जिसके कारण सुभिक्ष होगा और प्रजा में क्षेम एव आरोग्य रहेगा ।

(१३)

अन्धारी सातम जदी, पोस महीने माय।
घण गरजे बिरखा हुवै, आधी रात बिताय॥
बिनदेख्या पत्रे केह्वो, बण्यो आछो जोग।
चौमासे बिरखा घणी, आणन्द माणे लोग॥

पौष कृष्ण सप्तमी की आधी रात को बादलो की गर्जना हो, वर्षा हो तो बिना पचाग देखे ही कह दो कि, यह उत्तम योग बन गया है। इसके परिणाम स्वरूप आगामी वर्षाऋतु में इतनी वर्षा होगी कि, लोग प्रसन्न हो जावेंगे।

(१४)

पोषवदी आठम दिना, जे नहि बरसे मेह।
सूरज आदरा आवियां, इन्दर जोर करेह॥
रात पड्या गाजै कदास, इणादिना के माय।
तो इन्दर परसन हुवै, च्यार मास बरसाय॥

पौष कृष्ण अष्टमी के दिन यदि वर्षा न हो तो सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आने पर वर्षा होगी। यदि इस दिन रात के समय मे बादल गर्जना करे तो वर्षा काल के चारों मास मे वर्षा होगी।

(१५)

पोस वदी दसमो दिने, वादल चमकै बीज।
पूनम मावस सावणी, जल बरसै घरि खीज॥

पौष कृष्ण दशमी के दिन आकाश में बादल हो, बिजली चमकती हो तो आगामी श्रावण मास की अमावास्या एवं पूर्णिमा को इतनी वर्षा होगी, मानो इन्द्रदेव क्रुद्ध हो गये हों।

(१६)

पोस मास दसमी अँधियारो। होय सघन घन भय अधिकारी।
श्रावण बदि दसमो के दिवसै। भरकै मेघजु अधिको बरसै।।

पौष मास के कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन आकाश में अत्यन्त काली-काली घटाएँ छाई हुई हों तो आगामी श्रावण कृष्णा दशमी के दिन अत्यन्त वर्षा होगी।

(१७)

पौस मास दसमी अँधियारी। बदली घोर होय अँधिकारी।।
सावण वद दसमो के दिवसै। भरै मेघ च्यारूं दिश बरसै।।

पौष कृष्णा दशमी के दिन आकाश मे बादलों की काली-काली घनघोर घटाएँ छाई हुई रहे तो श्रावण मास की कृष्णा दशमी को चारों दिशाओ मे अत्यन्त वर्षा होगी।

(१८)

पोस वदो दसमो दिना, वादल् बिजली जोय।
भादवडे री बारसै, बोहली विरखा होय।।

पौष कृष्णा दशमी के दिन आकाश मे बादल हो और बिजली चमके तो आगामी भाद्रपद कृष्णा द्वादशी को बहुत वर्षा होगी।

(१९)

पोस वदी दसमी दिने, वादल् चमकै बीज।
तो बरसै भर भादवै, होय अनोखी तीज।।

पौष कृष्णा दशमी के दिन आकाश मे बादल हो, बिजली चमके तो भाद्रपद मास भर वर्षा होती रहने के कारण इस महीने में होने वाले तीज के त्यौहार का अपूर्व आनन्द आवेगा।

(२०)

† पोह् दसम जे मेह् सम्भारे । (तो) बरसै भादरवै अंधियारे ॥

यदि पौष मोम की दशमी को आकाश मे घनघोर बादल हो तो आगामी भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष में वर्षा होगी ।

(२१)

कृष्णा दशमी पोस की, जे बरसै मझरात ।
भादरवं जल रेलसी, साची मानो बात ॥

पौष कृष्णा दशमी को आधी रात के समय वर्षा हो तो आगामी भाद्रपद महीने मे बहुत वर्षा होगी ।

(२२)

कृष्णा दशमी पोस को, रिच्छ बिसाखा जोय ।
रात दिन कोई समै, विरखा आछी होय ॥

पौष कृष्र ा दशमी के दिन, दिन मे या रात में किसी समय विशाखा नक्षत्र आ जाय तो आगामो वर्षा काल में अच्छी वर्षा होगी ।

(२३)

* पोस अंधारी तेरसै, चहुं दिस बादल् होय ।
तो बरसै भर भादवै, साख सवाई होय ॥

पौष कृष्णा त्रयोदशी को चारो दिशाओ मे बादल हो तो भाद्रपद मे इतनी वर्षा होगी कि, जिसके फलस्वरूप खेती सदा से मवाई होगी ।

---

† इसमे कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष का स्पष्टीकरण नही हुआ है ।

* इसके विपरीत —

पोस अंधारी तेरसै, चहुं दिस बादल होय ।
मावस पून्यू सावणू, मेह घणेरो होय ॥

(२४)

पोस वदी तेरस चवदस । बिनजल बादल होवै चहुँ दिस ॥
तो सावण सुद पूरणमासी । इन दिन मेह घणेरो आसी ॥

पौष कृष्णा त्रयोदशी किम्वा चतुर्दशी को वर्षा तो न हो किन्तु आकाश बादलो से ढका हुआ हो तो श्रावण शुक्ला पूर्णिमा को बहुत वर्षा होगी ।

(२५)

तेरस चवदस मावसं, पोस महीनो होय ।
जे विरखा हो जाय तो, सिरै जमानो होय ॥
ए लक्खण बण जाय तो, सुख तीनू मिल जाय ।
राखी पून्यू के दिना, निश्चै विरखा थाय ॥

पौष कृष्णा त्रयोदशी, चतुर्दशी एवं अमावाश्या के दिन यदि वर्षा हो जाय तो प्रजा मे तीनो सुख-शान्ति समृद्धि और स्वास्थ्य-की वृद्धि होती है तथा रक्षा-बन्धन (श्रावणी पूर्णिमा) के दिन निश्चय ही वर्षा होगी ।

(२६)

सोम गुरु बुध सुक्कर वारे । पोसी मावस करो विचारे ॥
अन्न घणो व्है लेवे ना कोई । जे लेवे तो घाटो होई ॥

पौष कृष्णा अमावाश्या के दिन सोमवार, बुधवार, गुरुवार अथवा शुक्रवार मे से कोई सा एक वार आ जाय तो अन्न इतना उत्पन्न होगा कि सस्तेपन के कारण कोई खरीद कर संग्रह नही करेगा । कदाचित किसी ने खरीद कर संग्रह कर ही लिया तो उसे हानि होगी ।

(२७)

‡ सोम सुक्र ने सुर गुरु, पौष अमासे होय।
घर-घर होय अधामरणा, बुरा न दीसै कोय॥

पौषी अमावाश्या के दिन सोम, गुरु और शुक्रवार में से कोई सा वार हो तो मेघ बरस कर चारो दिशाओ मे आनन्द मङ्गल कर देता है।

(२८)

रवि शनि मंगल तीनू वारे। पुख पुनर्वसु पूरवाखारे॥
जे पोसी मावस्या थाय। सेरी तोले धान बिकाय॥

पौष मास की अमावाश्या के दिन रवि, शनि, एव मगलवार मे से कोई सा वार आ जाय और उस दिन पुष्य, पुनर्वसु तथा पूर्वाषाढ़ा मे से कोई भी नक्षत्र हो तो अन्न अत्यधिक मँहगा हो जावेगा।

(२९)

पौष वदी मावस दिना, रवि शनि मगल्वार।
परजा मे भौ ऊपजै, धान तेज निरधार॥

पौष कृष्णा अमावाश्या के दिन रवि, शनि किम्वा मङ्गल मे से कोई वार आ जाय तो प्रजा मे भय की वृद्धि होगी और अन्न मँहगा हो जावेगा।

(३०)

दीत शनि अर मगलै, पोपी मावस होय।
बिवणो तिमणो चौगणो, धानज मूंघो होय॥

---

‡ पाठान्तर :—

सोम शुक्र सुरगुरु दिवस, पौस अमावस होय।
घर-घर बजै बधावनो, दुखी न दीखै कोय॥

पौष कृष्णा अमावास्या को शनिवार, रविवार किंवा मंगलवार इनमें से कोई एक वार आ जाय तो अन्न इतना मँहगा हो जावेगा कि दूने तीन गुने तो क्या चौगुने तक दाम हो जावेंगे ।

(३१)

सोमां सुक्रा सुरगुरा, पोसी मावस †होय ।
घर घर होय बधामणा, बुरो न स्वप्ने होय ॥

पौष कृष्णा अमावास्या के दिन सोमवार, गुरुवार किम्वा शुक्रवार मे से कोई एक आ जाय तो यह शुभ शकुन है । इसके कारण घर-घर में बधाइये-आनन्दोत्सव मनाये जावेंगे और जन साधारण प्रसन्नता पूर्वक रहेगा ।

(३२)

पूरवाखाडा जेठ नखत, पोसी मावस होय ।
वार क्रूर आ जाय तो, निश्चै दुरभिख होय ॥

पौष मास की अमावास्या के दिन पूर्वाषाढा या ज्येष्ठा नक्षत्र हो और इस दिन कोई क्रूर वार आ जाय तो यह निश्चित है कि आगामी वर्ष निश्चय ही दुर्भिक्ष होगा ।

(३३)

पोसी मावस के दिनां, नखत जेठा जे होय ।
परजा रोग दुख भोगवै, अन्न जु मूघो होय ॥

---

† सोम शुक्र रु सुरगुरु, पोष अमावस होय ।
घर-घर होय बधामणा, लोग सुखी सहु होय ॥१॥
घर-घर बजै बधावणा, दुखी न दीखै कोय ॥२॥

पौष कृष्ण अमावास्या के दिन ज्येष्ठा नक्षत्र होने के कारण प्रजा में रोगों की वृद्धि होगी, कष्ट बढ़ेगा और अन्न मँहगा हो जायेगा।

(३४)

पोसी मावस के दिना, उतराखाडा होय।
घास अर धान मूंघो हुवै, निजरा लेबो जोय॥

पौष कृष्णा अमावस्या के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र हो तो इसके फलस्वरूप घास एवं अन्न महंगा होगा।

(३५)

पोषी मावस के दिना, मूल नखत जो होय।
बाद्दल जे गरजन करें, समयो आछो होय॥

पौष मास की अमावास्या के दिन मूल नक्षत्र हो और इस दिन बादलो की गर्जना हो तो समय पर उत्तम वर्षा होने के कारण फसल अच्छी होगी।

(३६)

पूसी मावस मूल व्है, च्यारू दिस मैव्है वाय।
निहचै बान्धो झूपडा, विरखा हुवे सवाय।

पौष मास की अमावास्या के दिन मूल नक्षत्र हो और वायु चारों दिशाओ मे बहता हो तो कवि कृषक को अग्रिम सूचना देता है कि तुम निश्चिन्त होकर अपने झोंपडों का निर्माण करो। इस लक्षण से वर्षा-ऋतु मे अच्छी वर्षा होगी।

(३७)

†काहे पण्डित पढि पढि मरो। पूसी मावस की सुधि करो॥
मूल बिसाखा पूरवाषाढ। झूरा जानो बहिरे ठाड॥

---

† यह उपरोक्त सख्या ३५ और ३६ की उक्तियों के विपरीत है।

हे पण्डितो ! शास्त्र की पुस्तकों को पढ़ कर क्यों मग़ज मारी करते हो। आप तो पौष मास की अमावास्या की ओर लक्ष्य करो। इस दिन यदि मूल, विशाखा अथवा पूर्वाषाढा में से कोई भी नक्षत्र होगा तो निश्चय समझ लो कि आगामी वर्ष, वर्षा का अभाव रहेगा और सूखा अर्थात् अकाल पड़ेगा।

(३८)

मूल नखत सूं भरणी तलक, जे बादल हो जाय।
सूरज आदरा आवियां, विसाखा तक बरसाय॥
जेता नखत बादल हुवै, ते तो मेहुलो होय।
घड़ी पलक हिसाब सू, विरखा लेवो जोय॥

पौष मास में मूल नक्षत्र से लगाकर भरणी तक इन ग्यारह नक्षत्रो में लगातार बादल हों तो जिन दिनों मे सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवेगा उन दिनों में आर्द्रा से लगा कर विशाखा तक मेह बरसेगा। नक्षत्रो के दिन से इस प्रकार समझें कि मूल से आर्द्रा, पूर्वाषाढ से पुनर्वसु उत्तराषाढा से पुष्य, इस क्रम से वर्षा होगी। नक्षत्र जितने घड़ी रहा होगा उतनी ही घड़ी उस वर्षा वाले नक्षत्र के दिन वर्षा होगी।

(३९)

स्वात रिच्छ जे पोस मे, ज्यू बरसै त्यूं बरसैगो।
पोस स्वात मे जल नहिं, तो जगत बिना जल तरसैगो॥
च्यार पाद नखत का, महिना च्यार चौमास है।
जी चरणां छाटा पड़ें, वी महिनो बिरखा हुवै॥

पौष मास मे जिस दिन स्वाति नक्षत्र हो उस दिन, दिन भर या नक्षत्र के प्रथम चरण अथवा द्वितीय चरण आदि जिस चरण मे वर्षा हो तो वर्षा काल के समस्त चारो महीने या जिस चरण में वर्षा हुई है उस हिसाब से उसी महीने में (प्रथम चरण से आषाढ़, दूसरे से श्रावण,

तीसरे से भाद्रपद और चौथे से आश्विन इस प्रकार है) वर्षा होगी। कदाचित स्वाति नक्षत्र में बादलों में जल ही न हो तो प्रजा वर्षा काल में जल के लिये तरसती ही रहेगी।

(४०)

पूर्वा भादरपद नखत हूँ, पोस मास के मांय।
घन गरजै बिजली खिवै, सूर्य मण्डल हूँ जाय॥
(तो) घन बिरखा के मांयने, आछो बिरखा होय।
जे लक्खरण ए ना हुवै, तो सूखी पुहमी जोय॥

पौष मास के पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में आकाश मे बादलों की गर्जना हो, बिजली चमके और सूर्य के चारो ओर मण्डलाकार आकृति हो तो वर्षा ऋतु में अच्छी वर्षा होगी। कदाचित ये सब अथवा इनमें से एक भी लक्षण उस दिन नही दीखे तो आगामी वर्षा ऋतु में पृथिवी सूखी ही रहेगी।

(४१)

आधे पोसां बरसै पांणी। तो गहूँ लाखलो बराबर जाणी॥

पौष मास आधा व्यतीत हो जाय और इस समय वर्षा हो जाय तो इसका यह प्रभाव होगा कि, गेहूँ और भूसा बराबर बराबर होगा।

(४२)

पोही मावस मूल बिन, रोहण बिन आखा तीज।
सावण बिना सलूणियो, क्यूं बावै तूं बीज॥

पौष की अमावास्या को मूल नक्षत्र, अक्षय-तृतीया को रोहिणी, रक्षा-बन्धन के दिन श्रवण नक्षत्र न हो तो कवि कृषक को सम्बोधन कर कहते हैं कि इन लक्षणों से इस वर्ष अकाल पड़ेगा। अतः बीज बोना व्यर्थ है।

माघ मास शुक्ल पक्ष

(१)

● माहज पड़वा ऊजली, बादल् बावज होय।
तेल घीव अर दूध सब, दिन दिन मूंघा होय॥

माघ शुक्ला प्रतिपदा के दिन आकाश में बादल हो, पवन चले तो इसके परिणाम स्वरूप तेल, घी और दूध दिनों दिन महंगा ही होगा।

(२)

माघ सुदी पड़वा दिनां, सोम गुरु भृगु होय।
समयो आछो होवसी, समझ लेवो सब कोय॥
भूले चूके इण दिना, रवि मङ्गल् जे आवै।
(तो) जुद्ध घणोरो होवसी, ईति भय सतावै॥

माघ शुक्ला प्रतिपदा को सोम, गुरु, एवं शुक्रवार इन में से कोई सा वार हो तो आगामी वर्ष की फसल अच्छी होगी। कदाचित इस दिन रविवार या मंगलवार में से कोई एक आ जाय तो इसके फल-स्वरूप युद्ध होगा और ईति का भय रहेगा।

(३)

माघ सुदी पडवा दिनां, वार बुद्ध जो होय।
धान धन मूंघो हुवै, आगे भी भय होय॥

● इससे विरोधाभास करनेवाली उक्ति —

माघ सुदी की एकमे, जो बादल अथवाई।
तेल घीउ सस्तो हुवै, अन्न घणो उपजाई॥

माघ शुक्ला प्रतिपदा को बुधवार आ जाय तो अन्नादि पदार्थ मँहगे हो जायेंगे और आगे के लिये भी भय रहेगा।

(४)

* माघ उजाली दूज दिन, बादल बीज समोय।
(तो) भाखै यूं भड्डरी, अन्नजु महगो होय॥

माघ शुक्ला द्वितीया के दिन आकाश में बादल—बीजली हो तो भड्डली को सम्बोधन करते हुए कवि कहते हैं कि, अन्न मँहगा ही बिकेगा।

(५)

माघ उजाली दूज दिन, बादल बिजली संग।
'भद्रबाहु गुरु यूं कहै, अन्न मिलै बहु तंग॥

माघ शुक्ला द्वितीया को आकाश में बादल हो, बीजली चमके तो इस लक्षण को देख कर भद्रबाहु गुरु कहते हैं कि, अन्न की तंगी ही रहेगी।

(६)

भला भाग सूं दूज दिन, गुरुवार आ जाय।
ढाढा में सुख ऊपजै, राज प्रजा सुख पाय॥

---

* यह उक्ति इस प्रकार भी मिली है —

माह अजवाली बीज दिन, बादल बीजली होय।
तो भाखै भड्डली खरू, अनाज मूंघो होय॥१॥
माघ उजारी दूज दिन, बादर बिज्जु समाय।
तो भाखै यों भड्डरी, अन्नजु मँहगो जाय॥२॥

माघ सुदी दूज के दिन बदली में बिजली का समा जाना देख, कवि कहता है कि इस लक्षण से अन्न अवश्य मँहगा होगा।

माघ शुक्ला द्वितीया के दिन सद्भाग्य से शुक्रवार आ जाय तो इसके फलस्वरूप पशुओं का भोजन मनोवाञ्छित उत्पन्न होगा और राजा प्रजा भी सुखी रहेंगे अर्थात् वे आनन्दोत्सव मनावेंगे।

(७)

दूज तीज सुद माघ की, शुक्र शनी जे होय।
धरणी ऊपर मानवी, रगत रञ्जित लो जोय॥

माघ शुक्ला द्वितीया और तृतीया में से किसी दिन शुक्रवार या शनिवार आ जाय तो पृथिवी मनुष्यों के रक्त से रंग जावेगी।

(८)

† माह उजाली तीज ने, बादल बिजली देख।
गहुं जव संचै करो, मूवा होसी मेख॥

माघ शुक्ला तृतीया के दिन आकाश में बादल हों, बिजली चमके तो गेहूँ और यव का संग्रह कर लेना चाहिये। क्योंकि ये निश्चय ही मँहगे हो जावेंगे।

---

† यह उक्ति इस प्रकार भी मिलती है :—

माह उजारी तीज को, बादल बिजरी देख।
गेहूँ जव सचय करो, महंगो होसी पेख॥१॥

माह तीज कहै ऊजली, बादल गाज सुणाय।
गेहूँ जव सञ्चय करो, महँगे मोल बिकाय॥२॥

किसी-किसी विद्वान का मत है कि, जब सूर्य मेष की संक्रान्ति पर आवेगा तब महँगा होगा।

(९)

* माह उजाली चौथ ने, मेह बादली आए।
पान अर नारेल बेउ, मूघा अवस बताए॥

माघ शुक्ला चतुर्थी के दिन आकाश मे बादल हो तो पान और नारियल ये दोनों अवश्य मँहगे होंगे।

(१०)

माह ऊजली पञ्चमी, बाजै उत्तर बाय।
(तो) जाणीजै भादवो, निरजल कोरो जाय॥

माघ शुक्ला पञ्चमी के दिन उत्तर दिशा का वायु चले तो यह निश्चित है कि आगामी भाद्रपद मास मे बिलकुल वर्षा नहीं होगी।

(११)

माह पञ्चमी ऊजली, उत्तर बायु मेह।
अन्नजु मूघो होवसी, भादूं मे नहिं मेह॥

माघ शुक्ला पञ्चमी के दिन उत्तर दिशा का वायु चले, वर्षा हो तो आगामी भाद्रपद मास में वर्षा नहीं होगी और अन्न महँगा होगा।

---

* यहाँ विरोधाभास व्यक्त करनेवाली यह उक्ति इस प्रकार मिली है—

माही चौथज ऊजली, बादल गाज जब होय।
पानड ने नारेलका, सुहगा बिकता जोय॥

इसके समर्थन में :—

माह उजेली चौथ को, मेह बदल्ला आए।
पान और नारेल को, मँहगा अवस बताए॥

(१२)

बसन्त पञ्चमी अर शिवरात,
शील सप्तमी रखियो ख्यात।
धुन्ध धुहर अर उत्तर वाय,
दियो अन्न कोई नहीं खाय॥

बसन्त-पञ्चमी, शिव-रात्रि, शीतला-सप्तमी अर्थात् माघ शुक्ला पञ्चमी, फाल्गुन कृष्णा त्रयोदशी और चैत्र कृष्णा सप्तमी इन दिनो मे आकाश मे धुन्ध, कुहरा, एव उत्तर दिशा का वायु हो तो इन लक्षणो से वर्षा एव फसल अच्छी होगी।

(१३)

* माह उजाली छट्ठ ने, वादल् होय जे चन्द।
तेल घीव तो जाण जो, मूघो होय दुचन्द॥

माघ शुक्ला षष्ठी के दिन आकाश मे बादल दिखाई दे तो तैल और घी के दाम दूने हो जावेंगे।

(१४)

अजवाली छठ माह तणी, वार होय जे चन्द।
तेल घीव सू घा नही, भाख्यो साचो छन्द॥

माघ शुक्ला षष्ठी के दिन यदि सोमवार हो तो तेल और घी महँगे हो जावेंगे।

---

* माह उजाली छट्ठ को, वार होय जो चन्द।
तेल घीव महँगा हुवै, रोकड होय दुचन्द॥

(१५)

* माही छठ गाजै नहीं, मूंघो होय कपास।
सातम देखो निरमली, तो मत राखीजो आस॥

माघ शुक्ला षष्ठी के दिन आकाश में बादलो की गर्जना नही हो तो कपास महँगा होगा। कदाचित सप्तमी के दिन आकाश निर्मल दिखाई दे (इसीप्रकार से ही व्यतीत होजाय)तो किसी भी प्रकार की आशा न रखें।

(१६)

माघी छठ ना गाजियो, (तो) मूंगा घिरत कपास।
सातम जावे निरमली, (तो) मानव केहा आस॥

माघ शुक्ला षष्ठी के दिन आकाश मे बादलों की गर्जना न हो तो घी और और कपास महँगा हो जावेंगे। साथ ही सप्तमी भी इसी प्रकार से निर्मल ही रह जाय तो मनुष्यो के जीवन सङ्कट मे पड़ जावेंगे। इनके जीवन की आशा ही कैसी।

(१७)

‡ माही सातम गरभै बीस। आसू बरसै दिन बत्तीस।

---

* गाजै नहिं महा छट्ठ दिने, मूंघो होय कपास।
सातम पेखो निरमली, तो नव सारी आश॥

‡ माघ मास री सातम बीजै। तो सोलै सराध बरसता दीखै॥
माघ मास की सत्तमी, ऊगत भाण न दीख।
तीन पक्ष सही हूजे, बरसाले बरसन्त॥

माघ शुक्ला सप्तमी को उदय होता हुआ सूर्य बादलों से ढका रहने के कारण नहीं दीखे तो आगामी वर्षा काल में तीन पक्ष सहित सात दिन (१५ × ३ = ४५ + ७ = ५२) अर्थात् बावन दिनो तक वर्षा होगी।

माघ मास की सप्तमी के दिन वर्षा का गर्भ रहे तो आसोज में वर्षा प्रारम्भ हो कर बत्तीस दिन तक मेह बरसेगा।

(१८)

माघ सुदी सातम हि, बीजु बादरा देख।
तो आसोजां में मेवलो, दिन बत्तीसां पेख ॥

माघ शुक्ला सप्तमी को आकाश में बादल हो, बिजली चमके तो आसोज (आश्विन) में वर्षा प्रारम्भ होकर बत्तीस दिन तक होती रहेगी।

(१९)

माघ सुदी सातम चढ़त। सूरज बादल मांय अड़त।
तो सावण महं बरसत रहे। तीन पक्ष अरु दस दिन लहै॥

माघ शुक्ला सप्तमी को उदय होता हुआ सूर्य बादलो से ही ढँका रह जाय तो आगामी श्रावण मास में वर्षा प्रारम्भ होकर पचपन दिनों तक होती रहेगी।

(२०)

‡ माघ सुदी जे सत्तमी, सूरज निरमल होय।
डक्क कहै सुण भड्डली, जल बिण पिरथी होय॥

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन आकाश मे सूर्य निर्मल दिखाई दे तो आगामी वर्षा काल में वर्षा नहीं होगी, ऐसा भड्डली को सम्बोधन कर डक्क नामक कवि कहते हैं।

---

‡ माघ सुदी सातम दिने, सूरज निरमल होय।
भड्डली भाखै एम जे, जल बिन पिथ्वी जोय ॥१॥
माह सुदी जो सत्तमी, सूरज निरमल होय।
भद्रबाहु गुरु यूं कहै, जल बिन पृथ्वी जोय ॥२॥

(२१)

† माघ सुदी जो सतमी, बीज मेघ हिम होय ।
च्यार महीना बरससी, सोच करो मत कोय ॥

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन आकाश में बादल हो, बिजली चमके, बर्फ गिरे तो आगामी वर्षाकाल के चारों महीनों मे वर्षा होगी ।

(२२)

माघी सातम ऊजली, बादल मेह करन्त ।
तो आसाडा मे भडुली, मेह घणो बरसन्त ॥

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन आकाश मे बादल हो और वर्षा आ जाय तो आगामी आषाढ में बहुत वर्षा होगी ।

(२३)

माह सतमी ऊजली, बादल मेघ करन्त ।
तो असाड में चतुर नर, बोहलो मेघ बरसन्त ॥

माघ सुदी सप्तमी के दिन आकाश मे मेघ की घटाएँ छाई हो तो आगामी आषाढ मास मे अत्यन्त वर्षा होगी ।

---

† महा सुदी जो सप्तमी, हेम बीजली होय ।
बरसैं चारो मास मां, सोच करो मत कोय ॥

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन आकाश में बिजली चमकती हो, बर्फ गिरता हो (यहाँ ऐसा भी अभिप्राय लिया जाता है कि—आकाश में चमकने वाली बिजली का रंग हेम (सुवर्ण) सा हो) तो आगामी वर्षाकाल के चारों मास वर्षा होगी ।

(२४)

ॐ माघ सुदी सातम दिना, आभो निरमल होय ।
अनावृष्टि दुर्दिन हुवै, जे मेह घणेरो होय ।।

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन आकाश बिल्कुल निर्मल (स्वच्छ) दिखाई दे तो आगामी वर्ष अनावृष्टि-योग और कदाचित इस दिन अत्य-धिक वर्षा हो जाय तो दुर्दिन—योग बन जाता है । अर्थात् प्रजा सङ्कट मे रहेगी ।

(२५)

पाचम छठ सातम दिना, माघ सुदी के माय ।
शुक्र शनि अर सोम हुया, करसौ आनन्द मनाय।।

माघ शुक्ला पञ्चमी, षष्ठी और सप्तमी के दिनो में किसी दिन शुक्र, शनि अथवा सोमवार मे से कोई-सा वार आ जाय तो इसके प्रभाव से कृषक के आनन्दित होने का अवसर आवेगा अर्थात् यथेच्छ फसल होगी ।

(२६)

माघ सुदी सातम दिना, रवीवार जे आवै ।
महाघोर दुर्भिक्ख हुवै, विगरै भी जतावै ।।

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन रविवार हो तो इसके प्रभाव से भयं-कर दुर्भिक्ष होगा और प्रजा मे विग्रह आदि से भय व्याप्त रहेगा ।

ॐ सप्तमी महानी ऊजली, बादल मेघ करन्त ।
असाढ़ मां भड्डली कहै, घणो मेघ बरसन्त ।।१।।

माहज सातम ऊजली, आठम बादल जोय ।
तो असाढ गहमह करै, बरखा बरसा सोय ।।२।।

(२७)

* माघ सुदी सातम दिनां, सोमवार जे होय ।
लड़ै राजवी परस्पर, काल पड्यो लो जोय ॥

माघ सुदी सप्तमी के दिन सोमवार हो तो परस्पर राजाओं में युद्ध होगा और देश में अकाल पड़ेगा ।

(२८)

† माघ सुदी जे सप्तमी, भोमवार जे होय ।
तो भड्डर जोशी कहै, नाज किराणो लोय ॥

माघ शुक्ला सप्तमी के दिन मंगलवार हो तो ज्योतिषी कहते हैं कि हे भड्डरी ! जनता को अनाज और किराणा खरीद कर रख लेना चाहिये ।

(२९)

माघ सुदी सातम दिनां, सोम रोहणी होय ।
कै तो राजा लड़ पड़ै, कै वर्ष सवायो होय ॥

---

* इसी सम्बन्ध मे इस प्रकार भी मिलते है :—

माह सुदी जो सप्तमी, सोमवार दीसन्त ।
काल पड़ै राजा लड़ै, सबला मिनख भमन्त ॥१॥
माघ सुदी जो सप्तमी, सोमवार दीसन्त ।
काल पड़ै राजा लड़ै, समरै नरा भमन्त ॥२॥
माघ सुदी जो सातमे, होवै सोमजु वार ।
काल पड़ै बहु जुद्ध हुवै, बरसै जगत मे खार ॥३॥

† एक स्थान मे इसकी टीका करते हुए कहीं ऐसा पढने में आया था कि इस प्रकार के लक्षण होने पर उस वर्ष अनाज मे कीड़े पड जायेंगे ।

—जयशङ्कर शर्मा

माघ शुक्ला सप्तमी को सोमवार और रोहिणी नक्षत्र हो तो या तो राजाओं में परस्पर युद्ध, प्रजा मे रोग हो या यह वर्ष उत्तम फल-प्रद ही हो।

(३०)

भला भाग सूं आज दिन, भरणी जे आ जाय।
करसण होवै मोकलो, रोग शोक मिट जाय॥

सद्भाग्य से इस (माघ शुक्ला सप्तमी को) दिन भरणी नक्षत्र आ जाय तो फसल बहुत अच्छी होगी और प्रजा के रोग, शोक आदि नष्ट हो जावेंगे।

(३१)

माघ सुदी सातम दिनां, निस्चै मन ठहराय।
आभा कानी देखजो, आठ पौ'र चित लाय॥

आभो ढक्यो बादल रेहूं, उत्तर पूरब बाय।
आथूणी बिजली खिव्यां, देवे सुभिक्ष कराय॥

चौमासा का मास सबी, इण मे गिण लेव।
आछा दिन अर रात रा, भाग च्यार कर लेव॥

जी भागा ए लक्खण हुवै, बी महीना के मांय।
गरभ गलण नहिं जोग हुयां, बोली बिरखा आय॥

माघ शुक्ला सप्तमी को रात-दिन (आठो प्रहर) ध्यान पूर्वक आकाश को देखो। इस दिन आकाश बादलो से ढँका हो, पूर्व का या उत्तर का वायु हो, पश्चिम मे बिजली चमकती हो तो किसी प्रकार का उपद्रव इस वर्ष मे न होकर, सुभिक्ष होगा।

दिन और रात के चार भाग (दिन के दो भाग और रात्रि के दो भाग) करें और प्रत्येक भाग को वर्षा काल के चार महीनों में बाँट लें

(जैसे—प्रथम भाग आषाढ़, दूसरा श्रावण आदि ।) इस दिन के जिस भाग में उपरोक्त चिह्न दृष्टिगत होंगे, वर्षा काल के उसी महीने में वर्षा होगी । किन्तु साथ में यह भी ध्यान रखें कि, यदि इस दिन वर्षा होजाय और वह एक द्रोण का आठवा भाग (आंग्ल मतानुसार १० सेण्ट) मेह हो जाय तो दिन के जिस भाग में ऐसा हुआ होगा तो उसी महीने में अनावृष्टि होगी ।

(३२)

माघ उजेली अस्टमी, वार होय जे चन्द्र ।
तेल घीव तो जाणजे, मूंघा होय दुचन्द ॥

माघ शुक्ला अष्टमी को सोमवार आ जाय तो भविष्य में तेल और घी के दूने दाम हो जावेंगे ।

(३३)

माघ सुदी आठम की रात । चान्द चरत बादर नहिं भात ॥
छत्र भङ्ग होवै फल सही । अथवा काल पड़ै इमि कही ॥

माघ शुक्ला अष्टमी की रात्रि मे आकाश मे चन्द्रमा की गति अत्यधिक बादलो के कारण दिखाई न दे तो या तो किसी राजा की मृत्यु होगी या देश में अकाल पड़ेगा ।

(३४)

आठम बादल सूरज गोय । आभो सहचन्दे निरमल होय ॥
राजावो का जावै राज । यूं भासै श्री सद्गुरु राज ॥

माघ शुक्ला अष्टमी को दिन मे सूर्य बादलो मे छुपा रहै और रात्रि मे आकाश एव चन्द्रमा निर्मल (स्वच्छ) दिखाई दे तो इस लक्षण से ऐसा प्रतीत होता है कि राजाओं के राज्य समाप्त हो जावेंगे । इस

दिन जिस दिशा में वर्षा के गर्भ के लक्षण दिखाई दें, उसी ओर वर्षा होगी । ऐसा जैन-शास्त्र के ज्ञाता कोई सद्गुरु जी फरमा गये हैं ।

(३५)

माघ सुदी की आठमे, बादर में डूबे चन्द्र ।
समो होय तिहुँ खण्ड मे, बोहलो बरसै इन्द्र ॥

माघ शुक्ला अष्टमी की रात्रि मे चन्द्रमा बादलों में ही छुपा रहे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि वर्षाकाल में अत्यधिक वर्षा होगी इसके परिणाम स्वरूप सर्वत्र फसल अच्छी होगी ।

(३६)

माघ उजाली अस्टमी, बादल ढकियो सूर ।
समयो होवेलो खरो, काल् गयो अब दूर ॥
जे आभो निरमल हुवे, सूरज आदरा आय ।
के सावरण महिना मांयने, मेह आगडो जाय ॥

माघ शुक्ला अष्टमी के दिन सूर्य बादलो से ढँका हुआ ही रहे तो यह निश्चित है कि, अकाल नही होगा और आगामी वर्ष, फसल अच्छी होगी । यदि इस दिन आकाश निर्मल ही रहे तो आद्रा नक्षत्र पर सूर्य आवेगा तब अथवा श्रावण मे, वर्षा अवश्य ही हो जावेगी ।

(३७)

‡ माघ उजेली अस्टमी, नहीजे किरतका होय ।
फागरण रोली लागसी, सावरण मेह ना होय ॥

---

‡ माघ सुदी आठें दिवस, जे रिच्छ किरतका होय ।
की फागरण रोली पडै, की सावरण सूंको होय ॥

माघ शुक्ला अष्टमी के दिन कृत्तिका नक्षत्र नहीं होगा तो फाल्गुन मास मे गेहूँ आदि अन्न में रोली (एक प्रकार का अन्न-नाशक कीडा) लग जावेगा और आगामी श्रावण मे वर्षा नही होगी।

(३८)

* अथवा नौमी निरमली, बादल रेख न होय।
तो सरवर भी सूखसी, महि मे जल नहिं होय ॥

अथवा माघ शुक्ला नवमी निर्मल प्रतीत हो (इस दिन आकाश मे बादलो की एक रेखा मात्र भी न दिखाई दे) तो आगामी वर्षा काल मे वर्षा नही होगी और सरोवर आदि जो भरे होगे गर्मी मे सूख जावेंगे ।

(३९)

† माह नवमी ऊजली, बादल करै वियाल।
भादरवै बरसै घणो, सरवर फूटै पाल ॥

माघ शुक्ला नवमी के दिन आकाश मे बादल उमडते हुए दिखाई दे तो आगामी भाद्रपद मास मे इतनी वर्षा होगी कि तालाब आदि के बाँध टूट जावेंगे ।

---

* अथवा नवमी निरमली, बादल रेख न होय।
तो सावण सूखो जशे, मेह बूंद नव जोय ॥१॥

महा नवमी निरमली, तो सूखो जाण असाढ।
कण बेची पोतु करी, भडली कहे दु ख काढ ॥२॥

† अथवा नवमी निरमली, बादल करै विशाल।
भादरवै जल आवसी, सरवर फोडे पाल ॥१॥

अथवा नौमी ऊजली, बादल वाजै वाय।
भादो में बरसै घणो, सरवर जल न समाय ॥२॥

(४०)

† माहज नौमी चन्द्रमा, मण्डल सहितो खास ।
तो असाड मे बरससी, यू मत कर विस्वास ।।

माघ शुक्ला नवमी की रात्रि मे चन्द्रमा के चारो ओर मण्डल दिखाई दे तो इससे यह न समझ लेवें कि,आगामी आषाढ मे वर्षा होगी ।

(४१)

माघ सुदी नवमी निशा निहारये ।
शशि के हुइ परिवार तो यह विचारिये ।
आसाडे तो मेह न मूले बरसता ।
अन्न पण मूंघो होय सहु नर तरसता ।।

माघ शुक्ला नवमी की रात्रि मे चन्द्रमा को देखें । यदि इसके चारो ओर मण्डल हो तो आषाढ मे लेश मात्र भी वर्षा न होगी और अन्न मँहगा हो जाने के कारण प्रजा कष्ट पावेगी ।

(४२)

सातम आठम नवमी, माघ सुदी की होय ।
इणा दिना बादल हुया, धान घणेरो होय ॥
एक दिन बादल है अधम, दो दिन मध्यम जाण ।
तीन दिनां बादल हुया, समयो आछो माण ।।
सूरज अस्त की बखत, बादल इण दिन होय ।
तो असाड सावण भादवै, क्रम सू विरखा होय ।।

---

† माह जु नौमी चन्द्रमा, पायस सहितो खास ।
तो असाड मे बरससी, यू मत कर विश्वास ।।१।।

माह नवमी नो चन्द्रमा, मण्डल सहिते वास ।
असाड मा तो वरससे, मुकीश नहि विश्वास ।।२।।

माघ शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमी इन तीन दिनो मे आकाश में बादल रहेंगे तो आगामी वर्षा काल मे अच्छी वर्षा होने के परिणाम स्वरूप धन-धान्य एवं विवाह आदि उत्सव अधिक होंगे। इन दिनो मे एक दिन बादल का होना अधम, दो दिन का मध्यम और तीनों दिन बादल बने रहने से आगामी वर्ष अच्छी फसल होगी।

सूर्यास्त के समय सप्तमी के दिन बादल होने से आषाढ, अष्टमी को हो तो श्रावण और नवमी को सूर्यास्त के समय बादल होने से भाद्र-पद मास मे वर्षा होगी। जिस दिन का आकाश निर्मल होगा क्रमशः उसी महीने मे वर्षा नही होगी।

(४३)

आदीत वारे पुक्ख रिच्छ, नौमी तिथि लो जोय।
अन्नोलाहा चौगणा, भूख मरत सब कोय।।

माघ शुक्ला नोमी को रविवार और पुष्य नक्षत्र हो तो अन्न का मूल्य चौगुना हो जाने से लोग भूखों मरेंगे।

(४४)

नवमी दसमी एकादसी, माघ सुदी के माय।
वायु चले बिजली खिवै, विरखा आछी थाय।।

माघ शुक्ला नवमी, दशमी और एकादशी इन तीन दिनो में वायु चले और बिजली चमके तो इन लक्षणो से आगामी वर्षा काल में अच्छी वर्षा होगी।

(४५)

माघ सुदी तेरस दिना, धुन्ध घणेरी छाय।
तो धान घणेरो होवसी, परजा सुखी हुय जाय।।

माघ शुक्ला त्रयोदशी के दिन कुहरा इतना छा जाय कि आकाश

दिखाई नही दे तो इस लक्षण से यह समझें कि यह अन्न अधिक होने और प्रजा के सुखो की वृद्धि होने की सूचना है ।

(४६)

सातम सू चवदस तलक, माघ सुदी के माय ।
इण अठवाडे बादल हुया, मेह घणेरो थाय ।।

माघ शुक्ला सप्तमी से चतुर्दशी तक इस सप्ताह मे आकाश मे बादल मडे रहे तो आगामी वर्षा काल मे बहुत वर्षा होगी ।

(४७)

* माघी पूनम निर्मल होय । तो अन्न असाडाँ सस्तो जोय ।
कियो एकठो बेचो आज । जे नहिं बेचो तो बिगडे काज ।।

माघी पूर्णिमा को निर्मल देख कर कवि कहते हैं कि इस लक्षण से अन्न सस्ता हो जावेगा । अतः अब तक जो अन्न सग्रह किया हुआ है, उसे बेच देना चाहिये । अन्यथा क्षति सहनी पडेगी ।

(४८)

माघी पूनम सगली निरमल । चार मास जल होवै गलगल ।।
जेहि-जेहि जामे काडे बादल । तिहि-तिहि मासे जल नहिं आगल।।

माघी पूर्णिमा के चारो प्रहर यदि निर्मल दिखाई दें तो आगामी आषाढ से आश्विन तक इन चारो महीनो मे वर्षा होगी । इसके विपरीत प्रथम, द्वितीय प्रहर इस क्रम से जिस प्रहर में आकाश मे बादल दिखाई देंगे, क्रमशः उसी मास मे वर्षा का अभाव रहेगा ।

---

* इसके विपरीत :—

माघ सुदी पूनम दिवस, चाँद निरमलो जोय ।
पशु बेचो कण सग्रहो, काल हलाहल होय ।।

(४९)

* मांही पूनम बादला, जिण पहुरेह करेह ।
बरसाते तिण मास मे, जलधर नवि बरसेह ॥

माघी पूर्णिमा के दिन जिस प्रहर मे आकाश मे बादल दिखाई देंगे तो आगामी आषाढ से आश्विन तक के चार मास मे क्रम से उसी प्रहर की सख्या के अनुसार उस महीने में वर्षा नही होगी ।

(५०)

पाच रवी शनि भोम हुवै, माघ मास के माय ।
भौ उपजै दुरभिक्ख हुवै, इण मे सशे नाय ॥

माघ महीने मे रविवार, शनिवार, मगलवार इनमे से कोई-सा भी वार पाँच बार आ जाय तो इसके फल स्वरूप संसार मे भय उत्पन्न होगा, दुर्भिक्ष होगा इसमे किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं।

(५१)

‡ माह पाच होवै रविवार । तो जाणो जोशी काल विचार ॥

माघ मास मे पाँच रविवार का आ जाना अकाल की अग्रिम सूचना समझ ले ।

---

* इसके विपरीत :—

बादल माह सुदी पूनमे, जे जे पोरा होय ।
चौमासे ता मास में, क्रम से मेघा जोय ॥

इसके पक्ष मे :—

बादल माह सुदी पूनमे, झा झा पोहरज होय ।
चौमासा ना चार माँ, क्रमथी मोघा जोय ॥

‡ इसके विपरीत :—

माघ पाँच जे हुँ रविवार । तो भी जोषी समै विचार ॥

(५२)

माह मंगल जेठ रवि, भादरवै शनि होय।
डक कहै है भड्डली, विरला जीवै कोय ॥

डक नामक कवि, भड्डली को सम्बोधन करते हुए कहते हैं कि यदि माघ मास मे पांच मंगल हो, जेठ मास मे पांच रविवार हो और भाद्रपद मास मे पांच शनिवार हों तो इसके प्रभाव से अकाल ही होगा और विरले व्यक्ति ही जीवित रह सकेंगे।

(५३)

भरणी अर किरत्तका दिनां, माघ महीना माय।
जे बादल हुय जाय तो, विरखा आछी थाय॥
इण दिना के मायने, जे आभो निरमल होय।
अलप वृष्टि होवे अवस, धानजु मूंघो होय॥

माघ महीने मे जिस दिन भरणी या कृतिका नक्षत्र हो उस दिन आकाश में बादल रहे तो आगामी वर्षा काल मे उत्तम वर्षा होगी। कदाचित इस दिन आकाश निर्मल दिखाई दे तो अल्प-वृष्टि—अनावृष्टि के कारण अन्न मँहगा हो जावेगा।

(५४)

माघी सक्रांति के दिना, जे विरखा हो जाय।
धेन पय बरसावसी, करसा ने सुख थाय॥

माघ मास की सक्रांति के दिन यदि वर्षा हो जाय तो इसके फलस्वरूप गायो के दूध अधिक होने के कारण कृषक—ग्वाले सुखी रहेंगे।

(५५)

दिक्खण उत्तर की दिसा, वायू बादल बीज।
चन्द्र कुंडलो पून्यूं हुवै, तो समयो सिरै होसीज॥

माघ मास की पूर्णिमा को आकाश मे बादल हो, उत्तर किंवा दक्षिण दिशा मे बिजली चमकती हो, वायु चलता हो चंन्द्रमा के चारों ओर कुण्डल हो तो कवि कहते हैं कि इस लक्षण से आगामी वर्ष की फसल अच्छी होगी।

(५६)

माघ मास जे सी पडे, बरसै बीज खिवेह।
तो जाणीजे भड्डली, समौ श्रीकार करेह॥

माघ मास मे शीत का पडना, वर्षा का होना, बिजली का चमकना इन लक्षणो को देख कर कवि भड्डली को सम्बोधन करते हुए कहता है कि, इन लक्षणो से यह प्रतीत होता है कि आगामी वर्ष फसल अच्छी होगी।

(५७)

माघा बरस्यो मेवलो, अर जामण पुरस्यो थाल।
तिरपत आवै मोकली, कुण कहवै कंगाल॥

माघ मास की वर्षा से भूमि को कृषि हेतु इतनी तृप्ति मिल जाती है कि जिस प्रकार माता के हाथो परोसा हुआ भोजन। अर्थात् फिर तृष्णा किम्वा कमी इन दोनो मे से कोई एक भी नही रहती अतः ऐसे व्यक्ति या समय को कौन कंगाल कहेगा।

(५८)

* माघ मास जे पडे न सीत। तो मेहा नहिं जाणिये मीत॥

माघ मास मे ठण्ड नहीं पडने पर यह समझ लें कि, आगामी वर्षा काल मे वर्षा का अभाव रहेगा।

---

* माह महीने पडे न सीत।
मँहगा अनाज जाणिये मीत॥

(५६)

राता होवै बादलां, माघ महीना माय।
तो जाणो यू सायबा, भाटा पडसी आय॥

माघ महीने मे लाल रग के बादलो को देख कर कोई पत्नी अपने पति से कहती है कि, इस वर्ष को ऐसा समझें कि मानो पत्थर ही बरसेगे।

(६०)

माघ मे ऊखम जेठ मे जाड। पहली विरखा भरे जे ताल॥
घाघ केव्है मेह नहिं होसी। धोबी घर मे कपडा धोसी॥

माघ महीने मे गरमी, जेठ मे ठण्ड और प्रथम हुई वर्षा से ही नगर के सारे तालाब भर जाय तो इन लक्षणो को देख कर घाघ कहते हैं कि इस वर्ष वर्षा नही होगी। अन्न का अभाव तो रहेगा ही धोबी भी कपडे अपने घर, कूए से पानी लाकर धोवेगा।

(६१)

माघ मास मे जे बरसै पाणी। तो अन सृष्टि मे निश्चय जाणी॥
इण विरखा सूं ए तीनूं जाय। गाय गहूँ अर पगाँ विवाय॥

माघ मास मे वर्षा होने से गौ से उत्पन्न होने वाले पदार्थ दूध आदि, और गेहूँ नही होते अपितु पाँवो मे विवाई हो जाती है।

(६२)

गेरो ने रे माग ने, सइतर नवरो जाय।
तो वर ताजो मानवो, धान धापि ने खाय॥

माघ मास मे आकाश मे गहरे बादल हो और चैत्र मास मे आकाश निर्मल (स्वच्छ) हो तो इन लक्षणो से वर्षा अधिक होने की

सूचना मिलती है। परिणाम स्वरूप अनाज पुष्कल उत्पन्न होगा और मनुष्य तृप्त हो जावेंगे।

(६३)

जेठ महीने सी पडे, माघा गरमी जोय।
नदियाँ वेव्है असाढ़ मे, (तो) सावण निबलो होय॥

ज्येष्ठ मास मे सर्दी पडना और इससे पूर्व माघ मास मे गरमी पडना तथा आषाढ़ महीने मे ही नदी-नाले भरपूर बहने लग जाना, इन लक्षणो से यह सूचित होना है कि श्रावण महीने मे अति अल्प वर्षा होगी।

(६४)

* माघ मसक्का जेठ सी, सावण ठण्डी वाव।
डक कहै सुण भडडली, नहि वरसण रो दाव॥

माघ मास मे गर्मी, ज्येष्ठ मे सर्दी, श्रावण मे शीतल पवन चलना इन लक्षणो को देख कर डक नामक कवि भड्डली से कहते हैं कि ये लक्षण वर्षा नही होने के हैं।

(६५)

माघ बुलायो निरमलो, जे भूमि लियो व्है चैत।
आखा तीज ना गाजियो, तो खेहा उडसी खेत॥

माघ मास में आकाश मे बादल आदि का न होना, चैत्र मास मे बूदाबांदी अथवा वर्षा का हो जाना और वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया अर्थात् अक्षय-तृतीया के दिन बादलों की गरजना न होना ये समस्त लक्षण अनावृष्टि की अग्रिम सूचना देते हैं।

---

* एक स्थान पर इस प्रकार मिला है :—

माघ मसक्का जेठ सी, सावण ठण्ठी वाव।
भीम कहै सुण भड्डली, नहीं बरसण रो भाव॥

(६६)

सातम पांचम तीज अर, पडवा ने तूं जोय।
माघ फागण चैत क्रम, सुद वैसाखा होय।।
इणाँ दिना के मायने, आछो बाजै वाय।
गाज बादला हुय जाय तो, मास चार बरसाय।।

माघ शुक्ला सप्तमी, फाल्गुन शुक्ला पचमी, चैत्र शुक्ला तृतीया और वैशाख शुक्ला प्रतिपदा इन चारों दिनो को ध्यान पूर्वक देखना चाहिये। इन दिनो मे शुभ वायु चलती रहे, आकाश मे बादल भी दिखाई देते रहे और उनकी गरजना भी होती रहे तो इस वर्ष, वर्षा काल के चारो महीनो मे अच्छी वर्षा होगी।

(६७)

फाल्गुण चैत बैसाख की, सुद तेरस तू लेव।
जे धूहर पड जाय तो, अनावृष्टि कह देव।।

फाल्गुण शुक्ला त्रियोदशी, चैत्र शुक्ला त्रियोदशी और वैशाख शुक्ला त्रियोदशी इन तीनो दिनों मे या इनमे से किसी एक दिन मे धूहर पड जाय तो यह लक्षण अनावृष्टि के योग को सूचित करने वाले हैं।

———

माघ मास कृष्ण पक्ष वर्षा ज्ञान

(१)

* माघ अन्धारी सत्तमी, गाज बीज दमकन्त ।
महिना च्यारूं बरससी, तू क्यूं सोचै कन्त ।।

माघ कृष्णा सप्तमी के दिन आकाश में बादल, गर्जन और बिजली चमकती देख कर कृषक पत्नी अपने पति से कहती है कि, आगामी वर्षा काल की चिन्ता छोड दो। आज के ये लक्षण, वर्षा काल के चारो महीने वर्षा होने की सूचना देते हैं।

---

* यह उक्ति भिन्न-भिन्न रूप मे निम्न लिखित भी मिली हैं :—

माह अन्धारे सातमे, मेघ बीज चमकन्त ।
मास चारे बरसशे, न करो को पण चन्त ।।१।।
माह अंधारी सत्तमी, बीज मेह होवन्त ।
च्यार मास बरसे घणा, मत करो कोई चन्त ।।२।।
माह अँधारी सत्तमी, मेह बीजली सग ।
च्यार मास बरसै सही, परजा करै नव रग ।।३।।
माघ वदी सप्तमी केताई । जो विज्जु चमकै नभ माई ।।
मास बारह बरसै मेह । मत सोचो चिन्ता तजि देह ।।४।।
मा वद नी हातेम ने, पांसम सावण मास ।
एणी तेथे वीजरी, थाय गाज अंगास ।।
आहड सावण भादवो, आहो मा निरधार ।
गाजी गरुडी मेउलो, बरसै मइना स्यार ।।५।।

माघ कृष्णा सप्तमी और श्रावण कृष्णा पचमी को यदि आकाश मे बिजली हो, मेघ गरजे तो आसाढ, श्रावण, भाद्रपद एव आश्विन इन चारों महीनों में बहुत जोर से गरज कर मेह बरसता है।

(२)

माघ अन्धारी सत्तमी, स्वात रिच्छ जो होय।
वायु चालै जोर की, पड्यो बरफ लो जोय॥
गाज बीज मेह बादला, शशि सूरज ना देखाय।
(तो) चौमासे विरखा घणी, लोग सुखी होजाय॥

माघ कृष्णा सप्तमी को स्वाति नक्षत्र हो, इस दिन जोर का वायु चले, बर्फ गिरे, वर्षा, बादल हो, बिजली चमके, आकाश रात-दिन बादलो से ढँका रहे जिसके कारण सूर्य किम्वा चन्द्र के दर्शन तक न हो तो इस लक्षणो से यही समझे कि वर्षा काल मे बहुत वर्षा होगी और प्रजा सुखी होगी।

(३)

माह की सातम काजली, आठम बादल होय।
तो असाड मे धूर वा, बरसै जोशी जोय॥

माघ कृष्णा सप्तमी और अष्टमी को बादल हो तो आसाढ मे वर्षा अवश्य होगी।

(४)

माघ वदी तिथि अस्टमी, दसमी पोस अन्धार।
डाक मेघ देखी दिना, सावण जलद अपार॥

माघ कृष्णा अष्टमी, पौष कृष्णा दशमी को आकाश मे बादल दिखाई दे तो इस लक्षण से यह निश्चित है कि आगामी श्रावण मास मे बहुत वर्षा होगी।

(५)

माघ मासे नोमी देख। पख अन्धारे या ही पेख॥
बिज्जु मेह पालो हिम करै। तो सावण भादरवै विरखा पडै॥

माघ कृष्णा नवमी के दिन बादल हो, बिजली चमके, ओस, बर्फ पडे तो इन लक्षणों से यह निश्चित है कि आगामी श्रावण एव भाद्रपद में वर्षा होगी।

(६)

* माघ वदी नौमी दिने, मूल नक्षत्र जो होय।
तो भादू सुद नवमी दिने, जलधर बहुतो होय॥

माघ कृष्णा नौमी के दिन मूल नक्षत्र हो तो भाद्रपद शुक्ला नवमी के दिन बहुत वर्षा होगी।

(७)

मूल रिच्छ नवमी दिना, माघ अन्धेरे पाख।
बादल बिजली धनस हुया, चोखी निपजै साख॥
असाड महीना मायने, के दसमी भादू जोय।
इन्दर आसी दौडतो, आछी विरखा होय॥

माघ कृष्णा नवमी के दिन यदि आकाश मे बादल, इन्द्र-धनुष हो, बिजली चमके तो आगामी आषाढ़ मे या भाद्रपद मास की दशमी को बहुत वर्षा होगी।

(८)

† नवमी माह अन्धारिया, मूल रिच्छ को भेद।
तो भादू नवमी के दिना, मेह हुवै बिन खेद॥

---

* यह उक्ति इस प्रकार भी मिलती है —
नवमी माह अन्धारिया, नखत होवे मूल।
तो भादो नवमी दिवस, विरखा होय अमूल॥

† एक स्थान मे भाद्रपद कृष्णा नवमी को निश्चय जल बरसने का लिखा मिला है।

माघ कृष्णा नौमी को मूल नक्षत्र हो तो आगामी भाद्रपद की नवमी को वर्षा होगी।

(९)

नवम अन्धारी ,माह नी, मूल रेख गर्भेह।
भादवडेरी नवमिये, जलहर लहरा लेय॥

माघ कृष्णा नवमी को मूल नक्षत्र हो तो वर्षा का गर्भ होने से भाद्रपद की नवमी के दिन बहुत वर्षा होगी।

(१०)

अंधारी नवमी महा, मूल अर्क जो वार।
भादरवा नौमी वदी, बरसे जल निरधार॥

माघ कृष्णा नवमी को मूल नक्षत्र और रविवार हो तो भाद्रपद कृष्णा नवमी के दिन अवश्य वर्षा होगी।

(११)

नवमी थी ग्यारस तीन दिन, माघ वदी के माय।
पवन चलै बिजली खिवै, सिरै जामनो थाय॥

माघ कृष्णा नवमी, दशमी एव एकादशी इन तीन दिनों मे या इनमे से किसी एक अथवा दो दिन वायु चले, बिजली चमके तो आगामी वर्षा काल में अच्छी वर्षा होने के कारण फसल अच्छी होगी। इसमें एक, दो और तीन दिन के प्रभावानुसार ही फल होगा।

(१२)

तेरस चवदस माघ की, पख अधियारो होय।
पूरब मे बादल हुवै, आभो ढकियो जोय॥
मास असाढा सात दिन, जलधर बरसै आय।
मावस बादल होय तो, भादूं पून्यूं बरसाय॥

माघ कृष्णा त्रयोदशी, चतुर्दशी को पूर्व दिशा मे बादल हो तो आषाढ मास के सात दिन तक वर्षा होगी। यही बादल माघी अमावस्या को हो तो भाद्रपद की पूर्णिमा को वर्षा होगी।

(१३)

माह अमावस रात दिन, मेह पवन घण छाय।
धरती में आनन्द हुवै, सम्वत चोखो थाय॥

माघ कृष्णा अमावाश्या को रात-दिन आकाश मे बादल छाये रहे, वर्षा हो, वायु चले तो आगामी वर्ष फसल अच्छी होगी और लोग आनन्द मनावेंगे।

(१४)

माघी मावस रात दिन, शीलो बाजै वाय।
भादवडे री पूनमे, विरखा खूब कराय॥

माघ कृष्णा अमावाश्या को रात-दिन शीतल वायु चले तो आगामी भाद्रपद की पूर्णिमा को बहुत वर्षा होगी।

(१५)

माघी मावस गरभ मय, जो केहूँ भाँत विचार।
भादू की पून्यो दिवस, विरखा पोरा च्यार॥

माघी अमावाश्या के गर्भ में कहीं वर्षा हो जाय तो आगामी भाद्रपद की पूर्णिमा के दिन चार प्रहर तक वर्षा होगी।

(१६)

माघ वदी मावस शशिवार। बादल अथवा होवै जलधार॥
तो भादूं की पूनम जाण। जलधर बरसत निस्चै आण॥

माघ कृष्णा अमावाश्या को सोमवार हो और इस दिन आकाश मे बादल हो, वर्षा हो तो आगामी भाद्रपद पूर्णिमा को वर्षा होना निश्चित है ।

(१७)

माघी मावस रवि शनि मगल । घणी वात अर देश उदंगल ॥
सोमवार की जे हो मावस्या । लह सुख परजा उपजत सस्या॥

माघी अमावाश्या को रविवार, शनिवार एवं मगलवार इनमे से कोई सा वार हो तो वायु अधिक चलेगा और देश मे उपद्रव होगे। कदाचित इस दिन सोमवार आ जाय तो इसके फल स्वरूप अन्न बहुत उत्पन्न होगा और प्रजा सुख का उपभोग करेगी ।

(१८)

अमास बादलूं होय तो, कइ भाते वेचाय ।
भादरवानी पूनमे, चार पोहोर वरसाय ॥

माघ कृष्णा अमावाश्या के दिन आकाश मे बादल हो तो इस लक्षण से भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा को चार प्रहर तक वर्षा होगी ।

फाल्गुन मास शुक्ल पक्ष वर्षा ज्ञान

(१)

फागण सुद एकम दिना, रिच्छ शतभिखा जे होय।
जेती घडी अधको हुवै, ते तो आछो जोय॥

फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा तिथि से शतभिषा नक्षत्र जितनी घड़ी अधिक होगा, आगामी फसल उतनी ही अच्छी होगी।

(२)

पाँचम फागण ऊजली, शनि मगल जे होय।
अलप मेह कम अन्न हुवै, जाण लेवो सब कोय॥

फाल्गुन शुक्ला पञ्चमी को शनिवार किंवा मगलवार मे से कोई सा भी वार आ जाय तो इसके प्रभाव से वर्षा काल मे वर्षा कम होगी और इसके परिणाम स्वरूप अन्न का उत्पादन भी कम ही होगा।

(३)

फागण सुद की पचमी, पालो जलथर बीज।
तो वैसाख सुदी एकसे, बरसेगो जल खीज॥

फाल्गुन शुक्ला पञ्चमी को वर्फ का जम जाना, आकाश मे बादलो का होना, बिजली का चमकना आदि लक्षण हो तो आगामी वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को वर्षा होगी।

(४)

फागण सुद सातम दिना, रिच्छ किरतका जे आय।
तो भादूडेरी मावसै, विरखा आछी थाय॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन कृतिका नक्षत्र हो तो इसके प्रभाव से आगामी भाद्रपद कृष्णा अमावास्या को अच्छी वर्षा होगी।

(५)

फागण सुद सातम दिना, जे रिच्छ किरतका होय।
विन वायु घन बीजली, घास घणेरो होय॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी को कृतिका नक्षत्र हो और इस दिन बिना वायु चले ही आकाश मे बादल होकर बिजली चमके तो इन लक्षणो से यही समझें कि आगामी वर्ष, घास अधिक उत्पन्न होगा।

(६)

फागण सुद सत्तमी, बिरखा मेह घण छाय।
पाचम नम आसोज सुद, जल थल एक कराय॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी को आकाश मे बहुत बादल छाये हुए हों या वर्षा आ जाय तो इसके प्रभाव से आगामी आश्विन शुक्ला पञ्चमी, नवमी के दिन अत्यन्त वर्षा होगी।

(७)

फागण सुदी जो सत्तमी, आठे नौमी गम्भ।
दिखै अमावस भादवा, पोहरा मेह सुलम्भ॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, अष्टमी नवमी को वर्षा के गर्भ के चिह्न दिखाई दे तो आगामी भाद्रपद कृष्णा आमावाश्या को बहुत देरतक वर्षा होती रहेगी।

(८)

फागण सुदी जो सप्तमी, आठम नौमी गम्भ।
देख अमावस भादवै, पड़सी मेह सुलम्भ॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमी को आकाश मे वर्षा के गर्भ स्थिर हो जाने के लक्षण दिखाई दे तो आगामी भाद्रपद की आमाश्याश्या के दिन वर्षा का लाभ अवश्य मिलेगा।

(९)

फागण सुद नी सप्तमी, आठम नवम गाजन्त ।
अमावास्या भाद्रवी, विरखा तो बरसन्त ॥

फाल्गुन शुक्ला सप्तमी, अष्टमी और नवमी के दिन आकाश मे बादलो की गर्जना हो तो आगामी भाद्रपद कृष्णा अमावास्या को वर्षा अवश्य होगी ।

(१०)

फागण सुद आठम दिना, वार सनीचर होय ।
मूंघो धान बिकावसी, सशै करो न कोय ॥

फाल्गुन शुक्ला अष्टमी को शनिवार आ जाय तो इसमे सन्देह नही अन्न मँहगा ही बिकेगा ।

(११)

कुम्भ मीन सक्रान्ति बिच, फागण सुद के माय ।
आठम नम दस्सम तिथि, रिच्छ रोहणी आय ॥
जुज विरखा आठम तणी, नवमी मध्यम होय ।
जे दसमी ने आ जाय तो, मेह घणेरो होय ॥

कुम्भ और मीन की संक्रान्ति के बीच फाल्गुन शुक्ला अष्टमी, नवमी तथा दशमी इनमे जिस दिन रोहिणी नक्षत्र हो तो आगामी वर्ष वर्षा इस प्रकार से होगी । अष्टमी को उक्त नक्षत्र होने से अल्प वर्षा, नवमी को होने पर मध्यम वर्षा और दशमी को हो तो बहुत वर्षा होगी ।

(१२)

कुम्भ मीन के अन्तरै, अष्टमी रोहण होय ।
दुगणा तिगणा चौगुणा, कणका कवड़ा जोय ॥

कुम्भ और मीन की सक्रान्ति के मध्य फाल्गुन की अष्टमी को रोहिणी नक्षत्र आ जाय तो अन्न-कपड़े का मूल्य दूने से चौगुना हो जावेगा।

(१३)

* होरी बरते बादरो, खरी एटलो गाय।
आब मये जे होय तो, ई हगार वर थाय॥

होली के जलते समय आकाश मे गौ के खुर के इतना भी बादल दीख जाय तो यह सुकाल के लक्षण हैं।

(१४)

होली झल को करो विचारा। सुभ अर असुभ लेवो फल सारा॥

* इसके विपरीत—

होली जलवा की बखत, आभो देख्यो जाय।
जे बादल हुय जाय तो, गहूं ने रौली खाय॥

† इसके विपरीत—

जलै होलिका पच्छम पून। मग्सी गाडर मूधी ऊन॥
उत्तर वायु होलिका दहै। धू धू कार जमानो कहै॥
पच्छम पून होलिका जोय। अन्न नीपजै पण खड कछु होय॥
पूरब पौन होलिका झाल। कठैक समयो कठैक काल॥
दिक्खण वायु होलिका बलै। नवो धान घट्टी नहिं दलै॥
अग्निकूण नैरुत की वाय। मरै ढोर कुछ पीडा थाय॥
जौ चोबाया बाजै वाय। परदल आय विरोधै राय॥
कै टिड्डीदल उल्ट्यो जोय। सूच्छम भेद बतायो तोय॥
झाल अकामां उल्टी घिरै। दलै मेदनी चाकीफिरै॥
झाल तिणगारा छिणछिण थाय। टीडी कीडो डाढ चलाय॥
सूधी झाल तिणग नहिं होय। तो सुभिक्ष कह्यो है तोय॥

पच्छिम वाय बह्या अति सुन्दर । समयो निपजै सकल वसुन्धर ॥
पूरब दिस को बहै जो वाय । कुछ भीजै कुछ कोरो जाय ॥
* दिक्खरण वायु हुया धन नास । खेता मे निपजै 'नहिं घास ॥
उतरादै वायु दे दडबडिया । पिरथी अचूक पाणी पडिग्रा ॥
जोर झकोले च्यारू वाय । दुखिया परजा बूझै राय ॥
जोर झलो आकाशे जाय । तो पृथवी पर सग्राम मचाय ॥

वर्ष का शुभाशुभ होलिका-दहन के अवसर से देखे । इस समय पश्चिम का वायु चलता हो तो समस्त पृथ्वी पर फसल अच्छी होगी । कदाचित वायु पूर्व दिशा का हो तो कही वर्षा होगी और कही पर नही होगी । दक्षिण दिशा का वायु होने पर धन (चतुष्पद-प्राणी) का घास नही होने के कारण नाश हो जावेगा । सद्भाग्य से इस समय उत्तर दिशा का वायु बहे तो अत्यन्त वर्षा होगी । किन्तु दुर्भाग्य से कही यही वायु चारो दिशाओ में घूमता हुआ-सा हो तो प्रजा के दुःख बढ़ेगे । होली की ज्वाला यदि सीधी आकाश की ओर गई तो इसका परिणाम पृथ्वी पर सग्राम होना है ।

(१५)

होली जलवा की बखत, किणगी बाजै वाय ।
पूरब दिस मे जे हुवै, राजा परजा सुख थाय ॥
अगनक्रूण सू अगनभय, दिक्खरण दुरभिख जोय ।
ढाढा भी मरमी घणा, करमण दोरो होय ॥

---

* इसके स्थान पर इस प्रकार भी मिली है—

दिक्खन वाय वहै बव नास । समया निपजै सनई घास ॥

यहाँ सनई नामक घास खेती मे बहुत होने का सकेत है ।

टीड आय नेऋत्य सूं, पच्छम भेड़ नसाय।
ऊनज मूंघी होवसी, मध्धम समो [कराय ।।
वायव सू वायु वधै, शेष दिशा शुभ जाय।
जे च्यारू दिश वायु चलै, तो फौजा टीड सताय।।
नर नरपति दुख पावसी, शान्त वायु झलकाय।
जे लपटा ऊपर उठै, तो हा हा कार मचाय।।

होली जलते समय देखें कि, हवा किधर की है। पूर्व की है तो राजा-प्रजा के लिये शुभ है। अग्नि कोण की है तो अग्नि लगने के उपद्रव होंगे। दक्षिण की है तो पशु (गाय, बैल आदि) मरेंगे जिसके कारण खेती कठिनाई से होगी। नैऋत्यकोण की होने से टिड्डियो के आक्रमण की सम्भावना रहेगी। पश्चिम की होगी तो भेडो का नाश हो जाने के कारण ऊन मँहगी हो जावेगी और कृषि (फसल) साधारण ही होगी। वायव्यकोण का होने से आँधिये (जोर का वायु) अधिक आवेगी। शेष ईशान और उत्तर की हो तो शुभ है। कदाचित यह वायु चारो ओर घूमता हुआ-सा प्रतीत हो तो फौजो का, टिड्डियो का आक्रमण होने के कारण राजा-प्रजा को कष्ट होगा। दुर्भाग्य से इस समय वायु शान्त होने के कारण होली की लाल लपटें सीधी ऊपर आकाश की ओर ही उठी तो ससार कम्पायमान हो उठेगा।

(१६)

फागण सुद की पूनमे, होली होय तिवार।
होली झाल अग्नि-शिख, पवना करो विचार।।
उत्तर वायु चलै [तो सुन्दर। निपजत अन्न शैल वसुन्धर।।
पूरब पवन पुहुँमी सब डोले। ऐसे उच्च ऋषीश्वर बोले।।
पच्छम पवन समो नहिं होई। दिक्खन व्है तो काल खरोई।।
जे च्यारू दिश की हौवै वाई। नाशै परजा झूझै राई।।

फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा (जिस समय होली हो) को होली की लपटें-अग्निशिखा और वायु के द्वारा भावी वर्ष का विचार करो। वायु उत्तर का होना सुन्दर है इससे पृथ्वी, पहाड़ आदि पर पैदावार अच्छी होगी। पूर्व का वायु सदिग्ध है ऐसा इस विषय के ज्ञाता कहते हैं। पश्चिम दिशा का वायु होने पर उत्पादन नही होगा और दक्षिण का वायु होने पर अकाल निश्चित ही है। यदि यही वायु चारो दिशाओ का प्रतीत हो तो राजाओं मे परस्पर युद्ध होने के कारण प्रजा का नाश होगा।

(१७)

होली शुक्र शनीचरी, के मगलवारी होय।
चाक चहोडे मेदनी, बिरला जीवै कोय ॥

होली के दिन शुक्रवार, शनिवार या मगलवार इनमे से कोई-सा भी वार हो तो कवि का कथन है कि इसके प्रभाव से पृथ्वी पर अनेको उपद्रव होने के कारण मृत्यु सख्या अधिक बढ जावेंगी।

(१८)

रवि मगल शनि होली आवै। डक्क कहै मोहि फागण भावै ॥
उल्कापात करै भुवि सारी। घर घरबार रोय नर-नारी ॥

डक्क नामक विशेषज्ञ कहते हैं कि होली के दिन रविवार, मगलवार किंवा शनिवार मे से कोई सा वार आ जाय तो इसके कारण पृथ्वी पर उल्कापात होगे और घर मे-घर के बाहर नर-नारी वर्ग रोवेंगे।

(१६)

* फागण की पून्यू दिना, वार पडे सो फाल।
भू कम्पै मंगल हुआ, शनि बुध लावै काल ॥

फाल्गुण शुक्ला पूर्णिमा के दिन जो वार आ जावे उस पर विचार करना चाहिये। इस दिन यदि मंगल होगा तो इसके प्रभाव से भूकम्प आवेगा, बुधवार अथवा शनिवार मे से कोई-सा भी वार होगा तो अकाल की अग्रिम सूचना है ऐसा समझ ले।

(२०)

† फागण मासे जो पवन, वाये मार करन्त।
तो जाणीजे भड्डली, बांधै गरभ निचन्त ॥

फाल्गुण महीने मे अत्यन्त वेग के साथ पवन चलता रहे तो समझ लेना चाहिये कि वर्षा का गर्भ बंधा हुआ है।

(२१)

तीखो वाजे वायरो, लकाऊ दिस का होय।
चैत महीने हलको हुया, पुष्टि गरभ को जोय ॥

फाल्गुण मास मे दक्षिण दिशा का तीक्ष्ण वायु चले और वह चैत्र मास मे मृदु हो जाय तो मेघ-गर्भ की पुष्टि हुई है, ऐसा समझें।

---

* मंगल पडै तो भू चलै, बुध ले पडै अकाल।
फगुआ होय शनीचरा, निपटै पडे अकाल ॥

† फागण मासे खर पवन, वाये मार करन्त।
तो जाणो निश्चै करी, घणो समो नहिं अन्त ॥

(२२)

फागण महिना मायने, आभे बादल छाय।
घणी वरखा नहि होय तो, चौमासे मेह कराय॥

फाल्गुण मास मे आकाश मे बादल रहे किन्तु इस महीने मे अधिक वर्षा नही होगी तो आगामी वर्षा काल मे वर्षा होगी।

(२३)

* शुक्र अस्त जो होय वली, कदि पण फागण मास।
भड्डली हुँ कहुँ छु तने, सभाजन पाये ना छास॥

भड्डली को सम्बोधन करते हुए कवि कहते है कि, फाल्गुण मास मे शुक्र अस्त हो तो इसके प्रभाव से भविष्य ऐसा बुरा होगा कि, सभ्य-जन अन्नादि पदार्थ तो क्या छाछ तक प्राप्त नही कर सकेंगे।

(२४)

गुरु अस्त के वक्री हुया, फागण महिना माय।
के वक्री शनि हुय जाय तो, मू घो धान्न कराय॥

फाल्गुण महीने मे गुरु अस्त हो अथवा वक्री हो अथवा शनि वक्री हो तो इनके प्रभाव से अन्न मँहगा हो जावेगा।

(२५)

तिथि बधे पडवा दिना, फागण सुद के माय।
तीज आठम चौदसा, क्रम थी सुख दुख थाय॥

फाल्गुण शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा तिथि का बढना तो सुखदायी

---

* शुक्र अस्त जो होय वली, कदी पण फागण मास।
भडली हुँ कहुँ छु तने, करणबी न पाये छाछ॥

माना गया है और तृतीया, अष्टमी एव चतुर्दशी का बढना दुखों की वृद्धि करना बताया गया है।

(२६)

होली बीत्या बाद को, देखो समो परभात ।
बोत जल्द भानु उग्या, चन्द अस्त व्है बाद।।
तो समयो आछो होवसी, मध्यम थोडी देर ।
चन्द्र अस्त पछि सूरज उग्यां,दुभिक्ख लावै घेर ।।

होली बीत जाने के बाद का प्रात:काल (होली चतुर्दशी की हो तो पूर्णिमा का प्रात काल और पूर्णिमा की हो तो चैत्र कृष्णा प्रतिपदा का प्रात:काल) देखें। चन्द्र अस्त होने से बहुत पहले यदि सूर्योदय हो जाय तो सुभिक्ष होगा। कुछ देर बाद हो तो आगामी वर्ष मध्यम रहेगा। किन्तु दुर्भाग्य से चन्द्र अस्त होने के बहुत देर बाद सूर्योदय हुआ तो इसके परिणाम स्वरूप दुर्भिक्ष हो जावेगा।

(२७)

पाँच मगल व्है फागणे, पौष पाच शनि होय ।
काल पडे भडली कहै, बीज भावो मत कोय ।।

फाल्गुण मास मे पाच मगल और पौष मास मे पाच शनिवारों का होना अकाल की सूचना है। इसलिये भड्डली कहते हैं कि ऐसी स्थिति मे किसी भी प्रकार का अन्न मत बोवो।

(२८)

पूनम पूठे माइने, फागणियो फडुकाय ।
पाक एनारू तो भली, सोमाहे घडुकाय ।।

माघी पूर्णिमा के पश्चात् ही फाल्गुण मास में हवा जोर से चलनी प्रारम्भ हो जाय तो इसके प्रभाव से उन्हालू साख भली प्रकार से पक जाती है और आगामी चातुर्मास में वर्षा अत्यन्त गरज कर बरसती है।

फाल्गुन मास कृष्ण पक्ष

(१)

फागण वद एकम भाल। किरतका री घटिका निहाल॥
जेतो घडी किरतका जोय। तेता विश्वा समयो होय॥

फाल्गुण कृष्णा प्रतिपदा को देखो और कृतिका नक्षत्र कितनी घडी है यह भी देखो। जितनी घडी कृतिका नक्षत्र इस दिन होगा उसके अनुसार आगामी फसल का अनुमान लगालें।

(२)

फागण ने पडवे वली, शतभिखा कई होय।
तो तो काल् नक्की पडे, क्या ही सुकाल् न होय॥

फाल्गुण कृष्णा प्रतिपदा को कदाचित शतभिषा नक्षत्र आ जाय तो यह निश्चित है कि, आगामी वर्ष अकाल ही होगा।

(३)

* फागण वद दुतिया दिने, वादल होय सवीज ।
वरसै सावण भादवो, साह्-घण खेले तीज ।।

फाल्गुण कृष्णा द्वितीया के दिन आकाश मे बादल हो तो आगामी श्रावण-भाद्रपद महीनो मे अच्छी वर्षा होगी ।

(४)

फागण वद छठ के दिना, चित्रा रिच्छ जो होय ।
समयो आछो होवसी, सोच करो मत कोय ।।

फाल्गुन कृष्णा षष्ठी के दिन चित्रा नक्षत्र हो तो आगामी वर्ष, अच्छी फसल होगी ।

(५)

फागण वद छठ के दिना, आभे वादल थाय ।
[तो] सूरज आदरा आविया, अवसै विरखा कराय ।।

फाल्गुण कृष्णा षष्ठी के दिन आकाश मे बादल छाये हुए रहे तो जब सूर्य आर्द्रा नक्षत्र पर आवेगा तब वर्षा अवश्य होगी ।

---

* इसके पक्ष मे—

फागण वद दुतिया दिवस, वादल होय स वीज ।
वरसै सावण भादवौ, चगी होवे तीज ।।

इसके विपक्ष मे—

फागण वदि सु दूज दिन, बादल होय न वीज ।
बरसै सावण भादवौ, चगी होवै तीज ।।

(६)

सोम मंगल की होवे शिवरात,
आथूणो जे व्हैवे वात।
घोडो रोडो टीडा उडसी,
काल पडैलो क' राजा मरसी॥

शिव-रात्रि के दिन सोम या मगल वार मे से कोई सा वार हो और रात दिन पश्चिम की वायु बहती रहे तो इस वर्ष घोडा (एक प्रकार का पतिंगा), रोडा, एव टिड्डी आदि से खेती को क्षति होगी, अकाल होगा अथवा राजा की मृत्यु होगी।

(७)

शनि रवि मगल हुवै शिवरात। वा अथूणो व्है दिन रात॥
नदी तीर जे जोतो खास। घणो उगाया पण थोडी आस॥

शिव-रात्रि के दिन शनिवार, रविवार अथवा मंगलवार मे से कोई सा भी वार हो और इस दिन एव रात्रि भर पश्चिम दिशा का वायु चलता रहे तो भले ही नदी के किनारे अर्थात नजदीक ही क्यो न खेती करें, कितना ही परिश्रम कर कितना भी अन्न क्यो न बो दें किन्तु इस योग के प्रभाव के कारण जितनी आशा रखेगे उससे बहुत कम ही उत्पन्न होगा।

(८)

फागण मावस वार जु क्रूर। लडै परस्पर जोरा सूर॥
देश उपद्रव अर दुर्भिक्ष। कहत मेघ साची सुन रिक्ष॥

फाल्गुन कृष्णा अमावास्या को कोई भी क्रूर वार आ जाय तो

इसके प्रभाव से देश मे उपद्रव होगे, शूर-वीर योद्धा परस्पर लड़ेंगे, दुर्भिक्ष होगा ऐसा मेघ नामक कवि का कथन है।

(६)

मंगलवारी मावसाँ, फागण चैती होय।
पशु बेचो करण सग्रहो, श्रोस दुकालो होय ॥

फाल्गुण एव चैत्र मास की अमावास्याएँ यदि मंगलवारी हों तो पशुओं को बेच कर अन्न का सग्रह कर लेना ही बुद्धिमत्ता है। ऐसा करने से जीवन निर्वाह भली प्रकार से हो जावेगा। क्योकि आगामी वर्ष अकाल होगा।

प्रकृति से वर्षा ज्ञान उत्तरार्द्ध को अकारादि क्रम से

अनुक्रमणिका

आ

र

श

—:०:—

प्रकृति से वर्षा ज्ञान : उत्तरार्द्ध :
का
शुद्धाशुद्धि—पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	जाय	जोय
२	१३	श्रामरा	श्रावण
२	१४	सावत्यू	मा.यू
२	२०	ईण	इण
४	२२	बादल	बादल
७	१०	मद्रबाहु	भद्रबाहु
७	१६	दिर्ना	दिना
६	४	हा	ही
६	१३	बायु	वायु
११	३	कहबाय	कहवाय
११	५	हाना	होना
१४	१०	हय	हुए
१५	३	गल्या	गल या
१६	१०	श्राश्विनी	अश्विनी
१६	२२	गल्यो	गल यो
१८	८	सातव	सातवे
२२	१८	नहीं	नही
२६	१८	हा	हो
३५ अतिम पक्ति		वर्पप्रबोध	वर्ष प्रबोध
३६	३	पड़	पड़ी

शुद्धि-पत्र

उत्तरार्द्ध के पृष्ठ सख्या ८० से आगे का निम्न अ श छूट गया है जो निम्न प्रकार है —

हाथ चार उत्तर दिशि, अस्त चन्द्र को भाव।
जल नहिं मावै मेदनी, फूटै घणा तलाव॥
हाथ बेंत दश आगला, लकऊं चन्दो जाय।
अन रे भोने आंगवो, लोक भागे रा भाय॥
हाथ चार सूरज थकि, अस्त दिक्षण व्है चन्द॥
हाहाकार वा देश मे, बिरला कोय बचन्त॥

ज्येष्ठे कृष्णा अमावस्या के साय काल को सूर्य अस्त होते समय, एक निश्चित स्थान का सीध पर कील गाड़ दें और प्रतिपदा किम्वा द्वितीया के नये चान्द को चन्द्र अस्त के समय देखकर उस कील से उत्तर-दक्षिण का एव दूरी का ज्ञान करलें। यह, यदि सूर्यास्त के स्थान पर ही हुआ हो तो वर्ष, मध्यम होगा। यदि सूर्य के स्थान से एक हाथ-एक बालिश्त-पदश अ गुली उत्तर की ओर हो तो यह वर्ष सुभिक्ष होगा कदाचित.. ...

विशेष—

१ पृष्ठ १२६ और १३३ पृष्ठो मे आषाढ। कृष्ण के स्थान पर आषाढ शुक्ल पक्ष छपा है।

२. पृष्ठ १४५ की अ तिम दो पक्तियां पृष्ठ १४६ के प्रारम्भ में पुन. छप गई हैं।

३. पृष्ठ १७३ की सख्या ३ और पृष्ठ १७४ की सख्या ४ के नीचे भावार्थ परस्पर बदल गये हैं।

—:०:—

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३६	२४	बालते	बोलते
३७	१७	वर्षा को	वर्षा के
३८	१८	कसो	कैसो
३८	२०	अचिन्तो	अचिन्त्यो
५०	१२	सम सूरज	समै सूरज
५२	४	नक्षत्रो की	नक्षत्र की
५२	४	काई	कोई
५४	१६	ताम्ब	ताम्बा
५४	११	भरणा	भरणी
५४	२०	चकै	चूकै
५५	२१	ता	तो
५७	१	होगा	होगी
५७	२	(मध्यम अल्प)	मध्यम (अल्प)
५७	५	जाय	जोय
६०	२४	स	सू
६४	८	इन दोनो नदी कूप के उपयोग का	इन दोनों का उपयोग नदी कूप के लिये
६६	१३	ज्येष्ठा शुक्ला	ज्येष्ठ शुक्ला
७१	२	वोले	बोले
७४	२५	मल असाडो	मूल असाडो
७७	१५	प्रजा भूखो के मारे	प्रजा भूख के मारे
७७	२२	मेह बरसत	मेह न बरसत
७६	१६	इस वष	इस वर्ष
८४	६	बीजला	बीजली
८६	६	राखी	राखो
६०	फुटनोट की अंतिम पंक्ति	क्षेपकारक	क्षेमकारक

पृष्ठ सख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६२	१७	पूनसे	पूनमे
६३	२०	सख्या १७	सख्या २३
९६	६	हो लाय	हो जाय
९९	४	वुघ	बुध
१०५	२	देखे	देखें
१०८	१	जाव	जावे
१०८	२	रोम	रोग
१०८	४	मूघो	मूघो
१११	१	भाग द	भाग दे
११४	३	वुधवारी	बुधवारी
११९	१५	धराऊ	धुराऊ
१२१	१	दिनां	दिनां
१२३	११	द्वारा	द्वारा
१२५	६	को सप्तमो	को सप्तम
१३६	७	भाद्रपद भास	भाद्रपद मास
१३६	१२	ई 'दना	ई दिना
१३७	१४	घण	घणू
१३८	८	जीवन	जोवन
१३८	२१	डूगर	डूंगर
१४०	३	होय	श्वोय
१४१	१०	स्रावण	श्रावण
१४२	३	हा ॥	होय ॥
१४२	१५	वषा	वर्षा
१४६	३ और १४	सिह	सिंह
१४६	२४	परिफरि	फरिफरि

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१५०	२	वेसे	वेव्हे
१५०	१८	निर्वाण	निवाण
१५१	१६	हुये ।	हुवे ।
१५३	अंतिम पंक्ति इससे मिलती हुई पर पृष्ठांकित है ।		कृपया इसे अपठनीय समझें ।
१५४	२ और २६ के प्रारम्भ में + चिन्ह समझें ।		
१५४	८ और २८ के प्रारम्भ मे — चिन्ह समझें ।		
१५४	२३	मौसल ॥	मौसाल ॥
१५५	१८	आमो	आभो
१५६	२० के नीचे की लंबी लाइन पंक्ति २२ के नीचे है ऐसा समझें		
१६०	४	हकघ्यावे	हक आवे
१६०	१४	अचित्त्यो	अचिन्त्यो
१६०	१८	उत्पादन उत्तम	उत्पादन मध्यम
१६५	४	बहोली	बहोलो
१७१	५	व्हृ	व्है
१७४	१६	अमावस्या	अमावाश्या
१७५	३	उज्जरणी	उज्जीणो
१७५	१४	अमावस्या	अमावाश्या
१७६	८	सप	संप
१७७	१३	कृषक-पत्नी अपने से	कृषक-पत्नी अपने पति से
१७७	१८	श्रावण	श्रवण
१८७	२२	कातो	काती
१८०	२	मेडवा	मेवड़ा

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८०	३	आश्विनी	आश्विन
१९०	२०	बरजा	परजा
१९१	९	किम्वा	किम्बा
१९८	१६	घोणा	घोणां
१९९	६	रवी	रबो
१९९	२१	चतुर्दिशाये	चतुर्दशियें
२००	२१	होने के कारण यह अन्न सस्ता	न होने के कारण यह अन्न महँगा
२०१	३	रजनो	रजनी
२०१	१२	चार तास	चार मास
२०३	५	थान	धान
२०८	२०	हगो	होगी
२०९	६	जाणिय	जाणिये
२०९	१९	वषा	वर्षा
२११	१	बादलो का गर्जना	बादलो की गर्जना
२२४	५	के प्रारम्भ मे † चिन्ह समझें	
२२५	१	पोष कृष्णा	पौष कृष्णा
२२६	२१	महिनो	महिने
२२७	१६	पीही	पोही
२२८	१८	धान चन	धान चून
२३४	२२	पिथ्वो	पृथ्वो
२४०	१९	नहीजे	नही ज
२४६	१५	मिर्मल	निर्मल
२४९	१७	भूमि लिया	भूमलियो
२५०	१५	घूहर	धूहर

पृष्ठ संख्या	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२५१	९	निम्न	निम्न
२५३	२३	भाद्रपद	भाद्रपद
२५७	८	उजालो	उजाली
२५७	१४	पोलो जलधर	पालो जलधर
२५७	१५	एकसे	एकमे
२५७	२०	भागण	फागण
२५७	२७	इसके भ्रभाव	इसके प्रभाव
२५८	५	हाकर	होकर
२५८	१७	आमावाश्या	अमावाश्या
२५८	२३—२४	आमावाश्या	अमावश्या
२५९	१८	वर्ष	वर्ष,
२६१	५	झकोले	झकोलें
२६१	६	सम्राम	सम्राम
२६२	५	झलकाय	झलकाय
२६२	१७	होली को लाल लपटें	होली को झाल (लपटें)
२६६	१७	शनिवारो	शनिवार

सदर्भ ग्रन्थ-सूची

●

१—घाघ और भड्डरी, सम्पादकः—श्री देवनारायण द्विवेदी

२—घाघ और भड्डरी, टीकाकार:—श्री रामलगन-पाण्डेय, विशारद

३—घाघ और भड्डरी, सम्पादक.—श्री रामनरेश त्रिपाठी

४—चमत्कार मेघमाला, लेखक.—श्री शिवनारायण दरक

५—बेला फूलै आधी रात, लेखकः—श्री देवेन्द्र सत्यार्थी

६—भड्डली वाक्य (हस्त लिखित प्राचीन पुस्तक)

७—भड्डली पुराण, लेखकः—श्रीबीरबल, विक्रम संवत् १८१७ की हस्त लिखित प्रति।

८—भड्डली पुराण (हस्तलिखित प्राचीन पुस्तक)

९—भद्रबाहु संहिता, सम्पादक—प्राध्यापक डा० श्री अमृतलाल स० गोपाणी

१०—मेघमाला, अनुवादक—श्री नारायण प्रसाद

११—मेघमाला, भड्डली मेघराज निर्मित

१२—मेघमाला, लेखक—श्रीहेमप्रभसूरि हस्तलिखित पृथक-पृथक दो प्रतियें।

१३—मेघमाला विचार (गुजराती) लेखकः—श्री विजयप्रभसूरि

१४—मेघ वृष्टि अधिकारः—हस्त लिखित।

१५—मेघमाला शास्त्रः—हस्त लिखित।

१६—भारतीय कृषि का विकास सचित्र, लेखकः—
श्री डा० शिवगोपाल मिश्र

१७—राजस्थानी कृषि कहावतें, सकलनकर्ताः—
श्री स्व० जगदीश सिंह गहलोत

१८—मेघ महोदय-वर्ष प्रबोध, अनु०:—पं० श्रीभगवानदास जैन

१६—वर्षा काल बोध लेखकः—कन्हैयालाल गार्गीय

२०—वर्षा ज्ञान, सम्पादकः—श्री नरोत्तम व्यास

२१—वागड नो वरात, लेखकः- श्रीराठोड़ सूरजमल वागडिया

२२—वृष्टि प्रबोध, लेखकः—श्री पं० मिठालाल अटलदास व्यास

२३—शनिश्चर द्वादश राशि फलं:—हस्त लिखित।

२४—शकुन रत्नावली, लेखक—श्रीमहोपाध्याय स्व० रामलाल गणि।

२५—मरुभारती शोध-पत्रिका, पिलानी, राजस्थान।

२६- वर्ष प्रबोध, लेखक—महामहोपाध्याय श्री मेघविजयगणि